

कस्तूरबा

हमारी बा

[अुनकी जीवन-कस्तूरी]

वनमाला परीख
सुशीला नय्यर

अनुवादक
काशिनाथ त्रिवेदी



नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद - १४

पहली बार २०००, १९४५
पुनर्मुद्रण ३०००, १९४९
पुनर्मुद्रण ५०००

फरवरी, १९५९

रु० २.००

- ३

दो शब्द

कोचरबमें सत्याग्रह आश्रमकी स्थापना हुअी, तभीसे भाअी नरहरि परीख अुसमें शामिल होनेवालोमें हैं। अिसलिअे चिरजीव वनमालाको जो कुछ मिला है, सो आश्रममें से ही मिला है। वह सरकारी मदरसेसे और वहा मिलनेवाली शिक्षासे अछूती रही है, अिसलिअे यह माना जा सकता है कि वह मजदूरी करना जानती है। लेकिन अुसने तो कस्तूरबाके जीवन-वृत्तान्तकी सामग्री अिकट्ठा करनेका साहस किया है। अिसमें अुसने दूसरोकी मदद ली है। यह लिखते समय मैंने दूसरे लेखोको देखा नहीं है। चिरजीव वनमालाका आग्रह था कि अुसके अपने लिखेको मैं देख जाअू। बेचारी लिखने तो बैठी कस्तूरबाके बारेमें, लेकिन बचपनमें मेरे साथ दौडी और खेली थी, सो मुझे कैसे भूलती? देखता हू कि अुसने अिधर-अुधरसे बहुतसी अप्राप्य हकीकत अिकट्ठा की है और अुसे ठीक-ठीक सजाया है। अुसकी भाषा घरेलू और सादी है। मुझे अुसमें कही भी बनावट नही दिखाअी दी। चिरजीव वनमालाका यह पहला प्रयत्न कुल मिलाकर सफल हुआ है या निष्फल, अिसका फैसला तो पाठकोंको ही करना होगा।

चिरजीव प्यारेलालकी बहन चिरजीव सुशीलाबहनने जेलमें अुसे मिले हुअे बा के अनुभव लिखे थे। चिरजीव वनमालाने सोचा था कि अुनमें से कुछ वह अपने लेखमें ले लेगी। लेकिन पढने पर अुसे लगा कि बहन सुशीलाकी लिखावटमें अेक सहज कला है। अुसका अगभग करनेकी अुसकी हिम्मत न हुअी। मूल हिन्दीमें ही है। बहन सुशीलाने डॉक्टरीकी आखिरी डिग्री हासिल की है। साथ ही अुसको गानेका, बजानेका, चित्र निकालनेका और साहित्यका शौक है। वह सार्वजनिक

जीवनमें दिलचस्पी लेती है। स्वर्गीय महादेवने अुसके अिस गुणको देखा था और अिसे बढानेमें खूब दिलचस्पी ली थी। लेकिन वह तो सबको छोडकर चले गये। यह जीवन पूरा किया। पाठक चि० सुशीलाके लेखको अिस दृष्टिसे देखें।

यह तो हुआ लेखिकाओंके बारेमें।

लेकिन दोनो कहती हैं कि जब तक मैं बा के विषयमें कुछ न कहू, तब तक यह पुस्तक अधूरी ही मानी जायगी। जब मैं ही अिस सग्रहका परिचय दे रहा हू, तो मेरे लिअे बा के विषयमें कुछ लिख देना शायद अुचित माना जायगा। समय मिला तो विस्तारसे लिखनेका मेरा अिरादा है। यहा तो जिस कारणसे बा ने जनतामें अितना बडा आकर्षण पैदा किया था, अुसकी जडको मैं ढूढ सकू तो ढूढू। बा का जबरदस्त गुण महज अपनी अिच्छासे मुझमें समा जानेका था। यह कुछ मेरे आग्रहसे नहीं हुआ था। लेकिन समय पाकर बा के अन्दर ही अिस गुणका विकास हो गया था। मैं नही जानता था कि बा में यह गुण छिपा हुआ था। मेरे शुरू-शुरूके अनुभवके अनुसार बा बहुत हठीली थी। मेरे दबाव डाल्ने पर भी वह अपना चाहा ही करती। अिसके कारण हमारे बीच थोडे समयकी या लम्बी कडवाहट भी रहती। लेकिन जैसे-जैसे मेरा सार्वजनिक जीवन अुज्ज्वल बनता गया वैसे-वैसे बा खिलती गअी, और पुख्ता विचारके साथ मुझमें यानी मेरे काममें समाती गअी। जैसे दिन बीतते गये, मुझमें और मेरे काममें — सेवामें — भेद न रह गया। बा धीमे-धीमे अुसमें तदाकार होने लगी। शायद हिन्दुस्तानकी भूमिको यह गुण अधिक-से-अधिक प्रिय है। कुछ भी हो, मुझे तो बा की अुक्त भावनाका यह मुख्य कारण मालूम होता है।

बा में यह गुण पराकाष्ठाको पहुचा, अिसका कारण हमारा ब्रह्मचर्य था। मेरी अपेक्षा बा के लिअे वह बहुत ज्यादा स्वाभाविक सिद्ध हुआ। शुरूमें बा को अिसका कोअी ज्ञान भी न था। मैंने विचार किया और

बा ने अुसको अुठाकर अपना बना लिया। परिणाम-स्वरूप हमारा सम्बन्ध सच्चे मित्रोंका बना। मेरे साथ रहनेमें बा के लिअे सन् १९०६ से, असलमें सन् १९०१ से, मेरे काममें शरीक हो जानेके सिवा या अुससे भिन्न और कुछ रह ही नहीं गया था। वह अलग रह नहीं सकती थी। अलग रहनेमें अुसे कोअी दिक्कत न होती, लेकिन अुसने मित्र बनने पर भी स्त्रीके नाते और पत्नीके नाते मेरे काममें समा जानेमें ही अपना धर्म माना। अिसमें बा ने मेरी निजी सेवाको अनिवार्य स्थान दिया। अिसलिअे मरते दम तक अुसने मेरी सुविधाकी देखरेखका काम छोड़ा ही नहीं।

सेवाग्राम, १८-२-'४५

मोहनदास करमचंद गांधी

पूज्य महादेवकाकाके

चरणोंमें

अनुक्रमणिका

हमारी बा

पहला भाग

जीवनकी कहानी

१

जन्म और विवाह

काठियावाड़के पोरबन्दर नगरमें सन् १८६९ के अप्रैल महीनेमें बा का जन्म हुआ था। बापूजीसे बा करीब छह महीने बड़ी थी। पिताका नाम गोकुलदास मकनजी था और माताका नाम व्रजकुवर। कुल पाच भाअी-बहनोंमें तीन भाअी और दो बहनें थीं। अिनमें से अेक बहन और अेक भाअी बचपनमें ही गुजर गये थे। बड़े भाअी जवानीमें चल बसे। फिर अेक बा और अेक अुनके छोटे भाअी माधवदास दो ही रह गये। माधवदास मामा सबसे छोटे और बा तीसरी थी।

अुस जमानेमें, और सो भी काठियावाड़में, लड़कियोको कोअी पढ़ाता नहीं था। अिसलिअे बचपनमें बा बिलकुल निरक्षर थी। लेकिन अुनको घरके कामकाजकी अच्छी तालीम मिली थी और पिताके सस्कारी वैष्णव परिवारके कुछ अुत्तम गुण अुन्हे विरासतमें मिले थे। धार्मिक वातावरणमें अेक खास सकल्प-बल और सयमका विकास होता है, और ये दोनो बातें बा में ठेठ बचपनमे ही पाअी जाती थी।

बा के पिताजी पोरबन्दरमें व्यापारी थे। आर्थिक स्थिति साधारण ही थी। पोरबन्दर राज्यकी दीवानगीरी करनेवाले गाधी-परिवारके साथ अुनका अच्छा सम्बन्ध था। अिसलिअे अुन्होने सात सालकी अुमरमें ६॥ सालके बापूके साथ बा की सगाअी कर दी और तेरह सालकी अुमरमें अुनका विवाह हुआ।

आज हमको अिस तरहके बाल-विवाहकी बात विचित्र और विनोदपूर्ण मालूम होती है। बापूजीने भी आत्मकथामें अुसका रोचक चित्र खीचा है। वे लिखते है "मुझे याद नही पड़ता कि सगाअीके समय मुझसे कुछ कहा गया था। अिसी तरह ब्याहके वक्त भी कुछ पूछा नहीं गया। सिर्फ तैयारियोसे ही पता चला कि ब्याह होनेवाले है। अुस समय तो अच्छे-अच्छे कपड़े पहनेंगे, बाजे बजेंगे, जुलूस निकलेंगे,

अच्छा-अच्छा खानेको मिलेगा, अेक नअी लडकीके साथ हँसी-खेल करेंगे, वगैरा अिच्छाओंके सिवा और कोअी विशेष भाव मेरे मनमें रहा हो, अैसा याद नहीं आता।" ब्याहके अवसरका वर्णन करते हुअे बापू लिखते हैं "मण्डपमें बैठे, फेरे फिरे, कसार खाया-खिलाया और वर-वधू तभीसे साथमें रहने लगे। दो अबोध बालक बिना जाने, बिना समझे, संसार-सागरमें कूद पडे। कुछ अैसा खयाल होता है कि हम दोनों अेक-दूसरेसे डरते थे; अेक-दूसरेसे शरमाते तो थे ही। बातें किस तरह करना, क्या करना, सो मैं क्या जानूं? धीरे-धीरे अेक-दूसरेको पहचानने लगे, बोलने लगे।"

अुस समयकी अपनी भावनाओंका और बा के स्वभावका बापू यों वर्णन करते हैं "मुझे अपनी पत्नीको आदर्श स्त्री बनाना था। वह साफ बने, साफ रहे, मैं जो सीखूं, सीखे, जो पढ़ूं, पढे, और हम दोनों अेक-दूसरेमें ओतप्रोत रहें; यह मेरी भावना थी। मुझे याद नहीं पडता कि कस्तूरबाअीकी भी यह भावना थी। वे निरक्षर थीं, स्वभावकी सीधी, स्वतंत्र, मेहनती और मेरे साथ कम बोलनेवाली। अुन्हें अपने अज्ञानसे असंतोष न था। मैंने अपने बचपनमें अुनको कभी यह अिच्छा करते हुअे नहीं पाया कि जिस तरह मैं पढता हूं, अुस तरह वह खुद भी पढें तो अच्छा हो। . अुन्हें पढ़ानेकी मेरी बडी अिच्छा थी। लेकिन अुनमें दो कठिनाअियां थीं। अेक तो बा की पढनेकी भूख खुली नहीं थी, दूसरे, बा अनुकूल हो जाती, तो भी अुस जमानेके भरे-पूरे परिवारमें अिस अिच्छाको पूरा करना आसान नहीं था।"

बापूजी खुद अुस जमानेका वर्णन यों करते हैं "अेक तो मुझे जबर्दस्ती पढ़ाना था, और सो भी रातके अेकान्तमें ही हो सकता था। घरके बडे-बूढोंके सामने पत्नीकी तरफ देख तक नहीं सकते थे। बातें तो हो ही कैसे सकती थीं? अुस समय काठियावाडमें घूंघट निकालनेका निरर्थक और जंगली रिवाज था। आज भी बहुत-कुछ मौजूद है। अिसलिअे पढानेके अवसर भी मेरे लिअे प्रतिकूल थे। चुनांचे, मुझे कबूल करना चाहिये कि जवानीमें मैंने बा को पढानेकी जितनी कोशिशें कीं, वे सब करीब-करीब बेकार गअीं। जब मैं विषयकी नींदसे जागा, तब तो सार्वजनिक जीवनमें पड चुका था, अिसलिअे मेरी स्थिति अैसी नहीं रह गअी थी कि मैं ज्यादा समय दे सकूं। शिक्षकके

जरिये पढानेकी मेरी कोशिशें भी बेकार हुअी। नतीजा यह हुआ कि आज कस्तूरबाअी मुश्किलसे पत्र लिख सकती हैं और मामूली गुजराती समझ लेती हैं। मैं मानता हूं कि अगर मेरा प्रेम विषयसे दूषित न होता, तो आज वे विदुषी स्त्री होती। अुनके पढनेके आलस्यको मैं जीत सकता।"

२

बा का बाल-गृहस्थाश्रम

अिस प्रकार बचपनमें ही बा और बापूजीके गृहस्थाश्रमका आरम्भ हुआ। बालवयके अिन पति-पत्नीकी गृहस्थीका और नादानीसे भरे झगडोंका वर्णन बापूजीने बहुत ही मार्मिक शब्दोंमें किया है। अुससे हम देख सकते हैं कि यद्यपि बा निरक्षर थी, तो भी अैसी नहीं थी कि अपनी स्वतन्त्रताको न समझें। वे लम्बी बहस या दलील नहीं कर पाती थी, लेकिन अपने मनकी करनेमें किसीके दावे दबती भी नहीं थी। बापूजी लिखते हैं

"जिन दिनों शादी हुअी, अुन दिनों निबन्धोंकी छोटी-छोटी पुस्तिकाअें निकला करती थी। अुनमें दाम्पत्य-प्रेम, किफायतशारी, बाल-विवाह वगैरा विषयोंकी चर्चा रहती थी। अुनमें से कुछ निबन्ध मेरे हाथ पड जाते और मैं अुन्हें पढ जाता। यह आदत तो थी ही कि पढना, जो पसन्द न आये अुसे भूल जाना और जो पसन्द पड़े अुस पर अमल करना। पढा था कि अेकपत्नी-व्रत पालना पतिका धर्म है, और यह बात हृदयमें बस गअी।

"लेकिन अिस सद्विचारका अेक बुरा परिणाम हुआ। अगर मुझे अेकपत्नी-व्रतका पालन करना है, तो पत्नीको अेकपति-व्रतका पालन करना चाहिये। अिस विचारकी वजहसे मैं अीर्ष्यालु पति बन गया। 'पालना चाहिये' परसे मैं 'पलवाना चाहिये' के विचार पर पहुंच गया, और अगर पलवाना है तो पत्नीके अूपर निगरानी रखनी चाहिये। मुझे पत्नीकी पवित्रता पर शक करनेका कोअी कारण न था, लेकिन अीर्ष्या

कब कारण देखने बैठती है? मुझे यह जानना चाहिये कि मेरी स्त्री कहा जाती है, अिसलिअे मेरी अिजाजतके बिना वह कही जा ही नहीं सकती। यह चीज हमारे बीच दु:खद झगडेका कारण बन गअी। अिजाजतके बिना कहीं न जा सकना तो अेक तरहकी कैद हुअी। लेकिन कस्तूरबाअी अिस तरहकी कैद सहन करनेवाली थीं ही नहीं। जहा जाना चाहती, वहा मुझसे बिना पूछे जरूर जाती। जितना ही मैं दबाता, अुतनी ही ज्यादा वे आजादी लेतीं और मैं ज्यादा चिढता।"

बापू अीर्ष्यालु और शकाशील (वहमी) पति थे। अिसके खिलाफ बा बराबर आजादी लेती ही रही, और फिर भी बापूके वहम और अुनकी अीर्ष्याको अुन्होंने सह लिया। अैसा न किया होता, तो गृहस्थी वहीं खतम हो जाती। हिन्दू गृहस्थाश्रमोंमें बालक पति-पत्नीके बीच अकसर अैसे कलह होते है, लेकिन अुनमें कुल मिलाकर स्त्रिया ही ज्यादा समझदारी धीरज और सहनशीलताका परिचय देती है। यही वजह है कि गृहस्थीकी नैया टकरा कर चूर होनेसे बच जाती है। फिर तो दोनो सयाने हो जाते है, और गृहस्थी सरलतासे चलती है। अिस प्रकार अुसको तरल और सफल बनानेमें अधिक हिस्सा स्त्रियोका होता है। अैसे समय स्त्री गम खाती है और सहन कर लेती है। पुरुषको तो अुस वक्त अपनी सत्ता जमाने, स्वामित्व सिद्ध करनेका जोश चढा रहता है। लेकिन स्त्रीकी समझदारीके कारण गृहस्थी निभती है।

बापूजी आत्मकथामें लिखते हैं "कस्तूरबाअीने जो आजादी ली थी, अुसे मैं निर्दोष मानता हू। अेक बालिका, जिसके मनमें पाप नही, वह देव-दर्शनको जानेके लिअे या किसीसे मिलने जानेके बारेमें अैसा दबाव क्यो सहन करे? अगर मैं अुस पर दबाव रखता हू, तो वह मुझ पर क्यो न रखे? किन्तु यह तो अब समझमें आता है।"

लेकिन अैसा नहीं हुआ कि बा हर बार चुप ही रह गअी हो। बापूके गर्विष्ठ (घमण्डी) पति होते हुअे भी जब जरूरत मालूम हुअी, बा अुन्हें चेतावनी देनेमें पीछे नहीं रही। बापूजीने लिखा है कि अेक बुरे मित्रकी सोहबतके सिलसिलेमें मेरी माताजी, बडे भाअी और मेरी पत्नीने मुझको चेताया था। अुन मित्रकी सोहबतमें रहनेके जिस खतरेको

बापूजी नही देख सके थे, अुसे बा अपनी सहज बुद्धिसे ताड गअी थी और खास बात यह थी कि अैसा करके वे चुप नही बैठ गअी। अनपढ और कम अुमरकी बा में अुस समय भी विवेकशक्ति और स्वतन्त्र विचार-शक्ति थीं। अपने लिअे क्या अच्छा है और क्या बुरा है, सो तो बा समझती ही थी। अिसके सिवा, अुन्हे अिस बातका भी खयाल था कि अपने पतिके लिये क्या अच्छा है और क्या खतरनाक है। अिसलिअे "पत्नीकी चेतावनीको मैं गर्विष्ठ पति क्यो मानने लगा?"—अिन शब्दोमें अपने दुःखको व्यक्त करनेके साथ ही साथ बापूजीने बा की समझदारीको भी स्वीकार किया है।

* * *

अिस समयके बा के जीवनकी दूसरी घटनाओंको मैं अेकत्र नही कर सकी। सन् १८८८ में बापूजीके विलायत जानेसे पहले बा के अेक बालक जन्मा था, जो दो या चार ही दिनमें मर गया और अुसके बाद हरिलालभाअीका जन्म हुआ। अुस समय अुनकी अुमर करीब १९ सालकी थी। बापूजीने लिखा है कि विलायत जानेके समय अुन्होंने सबसे बिदा वगैरा मागी थी, लेकिन बा से विदा मागनेके बारेमें और अुनकी भावनाके बारेमें कही कुछ भी नही लिखा है। अलबत्ता, बा को यह अच्छा तो नही लगा होगा। बहुत-बहुत तो बा ने अितना पूछा होगा कि वापस कब आयेंगे और बापूने प्रेमपूर्वक कुछ आश्वासन दिया होगा। बापूजी विलायतमें थे तभी अुनकी माताजी यानी बा की सास गुजर गअी। बा की जेठानी घटो पूजामें रहती थी। अुस समय अुनके बच्चोंको नहलाने-धुलाने और सभालनेका सारा काम बा ही दिन-रात किया करती थी। रसोअीघर तो समूचा बा के ही जिम्मे था। बा ने सासके जैसी ही जेठानीकी भी सेवा की है।

विलायतसे वापस आनेके बाद भी बापूजी अपने अीर्ष्यालु स्वभावको छोड नही पाये थे। वे लिखते है "हर मामलेमें मेरी नुकताचीनी और मेरा वहम कायम रहा। अिसकी वजहसे मैं अपनी चाही हुअी मुरादोको पूरा नही कर पाया। मैंने सोचा था कि मेरी पत्नीको अक्षरज्ञान होना ही चाहिये और वह मैं अुसे दूगा। लेकिन मेरी विषयासक्तिने मुझे

वह काम करने ही न दिया, और अपनी खामीका गुस्सा मैंने पत्नी पर अुतारा। अेक वक्त तो अैसा आया कि मैंने अुसे अुसके मायके ही भेज दिया और बहुत ज्यादा तकलीफ देनेके बाद फिरसे साथ रहने देना कबूल किया। बादमें मैं देख सका कि अिसमें मेरी निरी नादानी ही थी।"

अिस घटनाके बारेमें बापूजीसे ज्यादा जानकारी प्राप्त की जा सकती थी। लेकिन अुनकी बीमारी और दूसरे महत्त्वके कामोंमें अुनकी व्यस्तताके कारण मैं अिन सम्बन्धका ब्यौरा अुनसे प्राप्त नहीं कर सकी।

हिन्दुस्तानमें बापूजीकी बैरिस्टरी अच्छी तरह नहीं चली और अुन्हें अेक मुकदमेके सिलसिलेमें अफ्रीका जाना पडा। अुस समयकी अपनी और बा की भावनाकी थोडी झांकी बापूजीने हमें दी है। वे लिखते हैं "विलायत जाते समय जो वियोग-दुःख हुआ था, वह दक्षिण अफ्रीका जाते वक्त नहीं हुआ। माता तो चली गअी थीं, अिसलिअे अिस बार सिर्फ पत्नीके साथका वियोग दुःखदायी था। विलायतसे लौटनेके बाद दूसरे अेक बालककी प्राप्ति हुअी थी। हमारे बीचके प्रेममें अभी विषय तो था ही, फिर भी अुसमें निर्मलता आने लगी थी। मेरे विलायतसे लौट आनेके बाद हम बहुत कम समय अेक साथ रहे थे। और चूंकि मैं स्वयं, कैसा भी क्यों न होअूं, अेक शिक्षक बना था, और मैंने अपनी पत्नीमें कुछ सुधार कराये थे, अिसलिअे अुन्हें कायम रखनेके खयालसे भी हमारे अेक साथ रहनेकी जरूरत हम दोनोंको मालूम होती थी। लेकिन अफ्रीका मुझे खींच रहा था। अुसने वियोगको सरल बना दिया। 'अेक सालके बाद तो हम मिलेंगे ही न?'—अिस प्रकार ढाढस बधाकर मैंने राजकोट छोडा और बम्बअी पहुंचा।" लेकिन बापूजी तो दक्षिण अफ्रीकामें अेकके बदले तीन साल रह गये। बा के ये साल भी राजकोट ही में बीते। १८९६ में बापूजी छह महीनोंके लिअे अपने परिवारको ले जानेके अिरादेसे देशमें आये। लेकिन छह महीने पूरे होनेसे पहले ही अफ्रीकासे फौरन वापस आनेका तार आया और बापूजी बा को, अपने दो बालकोंको और अपने स्वर्गीय बहनोअीके अेक पुत्रको लेकर अफ्रीकाके लिअे रवाना हो गये।



गाधीजी और कस्तूरबा सन् १९१५ में



बा और बापू

३

आदर्श सहधर्मचारिणी

वापूजीने अेक जगह लिखा है "अगर मैं अपनी पत्नीके वारेमें
ते प्रेम और अपनी भावनाका वर्णन कर सकू, तो हिन्दूधर्मके वारेमें
नें प्रेम और अपनी भावनाओको मैं प्रकट कर सकता हू। दुनियाकी
री किसी भी स्त्रीके मुकावले मेरी पत्नी मुझ पर ज्यादा असर डालती
।"

कहा जा सकता है कि वापूजीको अपने जीवनमें जो भी अूचीसे
ची चीज मिली है, जो भी प्रेरणा प्राप्त हुअी है, जो कुछ मार्गदर्शन
ला है, वह जिस तरह हिन्दूधर्मसे मिला है, अुसी तरह वा से भी
ला है। अिन दोनो जीवनदायी और प्रेरणा पहुचानेवाले वलोंके वारेमें
हस्यकी वात यह है कि वापू अिन दोनोंमें से किसी अेकको भी पसन्द
रने नही गये थे। हिन्दूधर्म जन्मके साथ मिला। विलायत जाते समय
ाताकी अिच्छासे अेक जैन साधुके सामने ली हुअी प्रतिज्ञाओका वहा
ूरा-पूरा पालन किया, सो अुन प्रतिज्ञाओके महत्त्वको समझकर नही, वल्कि
अिसलिअे किया कि ली हुअी प्रतिज्ञाका पालन विकटसे विकट परिस्थितिमें
भी करना ही चाहिये। हिन्दूधर्मकी अिस भावनाका माके दूधकी तरह
अुन्होंने वचपनसे पान किया था। अिसी तरह पत्नीको भी अुन्होंने चुना
नही था। जिस तरह धर्म माता-पिताका मिला, अुसी तरह पत्नी भी
माता-पिताने ही ला दी। आत्मकथामें वे कहते हैं· "किस लडकीके
साथ शादी होनेवाली है, और वह मुझे पसन्द है या नही, सो सव
कुछ मुझसे पूछा नही गया था, वल्कि सारा प्रवन्ध मेरे माता-पिताने ही
किया था।"

दूसरी अेक रहस्यमय घटना यह है कि अपने जीवनके आरम्भमें
अिन दोनोके वारेमें, यानी हिन्दूधर्मके वारेमें और पत्नीके वारेमें, वापू
सशक थे। दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दूधर्मके वारेमें अुन्होंने अेक मित्रसे कहा

था. "यद्यपि मैं जन्मसे हिन्दू हूं, फिर भी हिन्दूधर्मके बारेमें बहुत जानता नहीं। दूसरे धर्मोंके बारेमें तो और भी कम जानता हूं। धर्मके मामलेमें मेरी धारणा क्या है, किस धर्ममें मुझे श्रद्धा है और किस धर्ममें मुझे श्रद्धा रखनी चाहिये, सो मैं कुछ भी नहीं जानता।" जिस तरह बापूने हिन्दूधर्मके पूरे-पूरे महत्त्व और सच्चे रहस्यको जाने बिना धार्मिक जीवनका आरम्भ किया था, अुसी तरह पत्नीके महत्त्व और अुसके सच्चे गुणोंकी किसी कल्पनाके बिना ही अुन्होंने अपने गृहस्थ जीवनका श्रीगणेश किया था। बापूजी खुद ही कहते हैं "मैं अीर्ष्यालु और वहमी पति था। पत्नी कहां जाती है और क्या करती है, अिस पर मैं अंकुश रखना चाहता था।"

अैसा होते हुअे भी बापूजीने आखिर अिन दोनोंको समझनेकी खूब कोशिश की। दोनोंको अपनाया और दोनोंकी मददसे अपने जीवनको धन्य किया। हिन्दूधर्मके गहरेसे गहरे रहस्यको खुद खोज निकाला और अुनके प्रभावसे स्वयं दुनियाकी अेक धार्मिक विभूति बने — सन्त और महात्माके नामसे मशहूर हुअे। अिसी तरह जैसे-जैसे बा के सच्चे गुणोंको वे समझते गये, वैसे-वैसे अपने गृहस्थ-जीवनको धन्य बनाते गये और बापू सच्चे 'बापू' बने।

बापूजीको तपश्चर्याका शौक है। तप और संयमके बड़े-बड़े प्रयोग वे करते ही रहते हैं। जीवनको अुन्होंने तपोमय बना दिया है। फिर भी तपस्वीमें जो शुष्क वैराग्य और कर्कशता आ जाती है, वह अुनके जीवनमें नहीं आ पाअी है। प्रेम और करुणा मूल ही से अुनके स्वभावमें रहे हैं। अिस प्रेम और करुणाके स्रोतको अुनकी तपःपरायणता शायद सुखा डालती। लेकिन वह सोता न सिर्फ सूखा ही नहीं, बल्कि बढ़ते तपके साथ खुद भी बढ़ता ही गया है। अिसे बा का प्रताप समझना चाहिये।

बापूजीके समान अुग्र तपस्वीके जीवन पर अिस तरहका असर डालना किसी मामूली योग्यताका काम नहीं है। बापूकी तपस्याकी भट्टीके नजदीक कुछ देर तक टिके रहना भी कितना कठिन है, सो तो अनुभवी ही जानते हैं। श्रीमती पोलाक ब्याहके बाद तुरन्त ही बापूजीके अेक परिवारके नाते अुनके घर ही में रही थीं। वहां अुनको कितनी कठिनाअियां सहनी पड़ी

होगी, जिसके बारेमें हमें सहृदय बननेकी सलाह देते हुअे श्री अेण्ड्रूज लिखते है . "अैसे अेक सन्तके साथ, जो हमेशा किसी-न-किसी शारीरिक कष्टको भोगनेका आग्रह रखता हो, जो जिद्दी और धुनका पक्का हो, और अितना होने पर भी जिसे प्यार करनेकी मनमें अिच्छा होती हो, असके अेक परिजनकी तरह रोजका बहुत निकटका जीवन बिताना श्रीमती पोलाकके लिअे कितना कठिन सिद्ध हुआ होगा ?"

श्रीमती पोलाकको तो कुछ महीने या अेक-दो साल ही बापूके घरमें रहना पडा होगा, और वह भी अुन्हे कठिन मालूम हुआ, तो फिर जिनके जीवनका गठबन्धन ही अैसे 'सन्त' के साथ हुआ हो, अुन बा की क्या हालत हुअी होगी सो सोच लीजिये। अलबत्ता, बा को बहुत-सी मुश्किलोका सामना करना ही पडा होगा। लेकिन अुन्होने अुन तमाम मुश्किलोको गौरवके साथ न सिर्फ पार किया है, बल्कि बापूजीको भी अुनकी तपश्चर्याके जोशमें जरूरतसे ज्यादा कठोर या शुष्क नही बनने दिया। बा के जीवनका यही सच्चा रहस्य है। बापू खुद कहते है "हमारे बीच झगडे तो खूब हुअे हैं, लेकिन परिणाम हमेशा शुभ ही रहा है। बा ने अपनी अद्भुत सहनशक्तिसे विजय प्राप्त की है।"

दक्षिण अफ्रीकामें बापूजीके जीवनने करवट लेना शुरू किया और सन् १९०४ में तो अुन्होंने जीवनमें क्रान्तिकारी परिवर्तन कर डाला। जीवनके परिवर्तनका अुनका आग्रह अितना तीव्र और अुत्कट था कि अुन दिनो अुनके साथ निभना मुश्किल था। अेक दफा गोखलेजीने बापूजीको हसी-हसीमें, लेकिन सच ही कहा था "तुम बडे जालिम हो। अेक ओरसे तुम्हारा प्रेम और दूसरी ओरसे तुम्हारा आग्रह दूसरे पर अितने जोरका असर करते है कि बेचारा तुम्हारी अिच्छाके अनुसार चलने और तुम्हें खुश करनेको मजबूर हो जाता है।" श्रीमती सरोजिनी नायडू भी बापूको अकसर जालिम ('टायरण्ट') कहती और अपने पत्रोमें अुन्हें 'माय डीयर टायरण्ट' (मेरे प्यारे जालिम) लिखा करती थी। बापूके अैसे अत्याचारी प्रेममें और जीवन-परिवर्तनकी अुत्कट तीव्रतामें बा किस तरह निभी होगी ? बापूजीके जीवनका प्रवाह त्याग, वैराग्य, सन्यासकी तरफ जोरसे बहा जा रहा था। बा ने अुसको अनुकूल और अिष्ट मार्गसे

बढ़ने दिया है, अुनमें कोअी रुकावट नहीं डाली, और फिर भी जहां-जहां जरूरत हुअी वहां-वहां नम्र सूचनाके रूपमें बाध बाध कर, सविनय प्रतिकारके रूपमें अिष्ट रुकावटें खडी करके, प्रवाहको प्रतिकूल या अनिष्ट दिशामें बहनेसे रोका है और हमेशा योग्य दिशामें रखा है। काव्यप्रकाशके कर्ता मम्मटने कविताके बोध अथवा अुपदेशकी कान्ताके अुपदेशके साथ तुलना की है। बा ने अिस अुपमाको भलीभांति चरितार्थ किया है। अपनी नम्रतापूर्ण समझाअिश, सौम्य आग्रह और निरुपाय हो जाने पर आंसुओंके जरिये बा ने बापूजीको कठोर बनने, कर्कश बनने और क्लिष्ट बननेसे रोका है, अुनको प्रेमल और सरल बनाये रखा है।

अिससे कोअी यह न समझे कि बा ने बापूजीको जीवनमें आगे बढ़नेसे रोका है। बापूजी कहते हैं: "बा में अेक गुण बहुत बड़ी मात्रामें है, जो दूसरी बहुतसी हिन्दू स्त्रियोंमें न्यूनाधिक मात्रामें पाया जाता है। अिच्छासे हो या अनिच्छासे, ज्ञानसे हो या अज्ञानसे, मेरे पीछे-पीछे चलनेमें अुन्होंने अपने जीवनकी सार्थकता मानी है, और शुद्ध जीवन बितानेके मेरे प्रयत्नमें मुझे कभी रोका नहीं है। अिसके कारण, जो भी हमारी बुद्धिशक्तिमें बहुत अन्तर है, तो भी मुझे यह लगा है कि हमारा जीवन सन्तोषी, सुखी और अूर्ध्वगामी है।" बापूजीके धार्मिक महाव्रतोंमें और देशसेवाके महाव्रतोंमें बा हमेशा अुनके साथ ही रही हैं। अुन्होंने बापूको बराबर आगे ही बढ़ने दिया है। अुदाहरणके लिअे, बापू खुद कहते हैं "ब्रह्मचर्य-व्रतके पालनमें बा की तरफसे कभी विरोध नहीं अुठा। अथवा बा कभी ललचानेवाली नहीं बनी। मेरी अशक्ति अथवा आसक्ति ही मुझे रोक रही थी।" सादगी भी बा में सहज थी, स्वभावसिद्ध थी। कपड़े वगैराके ठाठ-बाटको छोड़नेमें किसीको थोड़ा भी प्रयत्न करना पड़ा हो, तो कपड़ोंकी टीमटामके शौकीन और चिकनपोश बापूको ही करना पड़ा होगा। अपरिग्रह बा के लिअे अवश्य ही कठिन रहा होगा। लेकिन अुसके सम्बन्धमें भी बा ने अपने लिअे तो अपने मनको बहुत जल्द मना लिया था। परिग्रहका जो थोड़ा मोह या अिच्छा बा में थी, सो लड़कोंकी बहुओं और बेटियोंके लिअे ही थी। मनको मना लेनेके बारेमें बा के जीवनकी अेक घटना पूज्य रावजीभाअी मणिभाअी

पटेल्ने — जिनको अफ्रीकामें वा और बापूकी गृहस्थीमें रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था — मुझे लिख भेजी है, और वह अिस प्रकार है

"बात फिनिक्स आश्रमकी है। सन् १९१३ का साल था। अेक दिन सवेरे भोजनके बाद कोअी ११ बजे मैं खानेकी मेजके पास बैठा था। बापूजी हमेशा सबको जिमा कर जीमते थे। वे भोजन कर रहे थे और अुनके पास अुनके परिवारके अेक बुजुर्ग कालिदास गाधी बैठे थे। वे टूगाट नामक गावमें रहते थे और वहासे कुछ दिनके लिअे आये थे। वा खडी-खडी रसोअीघरमें सफाअीका काम कर रही थी। श्री कालिदासभाअी कुछ पुराने विचारोके थे।

"दक्षिण अफ्रीकामें अेक मामूली व्यापारीके यहा भी रसोअीघरका और दूसरा सफाअी वगैराका काम करनेके लिअे नौकर रहते थे। यहा वा को अपने हाथोंसे सब काम करते देखकर श्री कालिदासभाअीने बापूजीको सम्बोधन करके कहा 'भाअी, तुमने तो जीवनमें बहुत हेरफेर कर डाला। बिलकुल सादगी अपना ली। अिन कस्तूरबाअीने भी कोअी वैभव नही भोगा।'

"'मैंने अिसे वैभव भोगनेसे रोका कब है?'— बापूने खाते-खाते जवाब दिया।

"'तो तुम्हारे घरमें मैंने क्या वैभव भोगा है?'— वा ने हसते-हसते ताना मारा।

"बापूजीने अुसी लहजेमें हसते-हसते कहा — 'मैंने तुझे गहने पहननेसे या अच्छी रेशमी साडिया पहननेसे कब रोका है, और जब तूने चाहा तब तेरे लिअे सोनेकी चूडिया भी बनवा लाया था न?'

"'तुमने तो सभी कुछ लाकर दिया, लेकिन मैंने अुसका अुपयोग कब किया है? देख लिया कि तुम्हारा रास्ता जुदा है। तुम्हे तो साधु-सन्यासी बनना है। तो फिर मै मौज-शौक मनाकर क्या करती? तुम्हारी तबीयतको जान लेनेके बाद मैंने तो अपने मनको मना लिया।'— बा कुछ गभीर होकर बोलीं।"

"मैंने तो अपने मनको मना लिया"— अिस कथनमें बा के समूचे जीवनकी सफलताकी कुजी हमें मिल जाती है। लेकिन अिस प्रकार

मनको मना लेनेके बाद भी बा ने बापूको कठोर और शुष्क बन जानेसे तो रोका ही है। 'महात्मा' बननेके बाद भी अथवा महात्मा बननेमें मदद करते हुअे भी अुनको अपने विशाल परिवारके प्यारे बापू बने रहनेमें बा ने बापूकी मदद की है, या यों कहिये कि अुनको आम जनताके सच्चे और बड़े बापू बनाया है और अिस प्रकार बापूकी महत्तामें वृद्धि की है। बा के जीवनका यह रहस्य है। अवश्य ही बा को 'बा' बनानेमें बापूका हिस्सा कोअी मामूली नहीं रहा है। अिस विभूतिमय दम्पतीके जीवनका सच्चा रहस्य ही यह है कि दोनोंने अेक-दूसरेको अूपर अुठाया और महान बनाया है।

गुरुदेव टैगोर अेक जगह लिखते हैं "अुन दिनों भारतके तपस्वी गृहस्थ थे, क्योंकि तब घर मुक्तिमार्गमें बाधारूप नहीं था।" बा के जीवनका भी यही बोध है। बा बापूजीकी साधनामें और अुनके महाव्रतोंके पालनमें बाधक तो बनी ही नहीं, अुलटे धीमे-धीमे वे बापूके व्रतों, आदर्शों और सिद्धान्तोंको अपनाती गअी हैं, और वैसे-वैसे अुनका अपना विकास होता गया है। अिस दृष्टिसे बा को महान पतिव्रता कहा जा सकता है — पतिव्रता शब्दके प्रचलित अर्थमें तो वे पतिव्रता थीं ही, लेकिन अुससे बहुत विशाल अर्थमें भी वे पतिव्रता थीं। बा ने पतिके सभी व्रतोंको अपनाकर अुन पर आचरण किया था। अिसमें बा की विशेषता यह है कि ये सारे व्रत, सिद्धान्त और आदर्श बा के अपने नहीं थे। बा की महत्त्वाकांक्षा बापूकी तरह अपने जीवनको पूर्ण बनानेकी, मोक्षकी साधना करनेकी नहीं थी। जिसको खुद अैसी महत्त्वाकांक्षा होती है, वह तो अपनी अंदरकी प्रेरणासे प्रेरित होकर अैसा जीवन बिताता है। बा की तो वैसी भी कोअी महत्त्वाकांक्षा नहीं थी। अुनका अेक सहज स्वभाव था बापूके अनुकूल होकर रहनेका। यद्यपि अपनी समझके क्षेत्रकी बातोंमें बा के अपने ही स्वतंत्र विचार रहा करते थे और अुन विचारोंमें वे दृढ़ भी होती थीं, तो भी सार्वजनिक कामों, आश्रमके आदर्शों आदिके बारेमें वे निष्ठापूर्वक बापूका अनुसरण करती थीं और अिस तरह अनुसरण करते-करते अुन्होंने अपना विकास किया था अथवा ज्यादा सच तो यह है कि अुनका विकास हुआ था। क्योंकि अुन्होंने तो अैसे विकासकी भी आकांक्षा नहीं रखी थी। अुनका जीवन तो सहज

भावसे बीता है। अुनके सामने अेक ही ध्रुवतारा था जो बात समझमें न आये, अुसमें पतिका अनुसरण करना।

बापूके समान परम सत्याग्रही और ध्येयवादीका अनुसरण करनेके लिअे बा ने कुछ कम त्याग नही किया था। बापू जैसे तपस्वी पुरुषके साथ चलनेमें तो बीच-बीचमें भूकम्पके-से कठोर धक्के सहनेके मौके आते है। ज्वालामुखीके खौलते हुअे लावामें भी चलना पडता है। अितना होने पर भी बा अखीर तक पीछे नही हटी। अपनी अिच्छा-अनिच्छाका त्याग करके अनेक कठिनाअियो और परिवर्तनोंको सहकर पतिके रास्ते चलना आसान नही है। अिसके लिअे विपुल आत्मबल और अपूर्व समर्पणकी भावना जरूरी है। बा में ये दोनो बातें थी, या बा ने अिन दोनोका विकास किया था और यही वजह है कि वे गृहस्थ जीवनके दुस्तर समुद्रको कुशल तैराककी छटासे पार कर गअी।

बापू बहुत पढे-लिखे और बडे नेता और बा अनपढ, तिस पर बापू अपने जीवनमें अेकके बाद अेक बडे हेर-फेर करते रहे है, और अपने विचारोंके अमलका खूब आग्रह रखते है। अिसलिअे अिस सबके बीच बा की तो पूरी-पूरी कसौटी ही हो जाती थी। अिससे कुछ लोगोको यह भी लगता कि बा को अिन बातोका दु ख रहता होगा। लेकिन बा अिस कसौटीमें से कितने आनन्द और अुत्साहके साथ पार होती थी, अिसका सबूत अुनके लिखे अेक पत्रसे मिलता है। बा तो चाहती थी कि यह पत्र अैसी टीका करनेवाली अेक बहनको भेजा जाय और अखबारोमें भी छपनेको दिया जाय। लेकिन बापूने वह पत्र अुस बहनको भेजा ही नही; अखबारोमें तो वह छपता ही कैसे? सेवाग्राममें मैं महादेव काकाके कुछ पत्रोकी नकल कर रही थी, अुन्हीमें यह पत्र मुझे मिल गया। बापूकी अिजाजतसे अुसे यहा देती हू। असल गुजराती पत्रका चित्र सामनेवाले पृष्ठ पर दिया गया है। सुधार कर पढनेसे वह अिस तरह पढा जाता है -

शुक्रवार

अ० सौ० लीलावती,

तुम्हारा पत्र मुझे बहुत खटकता रहता है। तुम्हारे और मेरे बीच तो कभी बातचीतका भी बहुत मौका नही आया। फिर तुमने कैसे जाना

कि गाधीजी मुझे बहुत दुःख देते है? मेरा चेहरा अुतरा रहता है, वे मुझे खानेके बारेमें भी दुःख देते हैं, सो तुम देखने आअी थी? मेरे जैसा पति तो दुनियामें भी किसीके नही होगा। सत्यके कारण वह सारे ससारमें पूजा जाता है। हजारो अुनकी सलाह लेने आते है। हजारोको सलाह देते हैं। कभी, किसी दिन, बिना मेरी भूलके मेरा दोष नही निकाला। मैं दूरकी सोच न सकू, मेरी दृष्टि सकुचित हो, तो कहते हैं कि यह तो सारी दुनियामें होता ही आया है। गाधीजी अखबारोमें चर्चा करते है। दूसरे घरमें कलह मचाते है। अपने पतिके कारण तो मैं ससारमें पूजी जाती हू। मेरे सगे-सम्बन्धियोमें खूब प्रेम है। मित्रोमें मेरा बहुत मान है। तुम मुझ पर झूठा आरोप लगाती हो, सो कोअी मानेगा नही। मैं तुम्हारी तरह आजकलके जमानेकी नही हू। खूब आजादी लेना, पति तुम्हारे तावेमें रहे तो ठीक, नहीं तो तेरा और मेरा रास्ता अलग है। लेकिन सनातनी हिन्दूको यह शोभा नही देता।

पार्वतीजीका तो यह प्रण था कि 'जन्मोजन्म' शकर मेरे पति हैं।

लि० कस्तूर गाधी

४

संकटकी साथिन

पिछले प्रकरणमें यह कहा जा चुका है कि सन् १८९६ के अखीरमें जब बापूजी दूसरी बार अफ्रीका गये तब बा अुनके साथ थी। बापू जो थोडा वक्त हिन्दुस्तानमें रहे, अुस बीच अुन्होंने दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोकी हालतके बारेमें यहा कुछ भाषण दिये थे। अिन भाषणोकी खबरें तोड-मरोडकर और बढा-चढाकर दक्षिण अफ्रीका भेजी गअी थीं, जिनके कारण डरबनके गोरे लोग बापूसे चिढ गये थे। तिस पर वहा यह अफवाह फैलाअी गअी थी कि गाधी तो दो स्टीमर भरकर हिन्दुस्तानियोको लाया है, और नेटालको हिन्दुस्तानियोंसे भर देना चाहता है। अिस वजहसे वे बहुत ही अुत्तेजित हो अुठे थे और बापूके स्टीमरसे अुतरने पर अुन पर हमला करनेका अिरादा रखते थे।

अैसी हालतमें वहाके मन्त्रि-मण्डलके अेक सदस्य और डरबनके अेक खास कार्यकर्ताकी ओरसे स्टीमरके कप्तानको सदेशा मिला कि लोग अुत्तेजित है और गाधीकी जान जोखिममें है, अिसलिअे अुनको और अुनके परिवारको शामके वक्त अधेरा होनेके बाद स्टीमरसे अुतारना। लेकिन बापूके और हिन्दुस्तानियोंके अेक गोरे वकील मित्रको यह सूचना पसन्द नही पडी। अुन्होंने स्टीमर पर आकर बापूसे कहा "अगर आपको जिन्दगीका डर न हो, तो मै चाहता हू कि श्रीमती गाधी और बच्चे गाडीमें रुस्तमजी सेठके घर जाय और आप और मैं सरेआम रास्तेसे पैदल चलें। आप अधेरा होने पर चुपचाप शहरमें दाखिल हो, यह मुझे तो जरा भी नही रुचता। मै तो मानता हू कि आपका बाल तक बाका नही होगा। अब तो सब शान्त है, गोरे सब तितर-बितर हो गये है। और मेरी राय है कि कुछ भी क्यो न हो, आपको छिप कर तो हरगिज न जाना चाहिये।"

बापू अुनकी अिस रायसे सहमत हुअे। बा और बच्चे तागेमें रुस्तमजी सेठके घर सही-सलामत पहुचे। बापू अुन गोरे मित्रके साथ पैदल चले। ज्यो ही लोगोको पता चला वे सब जमा हो गये और अूधमी लोगोंके अुस दलने अुन मित्रको बापूसे अलग कर दिया और फिर बापूजी पर हमला किया। ककर-पत्थर, अण्डे, लात-घूसोंकी बापू पर वर्षा-सी की गअी। अिसी बीच पुलिसके अफसरकी पत्नी अुधरसे गुजरी। अुन्होंने बापूको पहचाना और अुन्हें बचानेके लिअे भीडके सामने खडी हो गअी। दूसरी तरफसे पुलिसकी मदद आ पहुची और बापू रुस्तमजी सेठके घर पहुचे। बापूको जो अन्दरूनी मार पडी थी, अुसका अिलाज स्टीमरके डॉक्टरने, जो वहा मौजूद थे, करना शुरू किया। गोरोकी भीडने घरको घेर लिया और धमकी देनी शुरू की कि गाधीको सौंपा न गया, तो मकानमें आग लगा दी जायगी। पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टकी हिकमतसे बापूजीको अुस घरसे भगाया गया। जब लोगोको पता चला कि अुनका शिकार छटक गया है, तो वे भी तितर-बितर हो गये।

बापूजीकी यह अेक बडी कसौटी थी। लेकिन साथ ही साथ बा की भी कितनी जबरदस्त कसौटी थी! खुद बा को मार तो नही पडी थी,

लेकिन स्वयं कष्ट सहन करनेकी अपेक्षा अेक अनजान देशमें पैर रखते ही अपने पतिके साथ संकटमें पड़ गये. कुछ समय अुन्हें कितनी घबराहट और कितनी चिन्ता हुआी होगी सो सोचने लायक है। बापूके जेलमें साथ रहनेकी यह घटना तो अपवाद ही हो गयी. लेकिन सबसे बा हमेशा बापूजीके संकटोंमें अुनकी साथिन रही है। बा के दिलमें हमेशा, खासकर तौरसे बापूजीके लिअे बराबर चिन्ता बनी ही रहती थी। अुन्होंने हमेशा अपने दिलमें अिस भावनाको पैदा किया था कि जब बापूजी आफतमें हों, तब वे और कहीं रह ही नहीं सकतीं। अिसके कुछ अुदाहरण 'स्त्री-जीवन' के विशेषांकमें श्री कुसुमबहन देसाअीने जो आश्रममें बापूजीके साथ कुछ काल रह चुकी हैं, अपने अेक लेखमें दिये हैं। अुन्हींमें से कुछ यहां दिये जाते हैं:

'अेक बार बहुत रात बीते बापूजी साबरमती आश्रममें सो रहे थे। सामने ओसरीमें बा और मैं सोअी थी। कोअी दो-ढाअी बजे बापूजी अेकाअेक अुठे और चल पड़े। बा जाग अुठीं और मुझसे पूछने लगीं: 'बापूजी कहां जाते होंगे? हम अुनके पीछे चलें? कहीं कुछ वैसा तो नहीं हुआ?' हम दोनों पीछे-पीछे गयीं और थोड़ी दूरसे ही बापूजीको देखा। बापूजीने कहा 'तुमने सोचा होगा कि मैं भाग जाअूंगा?' सड़क पर कोअी आदमी बिच्छूके काटनेसे रो रहा था। अुसका रोना सुनकर बापूजी अुधर गये थे।

"१९२९ में बापूजी कुछ समयके लिअे हिमालयके कौसानी नामक स्थानमें रहे थे। अुस समयकी यह घटना है:

"हिमालयमें सरदी और कुहरेका पार नहीं रहता, फिर भी बापूजी अपने नियमके अनुसार वहां खुलेमें ही सोते थे। अेक रातको सांपका बच्चा बापूजीके बिछौनेके पास चक्कर काट गया। नैनीतालसे आये हुअे कुछ कार्यकर्ता वहां बापूजीके स्वागत-सत्कारके लिअे ठहरे थे। अुनमेंसे अेकने अिस बच्चेको देखा। दूसरे दिन बापूजीसे यह बात कही गयी। सबने खुलेमें सोनेके बदले अन्दर सोनेका बहुत आग्रह किया। अिस पर बापूजी खूब हँसे और हमेशाकी तरह खुलेमें ही अपना बिस्तर लगवाया।

ह देखकर वा ने भी, जो रोज अन्दर सोती थी, अपना बिछौना बाहर करवाया और वापूजीकी जोखिममें खुद सहभागिन बनी।

"अुसी साल वापूजी वनारस गये थे। तब वहाके सनातनियोंने अुनके खिलाफ वहुत जोरोका आन्दोलन अुठाया था। आम सभामें बापूजीके साथ वा वगैरा कोअी गया नही था। ज्यो ही वा को पता चला कि सभामें वहुत गडवड मची है, वे खुद वहा जानेको तैयार हो गअी। वा, देवदासभाअी, जवाहरलालजी वगैरा सभास्थानकी ओर चले। रास्तेमें सामनेसे अुपद्रवी लोगोंकी अेक भीडने आकर मोटरको सभाकी जगह जानेसे रोकनेकी कोशिश की। देवदासभाअी और जवाहरलालजी मोटरसे अुतर पडे। जवाहरलालजीने दो-चारको पकडकर दूर हटाया और टोली तितर-बितर हो गअी। लेकिन भीड बहुत जोरोकी थी। अिसलिअे हम सभी मोटरसे अुतर गये। देवदासभाअी और जवाहरलालजी वा से अलग पड गये। अितनेमें पता चला कि सभामें पत्थर वरस रहे हैं। वा बोल अुठी 'सभामें पत्थर वरसते हो, वापूजी सभामे हो और मैं वाहर कैसे रहू?' और वा ने सभास्थानकी ओर चलना शुरू किया। हमने वडी कठिनाअीके साथ भीडको चीरा और हम सभाकी जगह पहुची।"

वापूजीके अनेक अुपवासोमें भी वा ज्यादातर अुनके साथ ही रही हैं, और वहुत फिकरके साथ अुन्होने अुनकी सार-सभाल की है। जब पति जीवन और मरणके बीच झोके खा रहा हो, अैसे समय विह्वल न होकर कडी छाती रखने और सेवा-चाकरीमें कोअी कमी न रहने देने जितना मन पर काबू रखनेके लिअे भी अद्‌भुत वीरताकी जरूरत होती है। वा में यह वीरता थी। सन् १९३२ में हरिजनोके सवालको लेकर जब यरवडा जेलमें वापूजीने आमरण अुपवास शुरू किये थे, तब वा सावरमती जेलमें थी। सौ० लाभुबहनने, जो सावरमती जेलमें अुनके साथ थी, वापूसे दूर रहनेके कारण अुस समय बा की बेचैनीका वर्णन करते हुअे लिखा है "हम भागवत पढते हैं, रामायण-महाभारत पढते हैं, लेकिन अुनमें कही अैसे अुपवासोकी बात नही आती। वापूकी तो बात ही और है। वे अैसा ही करते रहते हैं। अब क्या होगा?" साथकी बहनें आश्वासन देती कि सरकार कोअी रास्ता निकालेगी, अुनके

पास सेवा-चाकरी करनेवाले बहुत है, वगैरा। लेकिन बा को तो पल-पलमें यही विचार आता कि क्या हुआ होगा? क्या होगा?"

बहनें कहती "सरकार बापूको सब सहूलियतें देगी। आप क्यों फिकर करती हैं?" अिस पर बा जवाब देतीं "लेकिन बापू कोअी सहूलियत लें तब न? वे तो सभी बातोंमें असहयोग करते हैं। अुनके जैसा आदमी तो न कही देखा, न कही सुना। पुराणोकी बहुतेरी बातें सुनी हैं, लेकिन अैसा तप तो कही नही देखा।" फिर कुछ समय बीतता और बा खुद ही कहने लगती "वैसे कोअी दिक्कत नहीं होगी। महादेव वहा हैं, वल्लभभाअी हैं, सरोजिनीदेवी हैं। लेकिन मैं होअू तो फर्क पडे न?"

"मैं होअू तो फर्क पडे न?" अिस अेक वाक्यसे बा की समूची चिन्ता व्यक्त होती है। अुन्हें बराबर यह लगा करता था कि अुनके जितनी सार-सभाल दूसरे नही कर सकते और यह स्वाभाविक भी था, क्योंकि बापूजीको जितना वे जानती, अुनकी आदतोंका जितना ज्ञान अुन्हें होता, अुतना दूसरोंको कैसे हो सकता था और वे पहलेसे कैसे सब बातोंको सोच सकते थे? आखिर सरकारने बा को साबरमती जेलसे हटाकर बापूके पास यरवडा भेजा। बापूके पास पहुचकर बा ने अुलाहनेभरी आंखोंसे कहा 'यह फिर और क्या?' बापू चुप रहे। बा की प्रेमभरी चिन्तातुर आंखोंने और बापूके भक्तिभावसे भरे मौनने परस्पर बहुतसी बातें कह डालीं और बा ने आगे बिना कुछ कहे-सुने बापूकी तीमारदारीका जिम्मा ले लिया।

बिलकुल आखिरी घडी तक बा बापूके सकटमें अुनकी साथिन बनी रहीं, यह अुनका परम सौभाग्य ही माना जायगा। आगाखान महलमें बापूके अुपवासके समयकी कसौटी तो कडी-से-कडी कसौटी थी। अुस समयकी बा की दशाका वर्णन सुशीलाबहनने (अिस पुस्तकके दूसरे भागमें) अपने लेखमें सुन्दर ढगसे किया है।

५

सत्याग्रहकी गुरु

बापूने अपनी आत्मकथामें अिस घटनाका वर्णन 'अेक पुण्य-स्मरण और प्रायश्चित्त' शीर्षकसे किया है। सन् १८९८ के आसपासकी यह घटना है।

"जिस समय मैं डरबनमें वकालत करता था, तब अकसर मेरे कारकुन मेरे साथ ही रहते थे। अुनमें हिन्दू और ओसाअी थे, अथवा प्रान्तोंके हिसाबसे कहू तो गुजराती और मद्रासी थे। मुझे याद नही पडता कि अुनके विषयमें मेरे मनमें कभी भेदभाव पैदा हुआ हो। मैं अुन्हे बिलकुल अपने कुटुम्बीके जैसा समझता और अगर पत्नीकी ओरसे अुसमें कोअी रुकावट आती, तो मैं अुससे लडता-झगडता था। मेरा अेक कारकुन ओसाअी था। अुसके माता-पिता पचम जातिके थे। हमारे घरकी बनावट पश्चिमी ढबकी थी। अुसके कमरोमें मोरिया नही होती, और होनी भी नही चाहिये, अैसा मेरा मत है। अिसलिअे हरअेक कमरेमें मोरीके बदले पेशाबके लिअे अलगसे अेक बरतन रहता था। अुसे साफ करनेका काम नौकरका नही था, बल्कि हमारा — पति-पत्नी — दोनोका था। हा, जो कारकुन अपनेको घरका ही समझने लग जाते थे, वे तो अपने बरतनको खुद भी साफ कर डालते थे। ये पचम कुलमें जन्मे कारकुन नये थे। अुनका बरतन हमीको अुठाकर साफ करना था। दूसरे बरतन तो कस्तूरबाअी अुठाती और साफ करती थी, लेकिन अिन भाअीके बरतन अुठाना अुन्हें असह्य मालूम हुआ। हमारे बीच झगडा हुआ। मैं अुठाता हू तो अुनसे देखा नही जाता और खुद अुठाना अुनके लिअे कठिन था। आखोसे मोतीके बिन्दु बरसाती, हाथमें बरतन लिये मुझको अपनी लाल-लाल आखोसे अुलाहना देती, और सीढिया अुतरती हुअी कस्तूरबाअीको मैं आज भी ज्यो-का-त्यो चित्रित कर सकता हू।

"लेकिन मैं जितना प्रेमल अुतना ही कठोर पति था। मैं अपने आपको अुनका शिक्षक भी मानता था, अिसलिअे अपने अधप्रेमके अधीन होकर अुन्हे काफी सताता था।

"अिस तरह अुनके बरतनको अुठाकर ले जानेभरसे मुझे सन्तोष न हुआ। वे हसते हुअे अुसे ले जाय, तभी मुझे सन्तोष होता। अिसलिअे मैंने दो बात अूची आवाजमें कही और मैं गरज अुठा 'मेरे घरमें यह बखेडा नही चलेगा।'

"यह वचन तीरकी तरह चुभा। पत्नी खौल अुठी 'तो अपना घर अपने पास रखो, मैं चली।'

"मैं अीश्वरको भूल बैठा था। दयाका लेशमात्र मुझमें न रह गया था। मैंने अुसका हाथ पकडा। जीनेके सामने ही बाहर निकलनेका दरवाजा था। मैं अुस दीन अबलाको पकडकर दरवाजे तक खीच ले गया। दरवाजा आधा खोला।

"आखोंसे गगा-जमुना बह रही थी और कस्तूरबाअी बोलीं 'तुम्हें तो शरम नही, मुझे है। जरा तो शरमाओ। मैं बाहर निकलकर कहा जाती? यहा मा-बाप भी नही कि अुनके पास चली जाअू। मैं औरत ठहरी, अिसलिअे मुझे तुम्हारी थपत भी खानी ही होगी। अब जरा शरम करो और दरवाजा बन्द कर लो। कोअी देखेगा तो दोनोंकी फजीहत होगी।'

"मैंने अपना चेहरा तो सुर्ख बनाये रखा, लेकिन मनमें शरमा जरूर गया। दरवाजा बन्द किया। अगर पत्नी मुझे छोड नहीं सकती थी, तो मैं भी अुसे छोडकर कहा जा सकता था? हमारे बीच झगडे तो बहुत हुअे हैं, लेकिन परिणाम हमेशा शुभ ही हुआ है। पत्नीने अपनी अद्‌भुत सहनशीलतासे विजय पाअी है।

"आज मैं तटस्थ भावसे अिसका वर्णन कर सकता हू, क्योंकि यह घटना तो हमारे बीते युगकी है। आज मैं मोहान्ध पति नही हू। शिक्षक भी नही। चाहें तो कस्तूरबाअी आज मुझे धमका सकती हैं। हम आज कसौटी पर चढे हुअे भुक्तभोगी मित्र हैं। अेक-दूसरेके प्रति निर्विकार रहकर जी रहे हैं। वे मेरी बीमारीमें किसी भी प्रकारके बदलेकी अिच्छा किये बिना मेरी चाकरी करनेवाली सेविका हैं।"

अिस छोटीसी घटना द्वारा हम बा और बापूजीके अुस समयके गृह-जीवनकी थोडी झाकी कर सकते हैं। बा के देहान्तके बाद बापूको

आश्वासनके कअी पत्र और तार मिले थे। वाअिसरॉय लॉर्ड वेवेलके पत्रके जवाबमें बापूने लिखा था

" पहले तो अपनी पत्नीकी मृत्युके बारेमें आपकी ममताभरी समवेदनाके लिअे मैं आपका और लेडी वेवेलका आभार मानता हू। यद्यपि अपनी मृत्युके कारण वे सतत वेदनासे छूट गअी हैं अिसलिअे अुनकी दृष्टिसे मैंने अुनकी मौतका स्वागत किया है, तो भी अिस क्षतिसे मुझको जितना दु ख होनेकी कल्पना मैंने की थी अुससे अधिक दु ख मुझे हुआ है। हम असाधारण दम्पती थे। १९०६ में अेक-दूसरेकी स्वीकृतिसे और अनजानी आजमाअिशके बाद हमने आत्म-सयमके नियमको निश्चित रूपसे स्वीकार किया था। अिसके परिणामस्वरूप हमारी गाठ पहलेसे कही ज्यादा मजबूत बनी और मुझे अुससे बहुत आनन्द हुआ। हम दो भिन्न व्यक्ति नही रह गये। मेरी वैसी कोअी अिच्छा नही थी, तो भी अुन्होंने मुझमें लीन होना पसन्द किया। फलत वे सचमुच ही मेरी अर्धांगिनी बनी। वे हमेशासे बहुत दृढ अिच्छाशक्तिवाली स्त्री थी, जिनको अपनी नव-विवाहित दशामें मैं भूलसे हठीली माना करता था। लेकिन दृढ अिच्छाशक्तिके कारण वे अनजाने ही अहिंसक असहयोगकी कलाके आचरणमें मेरी गुरु बन गअी। अुस आचरणका आरम्भ मेरे अपने परिवारसे ही हुआ। १९०६ में जब मैंने अुसे राजनीतिके क्षेत्रमें दाखिल किया, तब अुसका अधिक विशाल और विशेष रूपसे योजित 'सत्याग्रह' नाम पडा। दक्षिण अफ्रीकामें जब हिन्दुस्तानियोकी जेलयात्रा शुरू हुअी, तब श्रीमती कस्तूरबा भी सत्याग्रहियोमें अेक थी। मेरे मुकाबले अुनको ज्यादा शारीरिक पीडा हुअी। वे कअी बार जेल जा चुकी थी, फिर भी अिस बारके अिस कैदखानेमें, जिसमें सभी तरहकी सहूलियतें मौजूद थी, अुनको अच्छा नही लगा। दूसरे बहुतोंके साथ मेरी और फिर तुरन्त ही अुनकी जो गिरफ्तारी हुअी, अुससे अुन्हे जोरका आघात पहुचा और अुनका मन खट्टा हो गया। वे मेरी गिरफ्तारीके लिअे बिलकुल तैयार नही थी। मैंने अुन्हें विश्वास दिलाया था कि सरकारको मेरी अहिंसा पर भरोसा है, और जब तक मैं खुद गिरफ्तार होना न चाहू, वह मुझे पकडेगी नही। सचमुच अुनके ज्ञान-तन्तुओंको अितने जोरका धक्का बैठा कि अुनकी गिरफ्तारीके बाद अुन्हें

दस्तकी सख्त शिकायत हो गअी। अगर अुस समय डॉ० सुशीला नय्यरने, जो अुनके साथ ही पकडी गअी थी, अुनका अिलाज न किया होता, तो मुझसे अिस जेलमें आकर मिलनेसे पहले ही अुनकी देह छूट चुकी होती। मेरी हाजिरीसे अुन्हें आश्वासन मिला और विना किसी खास अिलाजके दस्तकी शिकायत दूर हो गअी। लेकिन मन जो खट्टा हुआ था सो खट्टा ही वना रहा। अिसकी वजहसे अुनके स्वभावमें चिडचिडापन आ गया और अिसीका नतीजा था कि आखिर कष्ट सहते-सहते क्रम-क्रमसे अुनका देहपात हुआ।"

६

अपरिग्रहकी दीक्षा

वापूके साथ अुनके कुछ व्रतोंमें अनायास और अिच्छापूर्वक और कुछ दूसरे व्रतोंमें शुरू-शुरूमें अनिच्छापूर्वक और आयासपूर्वक, लेकिन वादमें समझके साथ, वा ने वापूका अनुसरण किया है। अपरिग्रहके मामलेमें वा को ठीक-ठीक कोशिश करनी पडी है। अिसका पहला अुदाहरण आत्मकथासे लेकर वापूकी ही भाषामें नीचे दिया है

"लडाअीके (सन् १८९७ से १८९९ तकका वोअर-युद्ध) कामसे छुट्टी पानेके वाद मुझे लगा कि अव मेरा काम दक्षिण अफ्रीकामें नही, वल्कि देशमें है। मैंने साथियोंसे मुक्त होनेकी अिजाजत चाही। वडी मुश्किलसे शर्तके साथ मेरी माग मजूर की गअी। शर्त यह थी कि अगर अेक सालके अन्दर कौमको मेरी जरूरत मालूम हो, तो मुझे वापस दक्षिण अफ्रीका पहुचना चाहिये। मुझको यह शर्त कडी लगी। लेकिन मैं प्रेमपाशमें वधा था। मित्रोंकी वातको मैं ठुकरा नही सकता था। मैंने वचन दिया और अिजाजत हासिल की।

"यों कहना चाहिये कि अिस समय मेरा निकट सम्वन्ध नेटालके साथ ही था। नेटालके हिन्दुस्तानियोंने मुझको प्रेमामृतसे नहला दिया। जगह-जगह मानपत्र देनेकी सभायें हुअी और हरअेक जगहसे कीमती भेंटें

मिली। भेंटोमें सोने-चादीकी चीजें तो थी ही, लेकिन अनमें हीरेकी चीजें भी थी।

"और अिन भेंटोमें ५० गिन्नियोका अेक हार कस्तूरबाअीके लिअे था। लेकिन अुन्हें मिली हुअी चीज भी मेरी सेवाके सिलसिलेमे थी, अिसलिअे अुसे अलग नही गिना जा सकता था।

"जिस शामको अिन अुपहारोमें से खास-खास अुपहार मिले थे, वह रात मैंने बावरेकी भाति जागकर बिताअी। अपने कमरेमें चक्कर काटता रहा, लेकिन अुलझन सुलझती नही थी। सैकडोकी कीमतके अुपहारोको छोड देना बहुत मुश्किल मालूम होता था। रखना अुससे भी ज्यादा मुश्किल लगता था।

"मैं शायद अिन भेंटोको पचा सकू, लेकिन मेरे बच्चोका क्या? स्त्रीका क्या? अुन्हें तालीम तो सेवाकी मिल रही थी। हमेशा यह समझाया जाता था कि सेवाका कोअी बदला नही लेना चाहिये। घरमें कीमती गहने वगैरा नही रखता था। सादगी बढती जाती थी। अब अिन गहनो और जवाहरातको मैं क्या करू?

"आखिर मैं अिस निर्णय पर पहुचा कि मुझे ये चीजें हरगिज न रखनी चाहिये। पारसी रुस्तमजी वगैराको अिन गहनोका ट्रस्टी मुकर्रर करके अुनके नाम अेक पत्रका मसविदा तैयार किया और तय किया कि सवेरे स्त्री-पुत्र वगैराके साथ चर्चा करके मैं अपने बोझको हलका कर लू।

"मैं जानता था कि धर्मपत्नीको समझाना मुश्किल होगा। साथ ही मुझे विश्वास था कि बच्चोको समझानेमें जरा भी मुश्किल नही होगी। अुनको वकील बनानेका विचार किया।

"बच्चे तो फौरन समझ गये। अुन्होने कहा 'हमें अिन गहनोकी जरूरत नही। हमको यह सब वापस ही दे देना चाहिये और अगर कभी हमें अैसी चीजोकी जरूरत हुअी, तो हम खुद कौन अुन्हे नही खरीद सकेंगे?'

"मैं खुश हुआ। मैंने पूछा — 'तो तुम बा को समझाओगे न?'

"'जरूर, यह काम हमारा है। अुन्हे कौन ये गहने पहनने हैं? वे तो हमारे लिये रखना चाहती है। हम अुन्हें नही चाहते, तो वे हठ क्यो करने लगी?'

"लेकिन काम जितना सोचा था, अुससे ज्यादा मुश्किल साबित हुआ। 'तुम्हें चाहे जरूरत न हो, तुम्हारे लडकोंको भी न हो। बालकोंको तो जैसा सिखाओ, सीखते हैं। चाहो, मुझको गहने मत पहनने दो, लेकिन मेरी बहुओंका क्या? अुनके तो काम आयेंगे। और कौन जानता है, कल क्या होगा? अितने प्रेमसे दी हुअी चीजें लौटाओ नहीं जाती।' अिस तरह वाग्धारा चली और अुनके साथ अश्रुधारा आ मिली। बालक दृढ रहे। मेरे डिगनेका कोअी सवाल नहीं था?

"मैंने धीमेसे कहा: 'लडकोंकी शादी तो होने दो। हमें कौन बचपनमें अिन्हें ब्याहना है? बडे होने पर ये भले जो चाहें, करें। और, हमें कौन गहनोंकी शौकीन बहुअें ढूंढनी हैं? फिर भी कुछ बनवाना ही पडा, तो मैं तो हूं ही न?'

"'तुम्हें मैं जानती हूं। तुम वही हो न कि जिनने मेरे गहने भी छीन लिये? तुमने जब मुझे सुखसे नहीं पहनने दिया, तो तुम मेरी बहुओंके लिअे क्या लोगे? बच्चोंको आजसे बैरागी बनाना चाहते हो? ये गहने नहीं लौटेंगे। और मेरे हार पर तुम्हारा क्या हक?'

"मैंने पूछा: 'लेकिन यह हार तुम्हारी सेवाके लिअे मिला है या मेरी?'

"'कुछ भी हो। तुम्हारी सेवा मेरी भी सेवा हुअी। मुझसे रात-दिन मजदूरी करायी, सो क्या सेवा नहीं मानी जायगी? मुझे रुला-रुलाकर हर किसीको घरमें रखा और चाकरी करवाअी, अुसका कोअी हिसाब नहीं?'

"ये सारे बाण नुकीले थे। अिनमें से कुछ चुभते थे। लेकिन गहने तो मुझे लौटाने ही थे। कअी बातोंमें मैं जैसे-तैसे बा की मंजूरी ले सका। १८९६में और १९०१में मिली हुअी भेंटें लौटा दीं। अुनका ट्रस्ट बना और सार्वजनिक कामके लिअे मेरी अिच्छाके अनुसार या ट्रस्टियोंकी अिच्छाके अनुसार अुनका अुपयोग किया जाय, अिस शर्त पर वे बैंकमें रखी गअीं।

"अपने अिस कार्यका मुझे कभी पछतावा नहीं हुआ। जैसे समय बीता, कस्तूरबाको भी अिसका औचित्य पट गया। हम बहुतसे प्रलोभनोंमें से बच गये हैं।

"मैं अिन नतीजे पर पहुंचा हूं कि सार्वजनिक सेवकको निजी अुपहार नहीं लेने चाहियें।"

* * *

अिस तरह बा को अपरिग्रहकी पहली दीक्षा सन् १९०१ में मिली। लेकिन पक्की दीक्षा तो अुनको अभी दूसरे ही गुरुओंसे मिलनेवाली थी।

साबरमती आश्रममें चोरोंका अुपद्रव हमेशासे रहता आया है। अलबत्ता, चोरोंको बहुत कीमती चीजें तो वहां मिलती नहीं थीं, लेकिन हमारे देश जैसे गरीब देशमें थोड़े कपड़-लत्तों अथवा बरतन-भांडोंके लिअे भी गरीब लोग चोरी करनेको तैयार हो जाते हैं। आश्रममें समय-समय पर अैसी चोरियां हुआ करती थीं। अेक बार बा के कमरेमें चोरी हुअी। ठीक खयाल तो नहीं है, लेकिन १९२६ या २७का साल था, चोर कपड़ोंसे भरी दो सन्दूकें अुठा ले गये। अुनमें से कपड़े-कपड़े सब ले लिये और पेटियां पासके खेतमें फेंककर चले गये। चोरीके सिलसिलेमें बातचीत चल रही थी। बापूने सवाल किया कि बा के पास दो सन्दूकें भरकर कपड़े होते ही कहांसे? और होने भी क्यों चाहिये? बा रोजकी नअी-नअी साड़ियां तो कुछ पहनती नहीं। बा ने कहा "चि० रामी और चि० मनु (हरिलालभाअीकी दो लड़कियां) की मां तो मर गअी है, लेकिन कभी-कदास जब वे मेरे पास आयें, मुझे अुनको दो कपड़े तो देने चाहियें न? अिसके लिअे जब-तब भेंटमें मिली हुअी साड़ियां और खादी मैंने रख छोड़ी थी।" अलबत्ता, अिस पर बापूकी दलील तो यही थी कि हम अिस तरहका संग्रह कर ही नहीं सकते और साड़ियां या खादी निजी भेंटके रूपमें मिली हो, तो भी तत्काल अुनकी जरूरत हो तभी वे अपने पास रखी जाय। जितनी फाजिल हो सो सब तो आश्रमके कार्यालयमें ही जमा करा देनी चाहियें। अुन गहनोंकी तरह अिस बार भी बा को अपने लिअे अिन चीजोंकी जरूरत थी ही नहीं। मांका दिल बेटीको कुछ-न-कुछ देनेके लिअे हमेशा छटपटाता है, और यही वजह थी कि बा ने साड़ियां और खादी जुटा कर रखी थी। बापूने शामको प्रार्थनामें अिसकी चर्चा करते हुअे कहा "हमको अैसा व्यवहार भी नहीं पुसाता। लड़कियां हमारे घर आयें, तो रहें और खायें-पीयें। लेकिन

"लेकिन काम जितना सोचा था, अुससे ज्यादा मुश्किल साबित हुआ। 'तुम्हे चाहे जरूरत न हो, तुम्हारे लड़कोको भी न हो। बालकोको तो जैसा सिखाओ, सीखते है। चाहो, मुझको गहने मत पहनने दो, लेकिन मेरी बहुओका क्या? अुनके तो काम आयेंगे। और कौन जानता है, कल क्या होगा? अितने प्रेमसे दी हुआी चीजें लौटाओी नही जाती।' अिस तरह वाग्धारा चली और अुनके साथ अश्रुधारा आ मिली। बालक दृढ रहे। मेरे डिगनेका कोओी सवाल नही था?

"मैंने धीमेसे कहा 'लड़कोकी शादी तो होने दो। हमें कौन बचपनमें अिन्हे ब्याहना है? बडे होने पर ये भले जो चाहें, करें। और, हमें कौन गहनोकी शौकीन बहुअें ढूंढनी है? फिर भी कुछ बनवाना ही पडा, तो मैं तो हू ही न?'

"'तुम्हे मैं जानती हू। तुम वही हो न कि जिनने मेरे गहने भी छीन लिये? तुमने जब मुझे सुखसे नही पहनने दिया, तो तुम मेरी बहुओके लिअे क्या लोगे? बच्चोको आजसे वैरागी बनाना चाहते हो? ये गहने नही लौटेंगे। और मेरे हार पर तुम्हारा क्या हक?'

"मैंने पूछा 'लेकिन यह हार तुम्हारी सेवाके लिअे मिला है या मेरी?'

"'कुछ भी हो। तुम्हारी सेवा मेरी भी सेवा हुआी। मुझसे रात-दिन मजदूरी कराओी, सो क्या सेवा नही मानी जायगी? मुझे रुला-रुलाकर हर किसीको घरमें रखा और चाकरी करवाओी, अुसका कोओी हिसाब नही?'

"ये सारे बाण नुकीले थे। अिनमें से कुछ चुभते थे। लेकिन गहने तो मुझे लौटाने ही थे। कओी बातोंमें मैं जैसे-तैसे बा की मजूरी ले सका। १८९६ में और १९०१ में मिली हुआी भेंटें लौटा दी। अुनका ट्रस्ट बना और सार्वजनिक कामके लिअे मेरी अिच्छाके अनुसार या ट्रस्टियोंकी अिच्छाके अनुसार अुनका अुपयोग किया जाय, अिस शर्त पर वे बैंकमें रखी गओी।

"अपने अिस कार्यका मुझे कभी पछतावा नही हुआ। जैसे समय बीता, कस्तूरबाको भी अिसका औचित्य पट गया। हम बहुतसे प्रलोभनोंमें से बच गये हैं।

"मैं अिस नतीजे पर पहुंचा हूं कि सार्वजनिक सेवकको निजी अुपहार नही लेने चाहिये।"

* * *

अिस तरह वा को अपरिग्रहकी पहली दीक्षा सन् १९०१ में मिली। लेकिन पक्की दीक्षा तो अुनको अभी दूसरे ही गुरुओसे मिलनेवाली थी।

सावरमती आश्रममें चोरोका अुपद्रव हमेशासे रहता आया है। अलवत्ता, चोरोको वहुत कीमती चीजें तो वहा मिलती नही थी, लेकिन हमारे देश जैसे गरीव देशमें थोडे कपड-लत्तो अथवा वरतन-भाडोके लिअे भी गरीव लोग चोरी करनेको तैयार हो जाते है। आश्रममें समय-समय पर अैसी चोरिया हुआ करती थी। अेक वार वा के कमरेमें चोरी हुअी। ठीक खयाल तो नही है, लेकिन १९२६ या २७का साल था, चोर कपडोसे भरी दो सन्दूकें अुठा ले गये। अुनमें से कपडे-कपडे सव ले लिये और पेटिया पासके खेतमें फेंककर चले गये। चोरीके सिलसिलेमें वातचीत चल रही थी। वापूने सवाल किया कि वा के पास दो सन्दूकें भरकर कपडे होते ही कहासे? और होने भी क्यो चाहिये? वा रोजकी नअी-नअी साडिया तो कुछ पहनती नही। वा ने कहा "चि० रामी और चि० मनु (हरिलालभाअीकी दो लडकिया) की मा तो मर गअी है, लेकिन कभी-कदास जव वे मेरे पास आयें, मुझे अुनको दो कपडे तो देने चाहिये न? अिसके लिअे जव-तव भेंटमें मिली हुअी साडिया और खादी मैंने रख छोडी थी।" अलवत्ता, अिस पर वापूकी दलील तो यही थी कि हम अिस तरहका सग्रह कर ही नही सकते और साडिया या खादी निजी भेंटके रूपमें मिली हो, तो भी तत्काल अुनकी जरूरत हो तभी वे अपने पास रखी जाय। जितनी फाजिल हो सो सव तो आश्रमके कार्यालयमें ही जमा करा देनी चाहिये। अुन गहनोकी तरह अिस वार भी वा को अपने लिअे अिन चीजोकी जरूरत थी ही नही। माका दिल वेटीको कुछ-न-कुछ देनेके लिअे हमेशा छटपटाता है, और यही वजह थी कि वा ने साडिया और खादी जुटा कर रखी थी। वापूने शामको प्रार्थनामें अिसकी चर्चा करते हुअे कहा "हमको अैसा व्यवहार भी नही शोभता। लडकिया हमारे घर आयें तो रहे और खायें-पीयें। लेकिन

जिन्होंने गरीबीका जीवन बितानेका व्रत लिया है, अुन्हें अिस तरहकी भेंट देना पुसाता नहीं।"' वगैरा-वगैरा। अिन चोर गुरुओंसे मिली हुअी दीक्षाके बाद बा ने अिस तरहके दो कपड़े भी कभी जुटा कर नहीं रखे।

अपनी निजी जरूरतोंके खयालसे तो बा के लिअे अपरिग्रह बिलकुल आसान था। अपनेको चुस्त आश्रमवासी मानने-मनवानेवाले भी बा की सादगीको देखकर शरमाते थे। मीराबहन लिखती हैं "जब हम लम्बा और कड़ा सफ़र करते थे, तब बापूजी कहा करते 'बा हम सबको हराती हैं। अितना कम सामान और अितनी कम जरूरतें दूसरे किनकी हैं? मैं सादगीका अितना अधिक आग्रह रखता हूं, फिर भी मेरा सामान बा के मुकाबले दुगना है।' हमारी सजग कोशिशोंके बाद भी हम बा की स्वाभाविक, किन्तु अचूक रूपसे स्वच्छ और भव्य सादगीके साथ किसी तरह होड़में टिक नहीं सकते थे। सारे दलमें अुनका बिस्तर सबसे छोटा होता था और अुनकी नन्ही-सी पेटी भी कभी अव्यवस्थित या ठसी-ठासी नहीं रहती थी।"

लेकिन यह तो भौतिक अपरिग्रहकी बात हुअी। बापूके साथ रहकर बा ने धीरे-धीरे अपनी आकांक्षाओं और अभिलाषाओंका परिग्रह तजा था, जो विशेष अुच्च और विशेष भव्य अपरिग्रह है।

बा के अिस अपरिग्रहकी या त्यागकी बापू खूब कदर करते थे। अेक बार आश्रममें हाल ही भरती हुअे अेक भाअीके साथ बापू बात कर रहे थे। बापूका अपना खयाल है कि चाय, कॉफी-जैसे पेय नुकसानदेह हैं। अिस पर अुन भाअीने बापूसे कहा "तो फिर बा आश्रममें रहकर कॉफी क्यों पीती है?"

बापूने फौरन जवाब दिया "लेकिन तुम्हें क्या पता कि बा ने कितना छोड़ा है? अुनकी यह अेक टेव रह गअी है। मैं अुन्हें अिसे भी छोड़ देनेको कहूं, तो मेरे जैसा जालिम और कौन होगा!"

तो भी अखीर अखीरमें तो बा ने खुद ही कॉफी पीना भी छोड़ दिया था और जब जरूरत मालूम होती थी, तुलसी और काली मिर्चका काढ़ा पी लेती थी।

७

जोहानिसबर्गमें बा का घर

'सत्याग्रहकी गुरु' नामक प्रकरणमें सन् १८९८की अेक घटनाक वर्णन किया है। अुससे हमें थोडा पता चलता है कि जब बापू डरबा (नेटाल) में वकालत करते थे, तब अुनका घर कैसा था। सन् १९०५ में ट्रान्सवालके जोहानिसबर्ग नगरमें वकालत करते थे। अुस समयके बापू औ बा के गृहस्थाश्रमका परिचय हमें श्रीमती पोलाककी 'मिस्टर गांधी — दि मैन नामक पुस्तकसे और आत्मकथासे मिलता है। श्रीमती पोलाक लिखती हैं

"घर शहरके बाहर अच्छे मध्यम श्रेणीके लोगोंके मोहल्लेमें था दुमजिला और अलग अहातेवाला बंगलानुमा घर था। अहातेमें बगीच था। और सामने छोटी-छोटी टेकरियोंवाला खुला मैदान था। मकानमें कुल आठ कमरे थे। दुमजिले परका बरामदा लम्बा-चौडा और खूब हवादार था। गरमियोंमें वहा सोया जा सकता था और सोनेके काममें अुसका अुपयोग होता भी था।

"परिवारमें गांधीजी, अुनकी पत्नी और तीन बालक थे। मणिलाल ११ सालके, रामदास ९ सालके और देवदास ६ सालके थे (हरिलाल अुन दिनों देश गये हुअे थे)। अिनके सिवा, तारघरमें काम करनेवाले अेक नौजवान अंग्रेज, गांधीजीके अेक हिन्दुस्तानी युवक रिश्तेदार और पोलाक — अितने लोग और थे। मैं अुनमें आ मिली, जिससे मकानमें और अधिकके लिअे सहूलियत नही रह गअी।

"सवेरे ६ बजे घरका पुरुषवर्ग चक्की पीसता था, (यहा यह याद रखना है कि बापूने जीवनमें परिवर्तन शुरू कर दिया था।) क्योंकि रोटी घर ही में बनाअी जाती थी। अेक कमरेमें चक्की रखी गअी थी, वहीं सब अिकट्ठा होते थे। पीसनेका काम तो कोअी आधे घण्टेमें पूरा हो जाता था, लेकिन चक्कीकी आवाजसे भी ज्यादा बातचीत और हसीकी आवाज होती थी। क्योंकि अुन दिनों घरमें हसीके फव्वारे बार-बार छूटते ही रहते थे। अुपयोगिताकी दृष्टिसे अिस कामके महत्त्वके अलावा अिससे सवेरे अच्छी कसरत भी हो जाती थी। दूसरी कसरत रस्सी कूदनेकी होती थी। बापू अुसमें निष्णात थे।

"घरमें शामकी व्यालूका समय ज्यादा-से-ज्यादा आनन्दमय रहता था। घरके सब लोग अुसी समय अेक जगह जमा होते थे। बापूको मेहमानदारीका बड़ा शौक था, अिसलिअे अैसा दिन तो शायद ही कभी बीतता, जब कोअी-न-कोअी मेहमान न हो। हर रोज शामके भोजनमें १० से १५ आदमी रहते।

"भोजनकी चीजें बहुत सादी रहती। मेज पर सब चीजें सजाकर ही जीमने बैठते थे, चुनाचे परोसनेके लिअे किसी नौकरके खड़े रहनेकी जरूरत नहीं पड़ती थी। भोजनमें पहले दो-तीन साग-भाजी, दाल, रोटी, सिकी हुअी रोटी, मूंगफली या दूसरे किसी मगजको पीसकर बनाया हुआ मक्खन और तरह-तरहके कच्चे सागोंका कचूमर, अितनी चीजें परोसी जाती थीं। दूसरी दफाके परोसनेमें दूध और फल रखे जाते थे और अुसके बाद ॠतुके अनुसार कॉफी या लेमनेड गरम या ठंडा पीया जाता था। भोजनमें कभी जल्दी नहीं होती थी। मेज पर पूरा अेक घण्टा बीतता था और जीमते समय कअी तरहकी चर्चायें हुआ करती थीं। आम तौर पर हल्के विषयोंकी चर्चा, हंसी-मजाक और गप-शप होती रहती थी। बापूमें विनोदकी वृत्ति तो खूब ही है, अिसलिअे किसी भी हंसीकी बातके निकलने ही वे खूब हंसते।

"अेक बार कुछ यूरोपियन भोजनका न्योता लेकर हमारे यहां आये। बापूकी अुनके साथ कोअी अच्छी पहचान नहीं थी, और बा तो अुन्हें बिलकुल ही नहीं पहचानती थी। अुन्होंने तो आते ही गृह-जीवनके बारेमें सीधे-सीधे और असभ्य मानी जानेवाली कुतूहल-वृत्तिके साथ सवाल पूछने शुरू किये। निजी मामलोंसे सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्नोंमें अुनके घमण्डका भी पता चलता था। लेकिन बापू तो शान्तिके साथ जवाब देते जाते थे। और, हिन्दुस्तानी लोग क्या करते हैं और क्या नहीं करते, अिसके बारेमें अुनकी कुछ बातें सुनकर खूब हंसते भी थे। लेकिन बा को तो यह सब देखकर गुस्सा हो आया और हमारे भोजनके कमरेमें दाखिल होनेसे पहले ही वे वहांसे चली गअीं। बापूने किसीके मारफत अुन्हें बुला भेजा, लेकिन वे नहीं आअीं। अिस पर बापू खुद बुलाने गये, मगर बा ने तो नीचे आनेसे अिनकार ही किया। बापूने लौटकर बा की गैरहाजिरीका थोड़ा खुलासा दिया और भोजन समाप्त हुआ। दूसरे दिन

जब मैं बा से मिली, तो अुन्होंने कहा 'अैसे निठल्ले लोग घरका रंग-ढंग देखने आवें और मेरे घरका मजाक अुडावें (To make laugh of me and my home), यह मुझसे तो नहीं सहा जाता। अैसे लोगोंसे मैं तो हरगिज न मिलूंगी। बापू मिलना चाहें तो भले मिलें।' मैं समझती हूं कि बापूजीने बा के अिस निश्चयको छुडानेके लिअे अुन्हें समझा देखा, लेकिन वे तो अपनी राय पर डटी ही रहीं और बापूजीकी अेक भी दलीलसे नहीं पसीजीं।"

अपनी आत्मकथामें बापूने लिखा है कि जीवनमें परिवर्तन करके अुन्होंने अपना घर कैसा बना लिया था। वे लिखते हैं

"बैरिस्टरके घरमें जितनी सादगी रखी जा सकती थी, अुतनी तो रखनी शुरू की ही। फिर भी कुछ सामान अैसा था, जिसके बिना काम चलाना मुश्किल था। सच्ची सादगी तो मनसे बढी। हरअेक काम अपने हाथों करनेका शौक बढा और अुसमें बालकोंको भी तैयार करना शुरू किया।

"बाजारकी रोटी लानेके बदले घर पर क्यूनेकी सूचनाके अनुसार बिना खमीरकी रोटी हाथसे बनाना शुरू किया। अिसमें पनचक्कीका आटा काम नहीं देता। साथ ही, यह भी खयाल था कि पनचक्कीके पिसे आटेका अिस्तेमाल करनेके बनिस्बत हाथके पिसे आटेका अिस्तेमाल करनेमें सादगी, आरोग्य और धनकी अधिक रक्षा होती थी। अिसलिअे ७ पौण्ड खर्च करके अेक हाथकी चक्की खरीदी। अिस चक्कीका पाट वजनदार था। दो आदमी अुसे आसानीसे चला लेते थे, अकेलेको तकलीफ होती थी। अिस चक्कीको चलानेमें पोलाक, मैं और बच्चे खास तौर पर शामिल होते थे। कभी-कभी कस्तूरबाओ भी आती, हालांकि अुनका वह समय रसोअी बनानेमें खर्च होता था। जब श्रीमती पोलाक आओ, तो वे भी अिसमें शरीक हो गओ। बच्चोंके लिअे यह कसरत बहुत अच्छी साबित हुआी। मैंने अुनसे यह या दूसरा कोओ भी काम जबरदस्ती नहीं करवाया, बल्कि वे खुद अिसे अेक खेल-सा समझकर चक्की चलाने आते थे। थकने पर छोड देनेकी आजादी अुन्हें थी ही। लेकिन कौन जाने क्या वजह थी कि क्या अिन बालकोंने और क्या दूसरोंने, मुझे तो खूब ही काम दिया। नटखट बालक भी मेरे नसीबमें थे ही।

लेकिन अुनमें से ज्यादातर सौंपे हुअे कामको खुशी-खुशी करते थे। 'थक गये' कहनेवाले तो अुस जमानेके थोडे ही बालक मुझे याद आते हैं।

"घर साफ रखनेके लिअे अेक नौकर था। वह कुटुम्बी बनकर रहता था और बालक अुसके काममें पूरा हाथ बटाते थे। पाखाना साफ करनेके लिअे म्युनिसिपैलिटीका नौकर आता था। लेकिन पाखानेके कमरेको साफ करने और बैठक वगैरा धोनेका काम नौकरको नहीं सौंपा जाता था। वैसी आशा भी नहीं रखी जाती थी। यह काम हम खुद करते थे और बालकोंको अिससे तालीम मिलती थी। नतीजा यह हुआ कि शुरू ही से मेरे अेक भी लडकेको पाखाना साफ करनेकी घिन न रही और आरोग्यके साधारण नियम भी वे सहज ही सीख गये। जोहानिसबर्गमें शायद ही कोअी कभी बीमार पडता था। लेकिन जब बीमारी आती थी, तो तीमारदारीके काममें बालक रहते ही थे और वे अिस कामको खुशी-खुशी करते थे।"

८

बा की दृढ़ता

हिन्दूधर्मके संस्कार बा में कितने गहरे पैठ गये थे, अिसकी यह अेक कहानी है। मर जाना मंजूर है, लेकिन मांस और शराब लेकर 'मानुस देह' को भ्रष्ट करना मंजूर नहीं — यह बा का निश्चय था। बापूजीकी आत्मकथामें यह प्रसंग लिया है

"खूनी बवासीरके कारण कस्तूरबाअीको बार-बार रक्तस्राव होता रहता था। अेक डॉक्टर मित्रने शस्त्रक्रिया (ऑपरेशन) की सिफारिश की। थोडी आनाकानीके बाद पत्नीने शस्त्रक्रिया कराना मंजूर किया। शरीर तो बहुत कमजोर हो गया था। डॉक्टरने बिना क्लोरोफॉर्म दिये शस्त्रक्रिया की। अुस समय दर्द तो खब होता था, लेकिन जिस धीरजसे कस्तूरबाअीने अुसे सहा, अुससे मैं तो आश्चर्यचकित हो गया। शस्त्रक्रिया निर्विघ्न समाप्त हुअी। डॉक्टरने और अुनकी पत्नीने कस्तूरबाअीकी सुन्दर शुश्रूषा की।

"यह घटना डरवनमें हुआी थी। दो या तीन दिन वाद डॉक्टरने मुझे विलकुल वेफिकर होकर जोहानिसवर्ग जानेकी अिजाजत दी। मैं गया। कुछ ही दिन वाद खवर मिली कि कस्तूरवाअीकी तवीयत जरा भी सभल नही रही है। वे विछौने पर अुठ-वैठ भी नही सकती है। अेक वार वेहोश भी हो गअी थी। डॉक्टर जानते थे कि मुझसे पूछे विना कस्तूरवाअीको दवाके साथ या खुराकके साथ शराव या मास नही दिया जा सकता। डॉक्टरने मुझे जोहानिसवर्गमें टेली-फोन पर कहा 'आपकी पत्नीको मै मासका शोरवा या 'वीफ-टी' देनेकी जरूरत समझता हू। मुझे अिजाजत मिलनी चाहिये।'

"मैंने जवाव दिया 'मै यह अिजाजत नही दे सकता। लेकिन कस्तूरवाअी स्वतत्र है। अुनसे पूछने-जैसी हालत हो तो पूछिये और वे लेना चाहें तो विलाशक दीजिये।'

"'रोगीसे अिस तरहकी वातें मैं पूछना नही चाहता। आपको खुद यहा आ जाना चाहिये। अगर आप मुझको, मै जो चाहू, खिलानेकी अिजाजत नही देते, तो आपकी स्त्रीके लिअे मै जिम्मेदार नही।'

"मैंने अुसी दिन डरवनकी ट्रेन पकडी। डरवन पहुचा। डॉक्टरने खवर दी 'मैंने तो शोरवा पिलाकर ही आपको फोन किया था।'

"'डॉक्टर, अिसे मै दगा समझता हू'—मैंने कहा।

"'अिलाज करते समय मै दगा-वगा कुछ नही जानता। हम डॉक्टर लोग अैसे समय रोगीको और अुसके रिश्तेदारोको धोखा देनेमें पुण्य समझते है। हमारा धर्म तो किसी भी तरह रोगीको वचाना है।' डॉक्टरने दृढतापूर्वक जवाव दिया।

"मुझे वहुत दु ख हुआ। मै शान्त रहा। डॉक्टर मित्र थे, सज्जन थे। अुनका और अुनकी पत्नीका मुझ पर अुपकार था, लेकिन अुनके अिस व्यवहारको सहन करनेके लिअे मै तैयार नही था।

"'डॉक्टर, अव साफ-साफ वात कर लो। क्या करना चाहते हो? मै अपनी पत्नीको अुसकी अिच्छाके विना कभी मास नही देने दूगा। मास न लेनेसे अुसकी मृत्यु होनेवाली हो, तो अुसे सहनेके लिअे मै तैयार हू।'

"डॉक्टरने कहा 'आपकी फिलासफी मेरे घर बिलकुल नही चलेगी। मैं आपसे कहता हू कि जब तक आप अपनी पत्नीको मेरे घर रहने देंगे, मैं अुनको मास या जो भी कुछ देना मुनासिब होगा, जरूर दूगा। अगर अैसा करना मजूर न हो, तो आप अपनी पत्नीको ले जाअिये। अपने ही घरमें जान-बूझकर मैं अुनकी मौत नही होने दूगा।'

"'तो क्या आप यह कहते हैं कि मुझे अपनी पत्नीको अभी ले जाना चाहिये ?'

"'मैं कब कहता हू कि ले जाअिये? मैं तो कहता हू कि मुझ पर किसी तरहका अकुश न रखिये। तभी हम दोनो अुनकी जितनी बन सकेगी सेवा-शुश्रूषा करेंगे और आप निश्चिन्त होकर जा सकेंगे। अगर यह सीधी बात भी आप न समझ सकें, तो मुझे लाचार होकर यह कहना होगा कि आप अपनी पत्नीको मेरे घरसे ले जाअिये।'

"मेरा खयाल है कि अुस समय मेरा अेक लडका मेरे साथ था। मैंने अुससे पूछा। अुसने कहा 'आपकी बात मुझे मजूर है। बा को मास तो हरगिज नहीं दिया जा सकता।'

"फिर मैं कस्तूरबाअीके पास गया। वे बहुत कमजोर थीं। अुनसे कुछ भी पूछना मेरे लिअे दु खदायी था। लेकिन धर्म समझकर मैंने अुन्हें अूपरकी सारी बातचीत थोडेमें कह सुनाअी। अुन्होने दृढता-पूर्वक जवाब दिया 'मैं मासका शोरवा नही लूगी। 'मानुस देह' बार-बार नही मिलती। भले मैं आपकी गोदमें मर जाअू। लेकिन मैं अपनी देहको भ्रष्ट नही करूगी।'

"मैंने जितना समझाया जा सकता था समझाया और कहा 'तुम मेरे विचारोका अनुसरण करनेके लिअे बधी नही हो।' यह भी कहा कि हमारी जान-पहचानके कुछ हिन्दू दवाके रूपमें मास और शराब लेते हैं। लेकिन वे टस-से-मस न हुअी और बोली 'मुझे यहासे ले चलो।'

"मैं बहुत खुश हुआ। ले जाते घबराहट हुअी, लेकिन निश्चय कर लिया। डॉक्टरको पत्नीका निश्चय कह सुनाया। डॉक्टर गुस्सा होकर बोले 'तुम तो निष्ठुर पति मालूम होते हो। अैसी बीमारीमें अुस

बेचारीसे अिस तरहकी बात करते तुम्हें शरम भी न आअी? मैं तुमसे कहता हू कि तुम्हारी स्त्री यहासे ले जाने लायक नही है। अुसका शरीर अब अैसा नही रहा कि थोडे भी धक्के-दचके सहन कर सके। रास्तेमें ही अुसका प्राण छूट जाय तो मुझे आश्चर्य न होगा। अितने पर भी तुम हठवश नही ही मानोगे, तो तुम तुम्हारी जानो। अगर मैं अुसे शोरवा नही दे सकता, तो अुसको अपने घरमें रखनेकी जोखिम भी नही अुठा सकता।'

"रिमझिम-रिमझिम मेह बरस रहा था। स्टेशन दूर था। डरबनसे फिनिक्स तक रेलका रास्ता था और फिनिक्ससे करीब २॥ मीलका पैदल रास्ता था। खतरा काफी था, लेकिन मैंने मान लिया कि अीश्वर सहायता करेगा। मैंने पहलेसे अेक आदमीको फिनिक्स भेज दिया। फिनिक्समें हमारे पास 'हैमक' था। यह जालीदार कपडेकी अेक झोली या पालना-सा होता है। बासो पर अिसके छोर बाध देनेसे रोगी अिसमें आरामके साथ झूलता रह सकता है। मैंने मिस्टर वेस्टके नाम सदेशा भेजा कि वे 'हैमक', अेक बोतल गरम दूध और अेक बोतल गरम पानी और छह आदमियोको लेकर फिनिक्स स्टेशन पर आयें।

"जब दूसरी ट्रेनके छूटनेका समय हुआ, तो मैंने रिक्शा मगवाअी और अुस भयकर हालतमें पत्नीको रिक्शामें बैठाकर मैं चल पडा।

"पत्नीको हिम्मत दिलानेकी मुझे कोअी जरूरत नही पडी। अुलटे अुसीने मुझको हिम्मत देते हुअे कहा 'मुझे कुछ नही होगा। आप चिन्ता न करें।'

"हड्डियोके अुस ढाचेमें वजन तो कुछ रह ही नही गया था। खुराक कुछ ली नही जाती थी। ट्रेनके डब्बे तक पहुचनेके लिअे स्टेशनके लम्बे-चौडे प्लेटफॉर्म पर दूर तक चलकर जाना था। रिक्शा वहा तक जा नही सकती थी। मै अुन्हें अुठाकर डब्बे तक ले गया। फिनिक्समें तो वह झोली आ गअी थी। अुसमें हम रोगीको आरामके साथ ले गये। वहा सिर्फ पानीका अिलाज करनेसे धीरे-धीरे शरीर सशक्त बना।

"फिनिक्स पहुचनेके कोअी दो-तीन दिन बाद ही यहा अेक स्वामी पधारे। हमारे 'हठ' की बात सुनकर अुन्होंने दया जताअी और

वे हम दोनोंको समझाने आये। जैसा कि मुझे याद पड़ता है, जब स्वामीजी आये तब मणिलाल और रामदास हाजिर थे। स्वामीजीने मांसाहारकी निर्दोषता पर व्याख्यान देना शुरू किया, मनुस्मृतिके श्लोकोंका हवाला दिया। पत्नीकी अुपस्थितिमें अुन्होंने यह चर्चा चलाअी, यह मुझे अच्छा न लगा। लेकिन विनयके विचारसे मैंने अिस चर्चाको चलने दिया। मांसाहारके समर्थनमें मुझको मनुस्मृतिके प्रमाणकी जरूरत नहीं थी। मुझे अुन श्लोकोंका पता था। मैं जानता था कि अुन्हें प्रक्षिप्त समझनेवाले लोग भी हैं। किन्तु वे प्रक्षिप्त न हों, तो भी अन्नाहारके विषयमें मेरे विचार स्वतन्त्र रीतिसे बन चुके थे। कस्तूरबाअीकी श्रद्धा अपना काम कर रही थी। वे बेचारी शास्त्रके प्रमाणोंको क्या समझें? अुनके लिअे तो बापदादाकी रूढि ही धर्म थी। बालकोंको अपने बापके धर्म पर विश्वास था, अिसलिअे वे स्वामीके साथ विनोद कर रहे थे। अन्तमें कस्तूरबाअीने अिस चर्चाको यह कहकर बन्द किया

"'स्वामीजी, आप कुछ भी क्यों न कहें, लेकिन मुझे मांसका शोरबा खाकर स्वस्थ नहीं होना है। अब आप मेरा सिर न पचायें, तो आपका अुपकार होगा। बाकी बातें करना चाहें, तो लड़कोंके बापके साथ बादमें कीजिये। मैंने अपना निश्चय आपको जता दिया।'"

९

बापूको बचाया

जिस तरह बापूने बा को बचाया, अुसी तरह बा ने बापूको भी अद्‌भुत रीतिसे बचाया है। यह कहना बिलकुल गलत न होगा कि आज बापू जो हमारे बीच हैं, सो बा के ही प्रतापसे हैं।

यह मानकर कि दूध प्राणिज पदार्थ है, और अिस कारण मांसके जैसी ही खुराक है, बापूने अेक अरसेसे दूध छोड़ रखा था। तिस पर जब अुन्हें पता चला कि गायों और भैंसों पर अुनसे अधिक-से-अधिक दूध पानेके लिअे कलकत्ते और दूसरे शहरोंमें फूकेकी क्रिया की जाती है तभीसे अुन्होंने दूध न पीनेकी प्रतिज्ञा कर ली थी।

अुन दिनो बापूका मुख्य आहार सिकी हुअी और कुटी हुअी मूगफली, गुड, केले और दो-तीन नीबुओका पानी, अितना ही था। अेक दिन कुछ ज्यादा मूगफली खा जानेकी वजहसे बापूको पेचिशकी थोडी शिकायत हो गअी। अुन्होने कोअी परवाह नही की। दूसरे दिन कोअी त्यौहार था। बापू दूध या घी तो खाते नही थे, अिसलिअे बा ने अुनके वास्ते दले हुअे गेहूकी लपसी तेलमें तैयार की थी और पूरे मूग बनाये थे। बापूका अिरादा तो खानेका नही था, लेकिन कुछ तो स्वादके वश होकर और कुछ बा को खुश करनेके खयालसे वे जीमने बैठे। थोडा ही खाकर अुठ जानेके अिरादेसे बैठे, थे, लेकिन कुछ ज्यादा खा गये। खायेको अभी पूरा घटा भी नही हुआ था कि जोरके दर्दके साथ पेचिश शुरु हो गअी। खेडा जिलेके मशहूर सत्याग्रहके बाद रगरूटोकी भरतीके वे दिन थे और अुसके सिलसिलेमें अुसी दिन शामको अुन्हें नडियाद जाना था। पेचिशकी परवाह किये बिना बापू वहा गये। लेकिन वहा जाने पर बीमारी बहुत बढ गअी। पाव-पाव घटेसे दस्त होने लगे। और चौबीस घटोमें तो बापूका सुगठित शरीर बिलकुल लुज-पुज हो गया। डॉक्टर आये, लेकिन दवा न लेनेके अुनके आग्रहके खिलाफ किसीकी कुछ चली नही। अच्छी-से-अच्छी सार-सभालके बावजूद शरीर क्षीण होने लगा। पानीके और अैसे ही दूसरे अिलाजोकी मददसे बापूने रोग तो मिटा लिया। लेकिन शरीर किसी भी तरह पनप नही पाया। दो-तीन मित्रोने दूधका और दूध न लें तो मासका शोरवा या अण्डे लेनेका आग्रह किया। लेकिन जिसने दूधको मासवत् मानकर छोड दिया हो, वह अिन चीजोको लेना कैसे कबूल करे? किसीने सलाह दी कि माथेरान जानेसे शरीर पनपेगा, अिसलिअे बापू माथेरान गये। लेकिन वहाका पानी भारी साबित हुआ, अिसलिअे वहा बिलकुल जमा नही और वे बम्बअी आये। बम्बअीमें डॉक्टर दलालने अुनके शरीरकी जाच की और अपना अिलाज शुरु करनेसे पहले कहा "जब तक आप दूध न लेंगे, मैं आपके शरीरको पुष्ट नही बना सकूगा। आपको दूध और लोहा और 'मोमल' की पिचकारी लेनी चाहिये। आप अितना करें तो आपके शरीरको फिरसे ठीक-ठीक पुष्ट बनानेकी गारण्टी मैं दू।"

"पिचकारी दीजिये, लेकिन दूध मैं न लूंगा।"

"दूधके बारेमें आपकी प्रतिज्ञा क्या है?"

"जबसे मैंने यह जाना है कि गाय-भैंस पर फूकेकी क्रिया होती है, तबसे मुझे दूधसे नफ़रत हो गयी है, और मैं हमेशासे मानता हूं कि दूध मनुष्यकी खुराक नहीं है। अिसलिअे मैंने दूध छोड़ा है।"

बा बापूकी खटियाके पास ही खड़ी थीं। वे बोल अुठीं "तब तो बकरीका दूध ले सकते हैं।" अपने मनकी-सी बात सुनकर डॉक्टर अुत्साहमें आ गये और बोले "आप बकरीका दूध लें, तो मेरा काम बन जाय।"

बापूने बा की और डॉक्टरकी सलाह मान ली। बापूके समान सत्यके पुजारीको प्रतिज्ञाकी आत्माका घात करनेका दुःख तो रह ही गया। लेकिन प्रतिज्ञाके शब्दार्थका पालन हुआ।

अिस प्रकार, हम यह कह सकते हैं कि बा की समय-सूचकताने और सहज बुद्धिने बापूको जिलाया।

१०

पहली स्त्री-सत्याग्रही

आजकल जेल जाना बहुत आसान बात हो गयी है, लेकिन पहले तो जेलका नाम सुनकर लोग डरते थे। अुस समय किसीको यह कल्पना तो थी ही नहीं कि स्त्री जेलमें जा सकती है, लेकिन बापूजी तो जिनकी कल्पना भी नहीं होती, अैसे बहुतेरे काम करते-कराते आये हैं। दक्षिण अफ्रीकामें सन् १९१३ में अेक अैसा कानून पास हुआ कि अीसाअी धर्मके अनुसार किये गये ब्याहके सिवा — जो विवाह-विभागके अधिकारीके यहां दर्ज हुअे हों — दूसरे सब ब्याहोंको कानूनमें कोअी जगह नहीं। अिसका मतलब यह हुआ कि हिन्दू, मुसलमान, पारसी वगैरा धर्मोंके अनुसार की गयी शादियां अिस कानूनके अनुसार रद्द मानी गयीं, और अिस कारण बहुतसी विवाहिता हिन्दुस्तानी स्त्रियोंका दरजा अुनके पतिकी धर्मपत्नीका न रहकर रखैलका माना गया। यह अेक अैसी स्थिति थी, जिसे स्त्री-पुरुष दोनों सह नहीं सकते थे। बापूने अिस कानूनको

रद्द करनेके लिअे वहाकी सरकारके साथ बातचीत चलाअी, लेकिन अुसका कोअी नतीजा नही निकला। अत बापूने सत्याग्रह करनेका निश्चय किया। अुन्होंने अिस लडाअीमें स्त्रियोको भी न्योतनेका निश्चय किया। 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' नामक पुस्तकमें बापू लिखते है

"मै जानता था कि बहनोको जेल भेजनेका काम बहुत खतरनाक था। फिनिक्समें रहनेवाली अधिकतर बहनें मेरी रिश्तेदार थी। वे सिर्फ मेरे लिहाजके कारण ही जेल जानेका विचार करें और फिर अैन मौके पर घबराकर या जेलमें जानेके बाद अुकताकर माफी वगैरा माग लें तो मुझे सदमा पहुचे। साथ ही, अिसकी वजहसे लडाअीके अेकदम कमजोर पड जानेका डर भी था। मैंने तय किया था कि मै अपनी पत्नीको तो हरगिज नही ललचाअूगा। वे अिनकार भी नही कर सकती थी और 'हा' कह दें तो अुस 'हा' की भी कितनी कीमत की जाय, सो मै कह नही सकता था। अैसे जोखिमके काममें स्त्री खुद होकर जो निश्चय करे, पुरुषको वही मान लेना चाहिये और कुछ भी न करे तो पतिको अुसके बारेमें तनिक भी दु खी नही होना चाहिये, अितना मै समझता था। अिसलिअे मैंने अुनके साथ कुछ भी बात न करनेका अिरादा रखा था। दूसरी बहनोसे मैंने चर्चा की। वे जेलयात्राके लिअे तैयार हुअी। अुन्होंने मुझे विश्वास दिलाया कि वे हर तरहका दु ख सहकर भी अपनी जेलयात्रा पूरी करेंगी। मेरी पत्नीने भी अिन सब बातोका सार जान लिया और मुझसे कहा

"'मुझसे अिस बातकी चर्चा आप नही करते, अिसका मुझे दु ख है। मुझमें अैसी क्या खामी है कि मै जेल नही जा सकती? मुझे भी अुसी रास्ते जाना है, जिस रास्ते जानेकी सलाह आप अिन बहनोको दे रहे है।'

"मैंने कहा 'मै तुम्हें दु ख पहुचा ही नही सकता। अिसमें अविश्वास-की भी कोअी बात नही। मुझे तो तुम्हारे जानेसे खुशी ही होगी। लेकिन तुम मेरे कहने पर गअी हो, अिसका तो आभास तक मुझे अच्छा नही लगेगा। अैसे काम सबको अपनी-अपनी हिम्मतसे ही करने चाहिये। मै कहू और मेरी बात रखनेके लिअे तुम सहज ही चली जाओ, और बादमें अदालतके सामने खडी होते ही काप अुठो

और हार जाओ या जेलके दुःखसे ऊब अुठो, तो अिसे मैं अपना दोष तो नही मानूगा, लेकिन सोचो कि मेरे क्या हाल होगे? मैं तुमको किस तरह रख सकूगा और दुनियाके सामने किस तरह खडा रह सकूगा? बस, अिस भयके कारण ही मैंने तुम्हें ललचाया नही।'

"मुझे जवाब मिला 'मैं हारकर छूट आअू तो मुझे मत रखना। मेरे बच्चे तक सह सकें, आप सब सहन कर सकें और अकेली मैं ही न सह सकू, अैसा आप सोचते कैसे हैं? मुझे अिस लडाअीमें शामिल होना ही होगा।'

"मैंने जवाब दिया 'तो मुझे तुमको शामिल करना ही होगा। मेरी शर्तें तो तुम जानती ही हो। मेरे स्वभावसे भी तुम परिचित हो। अब भी विचार करना हो, तो जरूर कर लेना और भलीभांति सोचनेके बाद यदि तुम्हें यह लगे कि शामिल नही होना है, तो समझना कि तुम अिसके लिअे आजाद हो। साथ ही, यह भी समझ लो कि निश्चय बदलनेमें अभी शरमकी कोअी बात नही है।'

"मुझे जवाब मिला 'मुझे विचार-विचार कुछ नही करना है। मेरा निश्चय ही है।'"

* * *

बापूने लडाअी शुरू की और अुसकी शुरुआतमें बा और तीन दूसरी बहनें जेल गअीं। वॉलक्रस्टके जेलमें दाखिल होनेके दूसरे ही दिन जो घटना घटी, श्री प्रभुदास गांधीने 'जीवनका प्रभात' नामक अपनी पुस्तकमें अुसका वर्णन किया है। वहाका जेलर गुजराती नही जानता था और बहनें अंग्रेजी नही जानती थीं। अुनके नाम या पते और पहचान लिख लेनी थी। जेलरने श्री छगनलाल गांधीको दुभाषियेका काम करनेके लिअे आफिसमें बुलाया और कारकुनसे कहा कि वह सवालोंके जवाब ले ले.

कारकुन (बा को दिखाकर) ये जो खडी हैं, अिनका नाम पूछो।

छगनलाल गांधी (बा से) अिस कृष्ण-भवनकी पहली रात कैसे बीती?

बा हम तो अंधेरा होनेके बाद भजन-कीर्तन करके आरामसे सो गअीं।

छगनलाल गाधी (कारकुनसे) अिनका नाम कस्तूरवा।

कारकुन (वा को दिखाकर) अिनकी शादी हुअी है?

छगनलाल गाधी (वा से) रात व्यालू किया था?

वा मुझको तो फलाहार चाहिये। अिन सवने तो आये हुअे रोटी और सागको सूघकर रख दिया। कहने लगी, अैसे घिनौने वरतनमें कैसे खाया जाय? और अैसा वसाता साग कोअी मुहमें कैसे डाले?

छगनलाल गाधी (कारकुनसे) अिनकी शादी हुअी है। अिनके पतिका नाम मोहनदास करमचन्द है। अिसके वाद अुमर, जात, वतन वगैराके वारेमें अेकके वाद अेक चारोंसे सवाल पूछे गये और छगनलाल गाधीने पहली रातके पूरे समाचार जाने और पहुचाये। वा के फलाहारके वारेमें भी चर्चा की और अुन्हें वताया कि हनुमानजी (मि० कैलनवेक) वॉलक्स्ट आ पहुचे है और खवर यह है कि वे जेलरसे मिलकर फल पहुचानेका वन्दोवस्त करनेवाले है।

लेकिन तीन-चार दिनमें सवका तवादला मैरित्सवर्ग जेलमें हो गया। तवादला होनेसे पहले खवर आअी कि वा को फल नही दिअे गये और वा की तो प्रतिज्ञा थी कि कुछ भी क्यो न हो, जेलमें फलाहार ही करेंगी। अगर जेलवाले फलोका अिन्तजाम न करें तो भूखो रहना, मरनेकी नौवत आये तो मर जाना। जेलके अधिकारियोने अिस प्रतिज्ञाकी कोअी परवाह नही की और कहा 'अैसे ढोग करने थे तो जेल क्यो आअी?'

वा के लिअे दूसरा कोअी अुपाय न रह गया। अुन्होने अुपवास शुरू किया। अेक, दो, तीन दिन हो गये, अितनेमें अुन पर हुकूमत चलानेवाली मेंट्रन ठडी पड गअी। वोली "हमें तो सुवह अेक वक्तकी चाय नही मिलती, तो हमारा सिर घूमने लगता है और तुम दुवली-पतली होकर तीन-तीन दिन विना खाये कैसे रहती हो? हम लाचार है। तुम्हारे लिअे कुछ भी नही कर सकते। जेलमें मुहमागा खानेको नही मिलता। मेहरवानी करके जो मिलता है, अुसीसे काम चलाओ।"

पाचवें दिन सरकार झुकी और वा को फल मिले। लेकिन वे अितनी कम तादादमें मिलते कि दरअसल वा को तीन महीने आधे पेट ही रहना पडा। सिर्फ तीन केले, चार 'प्रुन्स', दो टमाटर और दो

नींबू मिलते थे। अिसमें मूंगफली-जैसी अेक भी चीज नहीं थी, जिससे घी-तेलकी गरज पूरी होती। तीन महीने बाद जब बा जेलके दरवाजेसे बाहर आअी, तो बिलकुल हड्डियोंका ढांचा ही रह गअी थीं। अुनके दर्शन करनेवालोंकी आंखोंसे आंसू टपके बिना न रहे।

११

बा की सेवा-शुश्रूषा

जब बा मैरित्सबर्गके जेलमें रिहा हुअी, अुनकी तन्दुरुस्ती बहुत ही गिर गअी थी। पिछले प्रकरणमें अिसकी चर्चा हो चुकी है। बापू अुन्हें लिवाने जेल तक आये थे। बा की तन्दुरुस्ती और जर्जर बनी हुअी देहको देखकर बापूने पहली ही बात यह कही "तुम तो बहुत बूढ़ी हो गअी।" जेल ही में बा की तबीयत खराब रहने लगी थी। बाहर आनेके बाद भी तन्दुरुस्ती सुधरनेके बदले और ज्यादा बिगड़ने लगी। जठराग्नि मन्द हो जानेकी वजहसे अुल्टियां होती थीं और सारे शरीरमें सूजन आ गअी थी। बापूने अिस पर घरेलू दवायें दीं, लेकिन बा की सूजन जड़से नहीं मिटी। और कुछ ही समयमें तबीयतने फिर पलटा खाया। हाथों पर और पैरों पर सूजन बहुत ही बढ़ गअी। डॉक्टरोंने बहुतेरी दवायें दीं, लेकिन कोअी फर्क नहीं पड़ा। आखिर डॉक्टरकी दवासे बा भी अुकता गअीं। बापूने बा से कहा "अगर तुम्हें मुझ पर विश्वास हो, तो अब मैं तुम पर अपना प्रयोग करके देखूं।" बा ने मंजूर किया "तुम जैसा कहोगे, करूंगी।" बापूने कहा "अुपवास करने होंगे और दवामें नीमका रस लेना होगा।" बा ने यह भी मंजूर किया और अुसी दिनसे बापूका अिलाज शुरू हुआ।

बापूने बा से १४ दिनों अुपवास करवाये और नीमका सेवन करवाया। अिन दिनों बापूने बा की जो सेवा की, अुसका वर्णन करनेके लिअे शब्द मिलने मुश्किल हैं। सवेरे बापू खुद बा को दतौन करवाते। कॉफी भी खुद ही बनाकर पिलाते। अेनिमा देते। 'पॉट' साफ कर लाते। बापू सारे दिन बा को धूपमें सुलाते। अुनके घरके सामने बाहरकी

तरफ बकायनका (अेक तरहका नीम) पेड था। बा का शरीर तो बहुत ही दुबला हो गया था। छोटे बालककी भांति बापू बा को दोनों हाथोंमें अुठाकर बाहर ले आते और पेडके नीचे खटिया पर सुला देते। जैसे-जैसे धूप बदलती जाती, बा की खटियाको बदलते रहते। शामको फिर अुठा कर अन्दर ले आते। बापू बा का सभी काम करते थे, लेकिन वे अुनका सिर नही गूथ पाते थे। अिसलिअे काशीकाकी रोज सिर नवारने जाती थीं। अेक दिन अुन्हें जरा देर हो गअी, तो बापू खुद सिरमें कघी करने बैठ गये। तेल डालकर अुलझे हुअे बालोंको सुलझा भी चुके थे कि अितनेमें वे पहुच गअी। बापूने कहा "लो, अब तुम करो। मुझे ठीकसे वेनी गूथना नही आता।"

बापू बा की सूजन पर रोज नीमके तेलकी मालिश करते थे। अेक दिन पीतलकी रकाबीमें तेल निकाला था। अुसके दूसरे दिन बापूने बा के लिअे कॉफी तैयार की और अुसे प्याले व रकाबीमें ढालने जाते थे कि अितनेमें काशीकाकी वहा आ पहुचीं। बापूको वास बहुत ही कम आती है, अिसलिअे अुस रकाबीमें तेलकी वास आती है या नही, यह जाननेकी गरजसे अुन्होंने काकीसे कहा "जरा सूघकर तो देखो, वास आती है?"

काशीकाकीने कहा "हा, वास तो आती है।"

अिस पर बापू बोले "अगर मैं अिसमें कॉफी ले जाता, तो मेरी आ ही बनती न?" मानो बापू बा से अितने अधिक डरते हो!

बापूकी सेवा फली और बा अुस बीमारीसे मुक्त होकर बिलकुल चगी हो गअी।

* * *

अंग्रेज सरकारके खिलाफ बापूके कअी सत्याग्रहोंकी बातें हम जानते हैं। कभी-कभी बापूने मित्रोंके साथ भी सत्याग्रह किया है। अेक बार बा के साथ सत्याग्रह करनेका मौका भी बापूको मिल गया। आत्मकथामें 'घरमें सत्याग्रह' शीर्षकसे बापूने अिसका वर्णन किया है

"शस्त्रक्रियाके बाद यद्यपि थोडे समयके लिअे कस्तूरबाअीका रक्तस्राव बन्द हो गया था, तो भी अुसने फिर पलटा खाया और वह किसी तरह मिटता ही नही था। अकेले पानीके अुपचार बेकार

साबित हुओ। यद्यपि पत्नीको मेरे अुपचारो पर विशेष श्रद्धा नही थी, परन्तु अुनके लिओ मनमें तिरस्कार भी नही था। दूसरा कोओ अिलाज करानेका आग्रह नही था। अिसलिओ जब मेरे दूसरे अुपचारोमें सफलता न मिली, तो मैंने अुन्हें नमक और दाल छोडनेके लिओ समझाया। बहुत मनाने पर भी, अपने कथनके समर्थनमें अिधर-अुधरकी बातें पढकर सुनाने पर भी, वे मानी नही। आखिर अुन्होंने कहा ' दाल और नमक छोडनेकी बात तो कोओ तुमसे कहे, तो तुम भी अिन्हें न छोडो।' मुझे दुःख हुआ और खुशी भी हुओ। मुझे अपने प्रेमकी वर्षा करनेका मौका मिला। मैंने अुस खुशीमें आकर तुरन्त ही कहा, 'तुम्हारा खयाल गलत है। मुझे कोओ रोग हो और वैद्य यह चीज या दूसरी कोओ चीज छोड देनेको कहे तो मैं जरूर छोड दू। लेकिन जाओ, मैंने तो अेक सालके लिओ दाल और नमक दोनो छोडे। तुम छोडो या न छोडो, दूसरी बात है।'

"पत्नीको बहुत पश्चात्ताप हुआ। वे कहने लगी 'मुझे माफ करो। तुम्हारे स्वभावको जानते हुओ भी मैं यह कह बैठी। अब तो मैं दाल और नमक नहीं खाअूगी, लेकिन तुम अपनी बात लौटा लो। यह तो मेरे लिओ बहुत बडी सजा हो जायगी।'

"मैंने कहा 'तुम नमक और दाल छोड दोगी तब तो बहुत ही अच्छा होगा। मुझे यकीन है कि अुससे तुम्हें फायदा ही होगा। लेकिन की हुओ प्रतिज्ञाको मैं लौटा नही सकता। मुझे तो लाभ ही होगा। आदमी किसी भी निमित्तसे सयम पाले, अुसे अुसमें लाभ ही है। अिसलिओ तुम मुझसे आग्रह न करना। दूसरे, मुझको भी अपना अन्दाज मालूम हो जायगा, और तुमने दो चीजें छोडनेका जो निश्चय किया है, अुस पर डटे रहनेमें तुम्हें मदद मिलेगी।' अिसके बाद मुझे अुन्हें मनानेकी तो जरूरत ही नही रही। 'तुम तो बहुत हठीले हो, किसीकी बात मानते ही नही,' कहकर अजलि-भर आसू बहा लिये और चुप रह गओ।

"अिसको मैं सत्याग्रहका नाम देना चाहता हू, और अपने जीवनके मीठे सस्मरणोमें से अेक अिसे मानता हू।

"अिसके बाद कस्तूरबाअीकी तबीयत खूब सभली। अिसमें नमक और दालका त्याग कारणभूत था, अथवा किस हद तक वह कारणभूत हुआ था, या अुस त्यागके कारण आहारमें जो छोटे-मोटे हेरफेर हुअे वे कारणभूत थे, अथवा अुसके बाद दूसरे नियमोका पालन करानेमें मैंने जो सतर्कता बरती थी वह निमित्तरूप थी, या अूपरकी घटनाके कारण अुत्पन्न मानसिक अुल्लास निमित्त बना था, सो मैं कह नही सकता। लेकिन कस्तूरबाअीकी गिरी हुअी तन्दुरुस्ती सुधरने लगी। शरीर पुष्ट होने लगा। खून जाना बन्द हुआ और 'वैद्यराज' के नाते मेरी साख कुछ बढी।"

१२

बा की अंग्रेजी

यह स्वाभाविक है कि अफ्रीकामें चारो तरफका वातावरण अंग्रेजीसे भरा हो। बापूके साथी ज्यादातर अंग्रेज होते थे। बादमें जब हिन्दुस्तान आये, तो यहा भी आश्रममें कअी भाषाअें बोलनेवालोका जमघट रहा। अिसलिअे आश्रममें भी अंग्रेजीका ठीक-ठीक अुपयोग करनेकी जरूरत रही। अिसलिअे हालाकि बा अंग्रेजी पढी नही थी, तो भी मौका पडने पर वे अिधर-अुधरके अंग्रेजी शब्दोसे अपना काम चला सकती थी।

श्रीमती पोलाक विलायतसे दक्षिण अफ्रीका आयी थी और मि० पोलाकके साथ ब्याह करके बापूके घरमें ही रहने लगी थी। वे लिखती है "बा टूटी-फूटी अंग्रेजी बोल लेती थी, लेकिन ज्यादा नही। पहले दिन तो हम परस्पर बहुत मिली भी नही थी। लेकिन दूसरे ही दिनसे जब गाधीजी और मेरे पति दफ्तर चले गये, तो हम दोनो घरमें अकेली रह गअी। फिर तो हमें किसी भी तरह अेक-दूसरेसे बातचीत करनी ही पडी। कुछ ही समयमें बा की अंग्रेजी सुधर गअी और मेरे साथका अुनका सकोच भी दूर हो गया। फिर तो जब हम अंग्रेज मित्रोंसे मिलने जाती, तो वहा भी वे बातचीतमें अच्छी तरह शामिल होती।"

बा कहा कैसी अंग्रेजी बोलती थी, जिसकी कुछ मिसालें श्रीमती पोलाककी 'Mr Gandhi — The Man' नामकी किताबसे यहां देती हूं। अेक बारकी बात है। मि० पोलाक बापूजीसे कुछ नाराज हो गये थे। वे घरमें किसीसे बोलते नहीं थे और बेचैन रहा करते थे। अिस पर बा ने श्रीमती पोलाकसे पूछा.

"What the matter Mr. Polak? What for he cross?" — मि० पोलाकको क्या हुआ है? वे अितने नाराज क्यों दीखते हैं?

श्रीमती पोलाकने कहा "बापू पर गुस्सा हुअे हैं।"

तब बा ने पूछा "What for he cross Bapu? What Bapu done?" — बापू पर गुस्सा क्यों हुअे हैं? बापूने क्या किया है?

अिसके बाद श्रीमती पोलाकने अिस सम्बन्धकी सारी हकीकत बाको कह सुनाअी। अुस पर बा ने जवाब दिया
"Oh, Oh!" — हा, हा।

श्रीमती पोलाक अिस 'हा-हा' का यह अर्थ करती हैं कि मि० पोलाक बापू पर गुस्सा हुअे, अिसका बा को कोअी दुःख नहीं हुआ, क्योंकि वे खुद भी अिस मामलेमें बापू पर नाराज होती थीं, और बापूके लिअे अितना प्रेम रखनेवाले आदमीको अुनसे नाराज होनेका कारण मिलता है, अिससे बा को हिम्मत बंधी कि अुनका नाराज होना भी सकारण ही होता है।

बा अिस तरहकी अंग्रेजी तो अफ्रीकासे आनेके बाद यहां भी बोलती थीं। आश्रममें आनेवाले गोरे मेहमानोंका स्वागत करना, अुनके कुशल-समाचार पूछना, अुनकी जरूरतोंके बारेमें पूछताछ करना वगैरा मामूली बातचीत बा अच्छी तरह कर सकती थीं। अिस प्रकार वे अंग्रेजी बोलना तो जानती थीं, लेकिन १९३० के जेल-जीवनमें ६० सालकी अुमरमें अुन्होंने जेलके अन्दर अंग्रेजी लिखना-पढ़ना सीखनेकी जो कोशिश शुरू की थी, अुसके बारेमें सौ० रामुबहन, जो जेलमें अुनके साथ ही थीं, 'स्त्री-जीवन' मासिकके बा-सम्बन्धी विशेषांकमें अिस प्रकार लिखती हैं

"बा को पता चला कि मैं अंग्रेजी जानती हूं और अुन्होंने मुझसे अंग्रेजी पढ़ना शुरू किया। जितनी बड़ी अुमरमें, जितने बड़े पदको पहुंचनेके

बाद भी, मेरे पास बैठकर अंग्रेजी सीखनेमें अुनको न तो हीनता मालूम हुअी, न शरम। अुन्हें तो अेक ही धुन लगी थी कि खुद बापूका पता अंग्रेजीमें लिख सकें। 'अे-बी-सी-डी' पर लगातार कअी-कअी दिन तक मेहनत करने पर भी वे कभी अुकताअी नही। अेक ही नामको २०-२५ बार लिखते वे कभी थकी नही और न जल्दी-जल्दी नये-नये शब्दो या वाक्योंको सीख लेनेकी अुन्होने कभी अिच्छा की। वे कहा करती 'अंग्रेजी आ जाय तो बापूको जो पत्र लिखती हू, अुसका पता तो किसीसे न लिखवाना पडे? और ढेर-की-ढेर जो डाक आती है, अुसमें से मेरा पत्र खुद ही पहचाना जा सके न?"

* * *

पूज्य बापूजी सन् १९२२ से १९२४ तक यरवडा जेलमें थे। वहा अुन्होने अेक कैदीकी खुराकके लिअे सुपरिण्टेण्डेण्टके सामने कुछ मागें पेश की थी। सुपरिण्टेण्डेण्टने अुन्हें नामजूर कर दिया, अिससे बापूजीको बहुत बुरा मालूम हुआ और अुन्होने सिर्फ दूध ही पर रहनेका निश्चय किया। अिस तरह चार हफ्ते बीत गये और अिस बीच अुनका वजन १०४ से ९० पौंड पर आ गया। जब बा के साथ परिवारके कुछ लोग अुनसे मिलने गये, तो जीना चढते हुअे बापूके पैर कुछ लडखडाये। बा ने बापूकी यह हालत देखी और अिसका कारण पूछा। बापूको अनिच्छा-पूर्वक अपनी सारी बात बा से कहनी पडी। सबने अेक होकर बापूसे आग्रह किया कि वे अिस प्रयोगको छोड दें और फल लेने लगें। बापूने बात मजूर भी कर ली।

यह देखकर यरवडाके सुपरिण्टेण्डेण्टने बा से कहा "मि० गाधी यह जो सब करते है, अिसमें मेरा कोअी कसूर नही।"

बा ने जवाब दिया "Yes, I know my husband He always mischief"

क्या अिस वाक्यमें बा ने, अपनी टूटी-फूटी अंग्रेजीमें ही क्यो न हो, बापूके सारे चारित्र्यका निरूपण नहीं कर डाला है? "मैं अपने पतिको पहचानती हू। वे कभी चुप बैठनेवाले नही है। अुन्हें रोज कुछ-न-कुछ शरारत ही सूझती है।" क्या अिन शब्दोंमें बापूके मनके चरित्र-

चरित्रका सार नही समा जाता? १८९३ में वे दक्षिण अफ्रीका पहुचे, तबने आज तकके अिन ५१ वर्षोमें बापू कभी चैनसे बैठे हैं? आज सारी दुनियामें अेक क्षण भी चैनसे न बैठनेवाला और दूसरोको न बैठने देनेवाला बापूके जैसा दूसरा कौन होगा? बापूकी रग-रगको जाननेवाली बा को छोडकर अैसे अेक वाक्यमें अुनके चारित्र्यका अितना हूबहू और गभीर अर्थोवाला वर्णन और कौन कर सकता है? और अिस वर्णनमें अग्रेजी भाषाका अधूरा ज्ञान भी अुनके लिअे बाधक नही बना। अच्छे-अच्छे अग्रेजीदा भी क्या अैसे अेक वाक्यमें बापूका वर्णन कर सकते थे?

१३

खादी-परिधान

बा को अपनी पोशाकमें और कपडोकी पसन्दगीमें बापूकी अिच्छा और सूचना पर चलना पडा है, या यो कहिये कि बा चली हैं। सन् १९१९–२० में बा ने खादी धारण की। अुसका जिक्र करनेसे पहले हम यह देख लें कि सन् १८९६ में दक्षिण अफ्रीका जाते समय बापूने बा की पोशाकमें किस तरहका हेर-फेर कराया था। बापूजी आत्मकथामें कहते हैं

"परिवारके साथ यह मेरी पहली समुद्र-यात्रा थी। मैंने कअी बार लिखा है कि हिन्दुओंकी गृहस्थीमें बचपनमें शादी होनेके कारण और मध्यमश्रेणीके लोगोमें अधिकतर पतिके शिक्षित और पत्नीके निरक्षर होनेके कारण, पति-पत्नीके जीवनमें फर्क रहता है और पतिको पत्नीका शिक्षक बनना पडता है। मुझको अपनी धर्मपत्नीकी और बालकोकी पोशाकका, खाने-पहननेका और बातचीतका बहुत खयाल रखना पडता था। मुझे अुन्हें रीति-रिवाज सिखाने होते थे। अुनमें से कुछकी याद आज भी मुझको हसाती है। हिन्दू पत्नी पतिपरायणतामें अपने धर्मकी पराकाष्ठा मानती है। हिन्दू पति अपनेको पत्नीका अीश्वर समझता है, अिसलिअे पत्नीको जैसा वह नचावे नाचना पडता है।

"जिन दिनोंकी बात मैं लिख रहा हूं, अुन दिनों मैं मानता था कि सुधरे हुओमें अपनी गिनती करानेके लिअे हमें अपना बाहरी आचरण भरसक यूरोपियनोंसे मिलता-जुलता रखना चाहिये। अैसा करनेसे ही रोब पड़ता है, और रोब पड़े बिना देशभक्ति नहीं हो सकती।

"अिसलिअे पत्नीकी और बालकोंकी पोशाक मैंने ही पसन्द की। बच्चों वगैराका काठियावाड़के बनियोंके रूपमें परिचय देना कैसे अच्छा लगता? पारसी ज्यादासे ज्यादा सुधरे हुअे माने जाते हैं, अिसलिअे जहां यूरोपियन पोशाककी नकल करना जंचा ही नहीं, वहां पारसी पोशाककी नकल की। पत्नीके लिअे पारसी बहनोंके तर्जकी साड़ियां लीं। बच्चोंके लिअे पारसी कोट-पतलून बनवाये। सबके लिअे बूट-मोजे तो होने ही चाहियें। पत्नी और बच्चोंको दोनों चीजें कअी महीनों तक अच्छी न लगीं। बूट काटते, मोजे बदबू देते, पैर तंग रहते। अिन अड़चनोंके अुत्तर मेरे पास तैयार थे और अुत्तरोंके औचित्यके मुकाबले हुक्मकी ताकत तो ज्यादा थी ही। अिसलिअे पत्नीने और बच्चोंने लाचारीके साथ पोशाकके अिस हेर-फेरको मंजूर किया। अुतनी ही लाचारीसे और अुससे भी अधिक अरुचिसे वे खाते समय छुरी-कांटेका अिस्तेमाल करने लगे। जब मेरा मोह अुतरा, तब फिरसे अुन्होंने बूट-मोजे और छुरी-कांटे वगैराका त्याग किया। शुरूका परिवर्तन जिस तरह दुःखदायी था, अुसी तरह आदत पड़ जानेके बाद अुसे छोड़ना भी दुःख देनेवाला था। लेकिन अब मैं देखता हूं कि हम सब सुधारोंकी कैंचुली अुतारकर हलके हो गये हैं।"

जिस तरह बा को बूट-मोजे कअी महीनों तक अटपटे लगे, अुसी तरह अुनको खादी पहनानेमें भी बापूको कअी महीने नहीं तो कुछ दिन जरूर लगे थे। रौलट-अेक्टके खिलाफ शुरू की गअी सत्याग्रहकी लड़ाअीको मुलतवी करनेके बाद बापूने 'स्वदेशी' के कामको बहुत जोर-शोरसे अुठाया। अुस समयके स्वदेशी-व्रतमें कुछ महीनों तक तो मिलके कपड़ेको भी मंजूर रखा गया था, लेकिन कुछ ही समयमें बापूने देख लिया कि मिलके कपड़ेका प्रचारक बननेकी हमें जरूरत नहीं। असली जरूरत तो परदेशसे आनेवाले कपड़ेको रोकनेके लिअे ज्यादा

कपडा पैदा करनेकी है, और यह काम चरखेके जरिये ही अच्छी तरह हो सकता है। अिसलिअे बापूने सबसे आग्रह करना शुरू किया कि वे चरखा चलायें और खादी पहनें। लेकिन अुन दिनो बडे अर्जकी खादी तो बनती नही थी। ३७ अिंच पनेकी खादी भी मुश्किलसे बुनी जाती थी और अगर धोती या साडी खादीकी पहननी हो, तो ६ या ८ नम्बरके असमान सूतकी और कम अर्जकी अैसी खादीको जोड़-कर ही पहनी जा सकती थी। अिस तरह जोडकर बनाअी गअी साड़ीका वजन २॥ से ३ पौण्ड होता होगा। जो बहनें यह दलील करती कि अैसी साडी तो बहुत भारी पडती है, हमसे अुठ भी नही सकती, अुनसे बापू कभी-कभी कहते कि नौ-नौ महीनो तक बच्चेको पेटमें धारण करनेवाली बहनोको देशके खातिर, अपनी गरीब बहनोकी आबरूके खातिर, यह अितनी-सी साडी भारी क्यो लगनी चाहिये?

आश्रममें भी बापू रोज सब बहनोको खादी पहननेके लिअे सम-झाते। बापूकी अुस दलीलको सुनकर साडीके वजनकी दलील तो कोअी बहन न करती, लेकिन रोज धोनेकी मुश्किलवाली दलील बहनें बहुत जोरके साथ पेश किया करती। अिस पर बापूजी कहते कि हम तुम्हारी साडिया धो देंगे। अिस तरह हसी-विनोद होता रहता। अिन सब दलीलोमें बा बहनोकी अगुआ बनती। बापू अकसर कहते "बा को बूट और मोजे पहनानेमें मुझे अुनकी कुछ कम खुशामद नही करनी पडी। और अुनको फिरसे छुडवाते समय भी थोडी खुशामद तो करनी ही पडी थी। लेकिन अब देखता हू कि बूट-मोजे पहनानेमें जितनी खुशामद करनी पडी थी, खादीकी साडी पहनानेमें अुससे ज्यादा खुशामद करनी पडेगी।" जहा तक मैं जान पाअी हू, अुसके मुताबिक तो श्री सरलादेवी चौधरानीने पहले-पहल खादीकी साडी पहनी थी। शायद सारे देशमें सबसे पहले खादीकी साडी पहननेवालियोमें वही प्रथम रही हो। अुन दिनो वे आश्रममें ही रहती थी। फिर तो तुरन्त ही बा ने भी खादीकी साडी धारण की और कुछ ही समयमें सब बहनें खादी पहनने लग गअी। बादमें तो बडे अर्जकी खादी भी बुनी जाने लगी और खुद कातनेवालोंके लिअे तो साडीकी कोअी कठिनाअी ही नही रह गअी।

अिसके बाद तो बा को खादीसे कितना प्रेम हो गया था, अिसका सूचक अेक अुदाहरण यहा देती हू। अेक दिन बा के पैरकी छोटी अगुलीसे खून निकला। बा खादीकी पट्टी बाघने जा रही थी, अितनेमें अेक बहनने महीन कपडेकी पट्टी ला दी और कहा "अिस महीन कपडेसे रगड नही लगेगी और पट्टी अच्छी तरह बघेगी।" परन्तु "मुझे तो खादीकी पट्टी ही चाहिये। वह खुरदरी भी होगी तो मुझे नही चुभेगी," कहकर बा ने खादीकी ही पट्टी बाघी।

जब बापूजीने आगाखान महलमें अुपवास शुरू किये, तो अुनसे मिलनेके लिअे गअी अेक आश्रवासिनी बालासे बा ने सेवाग्राममें पडे हुअे अपने कपडे भिन्न-भिन्न व्यक्तियोको बाट देनेके लिअे कहा और सूचना की "बापूजीके अपने हाथसे कती और मेरे लिअे खास तौर पर तैयार की गअी साडी तो मुझे जेलमें भेज ही देना। मृत्युके बाद मेरी देह पर वह साडी लपेटनी है।"

आम तौर पर बा की साडी बापूके काते सूतकी ही बनती थी। और बा चिता पर चढी, सो भी बापूके हाथसे कते सूतकी साडी पहनकर ही।

१४

आश्रमकी बा

जिस तरह बापूको 'बापू' ही बनाये रखनेमें बा का बहुत बडा हाथ था, अुसी तरह आश्रमको आश्रम — साधारण मनुष्योका आश्रय-स्थान — बनाये रखनेमें भी बा का हिस्सा कम नही था। जब अहमदाबादमें बापूने आश्रम कायम किया, तो सवाल अुठा कि अुसका नाम क्या रखा जाय? अनेक नामोके साथ अेक नाम 'तपोवन' भी सुझाया गया था। बापूका आश्रम वैसा 'तपोवन' बना होता, तो कौन जाने अुसमें कैसे-कैसे लोग रहते होते। आज जो साधारण लोग आश्रमवासी कहलाते है, अुनके लिअे तो शायद जगह ही न रहती। सार्वजनिक कामोंके सिलसिलेमें या निजी कारणोसे बापूको मिलने आनेवाले लोग अुस तपोवनमें अेक दिन भी रह सकते या नही, अिसमें शक है।

बापूका तप सूरजकी तरह तपता है। सूरजका ताप जिस तरह दुनियाके लिअे कल्याणकारी ही होता है, अुस तरह बापूका तप दुनियाके लिअे कल्याणकारी ही है। लेकिन जैसे सूरजके तापके बहुत पास जानेवाला जल जाता है, अुसी तरह बापूके बहुत नजदीक रहना भी अेक कड़ी तपस्या ही है। बापूजीके पास रहनेवालोंकी अिस तरहकी कड़ी कसौटीमें बा ने हमेशा अुनकी ढालका काम किया है और अुनको बापूके तापसे झुलसने नहीं दिया। बा ने यह सब सोच-समझकर या योजनाके साथ नहीं, बल्कि सहज भावसे ही किया है।

आश्रममें रहनेवाली बहनोंके लिअे बा किस तरह ढाल बन जाया करती थीं, अिसकी अेक मिसाल यहां देती हूं।

आश्रमका नियम था कि सबकी अेक संयुक्त रसोओी हो। हरअेक अपने हिस्से आनेवाला काम कर ले। यह भी अेक नियम था कि आश्रममें होनेवाली साग-भाजीका ही अिस्तेमाल किया जाय। बाहरसे साग वगैरा न मंगाया जाय। संयुक्त रसोअीमें आश्रमके खेतमें पैदा होनेवाले कद्दूका साग रोज बनता था। कद्दूके सागसे मतलब है, कद्दूके बड़े-बड़े टुकड़ोंका पानीमें अुबाला हुआ पदार्थ। अुसमें नमक भी नहीं छोड़ा जाता था। जिसे जरूरत हो वह अलगसे नमक ले ले। मेरी माको अिन सागके खानेसे बादीकी तकलीफ होती और चक्कर आते। दुर्गामौसीको बादीकी शिकायतके साथ-साथ डकारें आतीं। दूसरी भी बहुतेरी बहनोंको वह माफिक नहीं आता था। बापूजी तो सबको पानी चढ़ाते रहते थे, अिसलिअे, और कुछ संकोचकी वजहसे भी, सब बहनें बापूजीसे अिनका जिक्र नहीं करती थीं। लेकिन बा के साथकी बातचीतमें ये सब बातें हुआ करतीं। मेरी माने रोज-रोजके अिस कद्दूके साग पर अेक गरबी (तुकबन्दी) तैयार कर ली। बा ने वह सुनी और वे तुरन्त ही बापूके पास पहुंचीं। बापूसे कहा: "तुम्हारे कद्दूका साग खाकर मणिबहनको बादीकी तकलीफ होती है और चक्कर आते हैं। दुर्गाबहनको डकारें आती हैं। कद्दूका साग भी कहीं निरा अुबाला हुआ बनता है? अुसे मेथीसे छौंका जाय, और अुसमें गरम मसाला वगैरा

सब कुछ डाला जाय, तभी वह बाधक नही होता। नही तो कद्दू बिना कष्ट दिये कभी रहा है?"

अिस गरबीमें विनोदके तौर पर आश्रमकी रसोअीका थोडा मजाक किया गया था। अिस पर कुछ आश्रमवासी तो मेरी मासे कहने लगे कि यह तो तुमने बापूका अपमान किया। लेकिन अिसमें अपमानकी तो कोअी बात थी ही नही, महज मीठा मजाक था। दूसरे दिन प्रार्थनाके बाद बापूने कहा कि हमारे आश्रममें अेक नये कवि पैदा हुअे हैं। हमें अुनकी कविता सुननी है। अिसके बाद बापूने आग्रह करके मेरी मासे कद्दूवाली वह गरबी गवाअी। गरबीके खतम होने पर बापूने कहा "अच्छी बात है, आपकी फरियाद मजूर की जाती है। जिन्हें छौंककर और मसाले डालकर साग खाना हो, वे अपने नाम मुझे लिखा दें।"

बा बोली "यो आपको कोअी नाम नही देगा। हम बहनें खुद तय कर लेंगी।"

बापूने कहा "अच्छा, तो अैसा ही सही। लेकिन देखना भला, अिसमें बच्चोको शामिल न कर लेना। बच्चे तो बिना मसालेका साग ही पसन्द करते है।" बा ने कहा "अिस तरह कह-कहकर बच्चोको चढाओ और भले अुन्हें अपने पास ही रखो। ये सब बच्चे कहा तक तुम्हारे रहेंगे, सो मैं जानती हू।"

फिर सब बहनोने नाम तय किये। मसाला खानेकी आजादी हासिल की। लेकिन बापूजी कुछ सुखसे मसाला खाने देते हो सो नही। बहनोकी पगत अुनके सामने ही बैठती। अिसलिअे खाते-खाते भी बापू मजाक करते और कहते "क्यो, बघार कैसा लगा है? साग अच्छा मसालेदार है न?"

अिसके जवाबमें बा भी विनोदके भावसे कहती "तुम कौन कम थे? पहले हर अितवारको मुझसे 'वेढमी' (पुरणपोली) और पकौडी या 'पातरे' (अरवीके पत्तेके भजिये) बनवा कर खब अडाते थे सो तुम्ही थे या और कोअी?"

अैसा ही अेक किस्सा और है।

आश्रममें नियम था कि हरअेकको अमुक निश्चित कीमतका ही साबुन अिस्तेमाल करना चाहिये। आश्रमकी बहनोंको अुतना साबुन पूरा नहीं पड़ता था। और अिसके खिलाफ शिकायत करनेका मतलब होता था बापूके बनाये नियमका विरोध करना। फिर भी सब बहनोंने मिलकर सबकी सहीसे अेक अर्जी तैयार की। बा ने भी अुस पर सही की और अर्जी बापूको दी गअी। अर्जीमें बा का नाम पढ़कर अर्ज करनेवाली जो अेक खास बहन थीं अुनकी ओर अिशारा करके बापूने कहा "अिन्होंने तो हम दोनोंमें भी झगड़ा करा दिया!" कहनेकी जरूरत नहीं कि बापूने अर्जी मजूर की और बहनोंको ज्यादा साबुन मिलने लगा।

* * *

सेवाग्राममें बापूकी झोंपड़ीकी ओर जानेसे पहले बा की झोंपड़ी पड़ती है। बा या तो चबूतरे पर बैठी कातती मिलतीं, या अैसा ही कोअी काम करती नजर आतीं। किसी नये आनेवाले मेहमानको पहले बा के दर्शन होते। बा अुन्हें पहचानती हों या न पहचानती हों, फिर भी बड़े प्रेमसे अुनका स्वागत करतीं। कहांसे आये? सीधे यहीं आ रहे हैं या वर्धा होकर आये? भोजन हुआ या नहीं? गाड़ीमें बहुत तकलीफ तो नहीं हुअी न? वगैरा छोटी-से-छोटी बातें पूछतीं। भोजन न किया होता तो करातीं। आये हुअे मेहमानको बापूके साथ तो जिस कामके लिअे आये हों अुसकी चर्चा करनेका ही काम रहता था। पर अुनकी दूसरी तमाम कठिनाअियोंको बा हल कर दिया करतीं। आश्रममें रहनेवालोंसे भी बा जब-तब पूछती रहतीं· "खाना तो माफिक आता है न? कोअी तकलीफ न अुठाना भला! किसी चीजकी जरूरत हो तो मुझसे कहना।' छोटे बच्चे रहते तो अुन्हें दोपहरमें नाश्ता भी देतीं। आश्रममें खातिरदारीकी या प्यार-दुलार पानेकी कोअी जगह थी तो वह बा की।

पण्डित मोतीलालजी जैसे आश्रममें कअी-कअी दिन तक रह जाते थे, सो बा की ही बदौलत। बा न हो तो राजाजीको चाय-कॉफी कौन दे? जवाहरलालजीके लिअे खास जायकेवाली चाय कौन तैयार करे? मीठुबहनको जिन्दा रखना हो, तो अुनको चाय देनी ही चाहिये। बा के सिवा दूसरा कौन अुनको अैसी वकालत करता?

बहुत साल पहलेकी बात है। अेक दिन गोशीबहन आश्रममें आओी थी। आश्रमका रिवाज यह था कि खाना खानेके बाद हरअेक अपनी-अपनी थाली माज डाले। सब खाने बैठे। बा और गोशीबहन पास-पास बैठी थी। भोजनके बाद हर कोओी अपनी-अपनी थाली अुठाकर जाने लगा। गोशीबहनने कभी बरतन मले नही थे। अुनका भोजन हो चुका था, लेकिन वे परेशान थी कि क्या करें। अितनेमें बा भी खा चुकी। अुन्होने धीरेसे गोशीबहनकी थाली खीच ली। गोशीबहन और भी परेशान हुअी और शरमाओी। बा से कही थाली मजवाओी जा सकती है? लेकिन बा अुनकी कठिनाओीको समझ गओी थी, अिसलिअे बोली "बहन, तुमने कभी थाली माजी नही है, सो तुमसे यह नही बनेगा। मुझको तो रोजकी आदत है। मेरे लिअे अेक थाली ज्यादा नही होगी।"

बापूने आश्रमका अेक नाम 'अस्पताल' भी रख छोडा है। बीमारोको अपने पास रखकर अुनकी तीमारदारी करनेका बापूको शौक है। बापू अपनेको अेक बहुत अच्छा नर्स और डॉक्टर भी समझते हैं। जिस तरह खुराकके और कुदरती अिलाजोंके प्रयोग वे अपने अूपर आजमाते है, अुसी तरह दूसरो पर भी आजमानेको तैयार रहते हैं। अपने अिस कामसे वे अेक तरहकी मानसिक विश्रान्ति प्राप्त करते है। सरदार वल्लभभाओी-जैसे भी बापूके बीमार हैं। चूकि आश्रम अिस तरहका अेक अस्पताल है, अिसलिअे बाहरसे बापूके वास्ते फलाकी जो भेंटें आती है, अुनमें से ज्यादातर फलोका अुपयोग बीमारोके लिअे ही होता है। आश्रममें तन्दुरुस्त आदमीके हिस्से फल शायद ही कभी आते हैं। बा को अिसमें कुछ भी अनुचित नही लगता था। लेकिन जब कभी फलोकी अिफरात होती, बा स्वस्थ आश्रमवासियोका मुह मीठा करानेकी मुराद रखती। रसोओी-घरके व्यवस्थापककी स्वाभाविक वृत्ति फलोके सग्रहकी रहती। लेकिन बा को यह पसन्द न पडता। अुनकी नजर पडती और फल ज्यादा होते, तो फौरन ही जरूरी फल रखकर बाकीके फलोको वे पगतमें परोस देनेके लिअे कह देती। अैसे समय वे रसोओीघरके व्यवस्थापक पर ताना भी कसती। कहती "वह तो लालची है, बापूको भी पीछे छोडनेवाला।" यह टीका व्यवस्थापककी अपेक्षा बापू पर ही अधिक होती।

और, आश्रममें बा न होती तो अकसर त्योहारके दिनका भी किसीको पता न चलता। बा हमेशा अकादशीका व्रत रखती थी और त्योहारके सब दिनोंको भी याद रखती थी। अिसलिअे त्योहारके दिन सभी आश्रम-वासियोंको बा की कुछ-न-कुछ प्रसादी मिल जाती थी। अिस तरह बा के कारण आश्रममें सदा आनन्दका वातावरण बना रहता था।

लेकिन अब सेवाग्राम जाने पर बा का वह हमेशा हसनेवाला चेहरा और फलो वगैराकी अुनकी वह प्रसादी कहा मिलेगी? बा के अभावमें वहा कौन प्रेमके साथ स्वागत करेगा? जिस तरह माके बिना घर सूना-सूना लगता है, अुसी तरह बा के बिना आश्रम भी सूना लगेगा।

१५

हरिजनोंकी मां

बा तो सारे देशकी मा बनकर गअी। अुनके दिलमें कभी कौमी भेदभाव था ही नही। लेकिन सफाअी और छूतछातसे सम्बन्ध रखनेवाले वैष्णव सम्प्रदायके सस्कारोंके कारण हरिजनोकी मा बननेमें अुनको थोडा वक्त जरूर लग गया। मगर अिस पुरानी घिनके निकल जानेके बाद तो अुन्होंने हरिजनो और सवर्णोंके बीच कभी कोअी भेदभाव नही रखा।

अहमदाबादमें सत्याग्रह आश्रमकी स्थापना करते समय बापूने अस्पृश्यता-निवारण-सम्बन्धी अपने विचारोको मित्रोंके सामने साफ-साफ रख दिया था "अगर कोअी लायक अछूत (अुस समय हरिजन शब्द प्रचलित नही हुआ था) भाअी आश्रममें भरती होना चाहेगा, तो मै अुसे जरूर भरती करूगा।"

"लेकिन आपकी शर्तोंका पालन कर सकनेवाले अछूत अितने सुलभ है कहा?" अेक वैष्णव मित्रने अिन अुद्गारोंके साथ अपने मनको मना लिया।

आश्रमकी स्थापनाके कुछ ही महीनो बाद ठक्करबापाने आश्रमके नियमोका पालन करनेवाले अेक प्रामाणिक हरिजन परिवारको आश्रममें भरती करनेकी सिफारिश की। बापू तो यह चाहते ही थे। दूदाभाअी, अुनकी पत्नी दानीबहन और अेक छोटी लड़की लक्ष्मी आश्रममें आ पहुचे।

आश्रममें बडी खलबली मची। अफ्रीकामें बापूजीके घर अछूत आते और रहते थे, लेकिन यह तो देश था। यहा अछूत परिवारके साथ रहनेमें बा को और दूसरी बहनोको मन-ही-मन थोडी झिझक मालूम हुआी। अछूतोको छूनेमें अुन्हें कोआी आपत्ति न थी। लेकिन अुनको रसोआी-घरमें और परिवारमें दाखिल करते समय पुराने वैष्णवी सस्कार बाधक बनते थे। प्यालेसे मुह लगाकर पानी पीनेके बाद अुसे माजना ही चाहिये। अगर बिना माजे वह पनियारे पर रख दिया जाय, तो बा को अुससे बहुत दु ख होता था। थालीमें कुछ भी परोसते समय परोसनेकी कडछुल या चम्मच भोजनकी थालीसे जरा भी छू जाय, तो वह कडछुल या चम्मच जूठा माना जाता था और अुसे अलग मलनेके बरतनोमें ही रख देना होता था। बेचारे दूधाभाआी और दानीबहन अिस तरहकी पूरी-पूरी खबरदारी रखनेकी भरसक कोशिश करते, लेकिन कभी कही भूले-चूके अुनसे अैसी कोआी गलती हो जाती थी, तो बा को वह अच्छा नही लगता था। दानीबहनके लिअे वे नापसन्दगी तो नही, लेकिन अुदासीनता रखती थी। अिस अुदासीनताको दूर करनेमें बा को बहुत वक्त लग गया। बादमें दूधाभाआी और दानीबहनने अपने कुछ कारणोसे आश्रम छोडा और बापूने आग्रह करके अुनकी कन्या लक्ष्मीको आश्रममें रख लिया और यह अैलान किया कि अुन्होने अुसे गोद लिया है। लक्ष्मीकी सार-सभालका सारा काम बा को सौंपा गया। अिस मौके पर भी शुरूमें बा को थोडी कठिनाआी मालूम हुआी होगी, लेकिन कुछ ही समयमें बा ने लक्ष्मीको भलीभाति अपना लिया। अेक बार मनसे तय कर लिया कि अिसे लडकीकी तरह रखना है, अुसके बाद तो अुसकी सार-सभाल रखनेमें बा कभी चूकनेवाली नही थी। छोटा बालक थोडा-बहुत झगडालू होता है, अथवा कभी-कभी जिद करता है। अिसी तरह लक्ष्मीने भी कभी-कभी झगडा करके बा को परेशान किया होगा, लेकिन बा ने न सिर्फ अुसको कभी कोआी दु ख नही समझा, बल्कि लक्ष्मी बहनको और बडी हो जानेके बाद अुनके बच्चोको भी अुन्होने अपने प्रेमसे नहलाया ही है।

कुछ साल पहले सेवाग्राम आश्रममें अेक घटना घटी थी, जो यहा देने लायक है।

नागपुरके कुछ हरिजनोंने मध्यप्रान्तके कांग्रेसी मन्त्रि-मण्डलमें हरिजनको मन्त्री न बनानेके लिअे बापूके खिलाफ सत्याग्रहका अैलान किया था। अुन्होंने यह तय किया कि पाच-पाच हरिजन सेवाग्राम जाकर आश्रममें बापूके सामने अुपवास करें। पाच हरिजनोंकी अेक टुकडी सेवाग्राम आवे और वहा बैठकर २४ घंटोका अुपवास करे। फिर दूसरी टुकडी आकर अुपवास शुरू करे और पहली टुकड़ी चली जाय। अिस तरह टुकडिया बदलती रहें। बापूने प्रेमके साथ अिन विरोधी हरिजनोका स्वागत किया और अिनके लिअे आश्रममें बैठने व रहनेकी सहूलियत कर दी। जगहका चुनाव हरिजनोंकी अिच्छा पर छोडा गया। अुन्होंने बा की ओसारी पसन्द की।

बा की कुटियामें अेक बडी और अेक छोटी कुल दो कोठरिया हैं। छोटी कोठरी नहाने और कपडे बदलनेके लिअे है। बापूने बा को बुलाकर कहा. "अिन हरिजनोको तुम अपनी बडी कोठरी दोगी न?"

अपने ही खिलाफ अुपवास करनेके लिअे आये हुअे अिन हरिजनोको बापू अिस तरहकी सहूलियत दें, और खुदको नहानेके कमरेका अुपयोग करनेकी स्थितिमें रखें, यह बा को कुछ अच्छा नही लगा। अुन्होंने सहज अुलाहनेके स्वरमें कहा

"आपने अिनको अपने पुत्र मानकर टिकाया है, तो अपनी झोपडीमें ही अिन्हें बैठाअिये न?"

"हा, ये मेरे लडके तुम्हारे भी तो लडके हुअे न?"

अट्टहासके साथ बापूने बा को नि शस्त्र किया और बा ने अुन हरिजनोंके लिअे अपनी कोठरीमें जगह कर दी। बा न सिर्फ अुनके सारे अुपद्रवोको सह लेती थी, बल्कि अुन्हें पानी वगैराकी जरूरत होती, तो अुसका भी पूरा-पूरा खयाल रखती थीं।

१६

बा की दिनचर्या

अिस अध्यायमें मैं यह बता देना चाहती हू कि आम तौर पर बा अपना दिन किस तरह बिताती थी। अिसमें बापूकी सेवा-टहल सूरजकी तरह मुख्य थी, बाकीका सारा वक्त 'बा' के नाते और आश्रमवासिनीके नाते अपने धर्मका पालन करनेमें बीतता था। किसीको पता भी नही चलता था कि वे अपने निजी कामोसे कब निबट लेती थी।

बा हमेशा सुबह ४ बजेकी प्रार्थनाके समय अुठनेका आग्रह रखती। प्रार्थनाके बाद बापूजीको आधा-पौन घंटा सो जानेकी आदत है। लेकिन बा अुठनेके बाद फिर सोती नही थी। वे तो बापूजीके फिरसे जागनेके पहले अुनके लिअे गरम पानी और शहद या जो भी कुछ बापू सवेरे लेनेवाले हो, सो तैयार करने या करानेमें लग जाती। 'करानेमें' अिस-लिअे लिख रही हू कि बापूके अैसे निजी कामोको करनेकी बहुतोकी अिच्छा रहती और अिसके लिअे कभी-कभी आपसमें होडाहोडी भी होती। बा अैसे अुम्मीदवारोको बापूजीकी सेवाके काम बाट देती। लेकिन काम किसीको भी क्यो न सौंपा हो, बा सामने खडी रहकर देखती कि काम ठीक हो रहा है या नही। बा का अिस तरह खडा रहना कुछ मतलब रखता था। श्री कुसुमबहन देसाअीने अिसका अेक अुदाहरण दिया है। अेक बार अलीगढमें बापूजीका दूध छाननेकी सेवा अेक भाअीने बहुत हठ करके बा से माग ली। दूध छानकर बापूजीको दिया गया। बापूजीको दूधमें अेक बाल दिखाअी पडा। बा से पूछने पर अुन्होने सारी बात बता दी। बापूजीने कहा 'नतीजा देखा न? दूधमें बाल रह गया।' अुस दिन बापूने दूध नही लिया। बा को बहुत क्लेश रहा। अुन्होने कहा "किसीको करने न दू तो अुसका दिल दुखता है और करने देती हू तो काम ठीक नही हो पाता। दिन-रात अेकसी सिरपच्ची करना, और पेटमें देखो तो अेक जूनकी भी जमा नही।"

अिसलिअे आम तौर पर बा ने रिवाज यह रखा था कि काम दूसरोने किया हो, तो भी बरतन भलीभाति साफ हुअे हैं या नही, चीज

अच्छी तरह बनी है या नहीं, सो वे खुद ही देख लेतीं थीं और खुद ही बापूजीके पास ले जाती थीं। और चीज खानेकी हो या पीनेकी, जब तक बापू अुसे खा-पी न लें, बा अुनके पास ही बैठी रहतीं। अिसके बाद वे यह देख लेतीं कि बरतन ठीकसे साफ होकर जगह पर रखे गये हैं या नहीं। कभी किसी लड़कीने बरतन मले हों और वे अच्छी तरह साफ न हुअे हों, तो बा खुद अुन्हें दुबारा साफ कर लेतीं। बरतनोंको हमेशा चमकीले रखनेकी बा की आदत ही थी।

बापू सवेरे कोअी ७ बजे घूमने निकलते। अुस समय बा अपने स्नान वगैरा कामोंसे निपट लेतीं और पूजा-पाठमें बैठतीं। घीके दीये और अगरबत्तीकी धूपके साथ करीब अेक घण्टा गीताजीका और तुलसी-रामायणका पाठ करतीं। अिसके बाद बा रसोअीघरमें पहुंच जातीं। रसोअी-घरमें कहां क्या हो रहा है, अिसे वे तुरन्त अेक निगाह देख लेतीं और किसीको कुछ सुझाना हो तो सुझातीं। रसोअीघरमें कोअी चीज खुली पड़ी हो, फाजिल साग-सब्जी, फाजिल फल वगैरा बिगड़नेकी हालतमें हों, तो बा अुन्हें फौरन ही देख लेतीं। वे बहुत स्पष्टवक्ता थीं, अिसलिअे जिनको जो कहना होता, साफ साफ कह देतीं। मुंहसे हां-हां कहने और अपने अंगीकृत कामको भलीभांति न करनेवालोंके लिअे बा की बड़ी नाराजी रहा करती थी। अिसलिअे नये आये हुअे लोगोंको कभी-कभी बा की बातका बुरा भी लग जाता। बा चाहती थीं कि तमाम चीजें और कपड़े वगैरा सभी कुछ ठीकसे जमाकर अपनी जगह रखे जाने चाहियें। कहीं कुछ बेठिकाने देखतीं, तो बा खुद अुसे सहेजने लग जातीं। बा की किसी बातसे किसीके नाराज होनेकी खबर बापू तक पहुंचती, तो वे कहते: "अगर बा के पास थोड़ा-बहुत कड़वा नीम है, तो मीठी शकरकी तो अिफरात ही है।"

जैसा कि अभी कहा है, बापूजीका भोजन तो बा खुद ही तैयार करतीं या किसी औरने करनेका जिम्मा लिया होता, तो वे खुद वहां खड़ी रहतीं। बापूके लिअे बनाअी गअी खस्ता रोटी अेक गोल डिब्बेमें रखी जाती है। सभी रोटियां डिब्बेमें बराबर जमाकर रखी गअी हैं या नहीं, सभी अेकसे आकारकी हैं या नहीं, कोअी मोटी-पतली तो नहीं है, किसीकी

किनार तो फटी नहीं है, अधिक सिकनेसे किसी पर दाग तो नहीं पड़ गया है, या कोओी कच्ची तो नहीं रह गओी है, अुसमें नमक और सोडा ठीक पड़ा है या नहीं, सो सब बा खुद ही देख लेती। बा स्वयं रसोओी बनानेके काममें बहुत ही निपुण थी। अिसलिओ जब वे खुद 'खाखरे' (खस्ता रोटी) बनाती, तब तो वे आदर्श 'खाखरे' बनते और बापूको भी पता चल जाता कि आज 'खाखरे' बा ने बनाये हैं।

भोजनकी घण्टी बजती और सब भोजनालयमें आ पहुंचते। तब बापूजीको और खास मेहमानोंको परोसकर बा बापूजीके पास ही खाने बैठ जाती। अुस वक्त भी अुनकी अेक आंख तो बापूकी तरफ ही रहती। बापूके पास अेक मक्खी भी आते देखती, तो अुनका बायां हाथ पंखेको संभाल ही लेता। खानेके बाद बापूके साथ भोजनालयसे अुनके कमरेमें आती और जब बापू अखबार पढ़ने लगते, तो वे अुनके तलवोंमें घी मलती। जब बापूकी आंख लग जाती, तो बा अुठकर अपने कमरेमें जाती और जरा देर लेटती। १५–२० मिनटके बाद अुठकर मुंह धोती और खुद अखबार पढ़ती।

यों बा की गिनती कम पढ़े-लिखोंमें और राजकाजको न जानने-वालोंमें की जायगी। लेकिन बा अखबारोंके जरिये और बातचीतके मारफत देशकी मौजूदा हालतसे खूब परिचित रहती थी। गुजरात-काठिया-वाड़की खबरें जाननेके लिओ वे बिलानागा 'वन्देमातरम्' और 'गुजरात-समाचार' पढ़ा करती थीं। हर हफ्ते 'हरिजनबंधु' आता। बा अुसे भी रोज थोड़ा-थोड़ा करके शुरूसे अखीर तक पढ़ जाती, ताकि जुदा-जुदा कार्यक्रमोंके बारेमें अुन्हें बापूजीके विचार जाननेको मिल सकें। अखबार पढ़कर दुनियाकी मुसीबतों व तकलीफोंसे बा को बहुत दुःख होता। अेक बार अिस लड़ाओीके बारेमें बा ने कहा: "क्या यह लड़ाओी दुनियाको तबाह करके ही बन्द होगी?" बंगालके भीषण अकालकी खबरें पढ़कर बा ने आगाखान महलसे मुझे पत्रमें लिखा: "बंगालके समाचार सुनकर तो दिल फटता है। वहां तो आफत टूट पड़ी है। न जाने ओश्वर क्या कर रहा है?"

बचपनमें तो बा पढ न सकी, लेकिन बादमें अुन्हें पढनेका शौक हो गया था। हर दिन अेक-आध घंटा तो वे किसी-न-किसीके पास बैठकर कुछ-न-कुछ पढा ही करती। राष्ट्रभाषाके नाते हिन्दुस्तानीकी अच्छी जानकारी होनी चाहिये, अिस ख्यालसे वे कभी दफा हिन्दीका अभ्यास करती। या कभी किसीकी मददसे तुलसीरामायणका अथवा गीताजीका अभ्यास करती। गीताजीके श्लोकोंको सही-सही पढ़ने और अुन्हें जबानी याद करनेकी वे बराबर कोशिश करती रहतीं। अखीर-अखीरमें अुन्होंने आगाखान महलमें बापूसे गीताजीके श्लोकोंका शुद्ध अुच्चारण सीखना शुरू किया था। जब ७५ सालकी बा ७५ सालके बापूके सामने बैठकर अेक निष्ठावान शिष्यके-से अुत्साहसे गीता सीखती होंगी, तो वह दृश्य कितना अद्‌भुत रहता होगा? बा जो भी कुछ सीखना शुरू करती, बहुत श्रद्धाके साथ सीखतीं, और अितनी अुमर हो जानेके बाद भी विनम्र विद्यार्थीकी तरह सीखने बैठती। अुन्हें कुछ लिखनेको दिया जाता, तो अुसे भी वे छोटे विद्यार्थी जिस तरह अपना सबक तैयार करके लाते हैं, अुसी तरह दूसरे दिन लिखकर लातीं और कितनी ही गलतियां क्यों न हुअी हों, अुन्हें सुधार कर दुबारा लिखनेमें वे कभी अुकताती नहीं थीं।

अखबार और पढाअीके कामसे फुरसत पाकर वे कातने बैठतीं। हर-रोज ४०० से ५०० तार बराबर काततीं। कताअी अुनकी तभी रुकती थी, जब वे बीमारीकी वजहसे बिछौनेमें पड़ी हों। बीमारीसे अुठने पर कमजोर रहने पर भी वे कताअी शुरू कर देती। आश्रममें प्रार्थनाके बाद रोज किसने कितना सूत काता, अिसका लेखा लिखा जाता है। बा अुसमें ज्यादा सूत कातनेवालोंमें होती।

अितना करते-करते चारका समय हो जाता और बा फिर रसोअीमें पहुंच जाती। वहां बापूका खाना तैयार करती या कराती और दूसरे कामोंको भी अेक निगाह देख जाती। ५ बजे बापूजी खाने बैठते, तब अुनके पास बैठती। कअी सालोंसे बा ने शामका खाना छोड रखा था। सिर्फ कॉफी पी लेती थीं और पिछले कोअी चार सालोंसे तो कॉफी भी छोड दी थी। दूधमें तुलसी और काली मिर्च डालकर अुसे थोडा अुबा-लती और पी लेतीं।

शामको बापू घूमने जाते तब बा आश्रममें कोओी बीमार होता तो अुसके पास जाकर बैठती। और फिर दूसरी बहनोंके साथ वे भी घूमने निकलती और आश्रमसे कुछ दूर जाने पर जब बापू सामनेसे आते मिलते, तो अुनके साथ लौट आती।

घूमकर आनेके बाद शामकी प्रार्थना होती। अुसमें बा तो रहती ही। शामकी प्रार्थनामें रामायण गाओी जाती, और अुसमें भी बा बराबर शामिल होती।

प्रार्थनाके बाद कुछ देर तक बा सब बहनोंके साथ बातचीत करती और फिर अपने और बापूके सोनेकी तैयारीमें लग जाती। सोनेसे पहले बापूके सिरमें तेल मलनेका काम करीब-करीब अखीर तक वे ही नियमित रीतिसे करती रही। सुबह फिर ४ बजे अुठती और वही चक्र बराबर चलता रहता।

अिस तरह बा की दिनचर्यामें बापूकी परिचर्या अेक खास अंग थी। अिसके बारेमें मीराबहन लिखती हैं

"मैंने भी कओी सालों तक बापूकी सेवा-चाकरी की है। अिस बीच मुझे बा के अद्भुत गुणोंका दर्शन हुआ है। अकसर यह होता कि बापूकी निजी जरूरतोंकी खबरदारी रखनेका काम सिर्फ हम दोनों पर आ पड़ता। बापूके तूफानी दौरोंमें तो बहुतेरी अड़चनें और कठिनाअियां रहती, लेकिन बा अचूक नियमिततासे, बिना थके, अिस कामको बड़ी खूबीके साथ किया करती। बापूके लिअे खाना तैयार करने और अुनकी मालिश करनेका काम तो वे अपने ही हाथमें रखती। अुसमें जहां-तहां थोड़ी मदद मुझसे भी ले लेती। कपड़े धोने और सामान बांधने-खोलनेका काम मेरे जिम्मे था। लेकिन अुसमें भी बा की पैनी नजर बराबर मेरे काम पर बनी ही रहती। बा मानो कभी थकती ही नहीं थी। सभाओं और मुलाकातोंमें बापूको रात कितनी-ही देर क्यों न हो जाय, बा अुनके सिरमें तेल मलने और अुनके थके-मांदे शरीरको दबानेके लिअे अुनकी राह देखती बैठी ही रहती। और फिर सुबह चार बजे प्रार्थनामें हाजिर रहकर पुन बापूकी सेवामें लग जाती। वे गैरजरूरी बातें करके बापूका वक्त कभी खराब नहीं करती। बापूके आसपासके सभी लोगोंमें वे बापूको कम-से-कम तकलीफ देती और अुनकी ज्यादा-से-ज्यादा सेवा करती।

"अन्त-अन्तमें जव वे वीमार रहने लगी, तो वापूका काम खुद नहीं कर पाती थी। लेकिन अुस पर निगरानी रखनेका अपना काम तो अुन्होंने ठेठ आखिरी घडी तक नही छोडा था। जव आगाखान महलमें अुनकी तवीयत वडी तेजीके साथ खराव हो रही थी, वे अेक कमरेमे दूसरे कमरेमें चलकर जा भी नही सकती थीं, तव अुन्हें पहियोवाली कुर्सीमें वैठाकर घुमाना पडता था। अेक दिन वे वरामदेमें अपने विछौने पर लेटी-लेटी वापूको शामका भोजन करते देख रही थी। अन्दर कमरेमें जानेका वक्त हो चुका था। अिसलिअे वह पहियेदार कुर्सी लेकर मैं वा के पास पहुची और मैंने कहा 'वा चलिये, अन्दर जानेका वक्त हो गया है।' वा ने जवाव दिया. 'जरा ठहरो, वापूजी खा चुकें तो चलें।' अिस तरह वीमारीके विछौने पर पडे-पडे भी अुनका जी वापूजीकी सेवामें रहता था।"

वा के समान निष्ठावान परिचारिकाकी कमी वापूको आजकल कितनी खटकती है, अुसका कुछ खयाल नीचेकी दो घटनाओंसे आ सकेगा।

विलकुल अभी-अमीकी वात है। अेक दिन मैं वापूके पास वैठी थी। अुनका खाना रोज ठीक ११॥ वजे आता है, लेकिन अुस दिन ११॥। को आया। अिस पर खाना लानेवाली वहनसे वापूने कहा "हमें यह समझ लेना है कि वा हमेशा यहा मौजूद ही है। वा ठहरे हुअे वक्तसे अेक मिनटकी भी देर करके खाना नही लाती थी, और अगर किसी दूसरेको यह काम सौंपा हो और अेक मिनटकी भी देर हो जाय, तो वे 'घडफड' करने लग जाती। फौरन अुठकर रसोअीमें जाती और वहा होहल्ला मचा देती। आगाखान महलमें वे वीमार थी और अुनसे कुछ हो नहीं पाता था, तव भी वे घडीके काटे पर नजर रखती और वक्त पर मेरा खाना न आता तो शोर मचा देती। मैं कहता कि यहा कौन वक्तकी पावन्दी करनी है? थोडी देर भी हो गअी तो क्या हुआ? तो वा फौरन ही जवाव देती—'लेकिन मैं जानती हू न कि आप यहा भी अपने वक्तका पूरा खयाल रखते हैं। तो फिर थोडी भी देर क्यों होनी चाहिये?'"

अिधर-अिधर दोपहरके भोजनके बाद बापू पैरोंमें घीकी मालिश करवानेसे अिनकार करते थे। सभी लडकियां घी मलनेका आग्रह करने लगीं, तब बहुत गमगीन आवाजमें बापूने कहा "मुझे घी मलवाना था, तो बा मर क्यों गअी?"

बापूकी टहल करनेवाले तो बहुत हैं। अगरचे सबोंके आग्रह पर बापूने फिरसे घी मलवाना शुरू तो किया, लेकिन बा की-सी लगन और भावना दूसरे कहांसे लावें?

* * *

बा काफी नियमित रीतिसे अपनी डायरी लिखती थी। अुनकी डायरीके कुछ नमूने नीचे दिये हैं।

१९३३की लडाअीके दिनोंमें बा गांवोंमें घूमती थी। अुस समयकी अुनकी डायरीसे

सोजित्रा,
ता० २८–१–'३३

६ बजे अुठी। प्रार्थना। नित्यकर्म। रावजीभाअीके घर गअी। सब बहनोंसे मिली। बातचीत। आराम। अखबार पढा। लिम्बासीके लिअे रवाना हुअी। वहांके भाअी-बहनोंसे मिलकर अुनके सुख-दुःखकी बातें सुनीं। वापस लौटी। मलातज आकर सो गअी।

मलातज,
२९–१–'३३

६॥ प्रार्थना। नित्यकर्म। पत्रिका सुनी। बापूको पत्र लिखा। ङावली और भाणजा जाकर वापस आअी।

मलातज,
३०–१–'३३

६॥ प्रार्थना। नित्यकर्म। कन्याशाला और अन्त्यजोंकी बस्तीमें जाकर हरिजनोंसे मिल आअी। वे चखा वगैरा क्या करते हैं, सो सब देखा। बादमें प्रार्थना की।

४–२–'३३

५ बजे अुठी। प्रार्थना। नित्यकर्म। ८ बजे परिवारका प्रोग्राम था। अुसमें ७ बहनें पकडी गअी। बादमें थाने पर मैं जाअी गअी। नाम

लिख लिये। फिर भोजनके लिअे पूछा। गावसे खाना आया। भोजन किया। स्टेशनके लिअे रवाना हुअी। १२ बजे कठाणा स्टेशन पर अुतरी। फौजदारने आकर पानी वगैराके लिअे पूछा। बादमें स्टेशन पर ही बैठाया। नाम लिखे और वारण्ट तैयार किये। फिर तीन बजे गाडीमें बैठीं। बोरसद जाते हुअे रास स्टेशन पर भाअी-बहन मिलने आये थे। ५ बजे बोरसद पहुचीं। मुकदमा चलाकर 'लॉक-अप' में लाये। मजिस्ट्रेटसे मिली। प्रार्थना।

*

सावरमती जेलकी डायरीसे

१६–२–'३३

जिस दिन मैं यहा आअी, मीराबहन अुसी दिन सवेरे आ गअी थीं, जिससे आनन्द हुआ। हम दोनों साथ रहती हैं। मैं और मीराबहन ठीक ४ की आवाज पर प्रार्थना करती हैं। अुसके बाद सो जाती हू। फिर नित्यकर्म। नहाना-धोना वगैरा। कॉफी पीना। १०–१०॥ को सुपरिण्टेण्डेण्ट रोज आता है। सुबह डॉक्टर आता है। ११ बजे भोजन। १ घण्टा आराम। २ से ४॥ तक हिन्दी लिखना-पढना और चरखा चलाना। ५॥ को भोजन। फिर घूमना। ७ बजे प्रार्थना। पढना, बातचीत। और ९ बजे सो जाना।

२१–२–'३३

४ बजे प्रार्थना। गीता पढती हू, अनासक्तियोग। फिर थोडी देर सो जाती हू। नित्यकर्म। ६॥ बजे नहाने जाती हू। लौटकर कॉफी पीती हू, फिर पढती हू। 'जाने जनरोद' पढती हू। ११॥ भोजन। आराम। २ से ५ पढना। कातना। भोजन। तार हमेशा ३०० काते।

१६–४–'३३

४ बजे प्रार्थना। गीता पढी। नित्यकर्म। ४०० तार काते। अखबार पढा। ११॥ भोजन। काता। पढा-लिखा। मैं यहा भी अेकादशी करती हू। आराम। फिर हिन्दी और गुजराती लिखना, पढना। कॉफी पी। बातें कीं। यहा कोअी नअी बात नहीं है। शामको प्रार्थनाके बाद भागवत सुनती हू। आजकल मीराबहन चन्द्रमा, पृथ्वी, सूर्य, सबके बारेमें सिखाती हैं।

३-५-'३३

४ बजे प्रार्थना। गीता पढी। नित्यकर्म। कॉफी पी। अखबार पढा। भोजन। कल अखबारसे पता चला कि बापूजी हरिजनोंके लिअे दूसरा अुपवास करनेवाले है। ८-५-'३३को सोमवारके दिनसे शुरू होगा। गांधीजीका अपने अनुयायियो परसे विश्वास अुठ गया है। बापूजीके पास जानेकी बहुत चिन्ता बनी रहती है। बापूजीका यह सवाल, यह तपश्चर्या, बहुत कठिन है।

८-५-'३३

४ बजे प्रार्थना। गीता पढी। आजसे बापूजीका महायज्ञ शुरू होता है। हमने यहा प्रार्थना की थी। आशा रखी थी कि मुझे बापूजीके पास ले जायगे, लेकिन आज तीसरा अुपवास हो चुका है, मुझे बुलाया नही। आजकल तो अखबारकी राह देखती हू कि अुसमें क्या होगा? 'हरिजन' पढा। मन तो बेचैनका बेचैन ही रहता है।

१०-५-'३३

कल रामदास मिलने आया था। अिस बार मेरे नसीब फट गये है। नही तो मुझे क्यो न ले जाते? क्या करू? बहुत चिन्ता होती है। अिस बार भी मैं दूर हू। मैंने बापूजीको तार किया कि मुझे आपके पास आना है, यहा मेरा जी बहुत घबराता है। अुनका तार आया, धीरज रखो। फिर दूसरा तार आया कि हम सरकारसे अिजाजत नही माग सकते, शान्ति रखो। फिर तो मैं कातती थी, प्रार्थना करती थी और कुछ अच्छा ही नही लगता था।

*

बा को बापूजीके पास ले जानेके बादकी डायरीसे

१६-६-'३३

४ बजे प्रार्थना। गीतापाठ होता है। फिर नित्यकर्म। ५॥ बजे बापूको खाना दिया। दूध वगैरा। ६॥ के बाद मैं नहाने जाती हू। लौटकर तुलसीको पानी सींचा। लालजीके दातन करके कॉफी पी। लाल दवाके कुल्ले किये। ९ बजे बापूजीको खाना दिया। फिर मिट्टीकी पट्टी बांधी। ११ बजे भोजन। १२ बजे बापूजीको खाना दिया। फिर आराम। पैरोंमें घी मला। काता — तार २००।

१-७-'३३

४ बजे प्रार्थना। गीताजी। फिर नित्यकर्म। बापूको खाना दिया। यहां और क्या काम है? बापूजीके सिवा दूसरा कोअी नहीं है। बालकृष्ण बापूजीका खूब काम करता है। और प्रभावती तो अुनके पाससे हटती ही नहीं। केशु भी खडा रहता है। फिर मैं क्या करूं? बापूजीके पास जाती हूं और लौट आती हूं। अुन सबके बीच बैठना मुझे अच्छा नहीं लगता। काता।

१७

कर्मयोगी बा

गीताजीमें कहा है कि 'योगः कर्मसु कौशलम्'। अिस अर्थमें बा सचमुच कर्मयोगी थीं। अेक मिनट भी बेकार बैठे रहना अुनके लिअे अस्वाभाविक हो गया था। तिस पर खुद जो काम करतीं, अुसे खूब कुशलतासे और व्यवस्थित रीतिसे करती थीं। अगर यह कहें कि व्यवस्थाकी तो वे मूर्ति ही थीं, तो गलत न होगा। कोअी चीज अपनी जगह पर न हो, तो बा की निगाह अुस पर गये बिना न रहती। "यह चीज यहां क्यों पडी है? यहां कोअी झाडना-बुहारना नहीं क्या?" वगैरा सवाल अुनके मुहसे निकले बिना रहते ही नहीं, और वे खुद ही सारी चीजोंको करीनेसे जमाने लग जातीं। जब बापूकी कुटियामें जातीं, तो वहां भी अुनकी नजर बापूके बरतनों, खडाअू, चप्पल, घडी, कपडे, वगैरा पर गये बिना न रहती। घडी और चप्पलको पोंछकर अुनकी जगह रख देतीं। बरतन बिना मले पडे होते, तो खुद जाकर मांज लातीं। बा की अिस पैनी दृष्टिके कारण अुनके आसपासवालोंको बहुत चौकन्ना रहना पडता। आश्रमवासियोंमें भी किसीने कपडे ठीकसे न पहने हों, बाल ठीकसे न संवारे हों, तो बा सहज भावसे कह अुठतीं "कपडे ठीकसे क्यों नहीं पहने? यह क्या जैसे-तैसे — लथर-पथर — लपेट लिया है? बाल क्यों नहीं संवारे?" वगैरा। बा खुद तो व्यवस्थित रहती ही थीं, लेकिन दूसरोंसे भी वे वैसी ही अुम्मीद रखती थीं। अिस

वजहसे जब बा के लिअे रोटी या साग बनाना होता, तो बनानेवालेको खूब सावधान रहना पडता। लडकिया तो अिस कारण बा से डरा भी करती। वा ज्यादा तो कुछ कहती नही थी, मगर टीकाका अेकाध शब्द जरूर कह दिया करती।

अिस अुमरमें भी वा में आलस्यका नाम नही था। वा को अलसाकर सोते तो किसीने शायद ही कभी देखा हो। अुनका अुद्यम आजकलके नौजवानोको भी शरमानेवाला था। कभी रसोअीमें, तो कभी साग काटनेमें, और कभी कातनेमे, यो अेकके बाद अेक अुनका काम चलता ही रहता।

वा के लिअे पाखानेका जुदा बन्दोवस्त कर देनेका सबका बहुत आग्रह होने पर भी गरमी हो, सरदी हो या बारिश हो, वे हमेशा सार्वजनिक पाखानेका ही अुपयोग करती। रातका 'पॉट' भी खुद ही साफ कर लिया करती। वा के कमरेमें अुनके साथ हमेशा दो-तीन लडकिया तो होती ही, लेकिन वा अपना थोडा-सा भी काम अुन लडकियोंसे न करवाती। अुलटे, कभी किसी लडकीको देर हो जाती, तो खुद ही कमरा साफ करने लग जाती। सुबह अुठकर दतौनके लिअे गरम पानी भी खुद रसोअीघरमें जाकर ले आती। दतौनको अपने हाथो ही कूट भी लेती। पिछले ५-६ सालसे तो बा की तन्दुरुस्ती बहुत ही गिर गअी थी। बापू रोज वा से कहते "तेरी अितनी सारी लडकिया है, फिर तू क्यो अितनी दौड-धूप करती है?" जब बीमार होती, थोडे दिनके लिअे वा दूसरोसे काम ले लिया करती, लेकिन जरा अच्छा मालूम होते ही फिर खुद ही अुठकर करने लगती। जब वे देखती कि फला आदमी सच्चे दिलसे काम करनेको तैयार है, तो अुसे कभी-कदास कोअी काम सौंपती, और वह काम भी अैसा होता कि जिसे वे खुद न कर पाती।

वा बहुत ही स्पष्टवक्ता थी। नये आनेवालोको कभी-कभी अिससे बुरा लग जाता। लेकिन कुछ दिनोंके अन्दर वा के स्वभावको जान लेनेके बाद अुनकी भाषामें मिठास मालूम होने लगती। बापूजीने कअी दफा कहा है "मेरे और बा के निकट सम्पर्कमें आनेवाले लोगोंमें अैसे लोगोंकी तादाद ज्यादा है, जिन्हे जितनी श्रद्धा मुझ पर है, अुससे कअी गुनी ज्यादा श्रद्धा वा पर है।" अेक दिन घनश्यामदासजी विडलाने

मेरे पिताजीसे विनोदपूर्वक कहा "आपके आश्रममें सभी थोडे-बहुत 'चक्रम' (खब्ती) तो है ही।"

मेरे पिताजीने पूछा "क्या बापू भी?"

जवाबमें अुन्होंने कहा "हा, हा, वे तो और सबसे बडे। साबरमती आश्रमका तो मुझे बहुत तजरबा नही है, लेकिन सेवाग्राममें मुझे तो अेक बा और दूसरी दुर्गाबहनको छोडकर और कोअी समझदार आदमी नजर नही आता!"

बा को अपने नाते-रिश्तेदारो और बेटों-पोतोंके लिअे सहज ही खूब प्रेम था। बा ने तो अपना जीवन बापूको, यानी आश्रमको, सौंप दिया था, अिसलिअे आश्रम ही अुनका घर था। कभी किसी लडकेके घर जाती जरूर थीं, लेकिन कुछ ही दिनोंमें वापस आ जाती थी। आश्रम तो सार्वजनिक पैसोंसे चलता था, अैसी हालतमें बच्चोंको कुछ दिनके लिअे अपने पास बुलाना हो, या किसीके बीमार होने पर अुसे अपने पास रखकर अिलाज कराना हो, तो क्या किया जाय? बापूने अिसका रास्ता निकाला। बच्चे आयें, रहें और आश्रममें से किसीकी सेवा लें, तो आश्रमको अुसका खर्च दे दिया करें। यह तो हम आसानीसे सोच सकते हैं कि बा को यह चीज कितनी दुःखदायी मालूम हुअी होगी। दादा-दादीके घर तो बच्चे मौज मनाने जाते हैं। बच्चोंको देखकर दादी तो अुन पर वारी-वारी जाती है। यहा ये दादा तो बच्चोंको अेक जून मुफ्त खिलाते भी नही। लेकिन धन्य है बा को! अुन्होंने बापूकी अिस बातको भी मजूर किया। जब बच्चे जानेको होते, बा खुद ही आश्रमके व्यवस्थापकसे कह देती "देखिये, अब ये लोग जानेवाले है। अिन पर जो भी खर्च हुआ हो, अुनका बिल अिन्हे दे दीजियेगा।"

सन् १९२८की बात है। साबरमती आश्रमकी जमीनसे कुछ दूर अेक बंगला था। वहा चर्मालयका प्रयोग शुरू किया गया और अेक आश्रमवासी भाअी कुछ मजदूरोंके साथ वहा रहने गये। अेक दिन सुबह खबर आयी कि लुटेरोंकी अेक टोलीने वहा रहनेवाले लोगोंको मारपीटकर अुनका सारा सामान लूट लिया है। गरीब मजदूरोंके घरमें धन-दौलत तो क्या होगी? लेकिन अिस घटनासे वे घबरा गये और

अुस जगह रहनेसे अिनकार करने लगे। बापूने कहा "तो हम बिना मजदूरोंके ही अपना काम चलायेंगे।" सभी मजदूरोंको रुखसत दे दी गअी। शामकी प्रार्थनामें बापूने अित्तला दे दी कि कलसे हम सबको गोशालाका काम करना है।

दूसरे दिन निश्चित समय पर दूसरोंके साथ बा भी गोशालामें पहुंची। गोशालाके व्यवस्थापक सोचमें पड गये कि बा को क्या काम दें? बा समझ गअी। अुन्होंने सरलतासे कहा "काम क्यों नहीं बताते? गायोंके लिअे 'गवार' नहीं दलनी है?"

व्यवस्थापक बोले "लेकिन बा आपको —"

बा "नहीं, नहीं; लाओ।"

और बा जाकर चक्की पर बैठ गअी। फिर गाती-गाती 'गवार' दलने लगी।

१९३१में अेक बार बा वेडछी आश्रम गअी थी। आश्रमके व्यवस्थापकने सोचा था कि बा आकर खटिया पर बैठेंगी और सभाका वक्त होने पर सभामें आयेंगी। अिसलिअे खटिया तैयार रखी थी। आते ही बा से कहा गया "बैठिये।" लेकिन बा क्यों बैठने लगी? वे तो सीधी रसोअीघरमें गअी और रसोअी बनानेमें मदद करने लगी। व्यवस्थापककी पत्नी दंग रह गअी 'अितनी बडी बा हमें रसोअीमें मदद करती हैं?' अुन्होंने कहा "बा, आप रहने दें, मैं अभी बना लूंगी।" लेकिन बा क्यों छोडने लगी? वे बोलीं "सौ हाथ, सुहावनी बात। अभी रसोअी बना डालेंगी और फिर अेक साथ सभामें चलेंगी।" और सचमुच अुन्होंने अैसा ही किया।

किसी दिन सुबह या शामको रसोअीके वक्त आम सभाका या अैसा कोअी दूसरा कार्यक्रम होता, तो बा रसोअीघरमें काम करनेवालोंसे कहती "तुम सब जाओ। तुम छोटे हो। तुम्हें देखने और घूमनेकी अिच्छा रहती है। रसोअीका काम मैं कर डालूंगी।"

१९४१में बा मरोली गअी थी। वहांसे वे सेवाग्राम आनेवाली थीं। सब अुनकी राह देख रहे थे। अेक बहन तो बा से मिलनेके लिअे ही खास तौर पर ठहरी हुअी थी। सुबहकी गाडी निकल गअी। शामको

बम्बअीसे गाडी आनेवाली थी। अुन बहनने बापूसे पूछा "बा अिस गाडीसे तो आयेंगी न?" बापूने कहा "अगर बा अमीरोंकी — पैसेदारोंकी — होगी, तो अिस गाडीसे आयेंगी और गरीबोंकी बा होगी तो सूरत होकर 'ताप्ती वेली'से सुबह आयेंगी।" और सचमुच बा दूसरे दिन सुबह 'ताप्ती वेली'से ही आअी और अपने आप यह साबित हो गया कि बा खुद गरीबोंकी बा है।

सेवाग्राममें अेक दिन अेक लडकी बीमार पडी। बीमार बालिकाकी सेवा-चाकरीके लिअे अेक बहन थी, जो अुसका कमोड वगैरा साफ करती और अुसे दवा देती। अेक दिन परिचारिका बहन अुस लडकीका कमोड साफ करना भूल गअी। शाम हुअी। शामको बा ने कमोड देखा। बिना कुछ बोले-चाले वे खुद कमोड साफ कर लाअी। अेक स्नेहमयी माता अपने छोटेसे परिवारमें खपे-खटे और यो खपने-खटनेमें ही अपनेको सुखी माने, सो तो हमें कअी घरोंमें देखनेको मिलता है। लेकिन बा अपने अिस बहुत बडे परिवारमें भी अुतनी ही स्वाभाविकतासे खपती-खटती और अुसमें से आत्म-सुख अनुभव करती थी। कर्मयोगी नामके लिअे अुनसे ज्यादा लायक और कौन हो सकता है?

१८

हरिलालभाअी

बा और बापूके समूचे जीवनमें हरिलालभाअीकी कथा बहुत करुण है। हरिलालभाअी अिनके जेठे लडके हैं। १९ सालकी अुमरमें जब बापू बैरिस्टर बननेके लिअे विलायत गये थे, तब हरिलालभाअीको बहुत छोटा छोडकर गये थे। बापू अकसर कहते हैं कि हरिलालका जन्म (सन् १८८८) तब हुआ था, जब कि मैं मोहवश या मूर्छित दशामें था।* और जिस समयको मैंने हर तरह अपना मूर्च्छा-काल, वैभव-काल माना है, अुसका वह साक्षी है। अुसे अुन सब बातोंकी याद रह जाय, जितनी अुमर अुस वक्त अुसकी थी। अिसलिअे अुस समयके मेरे जीवनके संस्कार

* देखिये परिशिष्टमें बा के नाम बापूका पाचवा पत्र।

अुस पर पड़े हैं। सस्कारोकी यह बात चाहे जैसी हो, मगर हरिलालभाअीने बापूके खिलाफ जो बगावत की, अुसकी खास वजह तो, जैसा कि हरिलालभाअी कहते हैं, यह है कि बापूने खुद अुनको और अुनके भाअियोको न सिर्फ ठीक-ठीक तालीम ही नही दी, बल्कि अपने पास रहनेवाले दूसरोको जब वे पढाअीके अच्छेसे अच्छे मौके देते थे, तब अुन्होने जान-बूझकर अपने निजके लडकोको शिक्षाके अवसरोसे वचित रखा। हरिलालभाअीका खयाल है कि अुनकी बगावतकी जडमें यह अन्याय है। बा ने अपनी सादी किन्तु दूर तक पैठनेवाली व्यावहारिक समझदारीसे बहुत-सी अुलझनोको सुलझानेमें बापूकी मदद की है, लेकिन हरिलालभाअीके मामलेमें बा विशेष कुछ न कर सकी।

सन् १८९७ की जनवरीमें जब बापू बा के साथ डरबन पहुचे, तो अुनके साथ तीन बालक थे। १० सालकी अुमरका अेक भाजा, ९ सालके हरिलालभाअी और ५ सालके मणिलालभाअी। बापूने खुद ही लिखा है कि अुन्हें कहा पढाना, यह अुनके सामने अेक बडा विकट सुवाल था। गोरोके लिअे चलनेवाले मदरसोमें गाधीके लडकोके नाते बतौर मेहरबानीके या अपवादके अुन्हे भरती किया जा सकता था। लेकिन दूसरे सब हिन्दुस्तानी बालक जहा न पढ सकें, वहा अपने बालकोको भेजना बापूको पसन्द न था। अीसाअी मिशनके मदरसोमें भेजनेके लिअे बापू तैयार न थे। तिसपर, गुजरातीके जरिये तालीम दिलानेका आग्रह था और अिसका कोअी अिन्तजाम किसी मदरसेमें नही था। घर पर पढानेवाला कोअी अच्छा गुजराती शिक्षक मिल नही सका। बापू खुद पढानेकी कोशिश करते, लेकिन कामकी वजहसे अुसमें बहुत अनियमितता आ जाती। बापूका अपना अेक खयाल यह भी था कि बच्चोंको मा-बापसे अलग नही रहना चाहिये। क्योकि जो तालीम अच्छे, व्यवस्थित घरमें बालक सहज पा जाते हैं, वह छात्रालयोमें नही मिल सकती। अिसीलिअे वे बच्चोंको वापस हिन्दुस्तान भेजना भी नहीं चाहते थे। फिर भी भाजेको और हरिलालभाअीको कुछ महीनोंके लिअे देशके अलग-अलग छात्रावासोमें रखकर देखा। लेकिन कुछ ही समयमें अुन्हे वापस बुला लेना पडा।

हरिलालभाओीको अिस वातका वडा दु ख था कि अुनकी पढाओीका कोओी पक्का अिन्तजाम नही हो सका। यही नही, वल्कि वडेपनमें भी अिसके लिअे अुनके मनमें वापूके प्रति रोप वना रहा। "वापूने अच्छी शिक्षा पाओी है, तो वे हमको अच्छी शिक्षा क्यो नही दिलाते? वापू सेवाभावकी, सादगी और चारित्र्यके निर्माणकी वातें करते है, लेकिन जो शिक्षा अुन्हें मिली है, वह न मिली होती, तो देश-सेवाके जो काम वे आज कर सकते है, अुन्हें कर सकते क्या? हम भी पढ-लिखकर अिसी तरह देश-सेवाके काम करेंगे और अपनी शक्तियोका विकास करनेके वाद सादगी वगैरा भी रखेंगे। सादा और सेवापरायण जीवन वितानेके खिलाफ हमें कुछ कहना नही है। लेकिन अनपढ रहकर हम किस तरह सेवा कर सकेंगे, सो हमारी समझमें नही आता।" यह हरिलालभाओीकी तमाम दलीलोका निचोड था।

मि० पोलाक और मि० कैलनवेकका भी कुछ हद तक अैसा खयाल था कि वापू अपने वच्चोकी शिक्षाके वारेमें लापरवाह रहते है। मि० पोलाक वहुत चुभती भाषामें वापूसे कहते कि आप अपने वालकोको अच्छी, अंग्रेजी तालीम न देकर अुनका भविष्य विगाड रहे है। मि० कैलनवेकका यह खयाल था कि टॉल्स्टॉय आश्रममें और फिनिक्स आश्रममें दूसरे शरारती, गन्दे और आवारा लडकोके साथ वापू जो अपने लडकोको शामिल होने देते है, अुनका अेक ही नतीजा होगा कि अुन्हें आवारा लडकोकी छूत लगेगी और वे विगडे विना न रहेंगे। वा को भी अिस वातका असन्तोष वना रहता था कि वापू लडकोकी शिक्षाकी कोओी चिन्ता नही करते। हरअेक माताकी यह महत्त्वाकाक्षा होती है कि अुसके वच्चे वडे वनें और नाम कमायें, फिर भले वे कैसे ही क्यो न हो। तिसपर ये तो खूव चालाक और तेजस्वी वालक थे। अिसलिअे वा की महत्त्वाकाक्षा सकारण थी। अिन सव फरियादोंके जवावमें वापू शिक्षाके सिद्धान्तोंकी और जीवनके ध्येयकी अपनी फिलॉसफी पेश करते। मि० पोलाक और मि० कैलनवेक सिर हिलाते और वा मन मारकर शात हो जाती।

सन् १९०४ से वापूने अपने जीवनमें जो क्रान्तिकारी परिवर्तन करने शुरू किये थे, वे भी शायद हरिलालभाओीको अच्छे न लगे हो।

लेकिन अिस बातकी अुन्हें ज्यादा परवाह नही थी। वे अैसे न थे कि बापूके धन न कमाने पर नाराज हो। अुन्हें अपने पिताकी कमाओी पर जिन्दगी नही गुजारनी थी। अुनको तो पढ-लिखकर अपनी निजकी मेहनतसे ही बडे बननेकी हवस थी। आखिर जब अुन्होने देखा कि बापूके ही ऑफिसमें मुशीका काम करनेवाले मि० रिच और मि० पोलाक बापूकी मदद और अुनके बढावेसे अिग्लैण्ड जाकर बैरिस्टर बन आये है, और दूसरे दो हिन्दुस्तानी सज्जन मि० जोसफ रॉयपन और मि० गॉडफ्रे भी बापूकी प्रेरणासे विलायत गये और बैरिस्टर बनकर अपने धन्धेसे लग गये, और अिसके बाद सत्याग्रहकी लडाओीमें शामिल होनेवाले अेक पारसी नौजवान श्री सोराबजी अडाजणियाको बापूने खुद बैरिस्टर बननेके लिअे विलायत भेजा, अिस खयालसे कि बापूकी गैरहाजिरीमें सोराबजी कौमकी खिदमतका काम सभाल लेंगे, — दुर्भाग्यसे अिस होनहार नौजवानका असमयमें अवसान हो गया — तब तो हरिलालभाओीसे नही रहा गया। अुस वक्त अुनकी अुमर कोओी २० — २१ सालकी थी। दक्षिण अफ्रीकाकी सत्याग्रहकी लडाओीमे अुन्होने खासा हिस्सा लिया था और तीन दफा जेल भी हो आये थे। वे सोचा करते थे कि दूसरे जिन नौजवानोको बापू बैरिस्टर बनने देते है, या बननेमें मदद करते है, अुनकी-सी लियाकत मुझमें नही है क्या? आखिर अुन्होने बगावत करके पिताका साथ छोडने और देशमें आकर पढनेका निश्चय किया। बेशक बापू अपने विचारोमें दृढ थे, लेकिन पुत्रको यह सब समझाकर अुसे अपने साथ न रख सके, अिसका दु:ख, अिसकी बेचैनी, अुन्हें कुछ कम न थी। अिस अवसर पर बा की क्या दशा हुओी होगी, अिसकी तो कल्पना करना भी कठिन है। बापूके सामने तो अेक बडे सिद्धान्तका सवाल था और पुत्रने अुनका जो त्याग कर दिया था, अुनके दु:खको सह लेनेमें सिद्धान्तपालनका आश्वासन भी अुनके पास तो था। लेकिन बा के पास क्या था? बा तो चाहती थी कि पुत्रको प्रचलित शिक्षा मिले। लेकिन बापूके सिद्धान्तके कारण वे पुत्रके लिअे अैसी शिक्षाकी कोओी व्यवस्था कर नही सकती थी। पति और पुत्रके बीच अुनका दिल कितना टूटा होगा? अुन्होने कितनी बेचैनीका अनुभव किया होगा? कितनी आकुल-व्याकुल वे रही होगी?

हरिलालभाओीने हिन्दुस्तान आकर पढाओी शुरू की। बापूने अुनके खर्चका भार अिन्तजाम कर दिया। लेकिन हरिलालभाओी पढाओी पूरी नहीं कर सके। पढाओीके दिनोंमें काकाकी और दूसरे नाते-रिश्तेदारोंकी सलाह और मददसे अुन्होंने अपनी शादी की और अेक-दो बार मैट्रिकमें नापास होनेके बाद पढाओी छोड दी और काम-धन्धेमें लग गये। धन्धेमें अुन्होंने अच्छी कामयाबी पाओी। फिनिक्स आश्रमके अपने साथियोंको लेकर बापूके हिन्दुस्तान आने पर कुछ दिनों बाद अुन्होंने बापूके नाम अेक पत्र लिखा। "मेरे पिताजी, मि० अेम० के० गांधी, बार-अेट-लॉके नाम खुला पत्र", अिस नामसे अेक छोटी पुस्तिकाके रूपमें, अुन्होंने अपना वह पत्र छपवाया था। मेरा खयाल है कि अखबारोंमें वह पत्र नहीं छपा। लेकिन १९१७में मेरे पिताजीके आश्रममें दाखिल होनेके बाद हरिलालभाओीसे ही अुन्हें वह पढनेको मिला था। अुन पत्रका सार देते हुअे वे अिस प्रकार लिखते हैं

अिसका भी अुन्होंने वर्णन किया है। दूसरे, मणिलालभाओी या रामदास-भाओीको जब अुनकी पढाओीके समयमें दूसरोंके काम सौंपे जाते और वे अुस पर अपना कुछ असन्तोष प्रकट करते, तो बापू अुनसे कहते 'तुम   की चाकरी करते हो, यही तुम्हारी अुत्तम पढाओी है। जो आदमी अपना फर्ज अदा करता है, वह हमेशा ही पढता है। तुम कहते हो कि पढाओी छोडनी पडती है, लेकिन दरअसल अैसा है ही नहीं। तुम सेवा करते हुअे भी अभ्यास ही करते हो। अक्षरज्ञान तो बादमें भी हासिल किया जा सकता है, लेकिन सेवाका अवसर बादमें आवेगा ही, अिसका कोओी निश्चय नहीं।' अिस तरहकी बातें कहकर नाहक अुन्हें बडप्पन देते हैं, और अुनको अपनी पढाओी आगे नहीं बढाने देते। कहावत मशहूर है कि 'वर मरो, कन्या मरो, मेरी गोदका भाडा भरो'। बस, ठीक अिसी तरह आश्रममें सब कोओी बरतते हैं — 'कुछ भी हो, मगर बापूजीको खुश करो।' वगैरा बातें लिखकर आश्रममें अुनको जिस दम्भके दर्शन हुअे थे, अुसको भी अुन्होंने खोला है।

"यह समूचा पत्र मैंने करीब २५ साल पहले अेक बार पढा था। अुसमें से महत्त्वकी जो बातें याद रह गओी हैं, सो तुझे लिखी हैं। वैसे पत्र तो बहुत लम्बा है। अपने अिस पत्रमें अुन्होंने यह भी बताया है कि पढाओीके दिनोंमें ही किस तरह अुन्होंने अपनी शादी कर ली और फिर पढ नहीं पाये।"

बापू पर यह आक्षेप किया जाता है कि अुन्होंने अपने बालकोंकी पढाओीका ठीक-ठीक प्रबन्ध नहीं किया। अिसके बारेमें बापूने अपनी सफाओी और अिस सम्बन्धकी अपनी विचारधाराका 'आत्मकथा' में विस्तारसे वर्णन किया है, अिसलिअे यहां अुसे दोहराना जरूरी नहीं। लेकिन बा की विचारधारा कुछ बापूके जैसी नहीं थी, अिसलिअे बा के खयालसे तो यह बडे दुःखकी ही बात थी।

जिन दिनों हरिलालभाओीने वह पत्र लिखा था, अुन दिनों बहुत करके वे कलकत्तेमें किसी तरहका कोओी व्यापार करते थे। सन् १९२० में अुनकी धर्मपत्नी सौ० गुलाबबहन गुजर गओी। अुन वक्त तक हरिलाल-भाओीका जीवन कुछ ठीक रहा। १९१९ के रौलट सत्याग्रहमें सैनिकके

नाते अुन्होंने अपना नाम भी दर्ज कराया था। लेकिन गुलाबबहनके गुजर जानेके बाद हरिलालभाअी गैर-रास्ते चल पड़े। बापूने और बा ने अुनको ठीक रास्ते लानेकी बहुत कोशिशें की, लेकिन कोअी नतीजा न निकला। वे मुसलमान बन गये। फिर आर्यसमाजी बने। ये सारी बातें तो दुनिया जानती ही है। हरिलालभाअीके दो पुत्रों (अिनमें से अेक गुजर गये हैं) और दो पुत्रियोंको बा ने अपने पास रखकर ही पाला-पोसा और अपने मनको मनाया। लेकिन जब अुन्होंने हरिलालभाअीके मुसलमान होनेकी बात सुनी, तबके दुःख और दर्दका वर्णन करना सम्भव नहीं। हरिलालभाअीको लिखे गये अुनके नीचे लिखे पत्रमें वह कुछ-कुछ व्यक्त हुआ है :

"चि० हरिलाल,

"मेरे सुननेमें आया है कि कुछ समय पहले मद्रासमें आधी रातको आम रास्ते पर शराबके नशेमें अूधम मचानेके कारण पुलिसने तुझे पकड़ा था और दूसरे दिन मजिस्ट्रेटोंके सामने पेश किये जाने पर अुन्होंने तुझे १ रुपयेके जुर्मानेकी सजा की थी। तुझ पर अुन्होंने यह जो अितनी दया दिखाअी, अिससे पता चलता है कि वे बहुत ही भले आदमी होने चाहियें। तुझे अैसी नाममात्रकी सजा देकर मजिस्ट्रेटोंने भी तेरे पिताके लिअे अपने सद्भावको प्रकट किया है। लेकिन अिस घटनाका ब्योरा सुननेके बाद मुझे तो बहुत ही दुःख होता रहा है। मैं नहीं जानती कि अुस रातको तू अकेला था, या तेरे किन्हीं मित्रोंके साथ था। लेकिन तेरा यह आचरण तो सचमुच बहुत ही अनुचित था।

"मुझे सूझ नहीं पड़ता कि मैं तुझसे क्या कहूं? पिछले कअी सालोंसे मैं तुझे बराबर मनाती रही हूं कि तू अपने जीवन पर अंकुश रख। लेकिन तू तो दिन-ब-दिन ज्यादा ही ज्यादा बिगड़ता जाता है। अब तो मेरे लिअे जीना भी कठिन हो पड़ा है। अपने माता-पिताको तू अुनके जीवनकी सन्ध्याके दिनोंमें कितना दुःख पहुंचा रहा है, अिसका तो तनिक विचार कर।

"तेरे बापूजी अिस बारेमें कभी किसीसे बातचीत नहीं करते, लेकिन तेरे चाल-चलनसे लगनेवाले आघातोंके कारण अुनका दिल चूर-चूर

हुआ जाता है। हमारी भावनाको यों बार-बार दुखाकर तू अेक बडा पाप कर रहा है। हमारे घर पुत्रकी तरह पैदा होकर तू दुश्मनकी तरह बरत रहा है।

"मेरे सुननेमें आया है कि अिधर-अिधर तू अपने बापूकी बहुत टीका और निन्दा करने लगा है। तेरे समान बुद्धिशाली पुत्रको यह शोभा नही देता। अपने बापूजीकी निन्दा करके तू अपनी ही पोल खोलता है, अिसका तुझे जरा भी खयाल नही है। अुनके दिलमें तेरे लिअे सिवा प्रेमके और कुछ भी नही है। तू जानता है कि चारित्र्यकी शुद्धताको वे बहुत ही महत्त्व देते हैं। लेकिन तूने अुनकी अिस सलाहको तनिक भी नही माना। अितना होने पर भी अुन्होंने तो तुझे अपने साथ रखनेकी, तेरे खाने-पीने और पहनने-ओढनेकी जरूरतोंको पूरा करनेकी, और तेरी सार-सभाल रखनेकी भी अपनी तैयारी बताअी है। लेकिन तू तो सदा कृतघ्न ही रहा है। अिस दुनियामें अुनके सिर कितनी बडी जिम्मेदारियां हैं। वे अससे अधिक कुछ तेरे लिअे कर नही सकते। वे तो सिर्फ अपनी अिस बदनसीबीके लिअे शोक ही कर सकते हैं। भगवानने अुनको प्रबल अिच्छाशक्ति दी है। अुनके जीवनकी अभिलाषाओंकी पूर्तिके लिअे अीश्वर अुनको आवश्यक दीर्घायु दे। लेकिन मैं तो अेक कमजोर व बूढी स्त्री हूं, और तू जो मानसिक व्यथा पैदा करता है, अुसे सहनेमें असमर्थ हूं। तेरे बापूजीको हर रोज कअी लोगोंकी तरफसे तेरे चालचलनके बारेमें शिकायती चिट्ठियां मिलती हैं। बदनामीके ये सारे कडवे घूंट अुन्हें पीने पडते हैं। लेकिन मेरे लिअे तो तूने जाने लायक अेक भी जगह नही रखी। शरमकी मारी मैं मित्रों या अजनबियोंके बीच घूम-फिर भी नही सकती। तेरे बापूजी तो तुझे हमेशा माफ करते ही रहते हैं। लेकिन परमात्मा तेरे आचरणको सहन नही करेगा।

"मद्रासमें तो तू किन्ही अिज्जतदार और जाने-माने सज्जनके घर मेहमानकी तरह ठहरा था, लेकिन अुनके घरको छोडकर तूने आम रास्ते पर अैसा दुर्व्यवहार करके अुनकी मेहमानदारीका दुरुपयोग किया है। अपने अिस व्यवहारसे तूने अुनको कितना नीचा दिखाया होगा? हररोज सुबह जागती हूं, तब दिलमें यही धुकधुकी बनी रहती है कि कहीं तेरे

किसी नये दुराचरणकी कोअी ताजा खबर तो नही आयी है? मैं अकसर सोचती हू कि तू कहा रहता होगा? कहा सोता होगा? क्या खाता होगा? शायद तू अभक्ष्य चीजें भी खाता होगा। अैसे-अैसे अनेक विचारोके कारण कभी-कभी रात मुझे नीद भी नही आती। कअी बार दिल होता है कि तुझसे मिलू, लेकिन मुझे तो यह भी पता नही कि तू कहा मिल सकता है। तू मेरी पहली कोखका लडका है, और तेरी अुमर भी ५० सालकी हो गअी है। कही तू मेरी भी बेअिज्जती न कर दे, अिस आशकासे तेरे पास आनेमें भी मैं डरती हू।

"मैं नही जानती कि तूने अपने पैदाअिशी धर्मको क्यो बदला है। यह तेरा अपना निजी सवाल है। लेकिन मैं सुनती हू कि तू निर्दोष और अज्ञान लोगोको अपनी राह चलनेकी सलाह दे रहा है। तुझे अपनी मर्यादाका भान कब होगा? धर्मके बारेमें तू जानता क्या है? तेरे बापूजीके नामकी वजहसे लोग तेरे कहने पर गलत रास्ते बहक जायेंगे। तू धर्म-प्रचार करनेके योग्य नही। तू तो पैसेका गुलाम बन गया है। जो लोग तुझे पैसा देते है, वे तुझे अच्छे लगते है। लेकिन तू तो शराबखोरीमें सारा पैसा बरबाद कर डालता है। और फिर सभाके मच पर खडा होकर भाषण करता है। तू अपने आपका और अपनी आत्माका हनन कर रहा है। अगर तू अैसा ही करता रहा, तो वक्त आयेगा, जब सभी तुझसे दूर भागेंगे। अिसलिअे मैं तुझसे प्रार्थना करती हू कि तू शान्तिके साथ विचार करके अपनी अिस मूर्खताको छोड दे। तेरा धर्म-परिवर्तन मुझे अच्छा नही लगा था, तो भी तूने अपने जीवनको सुधार लेनेके अपने निश्चयके बारेमें जो बयान दिया था, अुससे मैंने सतोष माना था और आगे तू समझदारीके साथ अपना जीवन बितायेगा, अिस विचारसे मन-ही-मन मैं खुश भी हुअी थी। लेकिन मेरी वह आशा भी धूलमें मिल गअी है। कुछ ही वक्त पहले बम्बअीमें तेरे कुछ पुराने मित्रो और शुभचिन्तकोने तुझे पहलेसे भी ज्यादा बुरी हालतमें देखा था। तू जानता है कि तेरे आचरणसे तेरे पुत्रोको कितना दुःख होता है। साथ ही, तेरे अिस विचित्र व्यवहारसे अुत्पन्न होनेवाली शर्मके मारे तेरी लडकियो और दामादोके लिअे दिन-ब-दिन ज्यादा मुश्किल होता जा रहा है।"

हरिलालभाओीके धर्म-परिवर्तनमें और अुसके बादकी अुनकी हलचलोंमें दिलचस्पी लेनेवाले मुसलमान भाअियोंको सम्बोधन करके बा लिखती हैं

"मैं आपके कामको समझ नहीं पाती। जो मेरे पुत्रकी मौजूदा हलचलोंमें अमली तौर पर हाथ बटा रहे हैं, अुन्हींको सम्बोधन करके मैं यह कहती हू। मैं जानती हू, और मुझको यह खयाल करके खुशी होती है कि विचारशील मुस्लिम जनताके बहुत बडे हिस्सेने और हमारे जिन्दगी-भरके मुसलमान दोस्तोंने अिस सारी घटनाकी निन्दा की है। आज अुस महापुरुष डॉक्टर अन्सारीकी कमी बहुत ज्यादा खटकती है। वे होते तो अुन्होंने मेरे लडकेको और आप लोगोंको भी बहुत नेक सलाह दी होती। लेकिन अुनके जैसे दूसरे कअी प्रतिष्ठित और भले लोग आपमें मौजूद हैं, और मैं अुम्मीद करती हू कि वे आपको मुनासिब सलाह देंगे ही। अिस तथाकथित धर्म-परिवर्तनसे मेरा लडका सुधरनेके बदले बुरी आदतोंका ज्यादा शिकार बन गया है। आपको चाहिये कि आप अुसे अुसकी बदफेलीके लिअे अुलाहना दें और अुसे अच्छी राह पर लायें। कुछ लोग तो मेरे लडकेको मौलवीका अुपनाम देनेकी हद तक बढ गये हैं। क्या यह वाजिब है? क्या आपका मजहब शराबीको मौलवी कहनेकी अिजाजत देता है? मद्रासमें अुसकी अुस तूफानी हरकतके बाद भी कुछ मुसलमान अुसे स्टेशन पर विदाअीकी अिज्जत बख्शनेको अिकट्ठा हुअे थे।

"अिस तरह अुसको अितना ज्यादा बडप्पन देनेमें आपको क्या खुशी होती है, सो मैं समझ नहीं पाती। अगर आप अुसको अपना सच्चा भाअी ही मानते होते, तो अुसके साथ आपका बरताव अैसा न होता। क्योंकि आपका बरताव अुसके लिअे जरा भी फायदेमन्द नहीं है। अगर आपका अिरादा दुनियामें हमारी हसी करानेका ही हो, तो मुझे आपसे कुछ भी कहना नहीं है। आपसे जो बन पडे, आप कर सकते हैं। लेकिन अेक घायल माकी कमजोर आवाज आप पर अपना असर रखनेवाले कुछ भाअियोंके अन्तःकरणको जाग्रत करेगी और मुमकिन है कि वे आपको समझा सकेंगे। लेकिन जो बात मैं अपने लडकेसे कह रही हू, अुसीको दोहराकर आपसे कहना मैं अपना फर्ज समझती हू और कहती हू कि आप जो कुछ कर रहे हैं, वह खुदाकी नजरोंमें वाजिब नहीं ठहरता।"

बा को अपने लड़कोंके लिअे दर्द और हमदर्दी होना स्वाभाविक है। यों हरिलालभाअी बा और बापूको छोड़कर चले तो गये, लेकिन बा के लिअे तो अनके दिलमें भी बहुत ही अिज्जत और मुहब्बत रही। वे यह सोचा करते कि राजरानी बननेके लिअे जनमी हुअी बा से बापू नाहक अितनी तकलीफें अुठवाते हैं। बा से मिलनेके लिअे वे कभी-कभी आश्रममें भी आते थे। जब अुनकी हालत बहुत ही खराब हो गअी, तब शायद अुन्हें आश्रममें आते हिचक मालूम होने लगी। लेकिन अिनमे बा के लिअे अुनका प्रेम कम कैसे होता? अेक बार वे बहुत ही बुरी—बेहाल—हालतमें बा से मिले थे। अुस समयकी अेक बहुत ही करुण घटना है, जिससे बा के प्रति अुनके भावका साफ पता चलता है।

अेक बार बा और बापू ट्रेनका सफर कर रहे थे। जब जबलपुर मेल कटनी स्टेशन पर पहुचा, तो वहा दूसरे स्टेशनोंसे बिलकुल अलग अेक जयनाद सुनाअी पडा· "माता कस्तूरबाकी जय!" बा को सहज ही अिससे थोड़ा अचभा हुआ। अुन्होंने खिडकीकी राह मुह बाहर निकाल-कर देखा, तो सामने हरिलालभाअी खड़े थे।

अेक समयका तन्दुरुस्त शरीर बिलकुल जर्जर हो गया था। अगले दात सब गिर पड़े थे। कपड़े बिलकुल फटे हुअे थे। खिडकीके पास आकर अुन्होंने अपनी जेबसे झटपट अेक मोसबी निकाली और कहा "बा, यह तुम्हारे लिअे लाया हू।"

अिससे पहले कि बा जवाबमें कुछ कहें, बापूजी खिडकीके पास आ पहुचे। अुन्होंने पूछा "मेरे लिअे कुछ नही लाया?"

हरिलालभाअीने कहा. "नही, यह तो बा के लिअे ही लाया हू। आपसे तो सिर्फ यही कहना है कि बा के प्रतापसे ही आप अितने बड़े बने हैं।"

"अिसमें तो कोअी शक ही नही। लेकिन क्या तू अब हमारे साथ चलेगा?"

"नही, मैं तो बा से मिलने आया हू।"

बापू वापस अपनी जगह पर जाकर बैठ गये। मा-बेटेकी बातचीत आगे चली

"लो बा, यह मोसबी।"

"कहासे लाया?"

"कहीसे भी लाया होअू। तुम्हारे लिअे प्रेमपूर्वक लाया हू। भीख माग कर लाया हू।"

बा ने मोसबी अपने हाथमें ले ली। लेकिन हरिलालभाअीको अिससे पूरा सतोष नही हुआ। अुन्होने कहा

"बा, यह मोसबी तुम्हीको खानी है। तुम न खाओ तो मुझे वापस दे दो।"

"अच्छा, अच्छा, यह मोसबी मैं ही खाअूगी।" कुछ देर तक अुनको अेकटक निरखनेके बाद बा फिर बोली "तू अपना हाल तो देख! जरा यह तो सोच कि तू किनका लडका है! चल, हमारे साथ चल।"

लेकिन अिस आखिरी बातको खतम करना तो वे खूब जानते थे। बोले

"अिसकी तो बात ही न करो, बा! मैं अब अिस हालतसे अुबर नही सकता।"

बा की आखें छलछला आअी। गार्डने सीटी दी। ट्रेन चली। चलते-चलते हरिलालभाअीने फिर कहा "बा, मोसबी तो तुम ही खाना, भला!"

जब गाडी जरा आगे बढी, तो बा को अचानक याद आअी कि अुन्होने तो अुनको कुछ भी नही दिया। बोली "अरे, बेचारेको फल-बल कुछ भी नही दिया! भूखो मरता होगा। देखू, अब भी कुछ दे सकू तो!"

डलियामें से फल निकालकर बाहर देखा, तो ट्रेन प्लेटफॉर्म पार कर चुकी थी।

दूरसे अेक क्षीण आवाज सुनाअी पडी

"माता कस्तूरबाकी जय!"

१९

सार्वजनिक जीवनमें

दक्षिण अफ्रीकामें जेल जानेके सिवा बा वहांके सार्वजनिक कामोंमें शरीक हुअी हों सो मालूम नहीं होता। लेकिन हिन्दुस्तानमें आनेके बाद बापूजीने जितने भी काम अुठाये, अुन सबमें बा ने अेक अनुभवी सैनिककी अदासे हाथ बटाया है। बा को आम सभाओं, जुलूसों और अिस तरहके दिखावोंका बिलकुल ही शौक नहीं था। लेकिन जहां रचनात्मक काम करना होता, अपनी हाजिरी और हमदर्दीसे लोगोंमें हिम्मत और 'हूफ' (गरमी) भरनी होती, वहां वैसे कामोंके लिअे बा तैयार रहीं हैं। बापूने हिन्दुस्तान आने पर सत्याग्रहकी पहली लड़ाअी चम्पारनमें छेड़ी। कहा जा सकता है कि अुसमें सविनय-भंग करनेके साथ ही फतह मिली। लेकिन बापूजीने महसूस किया कि चम्पारनमें ठीकसे काम करना हो, तो कुछ सेवकोंको देहातमें लोगोंके बीच जाकर बैठना चाहिये और सुख-दुःखमें अुनके भागीदार बनकर अुन्हें तैयार करना चाहिये। बिहार जैसे गरीब सूबेमें तनख्वाह लेकर काम करनेवाले सेवक पुसा ही नहीं सकते। और जैसे-तैसे सेवकोंसे काम नहीं चल सकता। गांववालोंके पास पैसे तो नहीं थे, लेकिन जिस गांवमें लोग रहनेके लिअे मकान और कच्चा अनाज देना मंजूर करें, वहां सेवकोंको बैठा देनेकी बात बापूने तय की। अिस कामके लिअे बापूने सार्वजनिक रूपसे स्वयंसेवकोंकी मांग पेश की। महाराष्ट्र और गुजरातसे संस्कारी और कुशल सेवक मिल गये। और बापूने आश्रमसे भी कुछ भाअी-बहनोंको वहां बुलवा लिया। गुजरातसे गअी हुअी बहनोंको गुजरातीका ही थोड़ा-बहुत ज्ञान था। वे बालकोंको हिन्दी कैसे सिखातीं? बापूने बहनोंको समझाया कि अुन्हें बच्चोंको व्याकरण नहीं, बल्कि सभ्य जीवन सिखाना है, पढ़ना-लिखना सिखानेके बजाय सफाअीके नियम सिखाने हैं। आये हुअे भाअी-बहन दो-दो या तीन-तीनकी टुकड़ियोंमें बांट दिये गये, और अुन्हें गांवोंमें बैठा दिया गया। भीतिहरवा नामके गांवमें अेक छोटे मन्दिरके महन्तकी मददसे मन्दिरकी अपनी थोड़ी धर्मादा जमीन पर अेक झोपड़ा तैयार करके वहां अेक मदरसा खोला गया था। बा और दूसरे दो भाअी वहां रहने लगे।

अिस मदरसेमें कम-से-कम सहूलियतें थी। अुस हिस्सेकी हवा भी अच्छी नही थी, और हिमालयकी तलहटीके ज्यादा नजदीक होनेसे वहा जाडोमें सर्दी भी बहुत पडती थी। रहनेके झोपडोकी छत पर सुबह धुनी हुअी रुअीकी तरह ओस फैली और लदी नजर आती थी। अिन शारीरिक कष्टों और अडचनोके सिवा वहा पास ही जिस निलहे गोरेकी कोठी थी, वह सब गोरोमें बदतर माना जाता था। अिसी वजहसे बापूने बा को वहा रखा था। बा गावमें घूमने और दवा तकसीम करनेका काम करती थी, जो अिस निलहे गोरेसे सहा नही गया। अुसने अखबारोमें बेजा शिकायतें छपवाअी और लिखा "मि० गाधी नगे पैर घूमकर और कपडोमें सादगी बरतकर लोगोमें अधश्रद्धा पैदा करते है और अुससे फायदा अुठाना चाहते है, यही नही, बल्कि जब वे दूसरी राजनीतिक हलचलोको चलानेके लिअे बाहर चले जाते है, तब श्रीमती गाधी यहा लोगोको भडकानेका अपने पतिका काम जारी रखती है।" वगैरा-वगैरा।

राजनीतिक मामलोसे बिलकुल दूर रहनेवाली, केवल भूतदयासे प्रेरित होकर ही बीमारोमें दवा बाटनेका काम करनेवाली, देहातकी भाषासे बिलकुल अनजान, टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी बोल सकनेवाली, अग्रेजी अखबारोमें किये गये आक्षेपोके बारेमें जब तक कोअी अुन्हे गुजरातीमें समझा न दे तब तक अुनसे बिलकुल अनजान रहनेवाली, यानी बहुत थोडी पढी-लिखी बा अुस घमडी निलहेको लोगोमें अुत्तेजना फैलानेवाली मालूम हुअी।

अेक बार बा और अुनके साथी गावोमें घूमने गये। जब लौटे तो देखा कि जिस झोपडेमें वे रहते थे और जिसमें मदरसा लगता था, वे दोनो जलकर खाक हो गये है। सिवा राखके वहा अुनका कोअी निशान तक नही रह गया था। अिसमें शक नही कि काममें रुकावट पैदा करनेकी गरजसे किसी द्वेषीने आग लगा दी होगी। बा का और अुनके साथी श्री सोमणका तो आग्रह था कि मदरसा अेक दिन भी बन्द न रहना चाहिये। चुनाचे सारी रात जागकर बास और घासका अेक झोपडा खडा कर लिया। बादमें पक्का मकान बनाया गया जो अभी कायम है।

भीतिहरवाके पास ही अेक छोटासा गाव है। बापूजी घूमते-फिरते अुस गावमें पहुचे। वहा कुछ बहनोके कपडे बहुत ही गन्दे नजर आये।

बापूने बा से कहा कि वे अुन बहनोंको कपड़े धोनेके लिअे समझायें। बा ने बहनोंसे बातचीत की। अुनमें से अेक बहन बा को अपनी झोंपड़ीमें ले गयी और बोली "आप देखिये, यहां कोअी पेटी या आलमारी नहीं है, जिसमें कपड़े धरे हों। बदन पर यह जो साड़ी पहने हूं, यही अेक साड़ी मेरे पास है। अिसे मैं किस तरह धोअूं? महात्माजीसे कहिये, वे कपड़े दिलावें, तो मैं रोज नहाने और रोज कपड़े बदलनेको तैयार हूं।"

बा ने बापूसे सारी हकीकत कही। भारतमाताकी अिस हालतको देखकर बापूका दिल तड़प अुठा।

* * *

खेड़ा-सत्याग्रह

अभी चम्पारनका काम चल ही रहा था कि अितनेमें खेड़ा जिलेमें सत्याग्रह शुरू हुआ। अुस वक्त बा भी बापूके साथ खेड़ा जिलेके गांवोंमें घूमती थीं। कभी बापूके साथ रहतीं और कभी अकेली भी घूमतीं।

खेड़ा जिलेके तोरणा गांवमें मामलतदारने अेकाअेक छापा मारकर तेबीस घरोंमें जब्तियां कीं। जब्तीमें अुन्होंने औरतोंके जेवर, हण्डे, घड़े, ढेर, दुधार भैंसें वगैरा चीजें जब्त कीं। बा को अिसका पता चला और फौरन ही वे तोरणवालोंके दुःखमें अुनको ढाढ़स बंधानेके लिअे वहां दौड़ी गयीं। अुनके जानेसे लोगोंकी खुशीका पार न रहा, और औरतोंने तो सचमुच फूलोंकी वर्षा की।

वहां औरतोंके सामने बा ने लड़ाअीके मर्म और धर्मको समझाते हुअे अेक छोटा मगर पुरअसर भाषण दिया

"हमारे मर्दोंने सत्यके लिअे सरकारके साथ जो लड़ाअी ठानी है, अुसमें हमें अुनको अुत्साह दिलाना चाहिये। सरकारके दिये दुःखको सहना चाहिये। वह हमारा माल-असबाब अुठाने आवे, तो अुन्हें अुठा ले जाने देना चाहिये। वह हमारी जमीनें छीन ले, तो छीन लेने देना चाहिये। लेकिन सरकारको लगानकी अेक पाओी भी देकर झूठे नहीं बनना चाहिये। क्योंकि जब रिआया सरकारसे कहती है कि फसल नहीं हुअी, तो सरकारको अुस पर यकीन करना चाहिये। मगर वह न माने और सताये, तो हमें सब कुछ सह लेना चाहिये, लेकिन अपनी टेकसे डिगना न चाहिये।

सरकारी नौकरोंसे मत डरिये, बल्कि धीरज रखिये और अपने भाअियों, पतियों और बेटोंको हिम्मत बधाअिये।"

बा के अिन सादे लेकिन अुत्साह और प्रेरणा दिलानेवाले वचनोंसे लोगोंमें जोश आया और कअी बहादुर औरतोंने बा को वचन दिया

"जब आप हमारे लिअे अितनी-अितनी तकलीफें अुठाती हैं, तो फिर हम किसलिअे डरें? हम हिम्मत रखेंगी और सरकारको पैसा देने नहीं देंगी।"

*　　*　　*

स्वराज्यकी पहली लड़ाअीमें

सन् १९२२में बापूजीको गिरफ्तार किया गया और छह सालकी सजा सुनाअी गअी। अिस सजाकी बात सुनकर सारा देश सतप्त हो अुठा। अुस वक्तका बा का सदेश अेक वीरागनाको शोभा देने जैसा है

"आज मेरे पतिको छह सालकी सजा हुअी है। अिस जबरदस्त सजासे मैं थोडी अस्थिर — बेचैन — हुअी हू, सो मुझे मजूर करना चाहिये। लेकिन हम चाहें तो सजाकी मुद्दत पूरी होनेसे पहले ही अुनको जेलसे छुडा सकते हैं।

"सफलता पाना हमारे हाथकी बात है। अगर हम असफल हुअे, तो अिसमें दोष हमारा ही होगा। और अिसीलिअे मैं मेरे दुखमें हमदर्दी रखनेवाले और मेरे पतिके लिअे मुहब्बत रखनेवाले सभी स्त्री-पुरुषोंसे प्रार्थना करती हू कि वे रात-दिन लगे रहकर रचनात्मक कार्यक्रमको कामयाब बनायें। रचनात्मक कार्यक्रममें, यानी तामीरी काममें, चरखा चलाना और खादी पैदा करना दो खास चीजें हैं। गाधीजीको दी गअी सजाका जवाब हम अिस तरह दें

१ सभी औरत-मर्द परदेशी कपडा पहनना छोड दें और खुद खादी पहनें व दूसरोंको पहननेके लिअे समझायें।

२ सभी औरत-मर्द कताअीको अपना धार्मिक कर्तव्य समझ लें, और दूसरोंको भी वैसा करनेके लिअे समझायें।

३ सभी व्यापारी परदेशी कपड़ेका व्यापार करना छोड दें।"

बा के सच्चे दिलसे निकले अिस पैगामका लोगो पर बहुत अच्छा असर हुआ। जगह-जगह परदेशी कपडेकी होलिया जलने लगी। चरखे गूजने लगे और कुछ लोगोने शुद्ध खादी पहननी शुरू की।

बापूको साबरमतीसे यरवडा ले गये। बा को दु ख तो बहुत हुआ, लेकिन वे अपनेको सभाले रही। अैसे समय बा अपने सच्चे रूपमें प्रकट हो अुठती थी। हमेशा कम बोलनेवाली और रसोअीघर सभालनेवाली बा सार्वजनिक कामोके लिअे अिस तरह निकल पडी कि कोअी नौजवान भी क्या निकलेगा। वे कहती "मुझे अब आश्रममे चैन नही पडता। अब तो मुझे, जितना बन पडे, बापूका काम करना चाहिये। बापू कार्यकर्ताओंको गावोमें और रानीपरज (आदिवासियो) के बीच बसनेको कह गये है। अिसलिअे मुझे भी गावमें ले चलो।" स्वर्गीय श्री दयालजी-भाअीकी माके साथ बा विद्यापीठके चन्देके लिअे सूरत जिलेमें और अुधर नदरबार तक घूमी। और बारडोलीमें चरखेके कामको गति देनेके लिअे बैलगाडीमें बैठकर गाव-गाव घूमी। जब काग्रेसके अन्दर स्वराज्यवादी दल पैदा हुआ और बापूके रचनात्मक कामके बारेमें अच्छे-अच्छोकी श्रद्धा डिग चुकी थी, तब भी बा अनन्त निष्ठासे और अविचल भावसे बापूके कार्यक्रममें श्रद्धा रखती थी और अपने थोडे शब्दो द्वारा लोगोंको प्रेरणा देती थी

"अुमडते हुअे जोशके समय तो हर कोअी साथ देता है। लेकिन जोश अुतरनेके बाद भी जो टिके रहते है वे पक्के है। दक्षिण अफ्रीकामें भी अैसी ही नाअुम्मेदी छा गअी थी, लेकिन बहनें और खानोंमें काम करनेवाले मजदूर निकल पडे और जीत हुअी। अुसी तरह मैं तो सचमुच मानती हू कि आखिर सत्यकी जीत होनेवाली है।"

बा के ये शब्द लच्छेदार लेक्चर देनेवालोंके लेक्चरोंसे कहीं गहरा असर करते थे। अुन्हीं दिनों बा ने सोनगढ तहसीलके जगलमें डोसवाडा मुकाम पर रानीपरजकी दूसरी परिषद्की अध्यक्षता की और हजारो आदि-वासियोंसे शराब छुडवाकर अुनको चरखा कातने और भजन करनेमें लगा दिया।

दाडीकूच और धरासणा — १९३० की लड़ाओमें

अिस लड़ाओमें बा ने जो हिस्सा लिया था, अुसका बयान श्रीमती मीठुबहनके शब्दोमें ही यहा दिया है

"१९३० में दाडीकूचके समय बहनोने बापूसे पूछा कि अिस बार हमें क्या करना चाहिये ?

"बापूने कहा 'तुम्हारे लिअे मैंने अेक सुन्दर काम ढूढ रखा है। बहनोको जेल नही जाना है, बल्कि विदेशी कपडेके बहिष्कारका और शराबबन्दीका काम करना है। और जरूरत पडे तो अुसके लिअे धरना — पिकेटिंग — भी देना है।'

"छठी अप्रैलको दाडीमें नमक-सत्याग्रहके बाद बापूने जो सभा की थी, अुसमें अिस चीज पर खास तौरसे जोर दिया था। नवसारीके पास वीजलपुरमें बहनोकी अेक खास सभा बुलाओ गओ थी। अिस सभामें कोओ चार-पाच हजार बहनें हाजिर थी। अहमदाबाद और बम्बओसे भी कुछ अगुआ बहनें आओ थी। अुस सभामें बापूकी सलाहसे 'स्त्री-स्वराज्य-सघ' की स्थापना की गओ और सूरत शहर और जिलेमें विदेशी कपडेके बायकॉट और शराबबन्दीके लिअे छावनिया डालनेकी अेक योजना तैयार की गओ। बहनोकी मददके लिअे बापूने गुजरातके मशहूर नेता डॉक्टर सुमन्त मेहताको चुना और कहा 'आपको बहनोकी रहनुमाओ नही करनी है, रहनुमाओ तो बा और मीठुबहन ही करेगी। आपको सिर्फ मुनीमके नाते मददभर करनी है।'

"मुझे अिससे थोडा सकोच मालूम हुआ और मैंने बापूसे कहा 'आप हमारी ताकतका बहुत ज्यादा अदाजा लगाते है।' लेकिन बापू अपनी बात पर डटे रहे। क्योकि बा की तत्त्वनिष्ठा और काम करनेकी शक्तिसे वे परिचित थे। बा के नाममें कुछ अैसा खिचाव था कि छावनीमें सैकडो बहनें भरती हो गओ। सूरत शहरमें, पिछडी कही जानेवाली कौमोसे भी, सैकडो बहनें जिन्दगीमें पहली बार सार्वजनिक कामके लिअे निकल पडी। अुन सबको हिम्मत और प्रेरणा बा से ही मिलती थी। 'बा कौन अग्रेजी पढी है ? अगर वे यह काम कर सकती हैं, तो

हम अुनका साथ क्यों न दें?' बा के जीवनसे अुनमें आत्मश्रद्धा पैदा हुअी। नतीजा यह हुआ कि समूचे सूरत जिलेमें, जो अपनी शराबखोरीके लिअे मशहूर है, शराबकी दुकानों पर अेक चिड़िया तक नहीं फड़कती थी। सरकारको अपनी नीति और अपने कानून ताक पर रख देने पड़े और दारू-ताड़ीकी फेरी लगानेकी अिजाजत देनी पड़ी। अब तक सभ्यताका स्वांग रचकर बैठी हुअी सरकारने देहातमें अिस बातकी पेशबन्दी की कि बहनोंको वहां छावनीके लिअे कोअी अपने मकान न दें। लेकिन बहनें डिगी नहीं। मडवे बांधकर अुन्होंने अुसमें अपनी छावनियां डालीं। जब मडवे जलने लगे और बरतन-भांडे जब्त होने लगे, तो बा ने कहा: 'हम चटाअियोंके झोंपड़ोंमें रहेंगी और मिट्टीके बरतन रखेंगी। फिर देखें, वे क्या ले जाते हैं?'

"बा छावनीमें थीं तभी अुनको बापूकी गिरफ्तारीकी खबर मिली। यह खबर सुनकर अुन्होंने देशवासियोंके नाम स्वदेश-भक्तिसे छलकता हुआ यह संदेश दिया:

'आज सुबह चार बजे मैं प्रार्थना कर रही थी, तभी मुझे बापूका स्मरण हुआ। रात हमारी छावनीके नजदीकसे मोटरोंकी भागादौड़ी बहुत सुनाअी पड़ती थी। अिसलिअे मनमें शक तो पैदा हो ही गया था। प्रार्थनाके बाद तुरन्त ही नवसारी छावनीसे खबर आअी कि गांधीजीको वे आधी रातके वक्त ले गये हैं।

'सुबह मैं कराड़ीकी छावनीमें हो आअी। आश्रमवासियोंसे मिली। अुनसे सुना कि दो मोटरोंमें हथियारोंसे लैस सिपाहियोंके साथ कुछ अफसर आये थे। गांधीजीके चारों ओर सिपाहियोंका घेरा डाल दिया गया था और कुछ देर तक तो किसी आश्रमवासीको भी अुनके पास जाने नहीं दिया गया। कराड़ी गांवके लोगोंको मालूम होते ही वे दौड़ आये, लेकिन कहते हैं सिपाहियोंने अुन्हें छावनीमें घुसने नहीं दिया। ये सारी बातें सुनकर मुझे बहुत अफसोस हुआ। सरकारके पागलपन पर मुझे हंसी आअी। गांधीजीको गिरफ्तार करनेके लिअे आधी रातके वक्त डाका डालनेकी क्या जरूरत थी? अुनको पकड़नेके लिअे अिस सारे लश्करी लवाजमेकी क्या जरूरत थी?

'अब गाधीजी तो गये। यह सरकारकी मेहरबानी है कि वह अुन्हें अितनी देरमें ले गअी। अिन पाच हफ्तोमें वे जितना कुछ हमें कहना चाहते थे, सब कह चुके है। अुन्होने हमारे लिअे अेक रास्ता बता दिया है। भाअियोको और बहनोको अुनका काम अलग-अलग सुझा दिया है। अब तो गाधीजी जो काम हमें सौंप गये हैं, अुसे पूरा करना ही हमारा धर्म हो जाता है।

'मैं अीश्वरसे प्रार्थना करती हू कि अिस घटनाके कारण देशमें कही कोअी अशान्ति (बदअमनी) न हो। लोगोसे भी मिन्नत करती हू कि वे अपनी भावनाओ और भक्तिकी बाढमें बहकर पागल न बनें, बल्कि मर-मिटनेकी अपनी साधको प्रबल बनाकर अिस लडाअीको जारी रखें।

'सरकारी नौकरी करनेवाले भाअियो, आप अब कब तक अपनी नौकरीसे चिपटे रहेगे? सिपाही अपने देशभाअियो पर लाठिया चलाते और गोलिया दागते हैं। अुन्हे यह हिम्मत कैसे होती है? भाअियो, हिम्मतसे काम लो। भगवान आपमें से किसीको भूखा नही रखेगा। पहले बेगुनाह और देशभक्तिमें पगे हुअे बच्चो पर हाथ अुठाना और फिर घर जानेके बाद आखोमें पानी भरकर लम्बी आहे छोडना, अिससे फायदा क्या? परमेश्वरका नाम लेकर हिम्मतसे काम लो और नौकरी छोड दो।

'आज अिसके सिवा और दूसरा सदेश मैं क्या दू? परमात्मा हम सबको शक्ति दे।'

"बापूजीकी गिरफ्तारीके बाद गुजरातके देशसेवक धरासणाकी ओर चल पडे। सरकारने अुनके साथ बहुत बेरहमी बरती। लाठिया चलाअी। नीचे गिराकर अुन पर घोडे दौडाये। मुहमें कपडा ठूसकर खारे पानीमें डुबाया। कटीली और तारोवाली बागुडोमें फेंक दिया। निहत्थे सैनिको पर जितना कहर बरपा किया जा सकता था, किया। बा को अिसका पता चला। वे गअी। वहा जो कुछ देखा, अुससे अुनका दिल तडप अुठा। अेक पत्र-प्रतिनिधिको मुलाकात देते हुअे अुन्होने जो करुण वर्णन किया है, अुससे अुनके अुस समयके दु खका थोडा अदाज लगेगा.

'घायल स्वयंसेवकोंको देखने और अुन्हें ढाढस बंधाने मैं वलसाड़के अस्पतालमें गयी। बिछौनों पर पड़े हुअे अुन भाअियोंकी मरहम-पट्टी और बैण्डेज वगैराका वह करुण (दर्दनाक) दृश्य देखकर मेरा दिल फटने लगा — रो पड़ी। पुलिसने अुन पर जो जुल्म ढाये हैं, अुन्हें सुनकर मैं कांप अुठी। मुझे कहना चाहिये कि मुझको दुःख तो हुआ, फिर भी अैसी जबरदस्त तकलीफें सहनेके बाद भी अुन नौजवानोंने जिस देश-भक्ति, वीरता और अुत्साहका परिचय दिया था, अुसे देखकर मेरा दिल खुशीसे नाच अुठा। सत्यके लिअे अैसे बलिदानका दृष्टांत तो अितिहासमें अकेले अेक हरिश्चन्द्रका ही मिलता है।

'चारों ओरसे अैसे जुल्मोंकी कहानियां आ रही हैं। अिसलिअे सब कोअी अिस काममें अेक-दूसरेकी सहायता करें और साथ दें, तभी हमारा काम सफल होगा। मुझे यह देखकर बहुत ही खुशी हुअी कि अितनी बड़ी तादादमें डॉक्टर और बहनें बीमारोंकी सेवा कर रही हैं।

'मुझे अुम्मीद है कि मेरे जो देशभाअी धरासणाकी करुण कहानी सुनेंगे, वे वाअिसरॉयके नये काले कानूनोंकी मुखालिफत करनेके लिअे दुगुने अुत्साहसे कर न देनेकी तहरीक चलायेंगे और साथ ही शराबबन्दीका व परदेशी कपड़ेके बायकॉटका काम जारी रखेंगे।'

"अिस लड़ाअीके दिनोंमें बीजलपुरमें जलालपुर तहसीलकी जो परिषद हुअी थी, अुसका अध्यक्षपद बा ने स्वीकार किया था। अुसमें भाषण करते हुअे अुन्होंने कहा था

'अपने देशके अितिहासके अेक बहुत नाजुक मौके पर आज हम यहां अिकट्ठा हुअे हैं। अिस वक्त हमारे पास लम्बे-चौड़े भाषण करनेका समय नहीं है। अिसलिअे आजकी सभाका अध्यक्षपद देनेके लिअे मैं बहुत थोड़ेमें आपका आभार मान लेती हूं। अिस वक्त मुझे तो आपसे अेक ही बात कहनी है कि आपसके झगड़ोंको भूल जाअिये। अिन मौके पर सब अेक हो जाअिये। अगर अेकके घर जब्ती हो तो समझिये कि सबके घर हुअी है। कोअी जब्तशुदा माल न खरीदे।

'अगर बहनें चाहें तो वे अिस लड़ाअीमें पुरुषोंकी बहुत मदद कर सकती हैं। शराब, ताड़ी और परदेशी कपड़ेके बायकॉटका काम तो

बहनोंको ही करना है। हिम्मत दिलानेके मौको पर बहनें भाअियोंको हिम्मत तो दिलायेंगी ही, लेकिन कभी स्वार्थवश कोअी माअी सरकारकी मदद करने जायें, तो बहनें अुन्हें चेतायें और जरूरत पडने पर अुनके साथ असहयोग भी करें।

'बहनोंमें जितनी समझ होती है, अुतनी पुरुषोंमें नहीं होती। क्योंकि बहनें दु:खकी भाषाको ज्यादा समझती है। धरासणाके अत्याचारोंसे बहनोंके दिलोको चोट पहुची है। जब-जब देशके हितके खिलाफ कोअी भी हलचल शुरू हो, तब धरासणाको याद रखिये।

'अिससे ज्यादा और मैं क्या कहूं? मैंने जो कुछ कहा है, अुस पर डट जानेकी और अुसका अमल करनेकी ताकत परमात्मा आपको दे और आप सबका कल्याण करे।'

"अिस लडाअीके सिलसिलेमें दौडधूपकी वजहसे बा की तन्दुरुस्ती गिर गअी। मैं बा के साथ मरोली गावमें रहती थी। अेक दिन सवेरेकी प्रार्थना समाप्त करके सब नाश्ता करने बैठे थे कि अितनेमें डाकिया आया और अेक तार दे गया। तारकी खबर जाननेको सभी बेताब हो अुठे थे।

"तार था 'हमें कस्तूरबाके साथकी जरूरत है।'

"अिस छोटेसे सदेशने सबको बेचैन कर दिया। बा तारका मर्म समझ गअी और नाश्ता छोडकर झटपट जानेकी तैयारी करनेमें जुट गअी।

"यह तार बोरसदसे आया था। बोरसदके बहादुर किसानोंने देशके खातिर अपना वतन, घर-बार, ढोर वगैरा सब कुछ छोडकर हिजरत की थी। सरकारको लगान न देनेकी वजहसे अुन्हें जेल जाना पडा था और मारपीट सहनी पडी थी। किसानोंके गुजारेका जो अेक ही जरिया —जमीन—था, वह भी नीलाम किया जा चुका था।

"लगान न देनेकी सलाह देनेवाली कुछ बहनो पर सरकारने लाठी चलाअी थी। गावमें हाहाकार मच गया था। बहुतेरी बहनें घायल होकर अस्पतालमें पडी थी। गाववालोंकी हिम्मत बढानेके लिअे अिन बहनोंने बा को तारसे बुलाया था।

"'बा, आप यह क्या कर रही है?' मैं बा की अुतावली देखकर घबराअी, और अिस फिकरसे कि अिसकी वजहसे बा की तबीयत और खराब होगी, मैंने कहा 'आपमें ताकत कहा है? बदनमें खून नामको नही रहा, अिसीलिअे तो डॉक्टरोने आपको आराम करनेकी सलाह दी है। आपकी ओरसे मैं बोरसद जाती हू। आप यही रहिये।'

"'बहादुरीके साथ पुलिसकी लाठियोको सहन करनेवाली बहनोंके बीच मुझे पहुचना ही चाहिये। बापू होते तो अिस वक्त अुनके पास रहते। लेकिन वे आज आजाद नही हैं।' कम्बल और दूसरी जरूरी चीजोको अपनी झोलीमें रखते हुअे बा ने जवाब दिया, और कदम बढाती हुअी वे बोरसद जानेवाली गाडीको पकडनेके खयालसे स्टेशनकी ओर रवाना हो गअी।

"बोरसद पहुचकर बा ने न सिर्फ अस्पतालमें घायल होकर पडी हुअी बहनोको अुत्साहित किया, बल्कि सारे गाव पर छाये हुअे डर और आतकको भी दूर किया। अपनी कमजोर तबीयतका जरा भी खयाल न करके बा ने सुबहसे लेकर रात तक खडे पैरो काम करना शुरू कर दिया।

"अिससे बा की सेहत और गिरी। नडियादसे डॉक्टर आये। अुन्होंने बा की जाच की। कहा कि आरामकी बहुत ही जरूरत है और चेतावनी दी कि 'अगर आप हमारा कहना नही मानेंगी, तो तबीयत ज्यादा खराब होगी और नतीजा अच्छा न निकलेगा।'

"'लेकिन मुझे तो कुछ मालूम ही नहीं होता। मै तो बापूके पदचिह्नो पर चलनेके सिवा और कोअी काम नही कर रही। बापूकी गैरहाजिरीमें मुझे काम करनेका यह मौका मिला है। आराम तो मैं नही कर सकूगी।'

"डॉक्टर निराश हुअे। और बा अेक सत्याग्रहीकी शानसे अपने कामको आगे बढाती चली गअीं।"

* * *

सन् १९२२ और १९२३ का तो बा का बहुतेरा वक्त जेल ही में बीता। १९३२ में श्री० लाभुबहन मेहताको बा के स्वभावका जो परिचय मिला, अुनके बारेमें वे लिखती हैं

"'यह कौन आया? अैसे नन्हें, नाजुक अुमरके बच्चोको पकडकर लानेमें सरकारको शरम भी नही आती?' मुझे देखकर अुनका कोमल हृदय कराह अुठा। दूसरे दिन अुन्हें मालूम हुआ कि मैं कुछ खाती नही हू, वहाका वह रूखा-सूखा खाना मेरे गले नही अुतरता था। अुन्होंने अुसी वक्त मुझे बुलाया। 'बी' क्लासकी अपनी खुराकमें से मुझे जबरदस्ती खानेको दिया और सीखकी दो बातें कही 'देखो, यो भूखी रहोगी तो जेल कैसे काट सकोगी? कष्ट सहन करने आअी हो तो सहन तो करना ही चाहिये न?' मैं सब समझती तो थी ही, फिर भी मनको मजबूत करनेमें दो-तीन दिन लग गये। और फिर तो मैंने अपनेको अुस खुराकके अनुकूल बना लिया। अिस बीच बा की सहानुभूति मुझे मिल गअी। जेलमें जो कोअी भी बहन बीमार पडती, कमजोर दिलकी होती, या घरमें आरामकी जिन्दगी वितानेवाली होती, अुसे बा की मदद, अुनका सहारा, हमेशा मिलता। बा की हमदर्दीके कारण जेल काटना आसान हो जाता। जेलमें हम करीब ८० बहनें अेक साथ थी, लेकिन किसीको कभी कोअी तकलीफ नही हुअी। किसीने यह महसूस नही किया कि यहा हम अकेली पड गअी है, या कि यहा हमारा कोअी नही है। मानो हम सब अुनके घर ही में रहती हो, अिस तरह बा सबकी फिकर रखती थी—सबको सभालती थी। सब पर समान प्रेम और सबकी समान चिन्ता, यह अुनके स्वभावकी खूबी थी।"

*   *   *

जब राजकोटमें सत्याग्रह छिडा, तो अिस खयालसे कि वह तो मेरा वतन है, बा बापूसे भी पहले वहा पहुच गअी थी। वहा अुन पर जो बीती, अुसका बहुत ही बढिया वर्णन सुशीलाबहनने किया है। पाठक अुसे वही पढ लें। लेकिन अुसके बारेमें खुद बापूजीने 'गाधीजी' नामक ग्रथमें बा के निस्बत जो कुछ लिखा है, सो यहा देना जरूरी है

"बा राजकोटकी लडाअीमें शामिल हुअी, अिस पर कुछ न लिखनेका मेरा अिरादा था। लेकिन अुनके अुस लडाअीमें शामिल होने पर जो थोडी निष्ठुर टीकायें हुअी है, वे खुलासा चाहती हैं। मुझे तो कभी यह सूझा ही न था कि बा को अिस लडाअीमें शरीक होना चाहिये।

जिसकी खास वजह तो यह थी कि जिस तरहकी मुसीबतोंके लिअे वे बहुत बूढ़ी हो चुकी थीं। लेकिन बात कितनी ही अनोखी क्यों न मालूम हो, टीकाकारोंको मेरे जिस कथन पर जितना विश्वास तो रखना चाहिये कि अगरचे बा अनपढ़ थीं, फिर भी कअी सालोंसे अुन्हें जिन बातकी पूरी-पूरी आजादी थी कि वे जो करना चाहें, करें। क्या दक्षिण अफ्रीकामें और क्या हिन्दुस्तानमें, जब-जब भी वे किसी लड़ाअीमें शरीक हुअी हैं, अपने आप, अपनी आन्तरिक भावनासे ही। जिस बार भी अैसा ही हुआ था। जब अुन्होंने नमिबहनकी गिरफ्तारीकी बात सुनी, तो अुनसे न रहा गया। और अुन्होंने मुझसे लड़ाअीमें शामिल होनेकी अिजाजत मांगी। मैंने कहा, तुम अभी बहुत ही कमजोर हो। दिल्लीमें कुछ ही दिन पहले वे अपने नहानेके कमरेमें बेहोश हो गअी थीं। अुस वक्त देवदासने हाजिरखयालीसे काम न लिया होता, तो वे अुसी समय स्वधाम पहुंच गयी होतीं। लेकिन बा ने जवाब दिया: 'शरीरकी मुझे परवाह नहीं।' जिस पर मैंने सरदारसे पुछवाया। वे भी अिजाजत देनेके लिअे बिलकुल तैयार न थे।

"लेकिन फिर तो वे पसीजे। रेसीडेण्टकी सूचनासे ठाकुर साहबने जो वचन-भंग किया था, अुसके कारण मुझे होनेवाले क्लेशके वे साक्षी थे। कस्तूरबाअी राजकोटकी बेटी ठहरीं। अिसलिअे अुन्होंने अंतरकी आवाज सुनी। अुन्होंने महसूस किया कि जब राजकोटकी बेटियां राज्यके पुरुषों और स्त्रियोंकी आजादीके लिअे जूझ रही हों, तब वे चुप बैठ ही नहीं सकतीं।

* * *

"अुनमें अेक गुण बहुत बड़ा था। हरअेक हिन्दू पत्नीमें वह कमोबेश होता ही है। अिच्छासे या अनिच्छासे अथवा जाने-अनजाने भी वे मेरे पदचिह्नों पर चलनेमें धन्यता अनुभव करती थीं।

"बा हमेशासे बहुत दृढ़ अिच्छाशक्तिवाली स्त्री थीं, जिनको अपनी नवविवाहित दशामें मैं भूलसे हठीली माना करता था। लेकिन अपनी दृढ़ अिच्छाशक्तिके कारण वे अनजाने ही अहिंसक असहयोगकी कलाके आचरणमें मेरी गुरु बन गअीं। वे कअी बार जेल जा चुकी

थी, फिर भी अिस बारके (१९४२–४४) अिस कैदखानेमें, जिसमें सभी तरहकी सहूलियतें मौजूद थी, अुनको अच्छा नही लगा। दूसरे बहुतोंके साथ मेरी और फिर तुरन्त ही अुनकी जो गिरफ्तारी हुअी, अुससे अुन्हें जोरका आघात पहुचा और अुनका मन खट्टा हो गया। वे मेरी गिरफ्तारीके लिअे बिलकुल तैयार नही थी। मैंने अुन्हें विश्वास दिलाया था कि सरकारको मेरी अहिंसा पर भरोसा है, और जब तक मैं खुद गिरफ्तार होना न चाहू, वह मुझे पकडेगी नही। सचमुच अुनके ज्ञानतन्तुओंको अितने जोरका धक्का बैठा कि अुनकी गिरफ्तारीके बाद अुन्हें दस्तकी सख्त शिकायत हो गअी। अगर अुस समय डॉ॰ सुशीला नय्यरने, जो अुनके साथ ही पकडी गअी थी, अुनका अिलाज न किया होता, तो मुझसे अिस जेलमें आकर मिलनेसे पहले ही अुनकी देह छूट चुकी होती। मेरी हाजिरीसे अुन्हें आश्वासन मिला और बिना किसी खास अिलाजके दस्तकी शिकायत दूर हो गअी। लेकिन मन जो खट्टा हुआ था, सो खट्टा ही बना रहा। अिसकी वजहसे अुनके स्वभावमें चिडचिडापन आ गया और अिसीका नतीजा था कि आखिर कष्ट सहते-सहते क्रम-क्रमसे अुनका देहपात हुआ। यद्यपि अपनी मृत्युके कारण वह सतत वेदनासे छूट गअी है, अिसलिअे अुनकी दृष्टिसे मैंने अुनकी मौतका स्वागत किया है, तो भी अिस क्षतिसे मुझको जितना दुःख होनेकी कल्पना मैंने की थी, अुससे अधिक दुःख मुझे हुआ है। हम असाधारण दम्पती थे। हमारा जीवन सदा सतोषी, सुखी और अूर्ध्वगामी था।"

अिस बारकी लडाअीमें बा की गिरफ्तारीके वक्तसे लेकर आगाखान महलकी सारी हकीकत सुशीलाबहनने दी है, अिसलिअे यहा अुसको दोहराया नही है।

बा के अिन सारे सार्वजनिक कामोंसे साफ मालूम होता है कि अैसे काम करनेके लिअे या लोकसेवाके लिअे सच्ची जरूरत विद्वत्ताकी नही, बल्कि आम जनताके लिअे प्रेमकी और असलमें कौन चीज करने जैसी है, अिसकी सीधी-सादी समझकी है। बा को गुजरातीमें या हिन्दीमें भाषण करनेके लिअे अक्षरज्ञानका अभाव कभी बाधक नही हुआ।

अुलटे, सीधी बात कहनेके कारण वे ज्यादा असर पैदा कर सकी हैं
अूपर अुनके कुछ बयान दिये हैं। लेकिन अिन बयानोंसे भी ज्यादा अस
बा के जबानी भाषणोंका होता था।

२०

बिदा

बा को अिस बातकी आगाही तो बहुत पहले हो गअी थी कि अुनकी मौत अब नजदीक है। सन् '४२ के जनवरी महीनेकी बात है। तब बापू और बा कुछ दिनोंके लिअे बारडोलीमें थे। वहांसे मीठुबहनको मिलने और कुछ दिन अुनके साथ बितानेके खयालसे बा मरोली आश्रम गअी। लेकिन वहां अुन्हें बुखारने आ घेरा। पिछले कअी सालोंसे बा का दिल तो कमजोर पडने ही लगा था, अिसलिअे वे बहुत कमजोर हो गअी थीं। बा को बापूजीके वर्धा जानेकी तारीख मालूम थी, चुनाचे अैसी कमजोर हालतमें भी वे बारडोली आ ही पहुंचीं। बापूको पता चला कि बा मरोलीसे बीमार होकर आ रही हैं। वे यह भी जानते थे कि बा आते ही अुनसे मिलने आवेंगी। लेकिन अुन्हें जीना चढनेकी तकलीफ न अुठानी पडे, अिस खयालसे ज्यों ही बापूको बा के आनेकी खबर मिली, वे झट-पट नीचे अुतर आये। खुद ही अपने हाथका सहारा देकर अुन्हें मोटरसे नीचे अुतारा और पास ही सरदारके कमरेमें अेक खटिया पर लिटाकर और कुछ देर अुनके पास बैठकर फिर आप अूपर गये। बा जिस तरह बापूकी सेवामें तत्पर रहती, अुसी तरह बापू भी बा की बहुत ही चिन्ता रखते। जब भी बा कहीं बाहर जानेको होतीं, या बाहरसे आनेवाली होतीं, तब बापू कितने ही जरूरी काममें क्यों न हों, अुनका नियम ही था कि वे बा को बिदा करने या लिवाने आश्रमके दरवाजे तक जाय।

यह सब खतम हुआ और बा आरामसे सोअीं। फिर सरदार कल्याणजीभाअीसे कहने लगे "बा को अैसी हालतमें क्यों ले आये? वहीं रख लेना था न?"

कल्याणजीभाओ बोले "आप मानते हैं कि हमने आग्रह करनेमें कमी की होगी? लेकिन बा चुप बैठें तब न? वे तो बराबर कहती ही रही, 'अब रेलगाडियां बन्द हो जानेवाली हैं और बापूजी सेवाग्राम चले जायगे, तो अितने सालोके बाद मैं अुनसे बिछुड जाअूगी न? अब मैं कौन ज्यादा जीनेवाली हू? अब तो यही चाहती हू कि मैं बापूकी गोदमें मरू।'"

और, बाकी यह अिच्छा सचमुच ही पूरी हुअी।

'४२ के अगस्तमें महासमितिकी बैठकके लिअे बापू बम्बअी गये, तो बा भी साथ थी। कुछ आश्रमवासी अुन्हें बिदा करनेके लिअे वर्धा स्टेशन तक गये थे। अुन्होने बा से कहा "बा, जल्दी वापस आअियेगा।" अुस समयके बा के अुद्गार ये थे "हा भाअी, आप सबके आशीर्वादसे वापस आ सकूगी, तो खुशी तो होगी ही।" वापस आनेकी निराशाने ही बा के मुहसे ये शब्द कहलवाये थे।

और आगाखान महलमें महादेव काकाके गुजर जानेके बाद तो बा हरदम यह कहा करती "मुझे जाना था और महादेव क्यो गया?" बापूके अुपवासके दिनोमें अुनके दर्शनोके लिअे हम सब तीन बार आगाखान महल गये थे। जब-जब हम वहासे चलते, बा कहती "जिन्दा रहूगी तो फिर मिलेंगे।" बापूके अुपवासोकी समाप्तिके बाद जब हम चलने लगी, तब मेरी मा से और आश्रमकी दूसरी बहनोसे बा ने कहा 'यह हमारी आखिरी मुलाकात ही है। मैं यहासे जीते जी बाहर नही निकलूगी।" आश्रमकी बहनोकी प्रार्थनाका पहला श्लोक अिस प्रकार है

'गोविन्द द्वारिकावासिन् कृष्ण गोपीजनप्रिय।
कौरवै परिभूता मा किं न जानासि केशव।।'

अिस श्लोकको दोहराते हुअे बा बोली "अब तो कृष्ण भगवान अिन कौरवोसे घिरे हुअे हमारे देशकी सुध लें तो अच्छा हो।" फिर जेलके अपने सभी साथियोका नाम ले-लेकर कहने लगी "हम दोनोको चाहे जेलमें रखें, लेकिन और सबकी रिहाअी हो!"

आगाखान महलकी दूसरी बातें, बापूके अुपवासके समयकी बा की मनोदशा, और अुनकी सार-सभाल वगैराके बारेमें सुशीलाबहनने अपने

निबन्धमें सुन्दर ढंगसे लिखा ही है। मैं यहा अपनी देखी हुअी अेक ही बातका जिक्र करूगी। बापूजीकी खटियाके सामने दीवार पर 'हे राम' शब्द लिखे हुअे थे। ठीक अुनके नीचे तुलसीका अेक गमला था। सवेरे नहा-धोकर बा तुलसी माताका पूजन करती और झुक-झुककर नमन करतीं। बापू लेटे-लेटे श्रद्धासे युक्त, प्रेमसे छलकती आखोंसे बा की ओर देखा करते। कितना भव्य था वह दृश्य! बापूके अुपवास सकुशल जो समाप्त हुअे, अुसकी जडमें बा के अन्तरतमकी गहराअीसे निकली हुअी अिस प्रार्थनाका कितना हाथ रहा होगा? सत्यवानको मृत्युके मुहसे वापस लानेके लिअे सावित्री यमराजसे अेक बार लडी थी, लेकिन बा को तो बापूको बचानेके लिअे यमराजके साथ कअी-कअी बार लडना पडा है। बापूका अेक-अेक अुपवास बापूसे भी अधिक बा के लिअे कडी तपश्चर्या बन जाता था। बापूका शरीर तो सूखता, लेकिन बा का तो मन भी सिक जाता। मगर बा की यह अटल श्रद्धा थी कि भगवान अपने भक्तोंको नहीं-सलामत अुबार लेता है। अिसलिअे बापूके अुपवासके दिनोंमें मिलने गये हुअे आश्रमवासियोंसे बा कहतीं "आप चिन्ता न करें। मैं बापूसे पहले ही जाअूगी। बापू जरूर अुठ बैठेंगे। लेकिन मैं यहासे जीती बाहर नही निकलूगी। यह तो महादेवका मदिर है। जिस रास्ते महादेव गये, अुसी रास्ते मैं भी जाअूगी।"

*　　　　*　　　　*

बा के अंतिम समयके और अग्निसंस्कारके वर्णन बहुतेरे आये हैं। लेकिन यहा मैं अुस समय वहा हाजिर रही अेक बहनका आश्रममें आया अेक पत्र ही दे रही हू

"अन्त-अन्तमें बा की आखें अेकदम खुली और अुन्होंने बापूजीको बुलवाया। जयसुखलालभाअी पास थे। अुन्होंने बापूसे कहा 'बा बुलाती है।' बापू हसते-हसते आये और बोले 'क्यों बा, शायद तू सोचेगी कि सब रिश्तेदार आ गये, अिसलिअे बापूने मुझे छोड दिया। ले, यह मैं आया।' बापूजीने बा को गोदमें ले लिया। बापूकी ओर देखकर बा कहने लगीं 'मैं अब जाती हू। हमने बहुत सुख भोगे, दुःख भी भोगे। मेरे बाद रोना मत। मेरे मरने पर तो मिठाअी खानी

[redacted] यों कहते-कहते वा के प्राण वापूकी गोदमें ही निकल गये। वापू देख रहे थे। ज्यों ही वा के प्राण निकले, वापूने अपना सिर वा की देह पर डाल दिया और आखोंसे आसुओंकी धारा बह चली। देवदासभाओ वा के पैर पकडकर 'वा, वा' पुकारने लगे। जयसुख-लालभाओने वापूजीका चश्मा अुतार लिया। वापू फौरन ही सभल गये। अुन्होंने देवदासभाओको अपनी गोदमें लेकर स्वस्थ किया। पूज्य वा के नजदीक रामधुन शुरू हुआी। फिर वापू, मनु, प्रभावती और सुशीलाने मिलकर वा की मृतदेहको स्नान कराया, शरीर पोछा और वापूके काते सूतकी साडीमें वा को लपेटा। माथे पर कुकुम लगाया। हाथमें और गलेमें वापूका कता सूत पहनाया। जमीन लीपकर अुसमें चौक पूरा और वा को वहा सुलाया। शामको साढे सात वजे शरीर छूटा था। रात १२ वजे तक प्रार्थना और गीताका पारायण किया। देवदासभाओ, मनु और सतोकवहनको छोडकर शेष सव वाहर आ गये। अग्निसस्कारके समय वहुतोंको वाहरसे अन्दर जानेकी अिजाजत मिली। वा का चेहरा खूव दमकता था और अैसा मालूम होता था, मानो वे शान्त निद्रामें सोओी हों। अग्निदाह-सम्वन्धी विधि करानेके लिअे अेक ब्राह्मण अुपाध्याय वुलाये गये थे। जव शुरूकी विधिया पूरी हुआी और शवको चिता पर लिटा दिया गया, तो वापूने अेक सक्षिप्त प्रार्थना करनेकी सूचना की। गीता, कुरान और वाअिबलके कुछ अश पढे गये। आश्रमवासियोंने अेक भजन गाया। डॉ० गिल्डरने जरथुस्त धर्मकी प्रार्थना की। मीरावहनने अेक अग्रेजी भजन गाया।

"मृत देह पर चदनकी लकडी रखी गओी और घी सींचा गया। अिसी समय वापू धीमे पैरों देवदासभाओके पास गये और वोले 'देवा, महादेवके अन्तिम सस्कार मैंने किये, वा के अन्तिम सस्कार तू करा।' अिसके वाद देवदासभाओने हाथमें अग्नि लेकर वा के शवकी तीन वार प्रदक्षिणा की और जोरसे गोविन्द, गोविन्द, गोविन्दका रटन करते हुअे मृतदेहको आग दी। चिता धक्-धक् जल अुठी।

"अिस सारे समयमें वापूजी स्वस्थ रहे थे। लेकिन देवदासभाओका दुःख देखा नहीं जाता था। वापूने कहा 'अुसकी याद आती है, तव

मैं भी धीरज नहीं रख पाता।' शामको पांच बजे तक हम सब वहां थे। पूज्य बापूजीने मुझसे बहुत-सी बातें कीं। सबके समाचार पूछे। रामदासभाअी अग्निसंस्कार समाप्त होनेके बाद आये। रामदासभाअी और देवदासभाअीको पूज्य बापूके साथ तीन दिन रहनेकी अिजाजत मिली है। महादेवभाअीकी समाधिके पास बा की समाधि भी बनेगी।"

महादेवभाअीकी समाधि पर बापूने अपने हाथों छोटे-छोटे शंखोंका ओम् बनाया है। बा की समाधि पर भी बापूने ही छोटे-छोटे शंखोंसे 'हे राम' लिखा है।

श्रीमती सरोजिनीदेवीकी श्रद्धांजलिके साथ अिस जीवन-कथाको समाप्त करती हूं

"भारतीय स्त्रीत्वके जीते-जागते प्रतीक-सी, अुन नाजुक किन्तु वीर नारीकी आत्माको चिर शान्ति प्राप्त हो। जिस महापुरुषको वे चाहती, जिनकी वे सेवा करतीं, और अद्वितीय श्रद्धा, धैर्य और भक्तिके साथ जिनका वे अनुसरण करती अुनके लिअे बराबर कुरबानी करते रहनेका जो कठिन मार्ग अुन्होंने अपनाया था, अुस मार्ग पर चलते हुअे अुनके पैर अेक क्षणके लिअे भी लड़खड़ाये नहीं और न अुनके दिलने कभी कच्ची खाअी। वे मृतत्वसे अमरत्वमें गअी और हमारी गाथाओं, हमारे गीतों, और हमारे अितिहासकी वीरांगनाओंकी मंडलीमें वे अपने हककी जगह पा गअी हैं, अिसकी हम खुशी मनायें।"

परिशिष्ट

[बा को लिखे बापूके पत्रोमें से लिये गये कुछ नमूनेके पत्र]

१

(राजकोट सत्याग्रहके समयके)

सेगाव, ८-२-'३९

बा,

तू काफी तकलीफ अुठा रही है। जो भी तकलीफ हो, अुसकी खबर मुझे जरूर देना। तू दु ख सहनेके लिअे जन्मी है। अिसलिअे तेरी तकलीफोंसे मुझे कोअी आश्चर्य नही होता। मैंने राजकोट तार तो किया है। तेरी तकलीफोके बारेमें अखबारोमें कुछ भी नही देना है। भगवान तो वहा तेरे पास बैठा ही है। अुसे जो करना होगा, वह करेगा। 'कहानम' (कनु) मजेमें है। रातको तुझे याद जरूर करता है। लेकिन फिकर न करना। अमतुलसलाम यहा है। वह कहानमको सभालती है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणि, तू वहा है, यह कितनी अच्छी बात है!

२

सेगाव, ९-२-'३९

बा,

तेरा पत्र मिला। तू बीमार रहा करती है, यह अच्छा नही लगता। लेकिन अब तो हिम्मतके साथ रहना। सहूलियतें तो मिल जायेंगी। और न मिलें तो भी क्या? मणि ठीकसे गा न सके, तो भी रामायण सुनाये। राम-सीताके दु खकी तुलनामें हमारे दु खकी क्या बिसात है? तू घबराना मत। आजकल लडकियोंसे सेवा लेना छोड रखा है। तू फिकर न करना। क्या करना चाहिये, सो मैं देख लूगा। सुशीला तो सेवा करती ही है।

बापूके आशीर्वाद

३

सेगाव, १०–२–'३९

बा,

डाक तेरे नाम रोज गअी है। वहा चिट्ठिया न मिलें, तो किया क्या जाय? मेरी चिन्ता करनेकी जरूरत नही। लेकिन तबीयत चिन्ता करने-जैसी हो जाय, तो भी मै तुझसे तो अिस जवावकी आशा रखता हू कि "वियोगमें अुनकी मृत्यु बदी होगी, तो होकर रहेगी लेकिन मै तो जहा मेरे बच्चे त्रास पा रहे है, वहा पडी हू। मुझे जेलमें रखोगे, तो अुसमे भी मै खुश होअूगी। ठाकुर साहबसे वचन पलवानेमें आप सब मदद करें, मेरा अुपयोग करें, वरना मैं चाहती हू कि राजकोटके आगनमें ही मेरी मृत्यु हो जाय!" तू अपने आप अपनी खास अिच्छासे गअी है। अिसलिअे तेरे दिलसे ये अुद्गार निकलें तो निकालना। अपने मनमें यही धारणा रखना। तू रोज लिखती है कि लडकियोकी सेवा लिया करो। लेकिन फिलहाल तो वे आजाद ही हैं सुशीला मालिश करती है, सो भी छोडना ही है न? लेकिन अपनी अैसी तबीयतकी वजहसे अुसे अभी छोड नही सका हू। अिस बारेमें भी मेरी चिन्ता मत करना। मुझे निबाहनेवाला आखिर तो अीश्वर ही है न?

बापूके आशीर्वाद

४

बा,

पिछली बार तुझे प्रवचन भेजा था। अुसकी नकल भेजना। तेरा पत्र आज मिला। यह पत्र मौनवारके दिन लिख रहा हूं। मणिलालकी चिन्ता मत कर। अुसे तेरा पत्र भेज रहा हू। परागजीके कहनेसे घबरा अुठनेका कोअी कारण नहीं। दोनो प्रौढ हैं। गलती हुअी होगी, तो सुधार लेंगे। 'जामे जमशेद' का प्रबन्ध तो किया ही है। मथुरादासके लिखनेसे हो गया है। अिसलिअे मैंने ज्यादा कुछ नही किया। अब तो मिलता ही होगा। फिर पूछताछ करता हू। रामायण और भागवतके लिअे तजवीज करता हू। प्रेमलीलाबहनसे मगानेमें तनिक भी सकोच न करना। तुझे मगाना ही क्या है? जो चीज-वस्त चाहिये सो वे

प्रेमसे भेजेंगी। लेकिन जिसकी जल्दी ही जरूरत न हो, वह तू मेरे मारफत मगायेगी तो बस होगा। मैं तजवीज कर दूगा। दात काममें ले सकती हो? लाल पानीके कुल्ले करती हो? दूधाभाओकी लक्ष्मीको भी छठा महीना चल रहा है, अिस सम्बन्धमें मारुतिका पत्र आज मिला। अिन सब खबरोको सुनकर मुझे दुःख या आश्चर्य नही होता। होना भी नही चाहिये। व्याहका यह नतीजा तो सबके लिअे है ही। अिसमें दुःख क्या और आश्चर्य क्या? रामदासको भी मैंने कोअी अुलाहना नही दिया। अैसे मामलोमें अुलाहना क्या कर सकता है? सब अपनी शक्तिके अनुसार सयम पालें। सयमकी यह बात भी अभी अिधर-अिधरकी है। वरना लोग तो अपनी अिच्छाके अनुसार भोग भोगते ही आये हैं। ठक्करबापा अिस समय मेरे साथ नही हैं, १५वीको मिलेंगे। आजकल मलकानी मेरे साथ हैं। वे तो खूब काम कर रहे हैं। और सब तो करते ही हैं। चद्रशकरकी तबीयत ठीक ही रहती है। ओम और किसन बराबर अपनी तन्दुरुस्तीको सभालते हैं। ओम भरसक मेहनत करती है। बहुत भोली और सरल है। किसन भी अैसा ही है। सुरेन्द्रको ताकत आ गअी है। आन्ध्रदेशकी यात्रा तीसरी तारीखको पूरी होती है। अुसके बाद मैसूर जाना होगा। जहा मैं रहता हू, वहा धाधली तो रहती ही है। परेशानी भी रहती है। मुझे तो सब सभाल लेते हैं, अिसलिअे परेशानी कम मालूम होती है। छोटीसे छोटी बातका खयाल मीराबहन रख लेती हैं, अिस-लिअे यात्रामें मुझे तकलीफ रहती ही नही। तू मुलाकात छोड़े तो मुझसे हर हफ्ते पत्र पायेगी। मैं हर हफ्ते प्रवचन भेजता रहूगा। तू दूसरी बहनोसे मिल सकती है, अिससे सतोष मानना। लेकिन जैसा तेरी मर्जीमें आये, करना। तू मुलाकात चाहेगी, तो मिलने आनेवाले तो बहुत तैयार हो जायगे, चाहेंगे भी। जान-बूझकर मुला-कातें कम रखनेका रिवाज डाला है। लेकिन तू जो चाहे, सो बिना सकोचके लिखना। जानकीबहनकी तबीयत ठीक है। अुनके रामकृष्णके टॉन्सिल कटवानेकी बात मैं शायद तुझे लिख चुका हू। कमला अब खाना लेने लगी है। किशोरलालको बुखारने अभी छोड़ा नही,

लेकिन चिन्ताका कारण नहीं। मेरा मौन आजकल रविवारकी रातको शुरू होता है, अिसलिअे सोमवारकी रात तक बोलना नहीं रहता। आज रातको ९–१० बजे मौन टूटेगा। और अुस वक्त किसीने बोलनेका शायद ही कोअी काम पडे, क्योंकि फिर तो सोनेका समय हो जायगा। सुबह तीन बजे अुठना रहता है। व्रजकृष्णका बुखार अब अुतर गया है। ताकत आनी बाकी है। हेमीबहन गुजर गअी है।

अब प्रवचन

पिछली बार भक्तके लक्षण लिखे थे। यह भी सूचित किया था कि सेवाके बिना भक्ति नहीं होती। अिस बार सेवा कैसे की जाय, सो लिखता हू। क्योंकि लोग अकसर यह सवाल पूछते हैं। कुछ कहते हैं, सेवा अमुक स्थितिमें ही हो सकती है। कुछ कहते हैं, अमुक अभ्यास करने पर ही सेवा हो सकती है। यह सब भ्रम है। अितना तो पिछले हफ्ते ही लिख चुका था। आदमी किसी भी हालतमें रहता हुआ सेवा कर सकता है। हमारे पास जितनी भी शक्ति हो, सो सब हम कृष्णार्पण कर दें, तो हमें पूरे गुण (नम्बर) मिल जायं। जिसकी शक्ति करोड देनेकी है, पर जो आधा करोड देता है, अुसे ५० गुणसे ज्यादा नहीं मिलेंगे। लेकिन जिसके पास अेक पाअी है, और जो वह पाअी दे डालता है, अुसे सौमें से सौ नंबर मिलेंगे। अिसलिअे तुम वहा रहनेवाली बहनो और तुम्हारे सम्पर्कमें आनेवाली बहनों या अफसरोंके साथ अच्छा व्यवहार करो, तो कहा जायगा कि तुमने सेवाधर्मका पालन किया। अफसरोंके साथ सेवाभावसे बरतनेका मतलब है कभी अुनका बुरा न चाहना, अुनके साथ विनयका पालन करना, अुन्हें धोखा न देना। नियमोंका पालन करना और तुम्हारे सम्पर्कमें आनेवाली गुनाहोंके लिअे सजा पाअी हुअी बहनोंके साथ सगी बहनका-सा व्यवहार करना। अुन पर तुम्हारे प्रेमकी छाप पडे, वे तुम्हारी पवित्रताको पहचानें, तो वह भी सेवाधर्मका पालन कहा जायगा। दोनोंमें हेतु अच्छा होना चाहिये। स्वार्थके कारण या डरकी वजहसे जो अच्छा व्यवहार किया जाता है, वह सेवामें शुमार नहीं होता। अेक काम अेक आदमी स्वार्थ साधनेके लिअे करता है

और दूसरा परमार्थकी दृष्टिसे करता है, सो तो हम भी अकसर देखते ही हैं। जहा अीश्वरार्पण भाव है, वहा स्वार्थको कोअी स्थान ही नही। अिस प्रकार सेवा करनेवाला रोज अपनी शक्ति बढाता जाता है। वह अभ्यास करता है, अुद्यम करता है, सो भी सेवाके विचारसे ही। अिस प्रकार जो सेवापरायण रहता है, अुसके हसनेमें, खेलनेमें, खानेमें, पीनेमें भी सेवाभाव ही भरा रहता है। यानी अुसके सब कामोमें निर्दोषता होती है। अैसे भक्तोको परमात्मा सब आवश्यक शक्ति दे देता है। जिससे सम्बन्ध रखनेवाले तीन श्लोक स्त्रियोकी प्रार्थनामें हैं, सो तुम्हे याद होगे। ये रहे वे श्लोक

अनन्याश्चिन्तयन्तो मा ये जना पर्युपासते।
तेषा नित्याभियुक्ताना योगक्षेम वहाम्यहम् ॥
मच्चित्ता मद्गतप्राणा वोधयन्त परस्परम्।
कथयन्तश्च मा नित्य तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥
तेषा सततयुक्ताना भजता प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोग त येन मामुपयान्ति ते ॥

अिनका अर्थ 'अनासक्तियोग' में देख लेना। ये श्लोक ९वें, १० वें अध्यायोमें मिलेंगे। याद रहे कि गीताजीको हम अपने अमलमें लानेके लिअे पढते हैं। यह समझना कि अूपर मैंने जो लिखा है, सो सब गीताजीके आधार पर लिखा है।

बापूके सबको आशीर्वाद

५

१३–२–'३४

बा,

यह पत्र ट्रेनमें लिख रहा हू। तेरा पत्र मिला है। काम अितना था कि मगलवारको लिख न सका। आज गुरुवार है। तू जो तेरी मर्जीमें आवे वह काम मुझे सौंपना। जो चाहे सो सवाल पूछना, मैं अुसे पूरा करूगा, कोशिश तो करूगा ही। तूने हरिलालके बारेमें पूछा है। वह पाडीचेरी गया था। वहा भी पैसोंकी भीख मागकर खूब शराब पीता था। कुछ पैसे मिले भी। आजकल कहा है, पता

नहीं। अुसका यों ही चलेगा। अीश्वर जब अुसे सुबुद्धि दे, तब सही। अिसमें हमारे पाप-पुण्य भी तो काम करते ही हैं न? हरिलालके गर्भके समय मैं कितना मूढ था? जैसा मैंने और तूने किया होगा, वैसा ही हमें भरना होगा। अिस तरह बच्चोंके आचरणके लिअे मा-बाप जिम्मेदार हैं ही। अब तो हम यही कर सकते हैं कि हम शुद्ध बनें। सो वैसी कोशिश हम दोनों कर रहे हैं। और अुससे हम सतोष मानें। हमारी शुद्धिका प्रभाव जाने-अनजाने भी हरिलाल पर पड़ता ही होगा। अिधर मनुका पत्र नहीं, लेकिन जमनादासने अुसकी खबर दी थी। सुशीलाको लिखूंगा। पुरुषोत्तमकी सगाअी हरखचदकी लड़कीके साथ हो गअी है। पुरुषोत्तमकी तबीयत अभी अच्छी नहीं कही जा सकती। रणछोड़भाअीके भाअीकी पत्नी गुजर गअी हैं, अिससे मोतीबहन अुदास रहती हैं। अुनकी जवाबदारी बढ़ी है। अम्बालालभाअी और मृदुला मुझसे मिल गये। अम्बालालभाअी और सरलाबहन विलायत जा रहे हैं। तीन-चार महीने वहां रहेंगे। देवदास-लक्ष्मी ठीक हैं। क्या लक्ष्मीको बालकोंका बोझ अुठाना कठिन मालूम होता है? रामदास-नीमू ठीक हैं। अुन दोनोंको तेरे पत्रकी नकल भेजता हूं। असल पत्र मणिलालको भेज रहा हूं। नकल वल्लभभाअीको भी भेजी है। वे भी चिन्ता करते हैं। माधवदासका अभी तक कोअी जवाब नहीं आया। मथुरादास मेरे साथ हैं। अेक-दो दिन रहकर बम्बअी जायेंगे। अेस्थर मेनन विलायतसे आ गअी हैं। वह मुझे मिल गअी। मिस लेस्टर लका गअी हैं। कल मद्रासकी यात्रा समाप्त करके राजाजी चले गये। वे दिल्ली जायेंगे नहीं। अमतुल-सलामको अभी कमजोरी बाकी है, अिसलिअे अुसे मद्रास छोड़ आया हूं। राजाजी अुसे सभालेंगे। तुझे पूनिया मिल गअी होंगी। जब खतम हो जाय तो फिर लिखना। भेज दूंगा। कुसुमका भाअी जगन्नाथपुरमें मर गया, जिसका मुझे काफी दुःख हुआ है। प्यारेलाल बच छूटे। किशोरलाल देवलाली हैं। कुछ ठीक है। लक्ष्मीकी प्रसूति बारडोलीमें होगी। [illegible] रहेगी। मोती या लक्ष्मी भी वहां होगी। नानीबहन झवेरीका अवसानके लिअे

ऑपरेशन हुआ है। अब तो काफी खबरे दे दी न? ९वीं तारीखको हैदराबादसे चलकर मैं पटना जाअूंगा। राजेन्द्रबाबूने बुलाया है। प्रभावती वहीं है। मुमकिन है कि बिहारमें काफी रहना पड जाय।

तुम सब बहनोंको बापूके आशीर्वाद

६

पेशावर, ७-१०-'३६

बा,

तूने मुझे खूब फिकरमें डाल दिया है। तेरी तबीयतके बारेमें जितनी फिकर मुझे अिस बार रही, अुतनी कभी नहीं रही। आज देवदासका तार मिलने पर मैं बेफिकर हुआ। मेरी चिन्ताका कारण तो यह था कि मैंने तुझको दुःखी हालतमें छोडा था। मैं अच्छा करने गया और तुझे दुःख हुआ। फिर तो तू भूली, लेकिन मैं कैसे भूलता? बीमार तो थी ही। मालूम होता है, अीश्वरने कृपा की। अब तबीयत खूब सुधार लेना। लक्ष्मी, रामू, तारा, सब बिलकुल अच्छे हो गये होंगे? यहांकी हवा तो बहुत अच्छी है। ठण्ड अभी तो सही जा सकती है।

बापूके आशीर्वाद

७

१८-१०-'३८

बा,

अब तो ९ दिन बाकी हैं और अीश्वरने चाहा तो मिलेंगे। अुसी दिन सेगांव चलेंगे। तेरे पत्रमें अेक बात थी, जिसका जवाब देना रह गया। तूने लिखा है, मैंने चलते समय तेरे सिर पर हाथ तक न रखा। मोटर चली और मैंने भी महसूस किया। लेकिन तू दूर थी। अब भी तुझे बाहरकी निशानी चाहिये क्या? यह क्यों मान लेती है कि मैं बाहर दिखाता नहीं, अिसलिअे मेरा प्रेम घट गया है? मैं तो तुझसे कहता हूं कि मेरा प्रेम बढा है और बढता जाता है। अिसका यह मतलब नहीं कि पहले कम था। लेकिन जो था, वह रोज अधिक

निर्मल बनता जाना है। मैं तुझे केवल मिट्टीकी पुतली नहीं समझता। और क्या लिखूं? अिसका मतलब न समझी हो तो देवदास समझायेगा। लेकिन जिस तरह अमतुल, लीलावती वगैरा बाहरी चिह्न चाहती हैं, अुसी तरह तू भी चाहे तो मैं दूंगा।

बापूके आशीर्वाद।

* * *

[आगाखान महलसे लिखे गये बा के पत्रोंके कुछ नमूने]

१

२६–५–'४३, सोमवार

चि० काशी,

तुम्हारे दोनो कार्ड मिले। पढकर आनन्द हुआ। सबकी अपेक्षा अेक तुम्हारा पत्र नियमित आता है। पढकर खूब ही आनन्द होता है। ता० १४ का पत्र ठेठ आज मिला। यानी पत्र बहुत देरमें मिलते हैं। वहा सब अच्छे है, जानकर खुशी हुअी। किशोरलालभाअीकी तबीयत अच्छी है, यह अेक खुश होने जैसी बात है। अिससे पहले मेरी सहीवाला पत्र तुम्हें मिला है या नहीं? आर्यनायकम्‌जी नागपुरसे आ गये, अिसलिअे अुनको और आशादेवीको मेरे आशीर्वाद। पत्र लिखो तो प्रभुको और अबाको मेरे आशीर्वाद लिखना। कल लक्ष्मीका पत्र था। लिखती है कि कभी-कभी अबाका पत्र आता है। और सब यहा मजेमें है। मेरी तबीयत अच्छी है। मेरी चिन्ता न करना। तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी? बचु मजेमें होगा? यहा प्रार्थनाके समय तुम सबको खूब ही याद करती हू। चि० कहाना क्या लिखता रहता है? शाक तो सभी थोडा-थोडा काटते है। कहना कि थोडा तू भी काट। मनालीभाअीके पास पढता है या नहीं? बढअीका काम करने जाता है या नहीं? वैसे, मेरी राख तो आयेगी, पर मैं कैसे आअू? चि० कहानासे कहना, वह सबसे हिल्मिलकर रहे। लीलावतीसे कहना कि हमें अुनका सदेशा मिल गया है। कहते हैं कि जो तुझे अच्छा लगे, कर। वैसे मुझे तो लगता है कि तू स्कूलमें भरती हो जा। यह तो लम्बा रास्ता है। छगनलालको आशीर्वाद। लीलावती, गोमतीबहन,

आनद, बचु वगैरा सबको और सब आश्रमवासियोको मेरे आशीर्वाद। कृष्णचन्द्रजी, जैसे बने वैसे कहानाको अच्छी तरह रखना। तिस पर अुसे अच्छा न लगे तो भेज देना। नागपुरमें सब बहनोको आशीर्वाद लिखना।

बा के शुभ आशीर्वाद, बापूजीके शुभ आशीर्वाद

२

२-८-'४३, सोमवार

चे० काशी,

तुम्हारा पत्र मिला था। पढकर आनन्द हुआ। वहा सब अच्छे है, जानकर खुशी हुअी। बचु, आनन्द, सब मौज करते होगे? बारिश तो यहा खूब ही है, वहा भी होगी। काठियावाडमें तो अच्छी बारिश हुअी। पत्र लिखो तो दुर्गाको, बाबलाको और दूसरे सबको मेरे आशीर्वाद लिखना। छगनलालको आशीर्वाद। लौकी जैसे तुम्हारे वहा होती है, वैसे हमारे यहा भी खूब ही होती है। चि० मनु मजेमें है। मेरी और बापूजीकी तबीयत अच्छी है। मुझे खासी है, और तो सब ठीक है। खड्डू है या गया? मणिबाअी है या नही? कल शकरनूका पत्र था। लीलावती गअी। रसोअी कौन सभालता है? आज अमावस है। कलसे श्रावण महीना लगेगा। अब सब वार-त्यौहार आयगे। अगले रविवारको 'वीरपसली'* है। जेलमें सबको आशीर्वाद। मनोज्ञा, कृष्णदास, प्रभुदास, अबादेवी सबको मेरा आशीर्वाद लिखना। अब तो लीलावतीके बिना सूना मालूम होता होगा?

विनोबाके पत्र कभी-कभी आते है। बालकोबाको आशीर्वाद। बस यही।

बा के और बापूजीके आशीर्वाद

* अेक त्यौहार, जो राखीसे पहले किसी रविवारको मनाया जाता है। तब भाअीकी तरफसे बहनको कुछ भेंट दी जाती है।

३

९–८–'४३, सोमवार

चि० काशी,

ता० २२–७–'४३ का तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर आनन्द हुआ। बारिश और हवा वगैराको देखते हुओ मेरी तबीयत अच्छी है। खासी आती है। दुर्गाके समाचार जाने। वहा सब मजेमें हैं, जानकर आनन्द हुआ। अुसको और बाबलाको और दूसरोंको भी मेरे शुभ आशीर्वाद। वैसे मुझे तो लगता है कि अुसे सेवाग्राममें अच्छा नहीं लगेगा, अिसलिअे वहीं रहेगी। जहा भी रहे, सुखी रहे तो बस है। हमने सुना था कि सावित्री फिरसे मदिरमें गअी है। आश्रममें सबको आशीर्वाद। दूसरे, मेरी पेटी खोलना और अुसमें चार-पाच साडिया है, अुनमें दो काली किनारकी हैं, सो फूफीजीको और कोअी चार गजका टुकडा है, वह भी फूफीजीको भिजवा देना। और दूसरी दो लाल किनारकी हैं, अुनमें से अेक रामीको और अेक मनुको भेज देना। और मेरी पेटीमें गोरखपुरकी बडी गीता है, और आलमारीमें लाल किनारका चादरा है, सूती है, सो शान्तिकुमारके पास भिजवा देना, तो वह यहा भेज देंगे। अब बापूजीका जन्मदिन आयेगा। अिसलिअे फूफीजीको और लडकियोंको कुछ देनेकी मेरी अिच्छा है। अिसीलिअे यह लिखा है। दूसरे, अेक खाकी रगका टुकडा भी है, वह भी रामीको दे देना। अिनके सिवा मेरे कुछ जाकट हो, और तुम्हें देने-जैसे लगें तो दे देना। लाल किनार और बडा अर्ज जिसका है, वह रामीको देना। मेरा बाहोंवाला भूरे रगका स्वेटर है, वह भी भेज देना। डॉ० मनुभाअी और हीराबहनको आशीर्वाद।

आज तो 'बीरपसली' है। तुमने भी मनाअी होगी?

बा और बापूके आशीर्वाद

हमारी बा

दूसरा भाग

वात्सल्यमूर्ति बा

१

प्रथम दर्शन

पूज्य कस्तूरबाका दर्शन मैंने पहली बार सन् १९२० में श्रीमती सरलादेवी चौधरानीके घर लाहौरमें किया था। मेरे भाअी (प्यारेलालजी) गाधीजीके साथ हो गये थे। अिससे मेरी मा दुखी थी। वे अपने लडकेको वापस लाने गाधीजीके पास गअी थी। गाधीजी बहुत काममें थे, अिसलिअे माताजी दुपहरभर पूज्य कस्तूरबाके पास बैठी रही। जी भरकर बातें की। गाधीजीने अुन्हें शामका वक्त दिया था। लेकिन अिस बीच तो अुनका काफी हृदय-परिवर्तन हो चुका था। अुस दिन दुपहरभर पूज्य कस्तूरबाके साथ बातें करनेके बाद माताजीको लगने लगा था कि "आखिर ये भी तो मेरे जैसी ही अेक स्त्री है न? ये अितना त्याग कर सकती है, तो मेरा लडका भी देशकी सेवामें भले ही अपना कुछ समय दे।" अिसलिअे अुन्होंने गाधीजीसे कह दिया "आप चाहे चार-पाच साल तक मेरे लडकेको अपनी सेवामें रखिये, लेकिन बादमें मुझे मेरा लडका लौटा दीजिये। मेरे पति नहीं है। यह लडका ही मेरा आधार है।"

अुन दिनो मैं पाच-छह सालकी थी। माताजीके साथ बात करती हुअी बा का वह चित्र आज भी मेरी आखोके सामने खडा होता है। माताजी बा पर मुग्ध हो गअी थी। गाधीजीने तो माताजीको खुद विदेशी कपडे पहनने और मुझे भी पहनानेके लिअे और घर व दुनियाके प्रति अितनी ममता रखनेके लिअे अेक मीठा अुलाहना भी दिया था। मगर बा ने अुनके साथ पूरी हमदर्दी दिखाअी थी। आपबीती सुनाकर बदलते हुअे जमानेके साथ अुन्हें अपने विचारोको भी बदलनेकी सलाह दी थी। माताजी कअी दिनो तक बा की ही बातें किया करती थी। बा ने अितना

बड़ा त्याग सिर्फ बापूजीके प्रति अपनी वफादारी अदा करनेके लिअे ही किया था, अिसका माताजी पर गहरा असर पड़ा था। बा भी सहानुभूतिसे अुनमें स्वयं भी त्याग करनेकी शक्ति आ गअी थी। माताजीने यह भी देखा कि बा अुन्हींकी तरह 'माँ' थीं। अुनमें माँ का जितना प्रेम देखकर माताजीको संतोष हुआ। अिस विचारसे कि मेरे लड़केकी सार-संभाल अेक 'माँ' ही कर रही है, माताजीके लिअे अपने पुत्रके वियोगको सहना जरा आसान बन गया।

२

प्रथम परिचय

सन् १९२० और १९२१के अरसेमें मुझे कभी-कभी बा के और बापूजीके दर्शन हो जाया करते थे। बा हमेशा प्रेमसे पेश आती थीं। १९२९ की गर्मियोंमें मुझे बा के कुछ अधिक निकट संपर्कमें आनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरे भाअी मुझे बहुत समयसे आश्रममें बुला रहे थे। मैं तो हमेशा तैयार ही थी, लेकिन माताजी अकेली लड़कीको घरसे बाहर भेजना पसन्द नहीं करती थीं। भाअीका आग्रह था कि अगर सचमुच ही मुझे कुछ सीखना हो, या नया अनुभव पाना हो, तो मुझको अकेले ही सफर करना चाहिये। आखिर मेरे कॉलेजमें दाखिल होनेके बाद माताजीने मुझे अकेले ही जानेकी अिजाजत दी। भाअी किसी कामसे बापूजीके साथ आगरा आये हुअे थे। वे दिल्ली आकर मुझे ले गये। रेलके चौबीस घंटेके सफरके बाद हम लोग अहमदाबाद पहुँचे। मैं पहली ही दफा माताजीसे अलग हुअी थी, अिसलिअे मन कुछ अुदास था। मगर साथ ही नअी जगह और नये प्रकारके जीवनको देखनेकी अुत्सुकता भी खूब थी।

आश्रमके बारेमें मैंने जो कुछ पढ़ा और सुना था, अुसकी मुझ पर गहरी छाप पड़ी थी। मैं किसी देवलोकमें जा रही हूँ, और मेरे-जैसे तुच्छ व्यक्तिको बापूजीने वहाँ कुछ दिन रहनेकी अिजाजत दी है, अिस

विचारसे मेरा हृदय कृतज्ञतासे गद्‌गद हो रहा था। जब भाअीने मुझे ट्रेनमें से साबरमती आश्रमकी दूर पर टिमटिमाती हुअी बत्तिया दिखाअी, तो मैं रोमाचित हो अुठी।

ट्रेनसे अुतर कर हम घोडागाडी पर सवार हुअे और आश्रम पहुचे। रात काफी बीत चुकी थी। मैं थकी भी थी। अिसलिअे गाडीमें ही सो गअी। अेकाअेक गाडी अेक छोटेसे बरामदेके सामने आकर खडी हो गअी। हम आश्रममें पहुच चुके थे। बादमें मुझे पता चला कि वह स्व० मगनलाल गाधीके घरका बरामदा था। जबसे मगनलालभाअीकी मृत्यु हुअी थी, बापू दिनमें अुनके घर बैठकर ही अपना सारा काम करते थे और रात 'हृदयकुज' (बा का घर) में जाकर सोते थे। बापूजी हमसे अेक दिन पहले आश्रममें आ चुके थे। जब हम पहुचे, सब लोग सो रहे थे। अकेले रामदासभाअी जागते थे। वे अुसी बरामदेमें सोते थे। मैं और भाअी भी वही बरामदेमें फर्श पर बिस्तर बिछा कर सो गये। जमीन पर सोनेका यह मेरा पहला ही तजरबा था। अुस रात कुतूहल और घबराहटके कारण मैं शायद ही कुछ देरको सो पाअी हूगी।

सुबह चार बजे प्रार्थनाकी घटी बजी। भाअी मुझे बापू और बा के पास ले गये। बापूजीने रास्तेका हाल पूछा और अगले दिनसे बा के पास ही अपने बरामदेमें सोनेकी सूचना की।

प्रार्थनाके बाद बा मुझे अपने कमरेमें ले गअी। कमरेमें सामान बहुत कम था, मगर हरअेक चीज करीनेसे रखी थी। कही भी गन्दगी या कचरेका कोअी निशान न था। अेक छोटे-से स्टोव पर चाय-कॉफी बनानेके लिअे पानी अुबलनेको रखा था। बा ने बडे प्रेमसे मुझको और भाअीको नाश्ता कराया। यहा मैंने पहली ही दफा बा के हाथो कॉफी पी। जितने दिन मैं आश्रममें रही, बा मुझे अपने साथ ही नाश्ता कराती थी। मुझे अपने घरकी और माताजीकी याद बहुत सताया करती थी। मैं माताजीके साथ जिद करके न आअी होती, तो शायद अेक ही दो दिनमें वापसी गाडीसे घर लौट जाती। लेकिन अब तो किसी भी तरह छुट्टिया यहा बितानी थी। लोग सब नये थे। मैं अुनकी भाषा नही समझती थी। मुझे लगता था कि ये लोग मुझसे

बहुत ऊचे हैं। अिसलिअे मारे भयके मैं किसीसे बात भी नहीं करती थी। लेकिन जब मैं बा के पास जाती, मेरा डर बहुत कम हो जाता। वे माताजीकी भांति ही मुझे प्रेमसे खिलाती-पिलाती और बातचीत करती थी। अुन्होंने कभी अैसी कोअी बात नही कही, जिससे मुझे लगता कि मैं कितने महान व्यक्तिके पास बैठी हू। वे मा थी और अुनके आसपास माताका प्रेमभरा वातावरण हमेशा ही बना रहता था। मैं सारा दिन नाश्तेके समयकी ही राह देखा करती थी।

आश्रममें सुबह सब बहनें अनाज साफ करने, रोटी बनाने और शाक वगैरा काटनेके लिअे जाती थीं। मैं भी वहा जाती। अकसर बा भी वहा मिलती। वे सबके साथ बैठकर बराबरीसे अपने हिस्सेका काम करतीं। अुनके चलने, फिरने और काम करनेमें आश्चर्यजनक स्फूर्ति थी, और लगभग अखीर तक अुनकी यह स्फूर्ति कायम रही। बीमारीके दिनोंमें मुझे अुनसे अुनकी अिस स्फूर्तिके लिअे और आराम न करनेके लिअे कितनी ही दफा झगडना पडा है।

मैंने देखा कि बा खूब काता करती थी। वे बापूजीके पास बहुत कम बैठी नजर आती थीं। फिर भी वे सारा समय अिस बातकी निगरानी रखती थी कि किस वक्त कौन बापूजीकी शारीरिक सेवा करनेवाला है, और वह वक्त पर पहुचा है या नहीं। अेक रोज मैंने देखा कि दुपहरकी जलती धूपमें बा साबरमती आश्रमके रसोअीघरकी ओर जा रही हैं। यह जगह अुनके अपने घरसे काफी दूर थी। पूछने पर पता चला कि वे भाअीको बापूजीके पैरोंमें घी मल देनेके लिअे ढूढ रही थीं। बापूजीके सोनेका वक्त हो चुका था और भाअी अभी पहुचे नहीं थे। मैंने कहा "मुझे काम बताअिये, मैं कर दू।" अिस पर बा बोली "नहीं, प्यारेलालको बापूकी सेवाका अवसर खोना अच्छा नहीं लगेगा। वही आकर करेगा। तुम अुसे ढूढ लाओ। खाना खा रहा हो, तो मत बुलाना।" यहा फिर मा बोल रही थी "खाना खा रहा हो, तो मत बुलाना।"

अुन दिनो मुझे कपडे धोना नही आता था। कुअेंसे पानी खींचनेकी मेहनत बचानेके लिअे मैं नदीपर चली जाया करती थी और पानी साफ

हो या मटमैला, अुसीमें जैसे-तैसे अपने कपडे धो लाती थी। नतीजा यह हुआ कि मेरे सारे कपडे मिट्टीके रंगके हो गये। और किसीको तो अिन बातोंकी ओर ध्यान देनेकी फुरसत नही थी, मगर बा की आंखसे यह छिपा न रहा। अुन्होंने मुझे समझाया और बताया कि कपडे किस तरह धोने चाहिये। भाअीसे कहा कि वे मेरी मदद करें। बा मेरे कपडे किसीसे धुलवा देनेको तैयार थी, मगर मैं जानती थी कि आश्रममें तो सारा काम हाथ ही से करना चाहिये, अिसलिअे किसीसे नही धुलवाये। मैंने खुद ही कुअें पर जाकर धोना शुरू कर दिया। कुअें पर अकसर मुझे कोअी न कोअी पानी खींच दिया करता था। मुमकिन है कि अिसमें भी बा का ही हाथ रहा हो।

मेरी छुट्टी पूरी होनेको आयी। अेक दिन बापूजी अपने बरामदेमें बैठे अकेले कुछ काम कर रहे थे। अुस वक्त वहा बरामदेमें मेरे सिवा और कोअी नही था। अितनेमें कुछ दर्शक आये। अुन्होंने बापूजीको प्रणाम किया, कुछ भेंट भी दी और आश्रम देखनेकी अिच्छा जताअी। बापूजीने मुझे बुलाया और कहा कि मैं अुनको आश्रम और आश्रमकी गोशाला वगैरा दिखा दू। फिर अेकाअेक अुन्हें कुछ खयाल आया और अुन्होंने मुझसे पूछा "तूने खुद यह सब देखा है?" मुझे कहना पडा "नही।" बापूने किसी औरको बुलाकर दर्शनार्थियोंको अुनके साथ भेज दिया। मुझे अेक भाषण सुननेको मिला "कोअी अंग्रेज लडकी अितने दिनो तक यहा रहनेके बाद अिस तरह अपने आसपासकी चीजोंसे नावाकिफ न रहती। मगर हमारे लडको और लडकियोंको तो आजकल किताबोंकी ही पडी है। बी० अे० पास कर लिया, तो जीवन सफल हो गया, और कही दुर्भाग्यसे नापास हो गये तो बस खतम! सामान्य ज्ञानकी तो अुन्हें कोअी परवाह ही नही है।" मैं बहुत शर्मिंदा हुअी। अकसर मैं किताब लेकर बैठती थी। मगर अिनका कारण यह था कि मेरे पास दूसरा कुछ करनेको नही था। सब कुछ देखनेकी अिच्छा तो थी, लेकिन सकोचवश मैं किसीसे कुछ पूछती नही थी। और यों दिन बीत रहे थे। बा को पता चला। वे फौरन अपने आप मेरी कठिनाअी समझ गअी। अुन्होंने भाअीसे और बापूने

कहकर मुझे आश्रम और अहमदाबाद शहर दिखानेका बन्दोबस्त करवा दिया। अिस तरह आखिर मुझको सब जगहें देखनेका मौका मिला।

कुछ दिन बाद बापूजीके दौरे पर जानेका समय आया। मेरी भी छुट्टियां खतम हो रही थीं। मुझे वापस भेज देनेकी बात हुअी, लेकिन मैंने तो कभी अकेले सफर किया ही नहीं था। मुझको अकेले दिल्ली कैसे भेजा जाय? आखिर बापूजीने मुझे अपने साथ ले जानेका निश्चय किया। आगरा अुनके रास्तेमें पड़ता था। वहांसे मुझे दिल्ली भेजना आसान था। अहमदाबादसे हम लोग बम्बअी गये। वहां मैंने ट्रेनमें से पहली ही दफा समुद्रके दर्शन किये। आश्रममें मेरी चप्पलें खो गअी थीं। सोचा था, बम्बअीसे ले लूंगी। मगर वहां अुस दिन दुकानें बन्द थीं। बम्बअीसे बापूजी भोपाल गये। गाड़ीसे अुतरकर पुल पार करते समय बा ने देखा कि मैं नंगे पांव चल रही हूं। मुकाम पर पहुंचते ही अुन्होंने अपने पासकी नअी चप्पलें, जो कुछ ही दिन पहले अुनके लिअे आयी थीं, निकालीं और मुझे पहनाअीं। अिस प्रकार बा के साथ रहते हुअे मुझे कदम-कदम पर अुनकी मृदुलताका और अुनके मातृ-प्रेमका अनुभव होता रहा। मुझे मुक्तकण्ठसे बा की स्तुति करते सुनकर किसीने कहा "तुम बा के पास अधिक समय रहोगी, तो तुम्हें पता चलेगा कि वे गुस्सा भी कर सकती हैं।" लेकिन मैं अिसे मान नहीं सकी।

बा को अंग्रेजी बहुत नहीं आती थी। मगर अपनी थोड़ी-सी अंग्रेजीसे भी वे कितनी अच्छी तरह अपना काम चला लेती थीं, अिसका अुन दिनोंका अेक अुदाहरण मुझे याद आता है। भोपालमें बापूजी नवाब साहबके मेहमान थे। बा को शहदकी जरूरत थी। अुन्होंने अेक चुस्त-से अमलदारको, जो हम लोगोंके लिअे तैनात था, पूछा "आप हिन्दी जानते हैं?" बा की मंशा हिन्दीसे बोलचालकी हिन्दुस्तानीकी थी। मगर मुस्लिम रियासतके अेक मुसलमान अफसरको हिन्दीसे क्या वास्ता होता? अुन्होंने शुद्ध हिन्दुस्तानीमें जवाब दिया "जी नहीं।" बा बोलीं "अंग्रेजी जानते हैं?" जवाब मिला "जी हां।"

अिस पर बा ने कहा "Bees, flowers, honey" और वह अफसर झट जाकर शहदकी बोतल ले आया।

नवाब साहबकी माने बा को मिलनेके लिअे बुलाया था। मैं बाके साथ थी। बेगमोसे मिलने और अुनके साथ बातचीत करनेमें बा को किसी किस्मका सकोच या कठिनाअी मालूम नही हुअी। धन-दौलतकी और राजपाटकी चमक-दमक अुन्हें जरा भी चकाचौंध नही कर पाती थी। अुनके मन अिनकी कोअी कीमत न थी। वे अच्छी तरह जानती थी कि अुनके पतिका दर्जा राजा-महाराजाओंसे कही बढ-चढकर था। अुन्होंने बेगमोको खादीका पैगाम सुनाया। अुनकी बातें सुननेवालेको यह कल्पना भी नही आ सकती थी कि वे लगभग अेक निरक्षर महिला थी। अुनका अक्षरज्ञान चाहे कम रहा हो, मगर अुनका साधारण ज्ञान, मनुष्य-स्वभावका और मानव-जीवनका अुनका ज्ञान बहुत गहरा था।

आगरेसे मैं वापस दिल्ली आअी। कॉलेज खुलनेका वक्त हो चुका था, अिसलिअे मैं दिल्लीसे लाहौर गअी। लेकिन मेरे दिलमें तो बा का और आश्रमका चित्र खिच चुका था। वहाकी स्वतत्रता और सादगीकी मेरे मन पर गहरी छाप पडी थी। अिसलिअे लाहौरका बनावटी जीवन मुझे बहुत चुभने लगा। मैंने मन ही मन निश्चय किया कि मैं अपने बस भर सादा जीवन बिताअूगी। जब मैं भाअीके साथ आश्रम जा रही थी, माताजीने मुझसे कहा था "वहासे कोअी व्रत वगैरा लेकर न आना।" मैंने वचन दिया था कि मैं कुछ नही करूगी। माता-जीका अिशारा खासकर खादी पहननेके व्रतकी ओर था। अुन्होंने अुसी साल मेरे कॉलेजमें भरती होने पर मुझे बहुतसे नये कपडे बनवा दिये थे। वे अुनको जाया करना नही चाहती थी। मैंने आश्रममें खादी पहननेका व्रत तो नही लिया था, मगर वहासे लौटकर मैं खादीके सिवा दूसरा कपडा पहन ही न सकी। मैं खादीके तीन जोड कपडे लेकर आश्रम गअी थी। वापस आने पर मैंने अुन्हीसे कोअी तीन महीने अपना काम चलाया। आश्रममें जाकर मैंने बा से यह सीख लिया था कि खादीके सादे कपडोमें भी खासी अच्छी शोभा आ सकती है।

कहकर मुझे आश्रम और अहमदाबाद शहर दिखानेका बन्दोबस्त करवा दिया। अिस तरह आखिर मुझको सब जगहें देखनेका मौका मिला।

कुछ दिन बाद बापूजीके दौरे पर जानेका समय आया। मेरी भी छुट्टियां खतम हो रही थी। मुझे वापस भेज देनेकी बात हुअी, लेकिन मैंने तो कभी अकेले सफर किया ही नहीं था। मुझको अकेले दिल्ली कैसे भेजा जाय? आखिर बापूजीने मुझे अपने साथ ले जानेका निश्चय किया। आगरा अुनके रास्तेमें पड़ता था। वहांसे मुझे दिल्ली भेजना आसान था। अहमदाबादसे हम लोग बम्बअी गये। वहां मैंने ट्रेनमें से पहली ही दफा समुद्रके दर्शन किये। आश्रममें मेरी चप्पलें खो गयी थीं। सोचा था, बम्बअीसे ले लूंगी। मगर वहां अुस दिन दुकानें बन्द थीं। बम्बअीसे बापूजी भोपाल गये। गाड़ीसे अुतरकर पुल पार करते समय बा ने देखा कि मैं नंगे पांव चल रही हूं। मुकाम पर पहुंचते ही अुन्होंने अपने पासकी नअी चप्पलें, जो कुछ ही दिन पहले अुनके लिअे आयी थीं, निकालीं और मुझे पहनाअीं। अिस प्रकार बा के साथ रहते हुअे मुझे कदम-कदम पर अुनकी मृदुलताका और अुनके मातृ-प्रेमका अनुभव होता रहा। मुझे मुक्तकण्ठसे बा की स्तुति करते सुनकर किसीने कहा "तुम बा के पास अधिक समय रहोगी, तो तुम्हें पता चलेगा कि वे गुस्सा भी कर सकती हैं।" लेकिन मैं अिसे मान नहीं सकी।

बा को अंग्रेजी बहुत नहीं आती थी। मगर अपनी थोड़ी-सी अंग्रेजीसे भी वे कितनी अच्छी तरह अपना काम चला लेती थीं, जिसका अुन दिनोंका अेक अुदाहरण मुझे याद आता है। भोपालमें बापूजी नवाब साहबके मेहमान थे। बा को शहदकी जरूरत थी। अुन्होंने अेक चुस्त-से अमलदारको, जो हम लोगोंके लिअे तैनात था, पूछा "आप हिन्दी जानते हैं?" बा की मंशा हिन्दीसे बोलचालकी हिन्दुस्तानीकी थी। मगर मुस्लिम रियासतके अेक मुसलमान अफसरको हिन्दीसे क्या वास्ता होता? अुन्होंने शुद्ध हिन्दुस्तानीमें जवाब दिया "जी नहीं।" बा बोलीं "अंग्रेजी जानते हैं?" जवाब मिला "जी हां।"

अिस पर बा ने कहा "Bees, flowers, honey" और वह अफसर झट जाकर शहदकी बोतल ले आया।

नवाब साहबकी माने बा को मिलनेके लिअे बुलाया था। मैं बाके साथ थी। बेगमोसे मिलने और अुनके साथ बातचीत करनेमें बा को किसी किस्मका सकोच या कठिनाअी मालूम नही हुअी। धन-दौलतकी और राजपाटकी चमक-दमक अुन्हें जरा भी चकाचौंध नही कर पाती थी। अुनके मन अिनकी कोअी कीमत न थी। वे अच्छी तरह जानती थी कि अुनके पतिका दर्जा राजा-महाराजाओसे कही बढ-चढकर था। अुन्होंने बेगमोको खादीका पैगाम सुनाया। अुनकी बातें सुननेवालेको यह कल्पना भी नही आ सकती थी कि वे लगभग अेक निरक्षर महिला थी। अुनका अक्षरज्ञान चाहे कम रहा हो, मगर अुनका साधारण ज्ञान, मनुष्य-स्वभावका और मानव-जीवनका अुनका ज्ञान बहुत गहरा था।

आगरेसे मैं वापस दिल्ली आअी। कॉलेज खुलनेका वक्त हो चुका था, अिसलिअे मैं दिल्लीसे लाहौर गअी। लेकिन मेरे दिलमें तो बा का और आश्रमका चित्र खिंच चुका था। वहाकी स्वतन्त्रता और सादगीकी मेरे मन पर गहरी छाप पडी थी। अिसलिअे लाहौरका बनावटी जीवन मुझे बहुत चुभने लगा। मैंने मन ही मन निश्चय किया कि मैं अपने बस भर सादा जीवन बिताअूगी। जब मैं भाअीके साथ आश्रम जा रही थी, माताजीने मुझसे कहा था "वहासे कोअी व्रत वगैरा लेकर न आना।" मैंने वचन दिया था कि मैं कुछ नही करूगी। माताजीका अिशारा खासकर खादी पहननेके व्रतकी ओर था। अुन्होंने अुसी साल मेरे कॉलेजमें भरती होने पर मुझे बहुतसे नये कपडे बनवा दिये थे। वे अुनको जाया करना नही चाहती थी। मैंने आश्रममें खादी पहननेका व्रत तो नही लिया था, मगर वहासे लौटकर मैं खादीके सिवा दूसरा कपडा पहन ही न सकी। मैं खादीके तीन जोड कपडे लेकर आश्रम गअी थी। वापस आने पर मैंने अुन्हीसे कोअी तीन महीने अपना काम चलाया। आश्रममें जाकर मैंने बा से यह सीख लिया था कि खादीके सादे कपडोमें भी खासी अच्छी शोभा आ सकती है।

बा हमेशा बहुत नफासी और सलीकेसे कपड़े पहनती थीं। वहां मैंने कपड़े धोना भी सीख लिया था। अिसीलिअे मैं रोज अपने हाथके धुले खादीके कपड़े पहनकर ही कॉलेज जाती थी। आखिर माताजीने मुझे मिलके कपड़े पहनानेका आग्रह छोड़ दिया और खादीके नये कपड़े बनवा दिये।

३

बापूसे सूने आश्रममें

सन् १९३० में भाअीके कहने पर मैं फिर आश्रम पहुंची। अुन दिनों गर्मीकी छुट्टियां थीं और भाअी और बापूजी दोनों जेलमें थे। आश्रम सूना था। बा अुन दिनों कुछ दिनके लिअे वहां आअी थीं। अुस समयकी बा दूसरी ही बा थीं। वे काफी थकी हुअी थीं। देशके दुःखसे दुःखी थीं। मैंने सुना कि वे गांव-गांव घूमकर कार्यकर्ताओं और सेवकोंका अुत्साह बढ़ानेमें लगी थीं। अुनके मुरझाये हुअे चेहरे पर अपूर्व दृढ़ता और आत्म-विश्वास झलकता था। वे अब सिर्फ अेक कोमलांगी माता ही नहीं थीं, बल्कि रणभूमिमें अुतरी हुअी वीरांगना भी थीं। अुनके मनमें हमारी लड़ाअीकी न्याय्यताके और हमारी अंतिम विजयके बारेमें जरा भी शंका नहीं थी।

बापूजीकी निर्णयात्मक बुद्धि पर अुन्हें अपूर्व श्रद्धा थी। वे राजनीति नहीं समझती थीं, मगर बापूको पहचानती थीं। अुनके लिअे यह काफी था। अुनमें हिन्दुस्तानके करोड़ों मूक लोगोंकी मनोवृत्ति प्रतिबिम्बित होती थी।

आश्रममें आनेके बाद बा साबरमती जेलमें रामदासभाअी, मणिलालभाअी और दूसरे कुछ मित्रोंसे मिलने गअी। जाते समय वे दूसरे कुछ आश्रमवासियोंको और मुझे भी अपने साथ ले गअी। जेलकी कठिनाअियां सहते-सहते अुन लोगोंके चेहरे सूख गये थे। यह सब देखकर मेरा जी भर आया—मुझे रुलाअी-सी आने लगी। लेकिन

वा ने तो बहुत जेल देखे थे, बहुत कठिनाअियां सहन की थी। वे बिलकुल शान्त रही। स्वतन्त्रताकी वेदी पर बलि चढानेकी अुन्हें अितनी आदत हो गअी थी कि अुनको अपने पतिका, पुत्रोंका या अपना जेल जाना बलिदान-सा मालूम ही न होता था। हजारों लोग जेलोंमें बन्द थे न? अुनके अपने लडके दूसरोंसे अनोखे थे क्या? यह था अुनका भाव। अुनकी हिम्मत और बहादुरी देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ।

४

दिखावेसे नफरत

१९३० में देवदासभाअी गुजरात (पंजाब) जेलमें थे और भाअी (प्यारेलालजी) साबरमती जेलमें। सारी दुनियाको अपना परिवार बना लेनेके बापूजीके आदर्शोंको बा ने अपना लिया था। बरसोंसे वे अुस पर अमल करनेकी कोशिश कर रही थी। देवदासभाअी अुनके लाडले लडके थे, मगर बा साबरमती जेलमें भाअीसे और दूसरे कार्यकर्ताओंसे मिलकर अपने लडकेसे मिल लेनेका आनन्द और आश्वासन पा लेती थी। वे जिन लोगोंको मिलने जाती थी, अुन्हें अुनसे मिलकर कितना आनन्द होता और कितना आश्वासन व अुत्साह मिलता, सो तो कहनेकी बात नहीं। वे सिर्फ अेक बार देवदासभाअीसे मिलने गुजरात आअी थी। मैं और माताजी अुनके साथ थी। वहांसे माताजीके कहने पर वे हमारे गांवमें, जो गुजरात रेलवे स्टेशनसे ४ मील आगे है, आअी। अुस वक्त मैंने देखा कि अितना महान व्यक्तित्व होने पर भी बा को अपने जुलूस वगैराके दिखावेसे कितनी नफरत थी। वे तो भाअीके प्रति अपने प्रेमके वश होकर अुनके घर आअी थीं। मगर लोगोंने अुनका जुलूस निकालनेकी कोशिश की। अुनका हेतु अिस बहाने जनताका अुत्साह बढाना था। लेकिन बा को वह अखरा। अिससे तंग आकर वे अितनी परेशान हुअीं कि आखिर लोगोंको अपना हठ छोड ही देना पडा। जनताके प्रेम-प्रदर्शन और स्वागत-समारोहके प्रति बा की अितनी अरुचि देखकर पंजाबवालोंको बहुत आश्चर्य हुआ। हर आदमी

अेक ही सवाल पूछता था "लीडरोंको तो यह सब बहुत अच्छा लगता है। बा क्यों हमें जुलूस निकालनेसे रोकती हैं?"

१९३१ की गर्मीकी छुट्टियोंमें मैं फिर आश्रम गअी। अिस बार भी बापूजी वहां नहीं थे। कुछ दिनों बाद वे वहां आये। मगर आश्रममें न रहे। दाडी कूचके समय वे यह प्रण करके निकले थे कि जब तक स्वराज्य नहीं मिलेगा, वे वापस आश्रममें आकर नहीं रहेंगे। अिसलिअे वे विद्यापीठमें ठहरे थे। कुछ दिनों बाद बा भी वहां आ पहुंची। अेक अरसेके बाद अुन्हें बापूजीके साथ रहनेका यह मौका मिला था। अिसके दो-चार दिन बाद ही बापू वहांसे वाअिसरॉयको मिलने शिमला चले गये और शिमलासे सीधे अुन्हें गोलमेज परिषदके लिअे विलायत जाना पड़ा। वे बम्बअीसे जहाज पर सवार हुअे। अुन दिनों बा साबरमतीमें ही थीं। अुनके मनमें बापूजीके साथ विलायत जानेका तो क्या, बम्बअी जानेका भी विचार नहीं अुठा। बरसों हुअे, वे अपने पतिको हिन्दुस्तानकी और मानवजातिकी सेवाके लिअे दे चुकी थीं। बापू पर जितना अुनका अधिकार था, अुतना ही दूसरोंका भी। अिस अुसूल पर अमल करनेकी कोशिशमें लगी हुअी बा को यह स्वाभाविक मालूम होने लगा कि बापूजीके कामकी दृष्टिसे जिसका साथ रहना जरूरी हो, वही अुनके साथ रहे।

गोलमेज परिषदसे लौटनेके बाद बापूजी फिर तुरन्त ही सन् '३२ में जेल चले गये। माताजी विलायतसे लौटे हुअे भाअीको मिलने बम्बअी गअी हुअी थीं। वहांसे वापस लौटते समय जब वे बापूजीको प्रणाम करने गअीं, तो बापूने कहा· "अब वापस क्या जाती हैं? हमें जेल भेजकर आप भी जेल जाअिये।" बापूजीकी गिरफ्तारी माताजीके सामने ही हुअी। बादमें भाअी पकड़े गये। अुसके बाद माताजी भी जेल गअीं। कुछ दिनों तक वे और बा अेक ही जेलमें थीं। माताजी मुझसे कहती थीं कि जेलमें बा बहुत प्रसन्न रहती थीं। जेलकी तकलीफें अुन्हें तकलीफें ही नहीं मालूम होती थीं। यही नहीं, बल्कि अुनकी छायामें रहनेवाले दूसरे कैदियोंका जीवन भी बहुत कुछ सरल और मधुर बन गया था।

१९३५ की गर्मीकी छुट्टियोमें मैं दो-तीन हफ्तोके लिअे बापूजीके पास वर्धा गअी थी। बापू अुन दिनो मगनवाडीमें रहते थे। बा दिन भर अपने काममें लगी रहती। अुसी साल नवम्बरमें अपनी परीक्षाके बाद मैं भाअीके साथ फिर वर्धा गअी।

५

बा की सार-संभाल

अुन दिनों देवदासभाअीकी तबीयत अच्छी न थी। बाने जिस धीरज और समझसे अुस बीमारीमें देवदासभाअीकी सेवा की, वह अद्‌भुत थी। १९३६ की गर्मियोमें बा और भाअी देवदासभाअीको लेकर शिमला गये। भाअी कहते थे कि किस तरह बा अपने साधारण ज्ञान और अपनी सहज बुद्धिके जरिये बडे-बडे डॉक्टरोंसे भी ज्यादा काम कर लेती थीं। आखिर अुनकी मेहनत फली। देवदासभाअी अच्छे हो गये। बा वापस बापूके पास पहुच गअी।

१९३७ के दिसम्बरमें बापूजी कलकत्तेमें बीमार पडे। मैं वहासे कुछ दिनोंके लिअे अुनके साथ वर्धा आअी। अिसके बाद कुछ अैसी घटनाअें घटी कि थोडे दिनोके बदले मैं बरसो अुन्हींके पास रह गअी। अब मुझे बा का और भी निकट परिचय हुआ। वहा पहुचते ही बा ने मुझे अपने चार्जमें ले लिया। अुनके पास अेक छोटासा कमरा, गुसलखाना और बरामदा था। वहीं अुन्होने मेरा बिस्तर रखवाया। रात मुझे अपने पास बरामदेमें सुलाती और सब प्रकारसे सगी मा की तरह मेरी सभाल रखती। शुरूमें सुबह मैं अकसर अपना बिस्तर अुठाना भूल जाती और बा बिना कुछ कहे चुपचाप अपने हाथसे अुठाकर अुसे कमरेके अन्दर रख देती। जब मुझे अिसका पता चला, तो मैं बहुत शर्मिंदा हुअी और फिर बिना भूले नियमसे अपना बिस्तर अुठाने लगी। मैं बा का बिस्तर भी अुठानेकी कोशिश करती, लेकिन अकसर बा मेरे पहुंचनेसे पहले ही अपना बिस्तर वगैरा अुठाकर रख देती थी।

मैंने देखा कि बहुत बार वे दूसरोंके रखे हुअे बिस्तरोंको अुठाकर अुन्हें फिर करीनेसे रखती थी। बड़े-बड़े वजनी गदेलोंको भी अुठानेमें वे बिलकुल आलस नहीं करती थी। अुन्हें सफाअी और करीनेसे अितना प्रेम था कि अव्यवस्था और गन्दगी अुनसे सही नहीं जाती थी। अुनकी नियमितता भी अितनी ही आश्चर्यजनक थी। मुझे याद नहीं पड़ता कि अेक भी अैसा अवसर आया हो, जब बा कोअी काम करना भूल गअी हो। अेक बार मैंने अुनकी छोटी पेटी (अटैची केस) मेंसे कुछ निकाला। अुसे बन्द करनेकी अेक स्प्रिंग कुछ बिगड़ी हुअी थी। अिसलिअे मैंने अुसे अेक तरफसे ही बन्द करके दूसरीको खुला छोड़ दिया। बा ने देखा और चुपचाप अुसे बन्द कर दिया। जब दुबारा अुसमें से कुछ निकालनेका मौका आया, तो बा कहने लगी "जरा यहां लाओ, मैं बन्द कर दूं।" मैंने कहा "मैं करती हूं।" बा की आंखें हंस रही थीं — मानो कहती हों "कहीं भूल तो न जाओगी?"

६

बा की दिनचर्या

बा की तबीयत अच्छी नहीं रहती थी। बरसों खांसी और दमेके कारण अुनका हृदय और फेफड़े कमजोर पड़ गये थे। लेकिन अुनको अपने शरीरकी कोअी परवाह नहीं थी। अुनकी स्फूर्ति अद्भुत थी। धीमे-धीमे काम करना या चलना वे जानती ही न थीं।

बा सुबह चार बजे प्रार्थनाके लिअे अुठनेका आग्रह रखती थी। प्रार्थनाके बाद बापूजी आधा-पौना घंटा फिर सो लेते, मगर बा अुनके अुठनेसे पहले अुनके लिअे नास्ता तैयार करने या करवानेको चली जाती। आश्रमवासियोंमें बापूजीकी सेवा करनेकी लालसा तो हमेशा रहती ही थी। अिसलिअे बा अक्सर अुनकी सेवाके कामोंको बांट दिया करती। लेकिन किसीको कोअी काम सौंपनेके बाद भी वे खुद सामने खड़ी होकर देखतीं कि सारा काम बराबर हो रहा है या नहीं। सफाअी

बराबर रखी जा रही है या नही। नाश्ता तैयार करके वे अुसे बापूजीके कमरेमें ले जाती और खुद पास बैठकर अुन्हें खिलाती। अिसके बाद वे अिस बातका खयाल रखती कि बरतन वगैरा भलीभाति साफ होते है या नही। अकसर मैंने देखा है कि किसी लडकीके साफ किये हुअे बरतनोको बा ने अपने हाथो फिर साफ किया है। अुनके बरतन हमेशा चमकते रहते थे।

जब बापूजी घूमनेको निकल जाते, बा स्नान वगैरासे निपटकर अपने पूजा-पाठमे लगती। वे रोज घटा डेढ घटा रामायण, गीताजी वगैराका पाठ करती। फिर रसोअीघरमें पहुच जाती और बापूजीका खाना तैयार करवाती; दूसरोके लिअे बननेवाले खाने पर भी नजर रखती। परोसनेके समय बापूजीको और आसपास बैठे दूसरे मेहमानोको परोसकर वे बापूके पास ही खाने बैठ जाती। अुस समय भी अुनकी अेक आख बापूजी पर रहती। ज्यो ही कोअी मक्खी बापूजीके नजदीक आती, बा का बाया हाथ पखे या रूमालसे अुसे अुडा दिया करता। खानेके बाद बा बापूजीके पास आकर बैठती और अुनके पैरोमें घीकी मालिश करती। अिसके बाद वे अपने कमरेमें जाकर थोडा आराम करती और फिर कातने बैठ जाती। वे रोजके चारसौ-पाचसौ तार कातती थी। कअी बार बीमारीसे अुठनेके बाद कमजोरीकी हालतमें मुझे अुनको टोकना पडा था। मैं कहती "बा, आप कातनेकी अितनी मेहनत न किया करें।" लेकिन बा हसकर टाल देती। अुन्हे लगता था कि यद्यपि बापूजीके लिखने-पढनेके और राजनीतिके कामोमें वे मदद नही कर सकती, तो भी कातकर वे अुनके कामको आगे तो बढा ही सकती हू न? और, बापूने ही कहा है न कि "सूतके धागेसे स्वराज्य बधा है।" अिसलिअे कताअी छोडना अुनको हमेशा खटकता था।

शामको वे फिर रसोअीघरमें पहुच जाती। बापूजीका खाना तैयार करवाती। दूसरे कामोकी देखभाल करती। फिर सुबहकी तरह बापूजीको भोजन कराती। वे खुद तो बरसोसे शामको खाना खाती ही न थी। सिर्फ कॉफी पी लिया करती थी। अिधर-अिधर अिन अखीरके दो-चार सालसे, अुन्होंने कॉफी भी छोड रखी थी, और अुसकी

जगह वे दूधमें कुछ मसाले (तुलसी आदि) अुबालकर अुसे लिया करती थीं। शामको जब बापू घूमने निकलते, बा आश्रमके बीमारोंको देखनेके लिअे अुनके पास जाती, और फिर आश्रमकी दूसरी बहनोंके साथ अकसर खुद भी थोड़ा घूम आती। आश्रमसे कोअी आधे फर्लांग पर बापूजी अुन्हें वापस आते हुअे मिलते और वे भी अुनके साथ हो लेती। घूमकर लौटनेके बाद शामकी प्रार्थना होती थी। बा पूरी प्रार्थनामें अच्छी तरह भाग लेती, और रामायण भी गाती थीं। रामायणकी तैयारी वे सुबह नाणावटीजीके साथ बैठकर पहलेसे ही कर लिया करती थीं। वे सुबह अितने प्रेम और रसके साथ गीता और रामायणका अभ्यास करती थीं कि कोअी विद्यार्थी भी अपनी परीक्षाके लिअे अुससे अधिक ध्यानपूर्वक तैयारी न करता होगा। शामकी प्रार्थनाके बाद प्रार्थनाके स्थान पर ही बा का दरबार लगता। लगभग सभी बहनें बा के आसपास बैठ जाती। कोअी पाव दबाती, कोअी पीठ। अुस समय वहां आश्रमकी सब खबरें कही-सुनी जाती और अिधर-अुधरकी चर्चाअें होतीं। आधे-पौने घंटेके बाद दरबार बरखास्त करके बा अपने और बापूजीके सोनेकी तैयारीमें लग जाती।

अुन दिनों बा के पास रामदासभाअीका छोटा लड़का कनु रहा करता था। बा अुसकी देखभाल अेक नौजवान माके-से अुत्साहके साथ करती थीं और अुसके पीछे काफी मेहनत अुठाती थी। वे बच्चोंके मनको खूब समझती थीं। नतीजा यह हुआ कि कनु अपनी माको भूल ही गया। अुसके लिअे अुसकी 'मोटी बा' (बड़ी मा) ही सब कुछ थी। १९३९ में जब बा राजकोटके सत्याग्रहमें शरीक होनेके लिअे चली गअी, तो बापूजीके लिअे कनुको शान्त रखना असंभव हो गया। अुन्हें आशा थी कि वे अुसे अच्छी तरह संभाल सकेंगे, मगर वैसा कुछ हो नहीं सका। कनु सारे दिन अपनी 'मोटी बा' को याद करता रहता था। आखिर अेक दिन बापूजीने अुससे हसते-हसते कहा "तू मोटी बा के नामकी माला जप, मोटी बा आकर तेरे सामने खड़ी हो जायगी।" कनु खुश होकर बोला "आपो माळा!" (माला दीजिये)। बापूजीने माला दी। वह माला लेकर और आंख बन्द करके 'मोटी बा', 'मोटी बा' के नामका जप

करने लगा। कुछ देर बाद रोता-रोता आया और बोला "मोटी बा तो नही आअी।" आखिर बापूजीको हारकर अुसे अुसकी माके पास भेज देना पडा।

७

बा का त्याग

कलकत्तेसे बापूजी काफी बीमार होकर आये थे। अुनकी बीमारीकी चिन्ता करते-करते कअी आश्रमवासी तो बहुत घबरा गये थे। मगर बा के पास घबराहट नामकी कोअी चीज न थी। जब हम कलकत्तेसे लौटे, दिसबरका महीना चल रहा था। सेवाग्राममें खूब ठण्ड पडती थी। बापूको बर्षोंसे आकाशके नीचे सोनेकी आदत थी, लेकिन अिस समय ठण्डकी वजहसे खूनका दबाव अितना बढ जाता था कि डॉक्टरी सलाहके कारण अुन्हें खुलेमें सोना छोडना पडा। कलकत्ता जानेसे पहले बापूजी सेवाग्राममें सबके साथ अेक बडे 'हॉल' के कोनेमें रहा करते थे। अुनकी बीमारीकी खबर सुनकर अुन्हें अेकान्त और शाति देनेके खयालसे मीराबहनने अुनके लिअे अपना कमरा ठीक करवा कर रखा था। मगर बापूको वहा रहना स्वीकार न था। वे बोले "मीराने तो वह कमरा अपने लिअे और अपने खादी-कामके लिअे बनाया था। मैं वहा कैसे रह सकता हू? और मुझसे बिना पूछे अिस तरहका परिवर्तन क्यो किया गया? मैं तो अपने पुराने कोनेमें ही रहूगा।"

मगर कोनेमें रातको सोया कैसे जा सकता था? दूसरे लोग वहा पहलेसे ही सोते थे। अगर बापू वहा सोने लगें, तो अुन्हें तकलीफ हो। बापू अिसे कभी बरदाश्त नही कर सकते थे। मीरा बहनवाले कमरेमें सोनेके लिअे कहनेकी किसीकी हिम्मत नही पडती थी। आखिर बा आगे बढी। बोली "मेरा कमरा है न?" और बापू बा के कमरेमें सोने लगे। अुनका कमरा भी छोटा ही था। बापूके साथ अेक दो जने और भी अुस कमरेमें सोनेको पहुचे। बा, कनु और मैं बरामदेमें सोने

लगे। बा ने अेक बार भी यह नहीं कहा कि "बापू सोयें तो भले सोयें, लेकिन और किसीके लिअे मैं अपना कमरा क्यों खाली करूं?" दूसरे दिन सवेरे नाश्ता करते समय बापू कहने लगे "मैंने खास तौर पर यह घर बा के लिअे बनवाया था, और अब मैं अिस पर कब्जा करके बैठ गया हूं। बा को आज तक कभी अलग कोठरी मिली ही नहीं। मेरा और बा का जो कुछ था, सो शुरूसे ही सबके लिअे था। लेकिन अिस खयालसे कि बा के अिस बुढापेमें अुनको थोडा अेकान्त मिल जाय तो अच्छा हो, मैंने अुनके लिअे यह घर बनवाया था। बा ने अिसका अुपयोग भी सिर्फ अपने लिअे कभी नहीं किया। अुन्होंने अिसमें कअी लडकियोंको अपने साथ रखा है। लेकिन मेरे आ जाने पर तो बा को यहांसे बिलकुल निकल ही जाना पडे न? मैं जहां जाता हूं वहीं मेरे रहनेकी जगह धर्मशाला बन जाती है। मुझको यह खटकता है, लेकिन मुझे कहना चाहिये कि बा ने कभी अिसकी शिकायत नहीं की। मैं जो चाहता हूं, बा से ले लेता हूं। हर किसीको बा के पास रहने भेज देता हूं। अिसमें वे हमेशा रजामन्द रही हैं।" बा बापूके पास ही खाट पर बैठी थीं। बापू अुनसे सहज हंसकर बोले "होना भी तो यही चाहिये न? अगर मियां अेक कहे और बीबी दूसरा, तो जीवन खारा हो जाय। लेकिन यहां तो मियांकी बातको बीबीने सदा माना ही है।" सब हंसने लगे।

अन्दर सोनेसे भी बापूजीके खूनका दबाव ठिकाने नहीं आया। सर्दीके वक्त बहुत बढ जाता था। आखिर डॉक्टरी सलाहसे बापूजीने जुहू जाना स्वीकार किया। अिस पर कुछ लोग तो रोने लगे। "क्या बापूजीकी हालत अितनी खराब है? वे वापस जिन्दा लौटेंगे तो सही न?" लेकिन बा के पास घबराहटका नाम नहीं था। वे आदर्श नर्स बनकर अुनकी सेवामें लगी हुअी थीं। अपना आराम वगैरा सब कुछ भूल बैठी थीं। वे सारे दिन बापूजीके आसपास रहा करतीं और कहीं भी कोअी काम हो तो करने या करवानेको तैयार रहतीं। बा जुहू आयीं।

जुहूमें बापू करीब दो महीने रहे। वहां अुनकी तबीयत खूब सुधर गअी। वे समुद्र-किनारे घूमने जाते। बा अुन दिनों बराबर अुनके

साथ घूमने निकलती। तबीयत सुधरनेके बाद १९३९ के शुरूमें बापू वापस सेवाग्राम आये। वहांसे वे राजबन्दियोंको छुड़वानेके कामसे कलकत्ता गये। मैं, भाभी, महादेवभाओ और कनु सब अुनके साथ थे। बा ने खुशीसे अुनको विदा किया। जब बापू अच्छे रहते थे, तब बा अुनके साथ रहनेका आग्रह नहीं रखती थी।

८

जगन्नाथजीके दर्शनोवाली घटना

कलकत्तेसे बापूजी गांधी-सेवा-संघकी बैठकके लिओ कटक गये। सेवाग्रामसे बा, दुर्गाबहन वगैरा भी वहां आ पहुंची थीं। ओक दिन कुछ लोगोंने जगन्नाथपुरी जानेका विचार किया। बा, दुर्गाबहन, लीलावतीबहन, नारायण और दूसरे कुछ लोग रवाना हुओ। देवालयोंके प्रति बा के मनमें हमेशासे ही अपूर्व भक्ति थी। अिसलिओ दुर्गाबहन और बा ने अन्दर जाकर जगन्नाथजीको प्रणाम किया, प्रदक्षिणा दी और शामको सब लोग वापस आये। जब बापूजीने सुना कि बा और दुर्गाबहन मन्दिरमें गओ थीं, तो अुन्हें बहुत दुःख हुआ। वे बहुत नाराज हुओ "जिस मंदिरमें हरिजनोंको नहीं जाने दिया जाता, अुसमें हम कैसे जा सकते हैं?" शामको घूमते समय बापूजी बा के कंधे पर हाथ रखकर चले और अुनसे अिस बारेमें बात की। बा ने ओक छोटे बालककी तरह अत्यन्त सरलतासे अपनी भूल स्वीकार कर ली और बापूजीसे क्षमा मांगी। बापूजीका रोष गायब हो गया। अुन्होंने बा से कहा "अिसमें कसूर तो मेरा ही है। मैं तेरा शिक्षक ठहरा, और मैंने तेरे शिक्षणको अधूरा रहने दिया। फिर तू क्या करे?" कुछ देर बाद महादेवभाओसे बातें करते हुओ बापूजीने कहा "बा ने अितनी सरलतासे मेरे सामने अपनी भूल कबूल की है कि मैं मुग्ध हूं। अिस घटनासे मुझे जबरदस्त आघात पहुंचा है। लेकिन मुझे लगता है कि अिसकी जिम्मेदारी बा या दुर्गाकी नहीं, मेरी और तुम्हारी है। अपना दोष तो मैंने कओ बार कबूल किया है। लेकिन अिस वक्त तो मुझे तुम्हारी बात करनी

है। तुम्हारी और दुर्गाकी तो अेक असाधारण जोडी है। तुम परस्पर मित्र हो। तुमने दुर्गाको अपनेसे अितना पीछे क्यों रहने दिया? जिस तरह तुम बाबलाकी शिक्षाके बारेमें सोचते रहते हो, अुसी तरह दुर्गाके बारेमें क्यों नहीं सोचा?" महादेवभाअी बेचारे क्या कहते! अुन्हें अपनी भूल अितनी साफ दिखाअी पडी कि अुन्होंने बापूको अेक पत्र लिखा: "मैं आपके पास रहनेके लायक नहीं हूं। अिसलिअे आप मुझे अपने पाससे चले जानेकी अिजाजत दें।" मगर बापू यों अुनको छोडनेवाले थोडे ही थे। भूले-भटकोंको रास्ते पर लाना ही तो बापूका काम रहा है। फिर अपने निकटतम व्यक्तिकी छोटीसी भूलके लिअे वे अुसे छोड कैसे सकते थे? लम्बी-चौडी चर्चा हुअी। पत्रव्यवहार हुआ। बापूजी और अुनकी पार्टी डेलांगसे वापस कलकत्ता आयी। बा वगैरा सेवाग्राम लौट गये थे। कलकत्तेमें भी कुछ समय तक अिसकी चर्चा चलती रही। बापूजी महादेवभाअीको समझाते रहे। आखिर महादेवभाअीने यह सारा किस्सा अेक लेखके रूपमें 'हरिजन' में छपाया और खुद शान्त हुअे।

९

सेवाग्राममें हैजा

१९३८ या १९३९ की गर्मियोंमें सेवाग्राममें हैजा फैला। मैंने सब आश्रमवासियोंसे हैजेका टीका लगवा लेनेको कहा। बापूजीने प्रार्थनामें कह दिया कि सब लोग सूअी लगवा लें तो अच्छा है, क्योंकि गांवके लोग आश्रममें आते-जाते रहते हैं और छूत फैलनेका काफी डर है। वर्धामें काकासाहब वगैरा हैजेसे बीमार थे। हम लोग आश्रममें हैजेको न्योतनेका खतरा अुठाना नहीं चाहते थे। कअियोंके दिलमें अिजेक्शनके प्रति अश्रद्धा थी। वे अुससे बचना चाहते थे। लेकिन किसीकी बोलनेकी हिम्मत नहीं पडती थी। आखिर बा ने कहा: "मैं तो अिजेक्शन नहीं लूंगी, जो होना हो सो हो।" बापू बोले: "जो अिजेक्शन नहीं लेंगे, अुन्हें बालकोबावाली झोंपडीमें जाकर रहना पडेगा।" बा को यह स्वीकार था, लेकिन अिजेक्शन लगाना स्वीकार न था। नतीजा यह हुआ

कि बहुत थोड़े लोगोंने टीका लगवाया। गावमें तो करीब सभीको टीका लगाया गया था। दूसरी खबरदारी और सार-सभालके कारण सेवाग्रामसे हैजा जल्दी ही दूर किया जा सका और आश्रम बिलकुल बच गया।

१०

राजकोट सत्याग्रह

१९३९ के शुरूमें सरदार वल्लभभाअीके आग्रह करने पर बापूजी बारडोली गये। अुसी समय राजकोटमें सत्याग्रह शुरू हुआ। वहाके ठाकुर साहबने प्रजाको कअी हक देने स्वीकार किये थे। मगर बादमें वे बदल गये। अुन्होंने वचन-भग किया। जनताने अिसके खिलाफ अपना विरोध प्रकट करनेके लिअे सत्याग्रह करनेका निश्चय किया। बा ने सुना तो वे झट बापूजीके पास पहुची। राजकोट तो अुनका अपना घर था। राज-कोटमें सत्याग्रह हो, तो अुसमें अुन्हें भाग लेना ही चाहिये। बापूजीने अुन्हे अिजाजत दे दी, और बा राजकोटमें सविनय-भगके कसूरके लिअे नजरबन्द कर ली गअी। पहले तो अुन्हे अेक बिलकुल अकेले गावमें रखा गया। देवदासभाअी वहा अुनसे मिलने गये। वहाका वातावरण अिस कदर खराब था कि आज भी अुसका वर्णन करते हुअे देवदासभाअीकी आखें डबडबा आती है। लेकिन बा ने अपने किसी पत्रमें अिसकी कोअी शिकायत नही की। वे स्वतत्रताकी सिपाही बनकर गअी थी और मानती थी कि सिपाहियोको कठिनाअिया सहन करनेसे घबराना नही चाहिये। लेकिन जनतामें अिसको लेकर बहुत हलचल मची। बा की सेहत अितनी खराब थी कि अुन्हें डॉक्टरी मददसे अितनी दूर रखना पाप था। आखिर राजकोट सरकार अुनको राजकोटसे १०–१५ मील दूर अपने अेक महलमें ले आअी। वहा अुनके साथ मणिबहन और मृदुलाबहन थी। अुन दिनोंके बा के पत्र बहुत दिलचस्प होते थे। अुन्हे सिर्फ बापूजीकी तबीयतकी और चि० कनुकी चिन्ता रहा करती थी।

बा के जानेके कुछ ही दिनो बाद बापूजीने खुद राजकोटके जगमें कूदनेका निश्चय किया। बापू, भाअी, कनु और मैं राजकोट पहुचे।

बापूजीके साथ हम बा से अुस जगह मिलने गये, जहां वे नज़रबन्द थीं। सरकारने अुन्हें सब तरहका आराम दिया था, तो भी अुनका चेहरा मुरझाया-सा था। बा बापूजीके वियोगको बहुत दिनों तक सह ही नहीं सकती थीं। मनसे भले वे हिम्मत रख लें, मगर अुनके शरीर पर अुसका असर हुअे बिना न रहता था।

फिर तो बापूजीके राजकोटवाले अुपवास शुरू हुअे। जब बा को यह खबर मिली तो अुन्हें आघात तो पहुंचा, लेकिन वे अिस तरहके सदमोंको सहनेकी आदी हो चुकी थीं। बा के पास अुपवासकी खबर लेकर मैं ही गअी थी। बा कहने लगीं "मुझे खबर तो देनी थी कि बापूजी अुपवासका विचार कर रहे हैं।" मैंने कहा "लेकिन बा, हममें से कोअी यह जानता ही नहीं था कि बापू अुपवासका विचार कर रहे हैं। अेकाअेक सुबह अुठकर बापूने अेक पत्र लिखा और अुससे सबको पता चला। दलील करनेका अुन्होंने मौका ही नहीं दिया।"

अिस पर बा ने कोअी अुत्तर नहीं दिया। तुरन्त ही खाना बनानेवालीको कहलवाया कि जब तक बापूजीका अुपवास चलेगा, वे अेक वार खायेंगी और सो भी सिर्फ फलाहार। बापूके अुपवासोंमें वे हमेशा अैसा ही करती थीं, जिससे सेवा भी कर सकें और बापूके साथ तपस्या भी।

दूसरे या तीसरे दिन अेकाअेक बा बापूके सामने आकर खड़ी हो गअी। बापूने पूछा "क्यों आअी?" सरकारकी तरफसे बा को कहा गया था कि वे गांधीजीसे मिलने जाना चाहें तो जा सकती हैं। अिसीलिअे वे आअी थीं। मगर रात तक बा को कोअी लेने नहीं आया। सरकारने अिस बहाने अुन्हें छोड़ दिया था। लेकिन बापू अिसे क्यों सहन करने लगे? अुन्होंने कहा "छोड़ना हो तो सबको छोड़ें। मृदुला और मणिको भी छोड़ें, और बाकायदा छोड़ें।" यों बापूजीने रातके अेक बजे बा को वापस जेल भेजा। किसीने कहा "वह रास्ता तो बन्द है। बगैर खास पासके वहां किसीको जाने नहीं देते। बा को रास्तेमें ही रोक लिया जायगा।" बापूजीने बा से कहा "तुझे रास्तेमें रोकें, तो तू वहीं सत्याग्रह करना। जहां रोकें वहीं पड़े रहना। चाहे सड़क पर ही सारी रात क्यों न पड़ा रहना पड़े!" बा बिना किसी तरहकी दलील किये

चली गअी। अुस समय अुनके मनकी क्या दशा रही होगी ? बापूजीको अुस हालतमें छोड कर जाना कैसा लगा होगा ? लेकिन अिन बातोंमें बापूजीके साथ दलील करनेका विचार तक अुनके मनमें नही अुठता था। बापूजीने सरकारको भी पत्र लिखा। राजकोट दरबारकी हिम्मत न हुअी कि वह बा को सारी रात सडक पर रहने दे। बा वापस महलमें ले आअी गअी। दूसरे दिन अच्छी तरह लिखा-पढी करके सरकारने बा, मणिबहन और मृदुलाबहनको छोड दिया। दुपहरको तीनो बापूके पास पहुच गअी। अुस दिन बापूजीकी हालत थोडी गभीर थी। बा अुनकी सेवामें लीन हो गअी। अपनी थकान, बीमारी, सब भूल गअी।

११

पहली सख्त बीमारी

राजकोटसे बापूजी कलकत्ता गये और वहासे गाधी-सेवा-सघके वार्षिक सम्मेलनके लिअे वृन्दावन पहुचे। वृन्दावनसे वे वापस राजकोट गये। रास्तेमें दिल्ली अुतरे। वहा बा को बुखार आ गया। मैंने बापूजीसे कहा कि वे बा को दो-चार रोज सफरमें न रखें। मगर बापूजी माने नही। रास्तेमें ट्रेन ही में बा को १०५ डिग्री बुखार हो आया। लेकिन बापूजी पास थे, अिसलिअे अुनको अपनी बीमारीकी कोअी चिन्ता न थी। राजकोट पहुचने पर दवा वगैरा देनेसे बा अच्छी हो गअी। अिसके कुछ समय बाद जब बापूजी सरहद जानेके लिअे बबअी गये, तब बा बहुत बीमार हो गअी। अुनकी सेहत गिरी-सी तो थी ही, रास्तेकी तकलीफके असरसे बम्बअी लौटने पर अुन्हे निमोनिया हो गया। लेकिन बा में स्वस्थ होनेकी शक्ति भी अद्भुत थी। अुनका बुखार अुतरने पर बापूजी सरहदी सूबेके लिअे रवाना हुअे। बा को भी वहा जाना था। मगर कमजोरीके कारण ८–१० दिन बाद जानेका निश्चय हुआ। मैं और भाअी बा के साथ बम्बअीमें रहे। अुस समयके बा के सहवासके और बादमें सरहदी सूबेकी यात्राके स्मरण बहुत मधुर हैं। मेरे पास अिन दिनो बा की सार-सभालके सिवा दूसरा कोअी काम नही था। मैं सारा समय

अुनकी सेवामें रहती। बा भी हम दोनो भाअी-बहनोंके साथ बराबरीके अेक मित्रकी तरह रहने लगी। तब मैंने देखा कि अुनका मन कितना ताजा था और नये-नये दृश्योंमें और दूसरी कअी चीजोंमें वे कितना रस ले सकती थी। बा मुझ पर अपनी लड़कीकी तरह प्रेम रखती थी। मा हमेशा यह सोचती है कि अुसके बच्चेके समान बुद्धिशाली दुनियामें दूसरा कोअी नही! अिसी तरह बा भी मानने लगी थी कि अुनकी सुशीलाका डॉक्टरी ज्ञान गहरा है। मुझे अिससे घबराहट होती। मैं अपनी अपूर्णताको जानती थी। लेकिन बा को बड़े-से-बड़े डॉक्टरके नुस्खेसे भी तब तक सतोष न होता था, जब तक वे मुझसे अुसके बारेमें सम्मति न ले लेती। बा के अिस प्रेम और विश्वासने डॉक्टरी ज्ञानको बढानेकी मेरी अिच्छाको खूब अुत्तेजित किया।

१२

दूसरी सख्त बीमारी

सरहदी सूबेसे लौटने पर मैं कुछ दिन दिल्ली ठहर गअी। मुझे अपना अभ्यास पूरा करना था। अेम० डी० की परीक्षा देनी थी। अुसके बारेमें सब जानकारी हासिल की। मगर अुस साल मैं अभ्यासके लिअे दिल्ली ठहर नही सकी। सेवाग्राममें कअी बीमार अिकट्ठा हो गये थे। बापूजीको मेरी हाजिरीकी जरूरत थी। अिसलिअे मैं वापस सेवाग्राम आअी। लेकिन १९४० के जूनमें फिर दिल्ली गअी और अभ्यास शुरू किया। १९४१ के शुरूमें बापूजीका पत्र मिला "बा बीमार रहती हैं। रोज कहती है—'मुझे सुशीलाके पास भेज दो।' तू मुझे तारसे जवाब दे कि मैं अुन्हे भेजू या नही।" मैंने तुरन्त तार किया कि बा खुशीसे आवें। मार्चमें बा दिल्ली आ पहुची। बिलकुल अकेली थी। मैंने अिस बारेमें बहुत शिकायत की कि अिस हालतमें, अितनी कमजोर सेहतके रहते, बा को यो अकेले नहीं भेजना चाहिये था। महादेवभाअीने लिखा "बापूने कहा था कि अकेली ही भेज दो। बा को भी लगा कि वे अकेली जा सकती हैं, सो मैं अुन्हें गाडीमें बैठा आया। साथके मुसा-

फिरोसे कह दिया था कि बा का ध्यान रखें।" बा कहने लगी "अिसमें हुआ क्या! तुम तो व्यर्थ चिन्ता करती हो। सीधा सफर था। गाड़ीमें ही बैठे रहना था। महादेवभाअीने वहा बैठा दिया, और यहा तुम लोगोंने अुतार लिया। अितना बस नही है क्या?" मैं चुप हो गअी। अिस दृढता और आत्म-विश्वासके सामने कोअी क्या कह सकता है?

बा देवदासभाअीके यहा ठहरी। मैं दिनमें दो-तीन बार अुन्हे देखने जाती और दवा वगैरा लगानेका काम कर आती। अिसी बीच अीस्टरकी छुट्टिया आअी। बापूजीने मुझे सेवाग्राम बुलाया। मैंने अपने अभ्यासके लिअे बबअी जानेका कार्यक्रम पहले ही से बना रखा था। बा खास तौर पर सेवाग्रामसे मेरे पास आअी थी। यद्यपि अुन्होंने तो बिना सकोचके मुझसे कह दिया "तू जाकर आ, मैं आठ दिन यहा रहूगी।" लेकिन मुझको यह अच्छा नही लगा। बापूजीको तार करके बा के पास ही रहनेकी अिजाजत मैंने ले ली। बबअी जानेका कार्यक्रम रद कर दिया। अच्छा ही हुआ। बा को बवासीरका अिजेक्शन दिलाना पडा। अिसके लिअे मैं अुन्हें अस्पताल ले गअी। दुपहरको अुन्हे अपने कमरेमें लाअी। बा ने कहा कि वे दो-चार दिन मेरे पास ही रहना पसद करेगी। मेरे लिअे अिससे बढकर खुशीकी बात और क्या हो सकती थी? मगर मुझे डर था कि मैं बा को पूरा आराम नही पहुचा सकूगी। जब मैं अस्पताल जाअूगी, बा अकेली कैसे रहेगी? मगर बा को अिसकी परवाह न थी। अुन्होंने कहा "तू सवेरे-शाम प्रार्थना सुनायेगी, तो मुझे अच्छा लगेगा। अिसीलिअे मैं यहा ठहरना चाहती हू।" मैं देवदासभाअीके घर जाकर भी बा को प्रार्थना सुनानेके लिअे तैयार थी, लेकिन मैंने अिस बारेमें आग्रह नही किया। कही बा यह न समझ लें कि मैं अुन्हे रखना नही चाहती। मुझे जो सकोच था, सो सिर्फ अुनके आरामके खयालसे था। अिसलिअे मैं अुनके आग्रहके वशमें हो गअी और बा मेरे पास ही रह गअी।

बा को आराम पहुचानेके खयालसे मैंने दुपहरमें अुनके कमरेको पानीसे तर करके खूब ठडा कर दिया। बिजलीका पखा तो था ही। बा को बहुत अच्छा मालूम हुआ। वे खूब सोअी, मगर सर्दी बरदाश्त

न कर सकी। दूसरे दिन अुन्हें थोड़ा बुखार हो आया। तीसरे दिन लक्ष्मी भाभी अुन्हें अपने घर ले गअी, क्योंकि बीमारीमें वे बा के पास आये बिना रह नहीं सकती थी, और घूपमें आने-जानेसे बच्चे बीमार पड़ने लगे थे। बा की बीमारी बढ़ गअी। अुन्हें पेशाबमें भी थोड़ी तकलीफ रहने लगी। निमोनियाका भी असर था। बस, मैं तो अपनी परीक्षाको भूलकर दिन-रात बा की सेवामें ही लगी रहती थी, और अीश्वरसे सतत प्रार्थना करती रहती थी कि हे भगवान, बा अच्छी हो जाय! वही मेरी अेम० डी० की डिग्री होगी। मुझे चिन्ता खाये जाती थी। सेवाग्रामसे चलकर बा मेरे पास आअी, अब बा को कुछ हो गया, तो मैं बापूको क्या मुह दिखाअूंगी? आखिर भगवानने मेरी लाज रख ली। बा की तबीयत धीरे-धीरे सुधरने लगी। अुन दिनों बापूजी बा को हर रोज पत्र लिखा करते थे। बहुत दफा पत्र मेरे अस्पतालके पते आता। जब मैं बापूजीका पत्र लेकर बा के पास जाती, तो अुनके चेहरे पर निराली ही रोशनी दिखाअी देने लगती थी। मुझे जरा भी शक नहीं कि बा के अच्छा होनेमें अुन पत्रोंका बहुत बड़ा हाथ था। आखिर अप्रैलके अन्तमें देवदासभाअी अपने परिवारके साथ बा को सेवाग्राम छोड़ने गये। बा अच्छी होकर गअीं। जिस तकलीफका अिलाज करवाने आअी थीं, वह भी मिट गअी थी और थोड़ी कमजोरीको छोड़कर सब तरहसे अुनकी सेहत खासी अच्छी हो गअी थी।

१३

अन्तिम कारावासकी तैयारी

मअी १९४२ के अन्तमें मैंने अेम० डी० की परीक्षा पास की। लेकिन अस्पतालमें काम करनेका मेरा समय अगस्तके दूसरे हफ्तेमें खतम होता था। अगस्तके शुरूमें माताजी भाअीसे मिलने सेवाग्राम गअीं। मैंने सोचा था कि अे० आअी० सी० सी० की बैठकके बाद जब बापू बम्बअीसे सेवाग्राम लौटेंगे, तभी मैं वहां जाअूंगी। मगर ५ या ६ अगस्तको मुझे पता चला कि बापूजी तो सेवाग्राम पहुंचनेसे पहले

ही गिरफ्तार हो जानेवाले है। मैंने अपने प्रिंसिपालसे चार-पाच दिनकी ज्यादा छुट्टी मागी और बा, बापू, भाभी वगैरासे मिलनेके लिअे मैं ववअीकी गाडीमें सवार हुअी। ८ अगस्तकी शामको मैं बम्बअी पहुची। अे० आअी० सी० सी० के पडालमें गअी, तो देखा बापूजीका ापण होनेको था। भाषण सुना। मुझे अिस बातकी बहुत खुशी । कि मैं वह भाषण सुन सकी। मुझे देखकर बापूजी और भाभी ौरा सबको आश्चर्य ही हुआ। मेरा तार अुन्हे मिला नही था। ासीको पता नही था कि मैं आ रही हू। बा अे० आअी० सी० सी० म नही आअी थी। वे बिडला हाअुसमें थी और हमेशाकी तरह बापूकी सेवामें लीन थी। अे० आअी० सी० सी० से लौटनेके बाद प्रार्थना करके करीब १२ बजे हम लोग सोये।

सुबह चार बजेकी प्रार्थनाके समय महादेवभाअीने बापूजीसे कहा कि रात अेक बजे तक टेलीफोन आते रहे कि बापूजीको पकडने आ रहे है, वगैरा। बापू कहने लगे "मुझे कोअी नही पकडेगा। सरकार अितनी मूर्ख नही कि मेरे-जैसे मित्रको पकडे, और आजके मेरे भाषणके बाद तो पकड ही कैसे सकती है?"

बापूजीका यह आत्म-विश्वास बापूजीके दलके सभी लोगो पर असर डाल रहा था। बा ने मुझे कहा "तू क्यो अिस तरह भागदौड मचाकर आअी? बापूके सेवाग्राम लौटने तक तेरा काम भी हो जाता। तभी आना था न?" लेकिन यह आत्म-विश्वास झूठा साबित हुआ। नौ अगस्तको सुबह ५॥ बजे महादेवभाअी दौडते हुअे आये और बोले "बापू! पकडने आये है।" बापूजी झट तैयार हुअे। पुलिस अफसरने तैयारीके लिअे आध घटा दिया था। सबने मिलकर प्रार्थना की

"हरिने भजता हजी कोअीनी लाज जती नथी जाणी रे।"

६ बजे बापू, महादेवभाअी और मीराबहनको लेकर पुलिस चली गअी। बा और भाअी भी चाहते तो साथ जा सकते थे, मगर बापूजीने समझाया "तू न रह सके तो भले चल, लेकिन मैं चाहता तो यह हू कि तू मेरे साथ आनेके बदले मेरा काम कर।" बा के लिअे अितना काफी था। अुन्होने बिना दलील किये बापूका काम करनेका निश्चय कर लिया।

बापू शामको शिवाजी पार्ककी आम सभामें भाषण करनेवाले थे। बा ने अैलान किया कि अुस सभामें वे भाषण देंगी।

बापूजीके जानेके बाद शहरमें अेक बिजली-सी दौड गअी। कार्यकर्ताओंके झुण्डके झुण्ड विह्वल होकर आने लगे। बा का दरबार दिनभर भरा रहा। वे थककर चूर हो गअी थीं। बापूकी गिरफ्तारीके लिअे वे बिलकुल तैयार न थी। अुसका अुन्हें बहुत सदमा पहुंचा था। फिर भी वे बडी हिम्मतके साथ तन-मनकी थकानकी परवाह किये बिना बैठी रहीं।

खबर मिली कि बहुत करके बा को सभामें जाते हुअे रास्तेमें ही पकड लिया जायगा। अगर बा पकड ली जाय, तो अुनकी अिस कमजोर हालतमें अुनके साथ मेरा जाना जरूरी माना गया। सो मैंने अपना और बा का सामान बांधा। अिसके बाद बा ने मुझसे बहनों और भाअियोंके नाम अेक-अेक संदेश लिखवाया। बस, वाणीका अेक प्रवाह-सा चल निकला। बा के हृदयसे जो अुद्‌गार अुमड रहे थे, वे अुन्होंने लिखवा डाले। संदेश लिखवाते समय अुन्हें न तो किसी किस्मका विचार करना पडा, और न कोअी मेहनत पडी। बहनोंके लिअे बा ने नीचे लिखे मतलबका संदेश लिखवाया था

"महात्माजी तो आपसे बहुत कुछ कह गये हैं। कल अुन्होंने ढाअी घंटे तक अे० आअी० सी० सी० की बैठकमें अपने दिलकी बातें कही हैं। अुससे ज्यादा और क्या कहा जाय? अब तो अुनकी सूचनाओं पर अमल ही करना है। बहनोंके लिअे अपना तेज दिखानेका अवसर आया है। सब कौमोंकी बहनें मिलकर अिस लडाअीको सफल बनावें। सत्य और अहिंसाका मार्ग न छोडें।"

१४

गिरफ्तारी

पौने पाच बजे मैं और बा सभाके लिअे रवाना हुअी। पुलिस अफसर दरवाजे पर ही खडा था। हाथ जोडकर बोला "माताजी, आपकी अुमर घरमें बैठकर आराम करनेकी है। आप सभामें न जाय।" लेकिन बा क्यों मानने लगी? अिस पर अुसने हम दोनोको गिरफ्तार कर लिया, क्योंकि मुझे बा के साथ रखनेके लिअे पुलिससे यह कह दिया गया था कि बा के बाद मैं सभामें भाषण करनेवाली हू। पुलिसको यह भी पता चल गया था कि हमारे बाद भाअी सभामें भाषण करेंगे, अिसलिअे अुनको भी हमारे साथ ही गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तारीके समय बापू कह गये थे कि आजादीका हर सिपाही 'करेंगे या मरेंगे' का बिल्ला अपने कपडो पर सी ले। कनुने कागजके अेक टुकडे पर यह मत्र लिखकर दिया। जब बा को देंने लगे, तो अुन्होंने लेनेसे अिनकार किया। बोली "मुझे अिसकी क्या जरूरत है?" यह मत्र तो अुनके मनमें भरा ही था। बाहर लिखनेसे क्या फायदा?

मोटर हम तीनोको लेकर चली। बा के चेहरे पर खेद था। अुनकी आखोमें आसू थे। मैंने पूछा "बा, आप घबरा क्यो गअी?" वे कुछ बोली नही। अुनका शरीर गरम था। मैंने आश्वासन देनेकी कोशिश की। अिस पर बा कहने लगी "अिस बार ये जिन्दा नही निकलने देंगे। बहन, यह सरकार तो पापी है।"

मैंने कहा "हा बा, पापी तो है ही। अिसलिअे अिसका पाप ही अिसे खा जायगा और बापू फतह पाकर बाहर निकलेंगे।"

मोटर आॅर्थर रोड जेलके सामने जाकर खडी हो गअी। कुछ लोग रास्ते पर आ-जा रहे थे। वे बगैर कोअी ध्यान दिये आगे बढ गये। मुझे आश्चर्य हुआ। क्या ये लोग बा को नही पहचानते? क्या ये नहीं जानते कि आज क्या हो रहा है?

फाटक खुला। हमें ऑफिसमें ले गये। थोडी देरमें स्त्री-विभागकी मैट्रन बा को और मुझे स्त्री-विभागमें ले गअी। अन्दर जाकर मैंने बा



का और अपना बिस्तर खोला। लकडीके दो पटे आ गये थे। अुन पर बिस्तर बिछाये। अुस समय बा को ९९६ बुखार था। अुन्हें कुछ खाना नहीं था। वे खूब थकी हुअी थीं, सो लेट गअीं और लेटते ही सो गअीं। मुझे भी तीन दिनसे पूरी नींद नहीं मिली थी।

१५

ऑर्थर रोड जेलमें

ता० १०–८–'४२

रातके करीब दो बजे कुछ आवाज सुनकर मैं अुठ बैठी। देखा, तो बा पायखानेसे आ रही थीं। अुन्हें रातमें पतले दस्त होने लगे थे, और वे कअी बार पायखाने जा चुकी थीं। मैंने अुठकर मदद की। अुन्हें बिस्तरमें सुलाया। दूसरे दिन जब डॉक्टर आये, मैंने बीमारीकी बिना पर बा के लिअे खास खुराक मांगी। वे कहने लगे "खरीद सकती हैं।" मैंने कहा "तो आप हमारे मित्रोंको फोन कर दीजिये, ताकि वे रुपये भेज सकें। हमारे पास खरीदनेके लिअे पैसा नहीं है।" मगर जेलर वगैराने कहा "फोन नहीं हो सकता, क्योंकि सरकारका हुक्म है कि बाहरकी दुनियाके साथ आप लोगोंका कोअी संपर्क नहीं रहना चाहिये।" यह अेक अजीब हालत थी। मैंने डॉक्टरसे कहा "तो आप या तो अस्पतालसे बा के लिअे सब कुछ भेजिये या अपनी जेबसे। कभी मौका मिलने पर मैं आपको पैसे लौटा दूंगी।" बहुत कहा-सुनी करने पर शामको दो सेब आये। लेकिन चायमें अुनका रस निकालनेका कोअी साधन नहीं था। अिधर बा को दिनभर दस्त आते रहे। मुझे चिन्ता होने लगी कि अब क्या होगा। दवाके लिअे कहा, मगर दवाका प्रबन्ध करनेके लिअे भी कोअी नहीं आया।

बा का चेहरा मुरझाया हुआ था। मैंने दो-चार बार अिधर-अुधरकी बातें करनेकी कोशिश की, मगर कुछ चला नहीं। बा को आज भी थोड़ा बुखार था। दस्तोंके कारण कमजोरी बढ़ रही थी। जिस कमरेमें

हमें रखा गया था, अुसकी हवा अितनी खराब थी कि बैठते ही सिरमें दर्द होने लगता था। मैट्रनने हमसे कहा कि हम अुसके कमरेमें जाकर बैठें। मैंने बा के लिअे गादी बिछाअी। बा वहा कुछ देर तक लेटी। मगर फिर जल्दी ही अुनको पायखाने जाना पडा। बार-बार वहासे आना-जाना बा की शक्तिके बाहर था। अिसीलिअे हम वापस अपने कमरेमें आ गअी। बा ने आग्रह करके मुझे बाहर भेजा। लेकिन मै थोडी देर बाद ही भीतर चली आअी। अुसी समय अेक और बहन हमारे कमरेमें लाअी गअी। वे तीन-चार छोटे-छोटे बच्चे छोडकर आअी थी। बा ने बहुत प्रेमसे अुनका सब हाल पूछा। अुनका दु ख और चिन्ता देखकर बा अपना दु ख भूल गअी। आखिर वे हिन्दुस्तानकी मा जो थी। जब सारा हिन्दुस्तान दु खी हो रहा था, अैसे समय अेक-अेक व्यक्तिके दु खका क्या खयाल करना था? लेकिन बा के मन पर व्यक्तिगत दु ख और चिन्ताका बोझ नही था। अुन्हें तो अेक दूसरी ही चिन्ता सता रही थी। क्या बापूजी हिन्दुस्तानका दु ख दूर करनेमें सफल हो सकेंगे? मैंने समझानेकी कोशिश की "बा, आप क्यो चिंता करती हैं? आखिर बापूने तो भगवानका आश्रय लिया है न? और जो कुछ किया है, शुभ हेतुसे ही किया है। अुन्हें सफलता देनेवाला भगवान है।" बा चुप हो गअी, मगर अुनकी आखोमें और चेहरेके भावमें वेदना भरी थी।

कल रात हमारे सो जानेके बाद हमें बाहरसे बन्द कर दिया गया था। अिसलिअे आज शामको ही हम तीनोंने बाहर बरामदेमें अपने बिस्तर लगा लिये। मैट्रन जेलरके पास गअी। जेलरने अुसे हमारे साथ छेडछाड करनेसे मना किया। बाहर सोनेका अेक कारण तो यह था कि कमरेकी हवा बन्द थी। हवाअी हमलेसे बचनेके लिअे सब खिडकियोका तीन-चौथाअी भाग अीटोसे चुन दिया गया था। अिस कारण अन्दर हवा आ नही सकती थी। पायखानेकी नाली टूटी लगती थी, और अुनमें खूब ही बदबू आती थी। तिस पर कमरेकी फर्शमें बहुत नमी थी। बरामदोमें भी अूची-अूची दीवारें चुनवाअी गअी थी। मगर वहा कमरेसे ज्यादा हवा आती थी।

बा थकी हुअी थीं, अिसलिअे तुरन्त ही सो गअीं। हम दोनों भी अपने-अपने बिस्तरों पर लेटी हुअी बा के अुठनेकी राह देख रही थीं। वे अुठें तो प्रार्थना करें। नौ बजे मैट्रन आयी। कहने लगी "ग्यारह बजे तुम दोनोंको (बा को और मुझे) यहांसे ले जायंगे।" मैंने अुठकर सामान बांधा। दस बजे बा को जगाया। अुन्हें दूसरी बहनके बिस्तर पर बैठाकर अुनका बिस्तर बांधा। फिर बैठकर प्रार्थना शुरू की। रामधुन चल रही थी कि अितनेमें जेलर वगैरा आ गये। आज सुबहके अनुभवकी यह बात सुनकर कि मेरे पास बा के लिअे फल वगैरा मंगानेको पैसे नहीं थे, नअी बहनने मुझे अपना बटुआ दे दिया। अुनके पास भी ज्यादा पैसे नहीं थे। शायद सब मिलाकर करीब बीस रुपये रहे होंगे। मैंने पांच रुपयेका नोट अुनसे ले लिया। वे अपने लिअे रंगीन साड़ी लाना भूल गअी थीं। सो मैंने अुनको अेक रंगीन साड़ी दे दी। मनमें खयाल यह भी रहा कि कौन जाने, मैं जेलमें मर जाअूं, तो मेरे सिर किसीका कर्ज तो न रहेगा?

सुपरिण्टेण्डेण्टके आफिसमें पहुंचने पर बा ने अुनसे पूछा "कहां ले जायेंगे? यरवडा या बापूजीके पास?" मैट्रनसे भी पूछा था, मगर अुसने जवाब नहीं दिया था। अबकी जवाब मिला - "बापूजीके पास।" अिस अुत्तरसे हमारा मन काफी हलका हो गया। स्टेशन ले जाकर हमें अेक वेटिंग रूममें बैठाया गया। दरवाजा आधा खुला था और हमारे साथका पुलिस अफसर दरवाजेके सामने आरामकुरसी लगाकर बैठा था, मानो अुसे हमारे भाग जानेका डर हो! मुझे नींद आ रही थी। मगर बा भलीभांति जाग रही थीं। स्टेशन पर हमेशाकी तरह लोगोंका आना-जाना, भीड़-भड़क्का और शोर-गुल जारी था। बा ध्यानपूर्वक सब कुछ देख रही थीं। अेकाअेक वे बोल अुठीं "सुशीला! देख, यह दुनिया तो अैसे चल रही है, जैसे कुछ हुआ ही न हो! बापूजीको स्वराज्य कैसे मिलेगा?" अुनकी वाणीमें अितनी करुणा भरी थी कि सुनकर मेरी आंखें डबडबा आयीं। मैंने कहा: "बा, अीश्वर बापूजीकी मदद पर है न? सब ठीक ही होगा।"

पुलिस अफसर आया। गाडीका समय हो चुका था। हमें पहले दर्जेके अेक छोटे डब्बेमें चढाया गया, और गाडी पूनाकी तरफ रवाना हुअी।

१६

आगाखान महलमें प्रवेश

मेरा वियोग असह्य लगनेकी वजहसे तो यहा मेरे पीछे-पीछे नही चली आओी? वह अपना कर्तव्य तो नहीं भूल गओं!" बापूजीने तनिक तीखे स्वरमें पूछा "तूने यहा आनेकी अिच्छा प्रगट की थी या अुन लोगोंने तुझे पकडा?" बा अेक पलको चुप रहीं। वे कुछ समझ ही न पाओी कि बापू क्या पूछ रहे थे। मैंने जवाब दिया "नहीं बापूजी, गिरफ्तार होकर आओी हैं।" अिस पर बा समझी कि बापू क्या कह रहे थे। बोली "नहीं, नहीं, मैंने कोओी माग नही की थी। अुन्होंने हमें पकडा।" अितनेमें हमारे साथका पुलिस अफसर आ पहुचा। बोला. "जरा बाहर चलकर अपना सामान देख लीजिये।" मैंने बा से बैठनेको कहा, मगर वे तो सामान देखनेके लिअे अुस लम्बे बरामदेको पार कर वापस 'पोर्च' तक आओी। अुनके स्वभावमें फुर्ती और सुघडता कूट-कूट कर भरी थी। आराम लेना वे जानती ही न थीं, और बापूजीसे मिलकर तो अुनके शरीरमें मानो नया जीवन ही आ गया था। बहुत रोकने पर भी वे सामान देखनेके लिअे आनेसे रुकी नहीं।

मैंने कहा था कि बा बीमार है, तो महादेवभाओी अुनके लिअे खाट वगैराका प्रबन्ध करने लगे। हम लोग सामान देखकर लौट रही थी कि रास्तेमें अुस जेलके सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० कटेली हमें मिले। वे बहुत आदरके साथ बा को भीतर लिवा गये। अुन्हें पता भी नहीं था कि हम अेक बार अन्दर हो आओी थीं। बा को खाटमें सुलाकर मैंने अुनके लिअे दवाका नुस्खा लिखा, मगर बा के दस्त तो बापूजीके दर्शनसे और अुनके अपने मनके बोझके हलके हो जानेसे यों ही बन्द हो गये थे। दवाकी सिर्फ अेक ही खुराक अुन्हें दी गओी। दूसरी देनेकी जरूरत ही नहीं पडी। शायद अेक भी न देते तो काम चल जाता।

दूसरे रोजसे ही बा खटिया छोडकर थोडा-थोडा घूमने-फिरने लगी। बापूजीके खानेके समय वे अुठकर अुनके पास जा बैठती और अुनका खाना परोस देती। बा का खाना भी मैं वहीं ले आती थी। हमेशाकी तरह खाते समय भी बा अेक हाथमें पखा लेकर मच्छरो और मक्खियोसे बापूजीकी रक्षा किया करती थी। अन दिनो आगाखान

महलमें मक्खिया और छोटे-छोटे जन्तुओकी भरमार थी, मालिशके समय भी मच्छर वगैरा अुडानेकी जरूरत रहती थी। नही तो मालिशके वक्त वापूजी सो नही पाते थे। शुरूमें अेक-दो दिन महादेवभाअी मच्छर वगैरा अुडाते रहे। फिर वा ने यह काम भी अपने हाथमें ले लिया। करीब डेढ घटा कुरसी पर वैठे-वैठे वे यह काम करती थी। हम लोग तो किसी मच्छर या मक्खीके दीखने पर ही पखा हिलाते थे, मगर वा का पखा सारे समय बरावर चलता ही रहता था, ताकि कोअी जीव-जन्तु आने ही न पाये।

१७

गवर्नर और वाअिसरॉयको पत्र

वा और मैं मगलवार ता० ११ अगस्तको सुवह आगाखान महलमें पहुची थी। वापूजीने अुसी रोज वम्वअीके गवर्नर लॉर्ड लुम्लीको लिखे अपने पत्रका मसविदा पूरा किया था। महादेवभाअीके हाथो अुसकी साफ नकल हुअी। पत्र सुपरिण्टेण्डेण्टको डाकमें डालनेके लिअे दिया गया। अिस पत्रमें वापूजीने चिंचवड स्टेशनवाली अुस घटनाका जिक्र किया था, जिसमें पुलिसने अेक सत्याग्रही युवकके साथ वुरा सलूक किया था। साथ ही, अखवार मागे थे और सरदार और मणिवहनको आगाखान महलमें रखनेकी दरखास्त की थी। पत्रके चले जाने पर हम लोग वैठकर सोचने लगे कि सरदार आवेंगे तो अुन्हें कौनसा कमरा देंगे। महादेवभाअी यह सोचकर वहुत खुश थे कि सरदार आ जायगे तो अपने हसी-मजाकसे वे वापूको खुश रखेंगे। वा भी अुनके आनेके विचारसे खुश थी।

वापूजी वाअिसरॉयके नाम पत्र लिखनेमें लगे थे। अुसमें हम सवकी मददकी जरूरत पडती थी। पत्रकी दो तीन कच्ची नकलें तैयार हुअी। वापूजीने हमसे कहा कि हम सव पत्रको ध्यानपूर्वक पढ जाय और अपनी सूचनाअें दें। महादेवभाअी पर सवसे ज्यादा वोझ था। आखिर शुक्रवारको पत्र तैयार हुआ। आखिरी नकल फिर महादेवभाअीने ही की।

जब वे बापूजीके पास अुसे हस्ताक्षरके लिअे लाये, तो बोले "नकल करनेमें मुझे पूरे दो घंटे लगे।" अक्षर मोतीके दानों जैसे थे। बापूजी क्षणभर महादेवभाअीके सुन्दर अक्षरोंको देखते रहे। फिर दस्तखत करके पत्र सुपरिन्टेण्डेण्टके पास भेजा। पत्रके चले जाने पर सबको छुट्टी-सी महसूस होने लगी।

अिन चार-पांच दिनोंमें बा की तबीयत खासी सुधर गअी थी। ताकत भी काफी आ गअी थी। घूमने-फिरने लगी थीं। रसोअीघरमें भी पहुंच जाती थीं। अपना पूजा-पाठ करतीं और खुश रहती थीं।

१८

शनिवार — १५ अगस्त १९४२

हमेशाकी तरह बापू सुबह ७॥ बजे घूमने निकले। महादेवभाअी भी अुस दिन घूमने आये। आठ बजे सब लोग वापस आ गये। बापूजी मालिशवाले घरमें चले गये, और महादेवभाअी अपने काममें लग गये। बा घूमने नहीं आअीं। अुस दिन जेलोंके अिन्स्पेक्टर जनरल कर्नल भण्डारी आनेवाले थे। कैदी लोग बरामदे वगैराकी सफाअी बड़ी फुर्तीसे कर रहे थे। बा श्रीमती नायडूके कमरेमें थीं।

थोड़ी देरमें कर्नल भण्डारीकी मोटर आअी। बापूको और मुझे छोड़कर बाकी सब लोग श्रीमती नायडूके कमरेमें बातें करने लगे। मैं बापूजीकी मालिश कर रही थी। महादेवभाअी वगैराके हंसनेकी आवाज आ रही थी। अेकाअेक आवाज बन्द हो गअी। किसीने मुझे पुकारा। मैं समझी, कर्नल भण्डारीने मिलनेके लिअे बुलाते होंगे। अितनेमें बा खुद दौड़ी-दौड़ी आअीं और बोलीं, "सुशीला, जल्दी चलो। महादेवको फिट आअी है।" मैं दौड़ी गअी। महादेवभाअी महाप्रयाणकी तैयारीमें थे। नाड़ी बन्द थी। हृदयकी गति बन्द थी। सांस चल रही थी। बदन अैंठा जा रहा था।

मैंने बापूजीको बुलवाया। बापू भी समझे कि कर्नल भण्डारीसे मिलनेके लिअे ही अुन्हें बुलवाया जा रहा है। किसीने सुनते कहा,

"महादेवभाओीकी तबीयत ठीक नही है।" लेकिन बापूको यह कल्पना कैसे हो कि महादेवभाओी हमेशाकी छुट्टी पर जानेको तैयार है? बापू महादेव-भाओीकी खटियाके पास आकर खडे हुअे "महादेव! महादेव!!" पुकारने लगे। मगर जवाब कौन दे? बा ने पुकारा "महादेव, ओ महादेव! बापूजी आये है। महादेव, बापूजी बुलाते है।" लेकिन महादेव-भाओी तो अुस दिन किसीको भी जवाब देनेवाले नही थे। धीरे-धीरे सास भी बन्द हो गओी। पहला बलिदान पूरा हुआ।

बा के लिअे अिस वज्रपातको सहना सबसे अधिक कठिन था। वे बडी हिम्मतके साथ प्रार्थना वगैरामें शामिल हुओी, मगर आसुओंकी धारा तो अखण्ड बहती ही रही। अुनकी आखोके सामने सारी दुनिया घूम-सी रही थी।

आखिर जब शवको जलानेके लिअे नीचे ले गये, तो बा भी आग्रहपूर्वक नीचे आओी। अभी अुनमें सीढिया चढने-अुतरनेकी ताकत नही थी। मगर वे अपने महादेवको पहुचाने भी न जाय, यह कैसे हो सकता था? बा की कमजोर हालतको देखते हम यह चाहते थे कि वे दाहक्रिया न देखें तो अच्छा हो। लेकिन बा रुकनेवाली नही थी। चितासे थोडी दूर पर अुनकी कुरसी रखी गओी। वहा तक आते हुअे रास्तेमें भी और वहा बैठे-बैठे भी बा सारे समय हाथ जोडकर यही पुकारती रही "महादेव, तू जहा जाय, वहा सुखी रहना। हे भाओी, तू सदा सुखी रहना। तूने बापूजीकी बहुत सेवा की है। तू सदा सुखसे रहना!" अिसके साथ ही वे बार-बार यह पूछती थी "महादेव क्यो गया, और मै क्यो नही? ओीश्वरका यह कैसा न्याय है?" शवको जलाकर हम लोग घर लौटे। शामके पाच बज चुके थे। घरमें सन्नाटा था। कौन किसे सान्त्वना देता?

१९

ब्राह्मणकी मृत्यु

बा कहती थीं "ब्राह्मणकी मृत्यु तो भारी अपशकुन है।" बापू कहते "हां, सरकारके लिअे।" लेकिन बा के मनसे यह शंका मिटी नहीं। कुछ दिनों बाद वे फिर मुझसे कहने लगीं "सुशीला, ब्राह्मणकी यह मौत तो हमारे ही सिर रही न? बापूजीने लडाअी छेडी, महादेव जेलमें आया और यहां अुसकी मृत्यु हुअी। यह पाप तो अपने ही मत्थे चढा न?" मैंने समझाया "नहीं बा, आप अैसा क्यों सोचतीं हैं? महादेवभाअी तो देशकी सेवामें बलि चढे हैं। अुनकी मृत्युका पाप कैसा? और अगर हो भी, तो वह सरकारके सिर हो सकता है। सरकारने नाहक अुन्हें पकडा। बापूजीने लडाअी शुरू ही कब की थी?" अिस पर बा बोलीं "हां, बात तो सच है। बापूजीने लडाअी शुरू नहीं की थी। वे तो अभी सरकारके साथ समझौतेकी चर्चा करने जा रहे थे। लेकिन यह सरकार बडी पापी है। अिसने कुछ करने ही नहीं दिया।"

२०

शंकरका मंदिर

बा में गहरी धर्म-भावना थी। दुनियाकी कोअी भी ताकत अुनकी धार्मिक भावनाको डिगा नहीं सकती थी। बा हमेशा तुलसीमाताकी पूजा करती थीं। मीराबहनने अपने कमरेमें बालकृष्णकी अेक मूर्ति रखी थी। बा अुसे फूल चढाती थीं। वह बा का दूसरा मंदिर था। और महादेव-भाअीका चिता-स्थान बा के लिअे तीसरा मंदिर — शंकर महादेवका मन्दिर — बन गया था। जब तक बा में ताकत रही, वे बापूजीके साथ चिता-स्थान पर जाती रहीं और समाधिकी प्रदक्षिणा करके अुसे नमस्कार करती रहीं। दूसरी अक्तूबरको बापूजीका जन्मदिन आया। अुस दिन श्रीमती नायडूने छोटीसी दीपमालिकाका प्रबन्ध किया था। बा ने मुझे

पुकारा और कहा "सुशीला, शकरके वहा दीया जरूर रख आना।" पहले तो मैं कुछ समझी ही नही कि बा क्या कहना चाहती थी। हमारे अेक सिपाहीका नाम शकर था। मगर बा अुसके वहा दीया क्यो भिजवाने लगी? अेकाअेक मुझे ध्यान आया। मैंने पूछा "बा, आप महादेवभाअीकी समाधि पर दीपक रखनेको कह रही है न?"

"हा, हा, वही तो महादेवका — शकरका — मदिर है न?" बा ने जवाब दिया।

२१

बा विद्यार्थीके रूपमें

महादेवभाअीकी मृत्युसे वातावरण बहुत गमगीन हो गया था। अिस तरहकी मौत कही भी हिलानेवाली होती है। मगर जेलमें तो अिसका असर बहुत लम्बे अरसे तक बना रहता है। आखिर बापूजीने अुपाय सोचा "हम सब अपने अेक-अेक मिनटका हिसाब रखें, सारा समय काममें ही लगे रहें, ताकि अिधर-अुधरके विचार मनमें आ ही न सकें। हिंसासे भरी अिस दुनियामें अहिंसाको अपना स्थान ढूढना है, तो अुसका भी यही रास्ता है।" बापूजी खुद तो सारा समय काममें लगे ही रहते थे। अब अुन्होने दूसरोको भी कार्यक्रम तय कर दिया। मेरा समय तो पहले ही से भरा हुआ था। बापूजीने मुझे आग्रहभरी सलाह दी कि मैं अपने कार्यक्रमको ध्यानपूर्वक पूरा करू। अुन्होने मेरे साथ थोडे समय तक बाअिबल और गीताजी पढना शुरू किया। बा को भी वे गुजराती सिखाने लगे। गीताजी भी सिखाते थे। गुजराती किताबमें कोअी भजन आ जाता, तो बापू अुसे बा को सस्वर गाना सिखाने बैठ जाते। भूगोल शुरू किया। कभी-कभी अितिहास भी पढा दिया करते। दुपहरको खाना खाकर लेटने पर बापू सोनेसे पहले बा को कुछ-न-कुछ पढकर सुनाते और अुस पर आलोचना करते। बा बहुत खुश होती। वे बडी दिलचस्पीके साथ सब कुछ सीखनेकी कोशिश करती। कभी-कभी अुन्हें अफसोस भी होता कि अुन्होने यह सब बहुत देरमें सीखना

शुरू किया। वे कहतीं "मैंने पहले ही से सीखनेकी कोशिश की होती, तो कितना अच्छा होता।"

बा सीखती तो बहुत दिलचस्पीके साथ थीं, लेकिन अुनका मन और मस्तिष्क बापूजीकी तरह जवान नहीं था। अुनके लिअे अब नअी चीज सीखना कठिन था। शुरू-शुरूमें बापूजी अुनसे प्रश्न पूछते, यह जाननेकी कोशिश करते कि अुन्हें पहले दिनका पाठ याद है या नहीं। अक्सर बा को वह याद नहीं रहता था। बापू बा पर नाराज तो नहीं होते थे, फिर भी प्रश्नका अुत्तर न दे सकनेके कारण बा को बुरा लगता था। वे पाठ याद करनेके लिअे मेहनत भी खूब करती थीं। अेक दिन बापूजीने अुन्हें पंजाबकी नदियोंके नाम सिखाये। बापूके चले जाने पर बा मेरे पास आअीं और बोलीं: "सुशीला, वे नाम तू मुझे अेक कागज पर लिख दे।" मैंने लिख दिये। बा अुस कागजको सामने रख कर सारा दिन चलते-फिरते नदियोंके नाम रटती रहीं। मगर ७४ सालकी अुम्रमें नअी चीजें सीखनेकी शक्ति किसी विरलेमें ही पाअी जाती है। दूसरे दिन वे फिर अुन नदियोंके नाम बापूजीको नहीं बता पाअीं। बापूजीने बा को प्राकृतिक भूगोल सिखाना शुरू किया। रेखांश और अक्षांश, भूमध्य रेखा या विषुवत रेखा क्या हैं, सो सब समझाया। लेकिन याद रखना कठिन था। हर रोज दुपहरको खानेके बाद बापू अेक नारंगी मंगवाते और अुससे बा को विषुवत रेखा वगैरा समझाते। आखिर बा को वे याद हो गये। अिसके कअी दिन बाद अेक रोज भाअी मनुको भूगोल पढ़ा रहे थे। बा खड़ी होकर सुनने लगीं। भाअीको अंग्रेजी नाम आते थे, अुर्दू नाम आते थे, मगर हिन्दी नाम याद करनेमें कुछ गोलमाल हो गया था। बा मुझसे आकर कहने लगीं "सुशीला, प्यारेलाल जिसे रेखांश बता रहा है, बापूजीने अुसे अक्षांश बताया था।" और अुनकी बात सच थी। भाअीने अपनी भूल सुधारी।

बापूजीने बा के साथ गुजरातीकी पांचवी किताब पढ़नी शुरू की। अुसमें कविताअें आयीं। अुनके शुरूमें रागका नाम लिखा रहता। बापूजी बा को अुनका राग सिखाने लगे। आठ दस दिन तक शामकी प्रार्थनाके बाद बापूजी और बा अुन कविताओंको गाया करते। हमारी कम्भाजान

(श्रीमती नायडू) अकसर मजाक करती। बापू हँस देते और फिर बा के साथ गाने लगते।

बापूजीने बा को हिन्दुस्तानके प्रान्तोंके नाम सिखाये। फिर हरअेक प्रान्तकी राजधानीका नाम सिखाया। बा ने अुन्हें सीखनेकी मेहनत तो बहुत की, मगर फिर भी जब बापू पूछते तो बा के मुहसे "कलकत्तेकी राजधानी लाहौर है" या अैसा ही कोअी दूसरा जवाब निकल जाता।

धीरे धीरे बा का अुत्साह मन्द पड़ने लगा। वे अकसर कहती "मैं बीमार रहती हू। अिसलिअे मेरा दिमाग कमजोर पड़ गया है। मैं कुछ याद नही रख सकती।" फिर भी बा ने अभ्यास नही छोड़ा। वे गीताजीके अभ्यासमें अधिक समय देने लगी। बापूजीके साथ गीता पढ़ती। फिर शामको प्रार्थनाके बाद मेरे साथ पढ़ती। कहा जा सकता है कि गीताजीका अुनका अभ्यास तो लगभग मृत्युके समय तक चलता रहा।

महादेवभाअीकी मृत्युके बाद बा सुबह-शाम नियमसे बापूजीके साथ घूमने निकलने लगी। बापू कअी बार अुन्हें काफी तेज चला ले जाते, लेकिन यह सिलसिला अेक महीनेसे ज्यादा नही चल सका। अेक दिन वे बापूजीके साथ ५५ मिनट तेजीसे घूमी। अुसी रोजसे अुनकी छातीमें दर्द शुरू हो गया। बस, अुसके बाद बा बापूजीके साथ अच्छी तरह घूम ही नही सकी। सुबह जब बापूजी नीचे बगीचेमें घूमने जाते, तो बा अूपर बरामदेमें थोड़े चक्कर लगाकर कुर्सी पर बैठ जाती। हम घूमकर लौटते तो बा को हाथमें 'आश्रम-भजनावलि' और 'अनासक्ति-योग' लिये बरामदेमें कुर्सी पर बैठी पाते। वे रोज करीब अेक घटा अिन दोनों पुस्तकोंके साथ बिताती थी। भजन गाती, 'अनासक्तियोग' पढ़ती और फिर मालिश वगैरा करवानेके लिअे अुठती।

बा के पढ़नेका ढग बच्चोंका-सा था। बापूजीने अुन्हें समझाया कि अुनको अपने पढ़नेका ढग सुधारना चाहिये। अकसर बा सुबह 'अना-सक्तियोग' और दोपहरमें अखबार अूचे स्वरसे पढ़ा करती थी। बापूजीने अुनके पढ़नेके ढगकी टीका की, तो अुन्होंने जोरसे पढ़ना ही छोड़ दिया, और दोपहरको अखबार लेकर भाअी या मेरे पास सुननेको आने लगी।

बादमें जब मनु आ गयी तो वह सुनाने लगी। 'अनासक्तियोग' भी बा अब मन ही मन पढ लिया करती थी।

बा के लिखनेका ढंग भी बच्चोंका-सा था। वे अक्षरोंको अलग-अलग करके लिखती थी। बापूजीने अुन्हें अच्छी तरह लिखना सिखानेकी कोशिश की। अुन्हें लिखनेका अभ्यास करनेको कहा। बा में ७४ सालके अनुभव और बुद्धिमत्ताके साथ ही बालककी-सी सरलता थी। किसीको कोअी नया काम करते देखती, तो अुससे वह सीख लेनेकी अुनकी अिच्छा हो जाती। हाल ही अचानक बा की १९३१–३३ की डायरियां मेरे हाथ पड गयी। अुन्हें देखनेसे पता चला कि अुन दिनों भी जेलमें बा की अभ्यासवृत्ति आजके समान ही थी। वे मीराबहनसे हिन्दी सीखती थी और दूसरी किसी बहनके साथ गुजराती पढती-लिखती थी। अिसी तरह कुछ बहनोंको 'नैपकिन' बनाते देख कर अुन्होंने जेलमें वह काम भी शुरू कर दिया था। सेवाग्राममें छोटे कनुको अितिहास-भूगोल सीखते देखकर बा ने भी अितिहास-भूगोल सीखना शुरू किया था।

आगाखान महलमें हम सबको नोटबुक मंगाते देख कर अुन्होंने अेक दिन बापूजीसे अपने लिअे भी नोटबुक मंगा देनेको कहा। बापूजीने अुनके हाथमें दो-चार कागज दे दिये और कहा "अिन पर लिखनेका अभ्यास कर, जब कुछ प्रगति कर लेगी, तो नोटबुक मंगा दूंगा।" बा को अिससे बहुत आघात पहुंचा। बापूजीने भी अपनी भूल तो महसूस की, लेकिन अब क्या हो सकता था? श्रीमती नायडूने चुपचाप बा के लिअे अेक नोटबुक मंगवा ली। मैं अुसे बा के पास ले गयी। बा ने अुसे बापूजीकी किताबोंमें रख दिया। बहुत कहने पर भी अुन्होंने अुसका अिस्तेमाल नहीं किया, बल्कि बापूजीके दिये कागजों पर ही लिखना पसन्द किया। बापूजीने भी समझाया, लेकिन बा तो स्वाभिमानिनी महिला थीं। अुन्होंने शान्तिके साथ अुत्तर दिया "मुझे नोटबुककी आवश्यकता ही क्या है?" अन्त तक वह नोटबुक बापूकी किताबोंमें ही पडी रही।

२२

रामायण और भागवतमें श्रद्धा

वा की पुरानी डायरियोसे पता चलता है कि सन् १९३१–३३ में वे तीन वार जेल गअी और हर वार वे वहा नियमित रूपसे रामायण और भागवत सुनती रही। आगाखान महलमें शामकी प्रार्थनाके साथ तुलसी-रामायणकी दो चौपाअिया हमेशा गाअी जाती थी। वा वडी दिलचस्पीके साथ दोपहरको रामायण अुठा कर ले जाती और शामको पढी जानेवाली चौपाअियोको पहलेसे पढ लेती और अुनका हिन्दी अर्थ समझनेकी कोशिश करती। सेवाग्राममें भी अुनका यही कार्यक्रम रहा करता। वहा वे किसी न किसीसे अुनका अर्थ समझ लिया करती थी। आगाखान महलमें प्रार्थनाके वाद वापूजीने वा को खुद अर्थ समझाना शुरू किया। वा की श्रद्धा अन्धश्रद्धा नही थी। जहा कही वहुत अतिशयोक्ति आती, वा कह अुठती "यह तो सव निरी गप मालूम होती है।" अिसी तरह वालकाण्डमें दशरथ और जनकके वैभवके लम्वे-लम्वे वर्णन सुनकर और यह देखकर कि स्वयवरके मण्डपकी रचनाका वर्णन करनेमें तुलसीदासजीने पन्नेके पन्ने भर दिये है, वा वोल अुठती "क्या तुलसीदासजीको और कोअी काम ही न था कि वैठे-वैठे अैसे लम्वे वर्णन लिखते रहे?" वापूजीको खयाल आया कि रामायणमें से अिस तरहके वर्णन, अुपाख्यान वगैरा निकाल कर अेक सक्षिप्त तुलसी-रामायण तैयार कर ली जाय, तो वह वा के वहुत काम आये। सो अुन्होने रामायणमें निशान लगाने शुरू किये। वालकाण्डमें और अयोध्याकाण्डके कुछ हिस्सेमें निशान लगा भी लिये। प्रार्थनामें भी सक्षिप्त रामायण पढनेका सिलसिला शुरू किया। भाअीसे अुसका गुजराती अनुवाद करनेको कहा। वोले "हररोज दो चौपाअीका अनुवाद करके अुसे सुन्दर अक्षरोमें लिख लिया करो और वा को दे दिया करो। अिससे वा को वहुत अच्छा लगेगा और मुझे भी वहुत सतोष होगा।" भाअीने अनुवाद शुरू किया। वापू खुद अुस अनुवादको सुधारने लगे।

लेकिन आगे चलकर बापूका अुपवास आया और दूसरी भी कभी बातें पैदा हुअी। नतीजा यह हुआ कि बापूजीका बा के लिअे रामायणमें निशान लगाना और भाअीका अनुवाद करना सब अधूरा रह गया।

बापूजीके अुपवासके दिनोंमें शामकी प्रार्थनाके बाद बा को रामायणकी चौपाअियोंका अर्थ सुनाना मेरे जिम्मे आया और बादमें भी यह काम मुझ पर ही रहा। बा बहुत ध्यानके साथ अर्थ सुनती थी और जहां कहीं गहरी धर्म-भावनासे भरी चौपाअियां आ जातीं या बहुत करुण रस आ जाता, वहां वे आलोचना भी किया करती थीं। यह सिलसिला लगभग बा की मृत्युके समय तक जारी रहा। मृत्युके दो-अेक रोज पहले बा बहुत थकी दीखती थी। आंख बन्द करके पड़ी थीं। मैंने पूछा "बा, रामायणका अर्थ सुनेंगी क्या?" बा ने आंखें खोलीं। "पूछती क्यों है कि सुनेंगी क्या? रामायण लाकर अर्थ करना शुरू क्यों नहीं कर देती?" बा ने जरा चिढ़कर कहा। मैं बोली· "बा, आप थकी-सी लगती थीं, अिसलिअे मैंने पूछ लिया।" बा ने शान्तिके साथ अुत्तर दिया "लेकिन लेटे-लेटे रामायणका अर्थ सुननेमें मुझे कौन थकान लगनेवाली है? लाओ, सुनाओ अर्थ।"

तुलसी-रामायणके बाद बापूजीने दोपहरके समयमें बा को बाल-रामायण पढ़कर सुनाअी। बादमें अुन्होंने वाल्मीकि-रामायणका गुजराती अनुवाद पढ़ा। शुरूमें बा अुसे भी बापूके पास बैठकर सुना करती थीं। लेकिन बापूजी अुसे जल्दी पूरा करना चाहते थे, और बा सारा समय बैठकर सुन नहीं सकती थीं, अिसलिअे अुसको भी बा ने मुझसे सुनना शुरू किया। बादमें जब मनु आ गअी, तो यह काम अुसने संभाल लिया। बा ने मनुसे सारी वाल्मीकि-रामायण सुनी।

दुपहरमें भोजनके समय मैं बापूजीके पास संस्कृतमें वाल्मीकि-रामायण पढ़ा करती थी। बा अुस समय भी बापूजीके पास आकर बैठ जातीं और बहुत रसके साथ सब सुनतीं। बा की बीमारीके बढ़ने पर संस्कृत वाल्मीकि-रामायणका अभ्यास बन्द कर देना पड़ा, नहीं तो बापूजीका अिरादा अुसमें से भी अेक संक्षिप्त रामायण तैयार करनेका था। बालकाण्ड और अयोध्याकाण्डका कुछ हिस्सा तैयार हो भी चुका था।

गुजराती वाल्मीकि-रामायण पूरी होने पर मनुने बा को 'बारडोली सत्याग्रहका अितिहास' पढकर सुनाना शुरू किया। लेकिन बा ने अुसे यह कहकर बन्द करवा दिया कि यह सब तो मैं जानती हू। अुन्हें धार्मिक पुस्तकोमें अधिक दिलचस्पी थी। अिसलिअे 'भागवत' मगाअी और समूची भागवत सुनी। अिसके बाद भी खास-खास दिनोमें (जैसे, अेकादशी वगैरा) बा भागवत सुना करती थी। अपने अंतिम दिनोमें बा ने फिर नियमित रूपसे भागवत सुनना शुरू किया था। अुन दिनो वे शामको चारसे साढे चार तक भागवत सुना करती थी। लेकिन कोअी मिलनेवाले आ जाते, तो भागवत बन्द रहती थी। अेक बार पाच-छह रोज तक लगातार मुलाकाती आते रहे। आखिर जिस दिन कोअी नही आया अुस दिन भी मैं भागवत सुनाने नही पहुची। सिल-सिला टूट चुका था। और बा की बीमारी बढ जानेके कारण मुझे रातमें भी काफी काम रहता था। अिसलिअे अुस दिन मैं दोपहरमें सो गअी। भागवतके समय नीद तो खुल गअी थी। मगर थकी थी, सो सुस्ती कर गअी। मनको मना लिया कि आज बा को शायद ही भाग-वतकी याद आये। मगर बा यो भूलनेवाली नही थी। अुन्होंने मनुको बुलाकर अुससे भागवत सुनी। अिसके बाद भी जो कुछ दिन अुन्होंने भागवत सुनी, सो मनुसे ही सुनी। मेरी फिर सुनाने जानेकी हिम्मत ही नही हुअी। लेकिन मनमें तो आज भी अिसका पछतावा बना हुआ है। मैं जानती थी कि बा को मुझसे भागवत सुनना अच्छा लगता था, क्योंकि मैं अुन्हें थोडा-बहुत अर्थ भी समझा सकती थी। मगर मैं अेक दिनका आलस्य कर गअी। दूसरे दिनसे जाने लगी होती, तो शायद अेकाध बार बा कोअी तीखी बात कहती, लेकिन मनमें तो खुश ही होती। मगर मुझसे यह न हो सका। कुछ देरके लिअे मैं यह भूल ही गअी कि जीवन क्षण-भगुर है, अिसका कोअी भरोसा नही। अिसलिअे सेवाका मौका मिलने पर तो अुसे किसी भी हालतमें खोना न चाहिये।

२३

व्रत-अुपवास वगैरामें श्रद्धा

आगाखान महलमें पहुंचनेके कुछ दिन बाद बा ने बापूसे पूछा: "अेकादशी कब है?" बापूजीने मि० कटेलीसे अेक पंचांग मंगवा देनेको कहा। लेकिन बाहरकी कोअी भी चीज मंगवानेके लिअे सरकारी अिजाजतकी जरूरत थी और अुसके मिलनेमें देर लग सकती थी। अिसलिअे बापूजीने मुझे अेक जंत्री (कैलेंडर) बनानेको कहा। अुसका तरीका भी बताया। जिस दिन बापू पकड़े गये थे, अुस दिनकी तिथि, वार वगैरा हम जानते थे। अुन परसे सारे सालका हिसाब लगाया। मेरा अेक पूरा दिन अिसमें खर्च हुआ। कैलेंडरमें बापूजीने पूनोंके दिन पर लाल पेंसिलका और अमावस पर नीलीका निशान लगवाया। अुस परसे अुन्होंने बा को तिथियां समझायीं और अेकादशी किस दिन पड़ेगी सो बताया। करीब अेक महीने तक हमारे पास वही अेक कैलेंडर था। बादमें पंचांग आ गया और कैलेंडर भी।

अेकादशीके दिन हमेशा बा फलाहार किया करती थीं। मुझे याद नहीं पड़ता कि कभी किसी अेकादशीको वे अुपवास करना भूली हों। अिसी तरह हर सोमवारके दिन, सोमवती अमावसके दिन, और अकसर पूनो, जन्माष्टमी, शिवरात्रि वगैरा पवित्र तिथियों पर वे अुपवास करना चूकती न थीं। कभी-कभी सोमवार, अेकादशी और दूसरी कोअी तिथि अेक साथ आ जाती, तो बा तीन-चार दिन तक लगातार अुपवास रखती। बीमार हों या अच्छी, अिनमें से किसी भी अुपवासको छोड़नेका अुन्हें कभी विचार तक नहीं आता था। राष्ट्रीय सप्ताह, स्वतंत्रता-दिन और 'हिन्दुस्तान छोड़ो' दिनके अुपवास अिन अुपवासोंके अलावा होते थे, और बा अिन्हें भी कभी चूकती न थीं।

२४

पतिव्रता सती

बा बहुत पढी-लिखी न थी। लेकिन अुनकी बुद्धिका खासा अच्छा विकास हो चुका था। देशमें क्या हो रहा है, अिसे वे अच्छी तरह समझती थी। बापूजीमें अुनकी अपूर्व श्रद्धा थी। हिन्दू स्त्री पातिव्रत धर्मको सबसे पहला स्थान देती है। अतअेव बा भी बापूजीके पीछे-पीछे चलना ही अपना धर्म समझती थी।

जेलमें सुबह-शाम घूमते समय मनु अकसर बापूजीसे कहानी सुनानेको कहती। बापूजीने अुसे दो-चार छोटी-छोटी कहानिया सुनाअी भी। अेक दिन मैंने कहा "कहानी कहना हो तो हमें अपनी ही कहानी कहिये न?" बापू मान गये। अुनके मुहसे अुनकी आत्मकथा सुननेमें और 'आत्मकथा' पढ जानेमें जमीन आसमानका फर्क था। बापूजीने हमें अपने बचपनकी, बा के साथ खेलनेकी, विवाहकी, विलायत जानेकी, और दक्षिण अफ्रीकाकी कहानिया सुनाअी। लेकिन बादमें बा की बीमारी बढ जानेके कारण कहानी सुनानेका यह सिलसिला टूट गया। बापूजीने बताया कि किस तरह बा ने हिन्दूधर्मके अपने पुराने सस्कारो पर विजय पाकर बापूजीके पीछे-पीछे चलनेकी कोशिश की थी। अुन्होंने कहा "मुझे कहना चाहिये कि अिस काममें मेरे परिवारकी सब स्त्रियोकी मदद मुझे मिली। वे सब बा से कहती थी 'दूसरे लोग चाहे पुराने रीति-रिवाजोका पालन करें, अछूतोको घरमें न आने दें, मुसलमानोका छुआ पानी तक न पीयें, मगर तुझे तो ये सब विचार छोड ही देने चाहिये। अपने पतिके पीछे चलना ही तेरा धर्म है। अुनके पीछे चलते हुअे तू कुछ भी क्यो न करे, तुझे अुसका पाप लग ही नही सकता। अुसका तो शुभ परिणाम ही हो सकता है।' और, बा ने हमेशा अुनकी सलाह पर अमल करनेकी कोशिश की है। यह तो नही कहा जा सकता कि अुसने हरअेक कदम अपनी बुद्धिसे समझ कर अुठाया है, लेकिन मैं तो हमेशासे यह मानता आया हू कि बुद्धि हृदयके पीछे चलनेवाली चीज है। बा ने जो कुछ किया है, श्रद्धासे

किया है, हृदयसे किया है, और बादमें बुद्धिसे भी वह अुन चीजोको बहुत हद तक समझ सकी है।"

बा रोज नियमसे कातती थी। अकसर वे तीन सौसे पाच सौ तार हर रोज कात लेती थी। रचनात्मक कार्यक्रमके महत्त्वको वे अच्छी तरह समझती थी। लेकिन आगाखान महलमें आनेके बाद वे बहुत कात नही सकी। हृदयका दर्द शुरू हो जानेके कारण अुनको कातनेसे रोकना पडा। अिसमें मुझे कितनी कठिनाअीका सामना करना पडा, सो कहना मुश्किल है। बा कहती "भला, कातनेसे मेरे हृदयको क्या श्रम पहुचेगा?" अिसी तरह अुन्हें घरमें घूमने-फिरनेसे रोकना भी कठिन था। आखिर कर्नल भण्डारीने अुनको डराया "देखिये, आप आराम नही करेंगी तो मुझे आपको यरवडा ले जाना पडेगा।" बा अितनी भोली थी कि धमकी काम कर गअी। अुन्होंने खाट पर रहना शुरू किया और दो ही चार दिनोमें तबीयत सुधरने लगी। मगर चरखा तो जो छूटा सो छूटा ही। बा के मनमें यह खयाल जम गया कि चरखा चलानेसे हृदयका दर्द बढता है। अिसलिअे बादमें हम लोग अुनसे चरखा चलानेको कहते भी थे, तो वे चलाती नही थी। हमें लगता था कि अुनके लिअे अपनी बीमारीके विचारको भूलकर दिल बहलानेके लिअे चरखा अच्छा साधन होगा। अेक दो बार बा ने चरखा निकाला भी, मगर वह सिलसिला फिर चल नही सका।

२५

छुआछूत

मैंने बा में छुआछूतकी भावना कभी नहीं देखी। १९३० में जब मैं पहली बार गर्मीकी छुट्टियोमें आश्रम गअी तब वहा लक्ष्मी नामकी अेक लडकी थी, जिसे सब बा और बापूकी लडकी कहा करते थे। वह बा के पास ही रहती थी। बा माकी तरह अुसकी सभाल रखती थी। जब मैं आश्रमसे लौटकर घर पहुची, तो वहा किसी बहनने कटाक्ष करते हुअे पूछा "आश्रममें भगीकी वह लडकी तेरी सहेली बनी थी या नही?" मैं जरा चक्करमें पड गअी। पूछा "भगीकी लडकी कौन?"

"वही, जिसे महात्माजी अपनी लडकी बनाये हुअे है।"

तब मुझे पता चला कि लक्ष्मी बा की अपनी लडकी नही थी, वह हरिजन लडकी थी, जिसे बा और बापू अपनी लडकीकी तरह रखते थे।

अिसी तरह सेवाग्राम आश्रममें काम करनेवाले हरिजनोके प्रति बा बहुत ही अुदारताका और प्रेमका भाव रखती थी। अुन्हें खुद कभी कोअी सेवा लेनी ही पडती, तो हरिजन सेविका मणिबाअीसे ही लेना पसन्द करती थी। आगाखान महलमें वे अकसर मणिबाअी, खड्डू मामा वगैरा हरिजन सेवकोको याद किया करती थी। कअी बार चर्चा चलने पर वे कहती "आखिर तो अीश्वरने ही सबको बनाया है न! फिर अूच क्या और नीच क्या? यह भावना ही गलत है।"

२६

पुराने संस्कार

लेकिन साथ ही वे अपने पुराने सस्कारोको बिलकुल भूल नही सकी थी। ब्राह्मणके प्रति अुनके मनमें विशेष श्रद्धा थी। आगाखान महलमें वहाके सिपाही हम लोगोकी बहुतसी सेवा कर दिया करते थे। अुनमें अेक ब्राह्मण था। अुसे रसोअीघरके काम पर रखा गया था। बा अुस पर विशेष प्रेम रखती और अुसे दूध-फल वगैरा देती रहती। कभी अुससे कोअी भूल भी हो जाती तो माफ कर देती। वे अकसर कहती "बेचारा ब्राह्मणका लडका है। यहा और तो कोअी धर्म हो ही नही सकता, अिसे कुछ दे सकें तो अच्छा ही है।"

लेकिन अिसकी वजहसे दूसरे सिपाही अुसकी अीर्ष्या करने लगे, और आखिर सुपरिण्टेण्डेण्ट तक शिकायत पहुची। अुन्होने बा से कहा कि वे किसीको कुछ न दिया करें। मगर बा क्यो मानने लगी? वे तो चुपचाप जो देना होता दे आती और कहती "मैं अपने हिस्सेमें से देती हू। किसीको क्या?"

अेक रोज बा अुससे पूछने लगी "महाराज, तुम ब्राह्मण हो। कहो तो, हम घर कब जायगे?" वह बेचारा क्या अुत्तर देता? बोला

"अच्छा बा, किताब देखकर बताअूगा।" बादमें अुसने कुछ बताया या नहीं, मैं नही जानती।

२७

हिन्दू-मुसलमानके प्रति समभाव

यह सब होते हुअे भी बा के दिलमें दूसरी कौमके लोगोंके लिअे कोअी अप्रेम या अरुचि नही थी। आगाखान महलमें अेक-दो मुसलमान सिपाही भी थे। बा अुनके साथ भी अच्छी तरह हिलती-मिलती और बातचीत करती थी। अुनसे रसोअीघरका काम भी कराती। अीद वगैरा त्योहारोंके दिन वे अुन्हें फल और मिठाअी भी देतीं। सिपाहियोंमें हिन्दू या मुसलमानका कोअी भेदभाव वे नही रखती थी, हालांकि अितिहासकी किताबोंमें मुसलमानी हुकूमतके जमानेके जुल्मोंकी बात पढकर वे बेचैन हो अुठती थी। डॉक्टर अन्सारी, हकीम साहब अजमल खां, खान अब्दुल गफ्फार खान, डॉ० खान साहब, और मौलाना अबुल कलाम आजाद साहब-जैसे तमाम मुसल्मान मित्रोंको देखकर अुनके मनमें अकसर यह सवाल पैदा होता कि आखिर अितिहासमें यह सब अैसा क्यो लिखा है? अिन मुसलमान मित्रोंके लिअे अुनके मनमें सरदार वल्लभभाअी या जमनालालजीके जितना ही प्रेम और मित्रभाव था। अुनके दिलमें कभी यह खयाल तक नही आता था कि अिनमें कुछ हिन्दू हैं और कुछ मुसलमान। अिसी तरह आश्रममें रहनेवाले मुसलमान भाअी-बहनोंके प्रति भी अुनके बरतावमें कभी कोअी भेदभाव मैंने नही देखा। हां, बा यह जरूर ताड जाती थीं कि कौन अुनकी सेवा मनसे करता है, और कौन सिर्फ बापूजीको खुश करनेके लिअे करता है। अैसे लोगोंसे सेवा कराना अुन्हें अच्छा नहीं लगता था, फिर भले वे हिन्दू हो या मुसलमान। अिसी तरह जो भी कोअी बापूजी तक अुनकी शिकायत लेकर जाता था, अुसे वे आसानीसे माफ नही कर सकती थीं। मुसलमानोंके मनमें हिन्दुओंके प्रति जो अविश्वास पैदा हो गया है, अुसे दूर करनेके लिअे मुसलमानोंके साथ खास अुदारता दिखानेकी जरूरत

है, अिस चीजको वे समझ नही सकती थी। अुनके पास सबके लिअे समभाव था, और अितना अुनके लिअे बस था।

हिन्दू-मुस्लिम-अैक्यकी आवश्यकता और अुसके महत्त्वको भी वे समझती थी। अेक दिन अखबारमें मि० अेमरीका यह बयान पढकर कि गाधी और जिन्ना अेक-दूसरेसे मिलना तक कबूल नही करते है, बा बहुत नाराज हो गअी। कहने लगी "यह बिलकुल झूठ है। गाधी तो जिन्नाके घर अुनसे मिलने गया था। महादेवने यह सब लिखकर रखा है। अेमरी जरा मेरे सामने तो आवे। मैं अुसे लिखा हुआ दिखाअूगी और पूछूगी कि गाधी जिन्नासे मिलने अुनके घर गया था या नही?" अखबारोमें बापूजीकी टीका पढकर बा को बहुत दुःख होता था। अुनके लिअे यह अेक नअी चीज थी। अेक तो वे बाहर अितने ध्यानके साथ अखबार पढती ही नही थी, अुन्हे अितना समय ही नही मिलता था, दूसरे गाधीजीके खिलाफ जितना जहर अिस बार अुगला गया था, अुतना शायद ही पहले कभी अुगला गया हो। बा अकसर कहती "देखो न, ये लोग कितना झूठ बोलते हैं? अिनके पापका घडा भी कभी तो भरेगा न? अीश्वर कब तक अिनके पापको सहता रहेगा?" खास तौर पर जब बापूजीकी अहिंसा पर कोअी हमला करता था, तो बा से वह बिलकुल नही सहा जाता था।

२८

अिस बारके जेलका बा पर असर

बा कअी बार जेल जा चुकी थी। दक्षिण अफ्रीकाके जेलखानोमें तो अुन्हे बहुत ही कष्ट सहने पडे थे। कभी-कभी बा मुझको अपने अनुभवोकी बातें सुनाया करती थी। हिन्दुस्तानमें भी वे काफी बार जेल जा चुकी थी। कम-से-कम तीन बार तो वे सन् १९३१–३३ के आन्दोलनमें ही गिरफ्तार हुअी थी। लेकिन बा को अिस बारका जेल-जीवन पहलेके मुकाबले बहुत खटकता था। वे महसूस करती थी कि अिस दफा सरकारने सबको बिला वजह पकड लिया है। जनता पर सरकारकी

सख्तीकी जो थोडी-बहुत खबरे अखबारोमें आती थीं, अुन्हें पढकर वे बहुत दुःखी होती थीं। अिस बारका बेमियाद जेल-जीवन अुन्हे बहुत खटकता था। महादेवभाअीकी मृत्युके बाद अुनके मनमें यह खटका पैदा हो गया था कि शायद वे अिस जेलसे जीते-जी बाहर न जायगी। ता० १८-८-'४२ के दिन पहली बार अुन्होंने अपना यह भय प्रकट किया था। चर्चा चल रही थी कि बाहर जाने पर कौन क्या करेगा?, अिस पर बा कह अुठी "मेरा क्या ठिकाना है? मैं बाहर जाअू भी, न भी जाअू। यह भी हो सकता है कि मैं अभी हू, और शाम तक न रहू।" बापूने यह बात सुन ली। बोले. "अैसा क्यो कहती है? वैसे देखा जाय तो तू जो कहती है, सो सब पर लागू हो सकता है। यह सुशीला अभी अेम० डी० होकर आअी है। हो सकता है कि यह अभी है, और शामको न रहे। महादेवका अैसा ही हुआ न? तू और मैं, जो बीमार-से थे, अभी बैठे हैं। अिसलिअे तुझे तो अच्छा होना ही है। जितनी सेवाकी जरूरत हो ले और मनसे सब तरहकी चिन्ताको निकाल डाल।"

लेकिन बा के लिअे चिन्ता छोडना कठिन था। दूसरे जेलोमें बा के पास दूसरी बहुतेरी बहनें रहती थीं। अुनसे बातचीत करनेमें, बीमारोको देखनेमें, कातनेमें और भजन-कीर्तनमें अुनका समय निकल जाता था। लेकिन यहा तो अिस बार हरअेक अपने-अपने काममें लगा हुआ था। जब बा को कुछ पढकर सुनाना होता, या अुनकी दूसरी कोअी सेवा करनी होती, तभी लोग अुनके साथ रहते। बादमें तो बातें करनेके लिअे भी कोअी अुनके पास बैठनेवाला नही था। और बा को तो हमेशा दरबार लगाकर बैठना अच्छा लगता था, खास करके शामके वक्त। सो बा अकसर विचार-सागरमें डूब जाया करती थीं। अेक दिन कहने लगी· "बापूजी अितनी बडी सल्तनतके साथ लड रहे है। अुनके पास साधनोका पार नही है। बापूजी कैसे जीतेंगे?"

मैंने कहा· "बा, आखिर अीश्वर तो है न? बापूने तो अुसीके भरोसे यह लडाअी ठानी है। वही अिसे पार भी लगायेगा।"

बा बोली· "लेकिन आज तो अीश्वर भी हमारे ही विरुद्ध जा रहा है। ऐसे — — — [illegible]?"

बापूजीने सुना तो बोले "महादेवका जाना अेक शुद्धतम बलि-दान है। अुसमे आजादीकी लडाअीको लाभ ही होनेवाला है।"

मगर वा के मनसे शका गअी नही। अेक दिन अुनकी तबीयत कुछ ज्यादा खराब थी। चिढकर वापूजीसे कहने लगी "देखिये, मै आपसे कहती थी कि अितनी बडी सल्तनतके साथ छेडछाड न कीजिये, मगर आपने अेक न सुनी। अब अुसका फल सबको भुगतना पड रहा है। सरकारकी ताकतका पार नही है। वह लोगोको कुचल रही है। लोग वेचारे कहा तक सहेगे? अिसका परिणाम क्या होगा?"

पहले तो बापूने वा को दलीलोसे समझानेकी कोशिश की, लेकिन अुस दिन वे अिस तरह समझनेको तैयार न थी। आखिर बापूने कहा. "तो तू क्या चाहती है? चल, तू और मै सरकारसे माफी माग लें?"

वा चिढ गअी थी। बोली "मै क्यो किसीसे माफी मागू?"

"तो तू कहे तो मै वािअसरॉयको माफीके लिअे पत्र लिखू?"

बापूकी मानहानिको वा किसी भी हालतमें सह नही सकती थी। वे जरा गुस्सेमें आकर बोली "सुकुमार (कमसिन) लडकिया जेलोमें पडी है। वे माफी नही मागती और आप माफी मागेंगे? अब किया है तो अुसका फल भुगतिये। आपके साथ हम भी भुगतेंगे। महादेव जेलमें खतम हो गया है, अब मेरी बारी आ रही है।" बापूजी चुपचाप सुनते रहे। वा जब गुस्सा होती, बापू आम तौर पर मौन धारण कर लिया करते थे।

कुछ दिनो बाद वा ने बापूसे कहा "मै तो यह कहती हू कि आप अंग्रेजोको हिन्दुस्तानसे जानेके लिअे क्यो कहते है? भले वे यहा रहें। हमारा देश बहुत बडा है। अुसमें हम सब समा सकते है। आप अुनसे कहिये कि वे यहा हमारे भाअी बनकर रहे।"

बापूने कहा "तो मै और कहता ही क्या हू? मै भी तो अुनसे यही कहता हू कि आप हमारे भाअी बनकर रहे, सरदार बनकर नही। आप अपनी सरदारी हटा लें, तो आपके साथ हमारा कोअी झगडा ही नही।"

वा बोली "सो तो ठीक ही है। हम अंग्रेजोको अपना सरदार बनाकर नही रख सकते, भाअी बनकर वे खुशीसे रहे।"

दूसरे दिन मैं बा की मालिश कर रही थी, तब वे मुझसे कहने लगी "सुशीला, ये लोग बहुत बदमाश हैं। बापूजी कहते हैं, हमारे देशमें हमारे भाअी बनकर रहो, लेकिन अुन्हें तो हमारी सरदारी करनी है, हिन्दुस्तानको लूटना है। अिसीलिअे बापूजीको और दूसरे सब नेताओंको पकडकर जेलमें बन्द कर दिया है।"

बा बापूजीसे कुछ भी नया सुनती, तो दूसरे दिन मालिशके समय अकसर मुझसे अुसका जिक्र किये बिना न रहती। किताबमें भी कुछ नया-नया पढती तो प्राय हम सबसे अुसकी चर्चा करती। अेक रोज अुन्होंने किताबमें पारसियोंका अितिहास पढा। शामको हमारी छावनीके पारसी सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० कटेली बा को देखने आये। बा अुनसे कहने लगी "कटेली साहब, आप जानते हैं, पारसी किस तरह हिन्दुस्तानमें आये?" और किताबमें पढा हुआ सारा अितिहास वे अुन्हें सुना गअी। मि० कटेली बहुत ही सज्जन पुरुष थे। बा को देखकर अुन्हें अपनी बूढी माकी याद हो आती थी। अुन्होंने अत्यन्त सज्जनताके साथ बैठकर बा से सारी कहानी सुनी।

२९

बापूके अुपवासकी तैयारी

सत्याग्रहमें अुपवासका क्या स्थान है, अिसकी चर्चा तो बहुत समयसे चलती थी। बहुतोंको डर था कि अिस बार जेलमें जाते ही बापू अुपवास शुरू कर देंगे। महादेवभाअीने जेलमें जो ६ दिन बिताये, सो तो सारा समय अिसी चिन्तामें बीते कि बापू अुपवास करेंगे तो क्या होगा? लेकिन महादेवभाअीकी मृत्युके बाद कुछ समय तक अुपवास-की बात ठण्डी पड गअी। बापूजीने महादेवभाअीकी मृत्युको आजादीकी वेदी पर चढा हुआ शुद्धतम बलिदान कहा है। शायद अुस बलिदानका असर देखनेके लिअे भी अुन्होंने अुस समय तो अुपवासका विचार छोड दिया हो।

लेकिन जैसे-जैसे समय बीतने लगा, वैसे-वैसे देशकी दुर्दशा, दुष्काल और सरकारके जुल्म वगैराके समाचार पढकर बापूजीकी शान्ति गायव होने लगी और वे बहुत ही गभीर दीखने लगे। अपवासका विचार फिर अनके मन पर अपना प्रभुत्व जमाने लगा था। वे बराबर यह सोचने लगे कि सरकारके जुल्मोके खिलाफ वे अपना विरोध किस तरह प्रकट कर सकते है? जनताके दु खमें खुद किस तरह हिस्सा बटा सकते है?

२८ दिसबरको सोमवारका मौन था। अस दिन बापूजीने वाअिस-रॉयके नाम अेक पत्रका मसविदा तैयार किया। दूसरे दिन बा को पता चला, तो कहने लगी "पत्र आप भले लिखें, लेकिन अपवासकी कोअी बात न निकालें।" बापू हस दिये। अस पत्रमें अपवासका जिक्र तो था ही। हम सबने बापूजीसे आग्रह किया "अपवासकी बात निकाल दीजिये। मुमकिन है, आपके पत्रसे ही वाअिसरॉयकी सद्‌बुद्धि जाग्रत हो जाय। कम-से-कम अन्हे यह कहनेका मौका तो हरगिज न मिलना चाहिये कि गाधीने अपवासकी धमकी दी थी, अिसलिअे मैंने असकी बात नही सुनी।"

बापू मान गये। ३१ दिसबरको बापूजीका अेक छोटासा सुन्दर खत, अनके अपने हाथो लिखा, भेजा गया। जवाबकी राह देखते हुअे बापू बहुत ध्यानमग्न रहने लगे। अिस पर मीराबहनने कहा "बापूको अेकान्तकी जरूरत है। आमके पेडके नीचे अेक झोपडी बना दी जाय तो अच्छा हो।" बा ने मना किया। बोली "झोपडीकी क्या जरूरत है? बापू तो हर जगह अेकान्त सेवन कर सकते है।" बापूने भी कहा "मेरा अेकान्त दूसरी तरहका है। बा को मै अपनेसे दूर नही रख सकता, रखना भी नही चाहता।"

ज्यो-ज्यो वाअिसरॉयके साथका पत्र-व्यवहार बढा, अपवास नजदीक आने लगा। मदसे चूर सरकार बापूकी क्यो सुनने लगी? लेकिन हम सब तो अपवासके विचारसे ही घबराते थे। अेक दिन भाअीने (प्यारेलालजीने) मुझसे पूछा "तुम्हारे खयालसे बापू कितने दिनोका अपवास सहन कर सकते है?"

मैंने कहा "निश्चित रूपसे कहना कठिन है, लेकिन राजकोटके अुपवासके वक्त तो पाचवें दिन ही हालत गभीर हो गअी थी। अुस हिसाबसे देखें तो बापू अिस बार बहुत दिन तक टिक नही सकेंगे।"

श्रीमती नायडू कहने लगी "बापूको अुपवास करना ही न चाहिये। अिस अुमरमें वे अुपवासके बाद बच नही सकेंगे, और अभी अंतिम बलिदानका समय आया नही है।"

बा चिन्तित रहने लगी। सरोजिनी देवीने अुनसे कहा "आप चिन्ता न करे। बापू तो कहते हैं कि जब तक अीश्वरकी आज्ञा न होगी, अन्तरात्माकी आवाज सुनाअी न पडेगी, वे अुपवास करेंगे ही नहीं। और भगवान अुन्हे कभी अुपवास करनेको कहेगा ही नही।"

बा ने जवाब दिया "यह तो मैं जानती हूं कि भगवान अुपवासके लिअे नही कहेगा। लेकिन बापूजी मान लेंगे कि भगवान ही कह रहा है तो?"

बापूजी दोपहरको आधा घटा ध्यानमें बैठते थे। वे अीश्वरसे मार्ग-दर्शनके लिअे प्रार्थना करते थे। बा सुबह स्नान करके आधा-पौना घटा तुलसीमाताकी पूजामें बैठती थीं। वे अीश्वरसे अपने पतिकी दीर्घायुके लिअे, प्राणदानके लिअे, प्रार्थना करती थी।

अिस चिन्ताके कारण बा की कमजोरी बढने लगी। बा, सरोजिनी देवी और मीराबहन हर शनिवारको महादेवभाअीकी समाधि पर फूल चढाने जाया करती थीं। लेकिन अब बा का जाना छूट गया। अुनमें अितना चलनेका भी अुत्साह नही रह गया था। अिससे हम सब बा के लिअे चिन्तित हुअे। सबके मनमें यह सवाल अुठता था कि अुपवासके दिनोंमें बा की क्या हालत होगी? हमें लगता था कि आजकी हालतमें वे अैसी बडी परीक्षाके लायक नही है। सरोजिनी देवीने तो जोरदार शब्दोंमें बापूसे कहा "बापू, आपका अुपवास बा को खतम कर डालेगा।" बापू हस दिये और बोले "मैं बा को तुम लोगोंसे ज्यादा पहचानता हू। तुम लोग बा की बहादुरीका अन्दाज भी नही लगा सकते। अुसे तुम पहचानते ही नही हो। आखिर मैंने बा के साथ बासठ साल बिताये

है। मैं तुमसे कहता हू कि बा तुम सबसे अधिक हिम्मत रखनेवाली है। मेरे हरिजन-अुपवासके दिनोंमें, जब मैंने जीवनकी आशा छोडकर अपना सब सामान अस्पतालवालोको बाट देनेका निश्चय कर डाला था, ाब बा ने दृढतापूर्वक अपने हाथो सारा सामान दूसरोको बाट दिया ा और अुस वक्त अुनकी पलक तक नही भीगी थी।"

सन् १९३३ की बा की डायरीके पन्नोको अुलटनेसे अुसमें नीचे लखा अुल्लेख मिलता है

"नहाकर अस्पताल गअी। मथुरादास मेरे साथ थे। मैंने सामानकी ाधी टोकरी छोडी। फिर बापूजीने कहा 'सारा सामान अस्पतालमें : दो।' मैंने दे दिया। कल रात बापूजीको अुल्टी हुअी थी। सुबह बहुत फमजोरी आ गअी थी। बोले 'अब मैं अिस बिछौनेसे नही अुठूगा। [कोअी फिकर न करना। तुझे तो अिसका अभिमान रखना चाहिये। ात्य अिसीका नाम है।' लेकिन अीश्वर दयालु है। अुसने अपने भक्तोको ारा है। फिर जो होना हो सो हो।"

और बा का अीश्वरके प्रति यह विश्वास निरर्थक नही ठहरा। ारकारने अुसी दिन बापूजीको छोड दिया। जिस दिन अुपवास पूरा हुआ, ुस दिनकी अपनी डायरीमें बा ने लिखा है "तीन बजे पर्णकुटी आये।" अस प्रकार बा की श्रद्धा सफल हुअी।

बा की हिम्मतके बारेमें बापूजीका विश्वास सच्चा साबित हुआ। ुसी शामको अुन्होंने अुपवासके बारेमें बा से बातें की। दूसरे रोज बा ाहने लगी "जहा अितनी ज्यादा झुठाअी चल रही हो, वहा बापू चुप ंसे बैठ सकते हैं? सरकारके अत्याचारोके प्रति अपना विरोध जतानेके ाअे बापूके पास अुपवासको छोडकर दूसरा साधन भी क्या है?" ाम सब दग होकर चुपचाप सुनते ही रहे।

मानसिक निश्चयके साथ बा की शारीरिक शक्ति भी बढी। ुपवासके दिनोंमें अुन्होने सारे समय हिम्मतके साथ बापूजीकी सेवा की। ुन दिनो अेक दिनके लिअे भी अुनकी अपनी तबीयत नही बिगडी।

३०

अुपवास

१० फरवरी, १९४३ को सुबह नाश्तेके बाद प्रार्थना करके बापूजीने अुपवास शुरू किया। अुन रोज वे सुबह-शाम घूमे। महादेवभाअीकी समाधि पर भी गये। बा भी अुनके साथ घूमीं। हमेशाकी तरह बा ने फलाहार शुरू कर दिया। और अिक्कीस दिन तक अन्न नहीं छुआ। बापूजीके पहलेके अुपवासोंमें वे फलाहर भी दिनमें अेक ही बार किया करती थीं। अिस बार अुनकी दुर्बल स्थितिको देखकर हम सबने अुनसे आग्रह किया कि वे अेक ही समय खानेका नियम न रखें। बडी अनिच्छाके साथ वे हमारे आग्रहके वश हुअीं।

दिनमें दो-तीन बार बा गरम पानी और शहद पिया करती थीं। अुपवासके दिनोंमें बराबर बापूके पास ही रहनेकी अुनकी अिच्छा स्वाभाविक थी। वे शहदके पानीका गिलास लेकर बापूकी खाटके पास आ जातीं। कुछ काम रहता तो गिलासको बापूजीके पास मेज पर रखकर काम कर लेतीं और फिर पानी पीने लगतीं। अेक दिन डॉक्टर गिल्डरने कहा "यह अच्छा नहीं लगता। मुमकिन है कि सरकारी आदमियोंके मनमें शक पैदा हो और वे समझें कि बा बापूको पिलानेके लिअे ही पानीका यह गिलास लिये घूमा करती हैं।" अुन्होंने बा से भी यह बात कही। बा ने दृढताके साथ अुत्तर दिया "बापूजीके बारेमें कोअी अैसी शका कर ही नहीं सकता।"

अुपवासके तीसरे दिन बापूजीको मतली आनी शुरू हुअी। बा ने कहा· "पानीमें थोडा मोसबीका रस लीजिये न?" बापूने अिनकार किया। बोले "मैं यों जल्दी-जल्दी रस नहीं लूंगा।" अुनके बाद तो अुबकाअीकी तकलीफ बढ गअी। बापू पानी बिलकुल पी ही नहीं पाते थे। खून गाढा हो गया। गुर्दोंका काम ढीला पड गया, लेकिन बा ने दुबारा अुन्हें रस लेनेको नहीं कहा। वे बडी स्वाभिमानिनी थीं। वे यह भी महसूस करती थीं कि बापू करेंगे तो अपने मनकी ही, फिर बार-बार अेक ही बात कहकर अुनकी शक्तिका दुर्व्यय क्यों किया जाय?

जैसे-जैसे अुपवासके दिन आगे बढे, बा की तुलसी-पूजाका और बालकृष्णकी पूजाका समय भी बढता गया। बापूजीकी हालत ज्यों-ज्यों गंभीर होती गअी, बा की पूजा अधिक लम्बी और अधिक अनन्य बनती गअी। २२ फरवरीके दिन बापू जीवन और मरणके बीच झूल रहे थे। मीराबहन मुझे चुपकेसे बाहर बरामदेमें बुलाकर ले गअी। वहा बा तुलसी माताके सामने घुटने टेककर बैठी प्रार्थना कर रही थी। अुनके मुखका भाव अितना करुण और अितना दीन था कि देखनेवालेकी आखें डबडबा आती थी। बा अपने ध्यानमें लीन थी। अुनको अिस बातका कोअी पता नही था कि कौन अुनके पास खडा है या अुधरसे गुजर रहा है।

अुपवासके तेरहवें दिन यानी २२ फरवरीको बापू दस मिनटके प्रयत्नसे आधा औंस पानी भी नही पी सके। थककर बेहोश हो गये और खाटमें पड गये। नाडी कमजोर पड गअी। बदन पसीनेसे तर हो गया। बोलना तो ठीक, अुनमें अिशारा तक करनेकी ताकत न रह गअी। बा प्रार्थनामें लीन थी। बापूके कमरेमें अकेली मैं ही थी। मैंने डरते-डरते कहा "बापूजी, क्या मोसबीका रस लेनेका समय नही आया?" सात मिनट तक विचार करनेके बाद बापूने अिशारेसे मजूरी दी। मैं फौरन ही दो औंस रस और पानी मिलाकर लाअी और बापूजीको पिलाया। चार औंस प्रवाहीके शरीरमें पहुचते ही बापूजीके निस्तेज चेहरे पर जीवनकी किरण झलकने लगी। अितनेमें बा आ पहुची। भगवानने अुनकी प्रार्थना सुन ली थी।

२२ फरवरी, १९४४को बा का देहान्त हुआ। किसीने कहा "पिछले साल अिसी दिन बापू यमराजके मुहमें पडे हुअे थे। बा ने सावित्रीकी तरह अुन्हे छुडाया होगा और शर्त की होगी कि अगले साल अिसी दिन मैं तुम्हारे साथ चलूगी।"

बापूजीके अुपवासने आगाखान महलके दरवाजे खोल दिये थे। दिनभर मुलाकातियोंका ताता लगा रहता था। लोग बापूको तो सिर्फ प्रणाम करके ही बाहर निकल आते। बादमें वे बा से बातें करते। बा हिम्मतके साथ दिनभर काम करती। लडकों-बच्चोंको देखकर वे बहुत खुश हुअी। वे मा थी। सारी दुनियाको अपना चुकी थी। लेकिन अिसके

कारण अुनके नजदीक अपने लडकोंका स्थान घटा नहीं था। बापूने नियम बना दिया था कि अुपवासके दिनोंमें किसी मुलाकातीको खाने-पीनेके बारेमें न पूछा जाय। बा के लिअे अिस नियमका पालन बहुत कठिन था। लेकिन अुन्होंने अिसे अक्षरशः पाला।

२१ दिन पूरे हुअे। सरकारने अुपवास छोडनेके समय सिर्फ पुत्रोंको ही पास रहनेकी अिजाजत दी, मित्रोंको नहीं। बापूके नजदीक मित्र और पुत्रमें कभी फर्क नहीं रहा। अिसलिअे अुन्होंने पुत्रोंको आनेसे रोक दिया। दो मार्चकी शामको जब मुलाकाती लौट रहे थे, बा की आंखें सजल हो आयी थीं। लक्ष्मीबहन खरेको और दूसरे मित्रोंको विदा देते हुअे अुन्होंने कहा "बहन, यह आखिरकी राम-राम है।" मैंने कहा "बा अैसा क्यों कहती हैं? हम सब जल्दी ही बाहर जानेवाले हैं।" बा ने अुत्तर दिया "हां, तुम सब जाओगे।"

३१

अुपवासके बाद

३ मार्च, १९४३ को बापूके अुपवास पूरे हुअे। बादमें तीन-चार रोज तक सरकारने देवदासभाअी और रामदासभाअीको मिलने आनेकी अिजाजत दी। मगर जब देखा कि बापूजीको ताकत आ रही है, और खतरेका समय निकल गया है, तो मुलाकात बन्द कर दी। लडकोंका आना बा के लिअे 'टॉनिक' का काम करता था। जेलके दरवाजोंके बन्द होनेके साथ ही बा की शक्ति भी क्षीण होने लगी। अपनी संकल्प-शक्तिके बल पर ही बा अुपवासके दिनोंमें अितना काम कर सकी थीं और शरीरको भी टिका सकी थीं। लेकिन वही शरीर अब क्षीण होने लगा। बा सहज ही थकने लगीं। अुदास भी रहने लगीं। १६ मार्चको हृदयकी धडकनका दौरा हुआ, जो करीब दो घण्टे रहा, अुसके बाद २५ मार्चको, ९ दिन बाद, फिर वही दौरा हुआ और करीब चार घण्टे रहा। बस, तभीसे दवाअियां शुरू हुअीं, और आखिरी दम तक साथ चलीं।

अपवाससे पहले बापूजी अकसर कहा करते थे कि ६ महीनोमें कुछ-न-कुछ फैसला हो ही जायगा। अपवासके बाद अुन्होंने कहना शुरू किया कि अब कम-से-कम सात साल जेलमें रहना होगा। बा को अिस चीजका बहुत धक्का लगा। अुन्होंने बार-बार कहना शुरू किया "मुझे तो महादेवके पास ही रह जाना है न? मैं कौन सात साल जीनेवाली हूं?" लेकिन साथ ही बा बालककी तरह सरल भी थीं। अन्दरसे आशा बिलकुल नष्ट नहीं हो गअी थी। वे कअी बार बालकृष्णकी मूर्तिके सामने अेकान्तमें प्रार्थना करती सुनी गअी "हे बालकृष्ण, हमें जल्दी जेलसे बाहर ले चलो।"

अेक रोज यों ही सिनेमाकी चर्चा चल पड़ी। अखबारमें 'भरत-मिलाप' का अिश्तिहार था। बा को रामायणमें 'भरत-मिलाप' का प्रसंग बहुत प्रिय था। मैंने कहा "बा, आप जब दिल्ली आयेंगी, तो आपको 'भरत-मिलाप' दिखा लायेंगे।" बा को यह विचार अच्छा लगा। कुछ देरके लिअे वे भूल गअी कि वे जेलमें बैठी थीं और दिल्लीसे बहुत दूर थीं। कहने लगीं "लेकिन बापूजी न जाय, तो मैं कैसे जा सकती हूं?" मैंने कहा "नहीं बा, वह तो धार्मिक खेल है। रामायणकी कहानी है। बापू खुद चाहे न जाय, लेकिन आपको नहीं रोकेंगे। हम तारा, रामू, मोहन* सबको साथ ले चलेंगे।" तारा, रामू, मोहन वगैराका नाम सुनकर बा मुसकराने लगीं और 'अच्छा' कहकर दूसरी बातोंमें लग गअीं।

बापूके अपवासके दिनोंमें श्री जयसुखलाल गांधी बा से मिले। अुन्होंने बताया कि अुनकी लड़की मनु, जो १९४२ की लड़ाअीसे पहले बा की देखरेखमें थी, अब नागपुर जेलमें है, और वहां अुसकी आंखें बहुत खराब हो रही हैं। अुन्होंने बा से कहा "अगर मनु आपके साथ रहे, तो अुसकी आंखें भी सुधर जाय और आपकी सेवाका लाभ भी अुसे मिले।" बा के मातृ-हृदयको लड़कीकी आंखोंको बिगड़नेसे बचा लेनेका विचार बहुत महत्त्वका मालूम हुआ, और अुन्होंने बापूजीसे कहा "मुझे अेक नर्सकी जरूरत तो है ही। हम मनुको बुला लें तो कैसा

---

* तारा श्री देवदासभाअीकी लड़की और रामू व मोहन अुनके लड़के हैं।

हो?" बापूजीने बातको टालनेकी कुछ कोशिश की। अुन्हें डर था कि सरकार अिनकार कर देगी, और वे सरकारको अैसा कोअी मौका देना नहीं चाहते थे। लेकिन बा अपनी बात पर डटी रहीं। अुन्होंने खुद कर्नल शाह और कर्नल भंडारीसे कहा "मुझे अपने लिअे अेक नर्सकी जरूरत है।" अिसी दरमियान बा को फिर हृदयकी धड़कनका अेक सख्त दौरा हुआ। डॉ० गिल्डरने और मैंने अेक पत्रमें अपनी डॉक्टरी राय देते हुअे लिखा कि बा को नर्सके रूपमें अेक साथीकी आवश्यकता है। सरकार चौंकी। सवाल अुठा कि मनु न आ सके तो कौन आये? बा ने मणिबहन पटेल और प्रेमाबहन कंटकके नाम दिये। सरकारको ये क्योंकर रुचते? बबअीकी सरकारने मध्यप्रान्तकी सरकारके साथ पत्र-व्यवहार किया और २३ मार्च १९४३को मनु आगाखान महलमें आ पहुंची। अुसी दिन हमारी अम्माजान—श्रीमती सरोजिनी नायडू—मलेरियाके जन्तुओंके प्रतापसे रिहा हुअी।

मार्चके अन्तमें बा को निमोनियाका हलका-सा हमला हो गया। अप्रैलके शुरूमें अुनके पेशाबमें 'बी कोलाअी' (B Coli) की पुरानी तकलीफ जाग अुठी। अुचित अिलाजसे ये सब तकलीफें दूर हो गअीं।

मनुने बा की सेवामें खूब मदद की। कुछ दिनके लिअे बा की तबीयत खासी अच्छी लगने लगी। खानेके समय वे खानेके कमरेमें आकर बैठती। डॉ० गिल्डर और मि० कटेली मांसाहारी थे। अिसलिअे वे अलग अेक टेबल पर बैठते थे। मीराबहन जमीन पर आसन बिछाकर बैठती। मनु, भाअी और मैं अेक दूसरी मेज पर बैठते। बा सबके पास जातीं, सबके खानेका ध्यान रखतीं और बातचीत करतीं। रसोअी पीछे-वाले बरामदेमें बनती थी। वे वहां जाकर बैठतीं, पकानेवालेके साथ बातचीत करतीं और पकानेके बारेमें सूचनायें देतीं। मतलब यह कि अुन्होंने वहां अच्छी तरहसे माताका स्थान ग्रहण कर लिया था। वे सारे हिन्दुस्तानकी मां थीं। और अिस छोटेसे परिवारकी मां तो थीं ही। मांकी ही तरह वे सबकी संभाल रखती थीं।

बापूजीको जैसे-जैसे ताकत आती गअी, वे अपना ज्यादा समय सरकारके साथ पत्र-व्यवहारमें लगाने लगे। बा को सिखानेका काम और

दूसरे सब काम ढीले पड गये। बा नियमित रूपसे अपने-आप अकेली बैठकर रामायण, गीताजी वगैरा पढती या मनुसे सुनती। मनुने अुन्हें सारी वाल्मीकि-रामायण पढ सुनाअी। बादमें पूरी भागवत सुना दी। बा को भागवत अितनी प्रिय थी कि अेक बार समाप्त करके अुसे फिर सुनना शुरु किया था।

३२

खेलका शौक

अिन सब कामोंके अलावा बा खेलोंमें भी काफी रस लेने लगी। सुबह-शाम जब हम लोग 'बैडमिण्टन' या 'टेनीकॉअिट' खेलते, वे कुर्सी पर बैठकर देखा करती और अुनमें खूब दिलचस्पी लेती। अगर खेलमें कोअी शैतानी या चालाकी करता तो वे अुसे डाटती। रातमें मीराबहन और डॉ० गिल्डर वगैरा कैरम खेलते थे। बा कैरमका खेल देखने भी जाती। धीरे-धीरे अुन्होंने खुद भी कैरम खेलना शुरु किया। अुसमें अुनको अितना रस आने लगा कि रोज दोपहरको वे आधा घंटा कैरमका अभ्यास करने लगी। मीराबहन कैरममें सबसे होशियार थी। बा हमेशा अुनके साथ रहती और अिसलिअे हमेशा जीत कर आती। जिससे अुन्हें बहुत खुशी होती थी। अगर किसी दिन अकस्मात हार जाती तो अुदास हो जाती। आखिर यह तय हुआ कि कुछ भी क्यों न हो, आखिरी खेलमें बा को जिताना ही चाहिये। बा को कैरमके खेलमें रानी ले लेनेका बहुत शौक था। रानी आ जाती तो वे हारको हार न मानती। कैरममें बा अितनी लीन हो जाती थी कि अपना दुःख, रोग सब भूल जाती। आखिरी बीमारीमें जब अुनमें खुद खेलनेकी ताकत न रह गअी, तब अुनके पलंगके पास कैरम बोर्ड रखकर दूसरे लोग खेलते थे और यह अुन्हें बहुत अच्छा लगता था। अिस प्रकार मृत्युके दो-तीन दिन पहले तक वे खाट पर पडी-पडी कैरमका खेल देखती और अुनमें रस लेती थी। मीराबहन अुनकी हमेशाकी साथिन थीं। अिसलिअे अुनकी जीतको वे अपनी जीत और अुनकी हारको अपनी हार मानती थी। वे हम

लोगोंसे आग्रह करती थी कि हम लोगोंमें से कोओी मीराबहनके साथ खेले, ताकि डॉ॰ गिल्डर और अुनके साथी अकेली मीराबहनको हरा न सकें। जब 'पिंगपांग' शुरू हुआ, तो बा ने अुसे भी खेलना शुरू किया। लेकिन अुनसे सांस फूलती थी, अिसलिअे वह बन्द करवा दिया गया। अुनका शरीर बूढ़ा हो गया था, लेकिन मन कभी चीजोंके लिअे बिलकुल ताजा था।

३३

वात्सल्य

बच्चोंके साथ खेलना और अुन्हें खिलाना-पिलाना बा को बहुत अच्छा लगता था। आश्रममें बा के पास दो-चार लड़के-बच्चे रहते ही थे। जेलमें वे सब कहांसे आते? अेक रोज बकरीने बच्चे दिये। मनु अेक बच्चेको बा के पास अुठा लाअी। बा अुसे गोदमें लेकर प्यार करने लगीं। अुसको खेलाने और खिलाने लगीं। वे मानो यह भूल ही गअी कि वह बकरीका बच्चा था! वे अुससे बातें करने लगी "भाअी, तू हर रोज मेरे साथ खेलने आना।" कुछ दिनों तक मनु हर रोज अुसे बा के पास लाती रही। अेक दिन अुसने बा के कपड़े बिगाड़ दिये। तबसे अुनका आना बन्द हुआ।

३४

बा का दुशाला

जब बा के साथ मैं बिड़ला हाअुसमें गिरफ्तार हुअी, मेरे पास कोअी गरम कपड़ा न था। मैं तो चन्द रोजके लिअे बबअी आअी थी। गर्मीके मौसममें गरम कपड़े कौन साथ रखता है? बा ने अपना सामान बांधते समय अेक दुशाला वापस भेजनेके खयालसे अलग निकालकर रख दिया था। अुन्हें अुसको अपने साथ लेनेकी जरूरत नहीं मालूम हुअी। मुझे खयाल आया कि न जाने जेलमें कितने दिन लग जाय। शायद

कभी गरम कपडेकी जरूरत पड जाय। अिसलिअे वा से पूछकर वह दुशाला मैंने साथमें रख लिया। जेलमें वह मेरे बहुत ही काम आया। पूनामें खासी ठण्ड थी। सरकारका हुक्म था कि बाहरकी दुनियाके साथ हमारा कोअी सपर्क न रहे। अैसी दशामें वह दुशाला न होता, तो मुझे बहुत तकलीफ होती। बापूके अुपवासके दिनोमें माताजी (मेरी मा) वहा आअी थी। वा ने सोचा कि कही सुशीला गरम कपडे मगवाना भूल न जाय, अिसलिअे अुन्होने खुद ही माताजीसे कहा "सुशीलाके पास शाल नही है। मेरा अिस्तेमाल करती है। अुसके लिअे शाल वगैरा भेज दें।" माताजीने सोचा होगा कि वा को अपने दुशालेकी जरूरत है, अिसलिअे वे अुसी रोज अपनी शाल वहा मेरे लिअे छोड गअी। दूसरे रोज वा ने अुसे देखा और पूछने लगी "यह किसकी है?" मैंने कहा "माताजी मेरे लिअे छोड गअी है।" वा अिसे सह न सकी। बोली "माताजीका दुशाला अुन्हें लौटा देना। तेरे पास तो मेरा है न?" मैंने कहा "वा, आपको अुसकी जरूरत पडेगी न?" अिस पर वा बोली "नही, नही, बहन मुझे जरूरत नही है। मैंने माताजीसे कह दिया है कि वे तेरे लिअे दुशाला और गरम कपडे भेज दें। जब वे आ जाय तो तू मेरा दुशाला भले मुझे लौटा देना।" और अुन्होने आग्रहके साथ माताजीका दुशाला वापस करवाया। वा के दुशालेको मैंने सभालकर अुनकी आलमारीमें रख दिया। बा की मृत्युके बाद देवदासभाअीने बा की स्मृतिके रूपमें वह दुशाला मुझे साग्रह वापस दिया।

दीवालीके दूसरे दिन बहुतसे प्रान्तोमें नया साल मनाया जाता है। अिस रोज लोग अेक-दूसरेको भेंट वगैरा भी देते है। जेलमें भी पहली दीवालीके बाद नये सालके दिन श्रीमती नायडूने वा को अेक साडी भेंट की। वा ने अुसे बखुशी पहना। बादमें वा मेरे लिअे अपनी आलमारीसे अेक साडी ढूढ लाअी। राजकुमारी अमृतकुवरने अपने हाथकते सूतकी अेक साडी बुनवाकर वा को दी थी। अुसकी किनार नीले रेशमकी थी। वा वही साडी लाअी और मुझसे कहने लगी "सुशीला, अिसे तू पहनना। नअी नही है बहन, अेक दो बार मेरी पहनी हुअी है। यहा मेरे पास नअी साडी नही है।" मैंने कहा "वा, नअीकी तो आवश्यकता

ही नही। आपके पहननेसे अिसकी कीमत घटी नही, बढी है। लेकिन आपके पास यहा साडिया कम हैं, अिसलिअे आप अिसे रखिये। बाहर चलने पर दीजियेगा।" मगर बा बाहर न आअी। अुनकी मृत्युके बाद देवदासभाअीने मुझसे अुनकी अेक साडी ले लेनेको कहा। मैंने वही साडी अुठा ली। बा की वह साडी और अुनका वह दुशाला, ये दो आज मेरी कीमतीसे कीमती चीजें हैं।

३५

खिलाने और खानेका शौक

बा बहुत अच्छा खाना पकाना जानती थी। लेकिन बापूजीने जबसे अस्वाद-व्रत दाखिल किया, बा की यह कला निकम्मी-सी हो गअी थी। तो भी कभी-कभी वे कुछ बना या बनवा लेती थी। अुन्हें अच्छा खाना खाने और खिलानेका शौक था। जेलमें वे डॉ० गिल्डर वगैराके नाश्तेके लिअे अकसर मनुसे कुछ-न-कुछ तैयार करवाती। अेक रोज अुन्होंने 'पूरण पोली' बनवाअी। कहने लगी "आज तो मैं भी खाअूगी। बापूजीसे पूछ आ, वे खायगे क्या?" भारी चीजके खानेसे बा को हृदयकी धडकनका दौरा हो आता था। मनु बापूजीसे पूछने गअी, तो बापूने जवाब दिया "बा न खाये तो मैं खाअू।" बा को निश्चय करनेमें अेक पलकी भी देर न लगी। बोली "तो मैं नहीं खाअूगी।" फिर पास बैठकर अुन्होंने बापूजीके लिअे और दूसरे सबके लिअे 'पूरण पोली' बनवाअी, सबको खिलाअी, पर खुदने चखी तक नही!

अेक दिन बा को फिर हृदयकी धडकनका हमला हुआ। बडी देर तक रहा। दूसरे दिन अुन्होंने मनुसे कहा कि वह अुनके लिअे घीमें बैंगन पका दे। मनु मुझसे पूछने आअी। मैंने मना किया। कहा "किसी तरह अिसे टाल दो। अभी कल ही तो दौरा हुआ था। अैसी चीज खाकर बा कही फिर बीमार न हो जाय!" मनुने जाकर बा से कहा "सुशीला बहनने बैंगनका शाक बनानेसे मना किया है।" बा चिढ गअी और बापूजीसे शिकायत की। बापू काममें थे। धीरजके साथ समझानेका

समय न था। अिसलिअे अुन्होंने कह दिया "तुम्हें अपनी तबीयतके खातिर अितना संयम पालना ही चाहिये।" लेकिन बा यों थोडे ही समझनेवाली थी। वे नाराज हो गअी। बोली "बस मुझे कुछ खाना ही नहीं है।" मैंने और मनुने बहुत मिन्नत की। कहा "बा, आपकी तबीयतके लिअे ही अिनकार करना पडा। नहीं तो आप जो कहें सो बना दें।" लेकिन बा यों माननेवाली न थी। "मुझे कुछ बनवाना ही नहीं है," अुन्होंने कहा। और फिर तो करीब दस-पन्द्रह दिन तक वे सिर्फ दूध, फल और शहदका पानी ही लेती रहीं। मुझे और मनुको बहुत दुःख हुआ। बापूजीने हमें समझाया "चिन्ता न करो। अिससे बा को कोअी नुकसान नहीं होगा, फायदा ही होगा।" सचमुच अिस अरसेमें बा की तबीयत बहुत अच्छी रही। हम लोग बा को समझानेका प्रयत्न तो करते ही रहते थे। धीरे-धीरे बा बैंगनवाली बात भूल गअी और मामूली खुराक लेने लगी।

३६

बा की जिद

अन्तिम बीमारीमें, मृत्युसे दो रोज पहले, बा को खयाल आया कि अुन्हें रेंडीका तेल लेना चाहिये। अुस समय वे अितनी कमजोर हो गअी थी कि मुझे और डॉ० गिल्डरको लगा कि जुलाब देना ठीक न होगा। सुबह ही बा ने मुझसे रेंडीका तेल मांगा। मैंने पहले तो समझानेकी कोशिश की। मगर जब बा नहीं मानी, तो अुन्हें टालकर चली गअी। थोडी देरमें बापूजी आये। बा ने अुनसे भी रेंडीका तेल मांगा। बापूजीने भी अुन्हें समझाया कि अैसी हालतमें रेंडीका तेल लेना ठीक नहीं और कहा "बीमारको कभी अपनी दवा खुद न करनी चाहिये। और मैं तो तुझसे कहता हूं कि अब तू दवा छोड दे, सब भूल जा, मुझे भी भूल जा। राममें ही मनको पिरो दे।" मुझसे कह दिया "बा समझ गअी है। अब रेंडीका तेल नहीं मांगेगी।" मगर बा अितनी आसानीसे अपनी जिद छोडनेवाली नहीं थी। कुछ समय बाद डॉ० गिल्डर आये।

बा ने अुनसे फिर रेंडीका तेल मांगा। अुन्होंने भी अिनकार किया। बा को बहुत दुःख हुआ। दुपहरमें जयसुखलालभाअी मिलने आये, तो बा अुनसे शिकायत करने लगी: "ये लोग अपने कानून चलाते हैं। मुझे रेंडीका तेल भी नहीं देते!"

मैं सुबहके बादसे बा के पास गअी नहीं थी। कहीं फिर रेंडीका तेल मांग बैठें तो? दो बजेके करीब गअी। तब तर्जनी दिखा-दिखा कर बा मुझसे कहने लगी: "तूने मुझे रेंडीका तेल नहीं दिया न? अब तो मैं कुछ भी नहीं लूंगी। तेरी कोअी भी दवा नहीं लूंगी। मुझ पर भी अस्पतालका कानून चलाती है क्यों?" अिस बालहठका क्या अुपाय करना, यह अेक समस्या ही थी। अुनके दिलको दुखाना भी अखरता था। कहा: "बा, मुझे तो पता चला था कि आप अब समझ गअी हैं कि रेंडीका तेल नहीं लिया जा सकता।" "नहीं, नहीं, मुझे तो वह लेना ही है।" बा की आवाजमें और अुनके चेहरे पर अेक तरहकी दीनता दीखती थी। मैंने सोचा, अन्तिम समयमें अिन्हें क्यों आघात पहुंचाया जाय? और कहा: "आप आग्रह छोड़ ही न सकेंगी, तो मैं लाचार होकर आपको रेंडीका तेल दूंगी।" बा ने कहा: "तो ला।" किसीने युक्ति सुझाअी कि 'लिक्विड पैराफीन'में थोड़ा रेंडीका तेल डालकर दे दो। अैसा ही किया गया। बा अुसे पीकर शान्त हो गअीं।

३७

'पीड पराअी जाणे रे'

अिस बारका जेल-जीवन अनोखा था। सरकार अितनी डर गअी थी कि मानो निहत्थे स्त्री-पुरुष अुसे मिटा देंगे और कहीं जेलके अन्दर रहनेवालोंका बाहरवालोंके साथ किसी भी तरहका कोअी संपर्क कायम हो गया, तो शायद आसमान ही फट पड़ेगा! अगस्त १९४२की 'पकड़-धकड़'के दिनोंमें सरकारका हुक्म था कि कैदियोंको न तो अखबार दिये जायं, न पत्र लिखनेकी अिजाजत दी जाय और न किसीसे मिलने दिया जाय। सरोजिनी देवी अपनी लड़कीको बीमार छोड़कर आअी थीं। अुन्होंने

सरकारको लिखा "मेरी लडकीके समाचार तो मुझे भेजे जायगे न?" बा को भी हर रोज अपने लडको-बच्चोकी चिन्ता बनी रहती। मीरा-बहनके पास कपडे कम थे। अुन्होने आअी० जी० पी० से कहा "मेरे कपडे तो मगवा देंगे न?' आखिर कोअी तीन हफ्ते बाद आअी० जी० पी० ने खबर दी कि घरेलू मामलोके बारेमें सगे-सबधियोको पत्र लिखना हो तो लिख सकते है। लिखकर पत्र सरकारके हवाले करने होगे। वह अुन्हे आगे भेज देगी। रिश्तेदार भी लिखना चाहे, तो पत्र सरकारके पास भेजें। सरकारको ठीक मालूम हुआ, तो कैदियोको पत्र दिये जायगे। कपडे वगैरा मगानेके बारेमें भी अैसा ही नियम था। सरोजिनी देवीने अपने घर पत्र लिखा। मीराबहनने कुछ मित्रोको पत्र लिखनेकी अिजाजत मागी। अुनके घरके लोग तो समुद्र-पार थे। अुन सबको छोडकर वे यहा आअी थी। यहा मित्र ही अुनके सगे-सम्बन्धी थे। बापूजीने लिखा "मैंने तो आश्रम-जीवन अपनाया है। मेरे लिअे घरका कौन और बाहरका कौन? महादेवभाअीके लडके या पत्नीको न लिख सकू तो और किसे लिखू? फिर, मेरे कोअी घरेलू मामले तो है ही नही। राजनीतिक विषयो पर न लिखू, लेकिन अगर दूसरे सार्वजनिक कार्योके बारेमें भी न लिख सकू, तो पत्र लिखनेकी अिजाजत मेरे लिअे कोअी मतलब नही रखती।"

सरोजिनी देवीने और बा ने मुझसे पूछा "तूने माताजीको लिखा?" बापूजीने मुझसे कहा था "मेरे पत्रका अुत्तर आने दे, फिर देखेंगे कि तुझे क्या करना चाहिये?" बापूजीके पत्रके अुत्तरमें सरकारने अुन्हें रिश्तेदारोके अलावा आश्रमवासियोको पत्र लिखनेकी अिजाजत दे दी। लेकिन घरेलू बातोके सिवा दूसरी बातोके बारेमें लिखनेकी मनाही थी। अिस पर बापूजीने किसीको भी पत्र न लिखनेका निश्चय किया और सरकारको अपना निश्चय लिख भेजा। अिस बीच भाअी (प्यारे-लालजी) भी वहा आ गये थे। बापूने हमसे कहा "मुझे लगता है कि अिन शर्तो पर हममें से किसीको भी पत्र नही लिखना चाहिये।" सरकारकी ओरसे हमें यह कहा गया था कि जिन्हें पत्र लिखना चाहें, अुनके नाम और पते दे दें। भाअीने और मैंने जवाबमें लिख भेजा कि

"जब तक सरकार गांधीजीके लिअे पत्र लिखना शक्य नहीं बनाती, तब तक हम कैसे लिख सकते हैं?" मुझसे कहा गया "बापू तो महात्मा हैं, तुम्हें तो माको पत्र लिखना ही चाहिये। अिस तरह पत्र न लिखनेसे तुम कुछ महात्मा नहीं बन जाओगी।" मैंने जवाब दिया "महात्मा बननेके लिअे मैंने अैसा नहीं किया।" मैंने बापूजीसे कहा "बापूजी, मैंने तो आपकी सलाहसे सरकारको लिखा है। तब फिर मुझे अिस तरहकी बातें क्यों सुनाओ जाती हैं?" बापूजीने अुत्तर दिया, "मैंने तो तुझे तेरा धर्म बताया है। बा, तू, प्यारेलाल, मुझमें समा जाते हो। मैं न लिखूं तो तुम कैसे लिख सकते हो? लेकिन वैसा करनेकी शक्ति न हो, या स्वतंत्र रीतिसे विचार करने पर तुझे लगे कि धर्म तो जिसमें अुलटा ही है, तो तू सरकारको लिखा अपना पत्र लौटा ले और घर पत्र लिखना शुरू कर दे।" मुझे अैसा करनेकी कोओ आवश्यकता नहीं जान पड़ी।

कुछ दिनों बाद बा ने पत्र लिखना शुरू कर दिया। जेलमें किसीसे मिलना तो होता ही नहीं था, लेकिन जब पत्र भी न मिलते तो बा को बहुत कष्ट होता था। तिस पर वे खुद पत्र न लिखें, तो अुन्हें पत्र मिलें कैसे? अिस विचारसे बा ने पत्र लिखना शुरू किया। मुझे भी समझाने लगीं "बापूजी तो साधु हैं। अुन्होंने तो सब माया-ममता छोड़ दी है। मगर हम लोगोंने तो अैसा नहीं किया। तुझे भी माको पत्र लिखना चाहिये।" बापूजीसे भी कहा "सुशीलासे कहिये न, अपनी माको पत्र लिखे।" बापू बोले "मैंने अुसे कब रोका है?" बा अेक मा थीं। वे समझती थीं कि जिस तरह अुनके बच्चोंके पत्र न आनेसे वे व्याकुल हो अुठती हैं, अुसी तरह माताजी भी हमारे पत्र न पाकर दुःखी होती होंगी।

३८

जेलमें बापूजीका दूसरा जन्मदिन

२ अक्तूबर, १९४३ को फिर बापूजीका जन्मदिन आया। बा की तबीयत नरम थी। तिस पर अिस साल हमारी 'अम्माजान' नही थी। सारी तैयारी हमी लोगोने की। बा ने अपने हाथो कैदियोको खाना बाटा और भरसक काममें मदद की। बा के पास बापूजीके सूतकी अेक साडी थी। सेवाग्राम छोडते समय बा ने वह मनुको सौंपी थी। "लोग कहते हैं, आश्रम जब्त हो जानेवाला है। यह साडी सभाल कर रखना। कही यह खो न जाय। मेरे मरने पर मुझे अिसी साडीमें जलाना," अुन्होने कहा था। जेलमें आकर बा ने अुस साडीकी तलाश करवाअी। मगर कुछ पता न चला। जब मनु आगाखान महलमें पहुची, तो अुसने साडीका ठिकाना बताया और बा ने साडी मगवाअी। अबकी बापूजीके जन्मदिन पर बा ने वही साडी पहनी।

३९

सहृदयता

अक्तूबरके अन्तमें मेरी भाभी शकुन्तलाको शस्त्रक्रिया द्वारा प्रसूति कराअी गअी और अुन्हें लडकी हुअी। नवबरके शुरूमें अेक हफ्तेकी बच्चीको छोडकर वे चल बसी। जेलके ढग अितने निराले होते हैं कि ऑपरेशन और मरनेका तार अेक ही साथ मिला। वह भी मृत्युके आठ-दस दिन बाद! अितनेमें पत्र भी आ गया। बीमारीमें वे सारे समय मुझे पुकारती रही थी। माताजीने और मेरे भाअीने सरकारसे मुझे पैरोल पर छोडनेकी अर्जी भी की थी। लेकिन चूकि मैं गाधीजीके साथ थी, सरकारने मुझे पैरोल पर बाहर भेजनेसे अिनकार किया। बा का कोमल हृदय द्रवित हो अुठा। बापूजीसे कहने लगी "सुशीलाको माके पास जाना ही चाहिये।"

बापू हस दिये "सुशीला जायेगी तो तेरी सेवा कौन करेगा?"

"मै जानती हू कि मुझे तकलीफ होगी, मगर मैं अितनी स्वार्थी नही हू कि अुसकी माके दु:खको न समझ सकू।" फिर मुझसे बोली "सुशीला, तुझे माताजीको और मोहनलालको पत्र लिखना चाहिये।"

मैंने कहा "बा, मै सरकारको अेक बार लिख चुकी हू कि पत्र नही लिखूगी। अब मैं कैसे लिख सकती हू?"

बा बापूजीके पास पहुची "सुशीलाको समझाअिये कि सरकारको लिख चुकी है तो क्या हुआ। अुस समय थोडे ही किसीको कल्पना थी कि अैसी आपत्ति आयेगी? भाअी-बहन दोनोको घर पत्र लिखना ही चाहिये।"

बापूजीने हमें बुलाकर कहा "पत्र न लिखनेकी सलाह तो मेरी ही थी न? मुझे लगता है कि विशेष परिस्थितिमें पत्र लिखनेमें हर्ज नही है। माताजीकी और मोहनलालकी शान्तिके लिअे तुम्हे घर पत्र लिखना चाहिये।"

अुसी रातको हम लोगोने घर पत्र लिखे। मेरे भाअीने जवाबमें लिखा कि माताजी खुद बीमार रहती हैं। अैसी हालतमें शकुन्तलाकी आठ दिनकी बच्चीको कैसे सभालना, यह अेक सवाल है। बापूजीने बा से कहा "बेबीको यहा बुला लें। तू सभाल लेगी न?" बा ने कहा "मैं क्या सभालूगी? मुझसे क्या होगा? मैं तो खुद बीमार हू। लेकिन सरकार अुसे आने दे तो मुझसे जो बन पडेगा, करूगी।" बापूजीने सरकारको पत्र लिखा "घरमें अुस बच्चीको सभालने लायक कोअी नही है। या तो सुशीलाको पैरोल पर जाने दिया जाय, ताकि वह बच्चीके लिअे मुनासिब बन्दोबस्त कर सके, या बच्चीको यहा भेज दिया जाय। सुशीला डॉक्टर है, लेकिन साथ ही हमारी लडकी भी है। कुछ दिनके लिअे भी अुनके जानेसे हमें तकलीफ तो होगी ही। अिसलिअे अगर बच्चीको ही यहा भेज दिया जाय तो ज्यादा अच्छा हो। अैसा न हो तो भले हमें तकलीफ सहनी पडे, मगर सरकार सुशीलाको पैरोल पर जाने दे।" सरकारका जवाब आया "दोनो दरख्वास्तोंमें से अेक भी मजूर नहीं हो सकती।"

अिसी समय मध्यप्रान्तकी सरकारने सब नजरबन्द स्त्री-कैदियोंको छोड देनेका निश्चय किया। मनु मध्यप्रान्त सरकारकी कैदिन थी, सो

हुक्म आया कि मनु चाहे तो छूट सकती है। मनुने न छूटनेका निश्चय किया "मैं तो बा की सेवाके लिअे ही आअी हू। सेवा अधूरी छोडकर कैसे जा सकती हू?" बा खुश हुअी। देवदासभाअीको पत्र लिखवाया। अुसमें भी अिसका जिक्र किया। देवदासभाअीके यहा किसीने समझा कि रकारने सुशीलाको छोडा था, मगर अुसने छूटनेसे अिनकार किया। नका पत्र आया "सुशीलाको अैसा नही करना चाहिये। अुसकी माको सकी मददकी बहुत आवश्यकता है।" बा ने सोचा कि अुन्हीके त्रसे यह गलतफहमी पैदा हुअी है। अुन्हें अिसे दूर करना चाहिये। ही माताजी यह न सोच लें कि अुनकी तकलीफके दिनोमें अुनकी डकी अुनकी सेवा करनेसे अिनकार करती है। यह ठीक न होगा। बा रन्त ही बापूजीके पास गअी। तार लिखवाया "सुशीलाको नहीं, मनुको ोडनेकी बात थी।" मैंने कहा "बा, जाने दीजिये न। और अगर खना ही है तो पत्र लिख डालिये।" मगर बा न मानी। माकी ावनाको वे अच्छी तरह समझती थी। माके प्रति बच्चोंके धर्मको ो वे बखूबी जानती थी।

४०

अन्तिम शय्या

चलते-फिरते बा की सास तो हमेशा फूल ही जाया करती थी। ९४३ के नवम्बरमें अुनकी यह शिकायत बहुत बढ गअी। कैरम खेलते- लते भी अुनका दम फूलने लगा। डॉ० गिल्डर कहने लगे कि हमें रम बन्द कर देना चाहिये, लेकिन बा को कैरमसे अितनी दिलचस्पी गअी थी कि अैसा करना ठीक न मालूम हुआ। अेक दिन बा अेनिमा कर निकली, तो अुनका दिल बहुत घबराने लगा। मैंने जाकर देखा अुनके होठ नीले-से हो रहे थे। नाडी बहुत तेज थी। मैंने दवा । थोडी देरमें तबीयत कुछ सुधरी, लेकिन पूरी तरह सभल नही पाअी। -तीन रोज बुखार आया। तबसे जो खाट पकडी तो वह छूटी ही ही। घूमना-फिरना बन्द हो गया। अुनके लिअे पहियेदार कुर्सी

मगवाअी गअी। अुसमें बैठाकर हम लोग बा को कुछ देर बरामदेमें घुमा लाते थे।

बीमारीमें भी बा अेकादशी, सक्रान्ति वगैराको न भूली। तिल-सक्रान्तिके दिन कहने लगी "तिल मगवाओ और अुसके लड्डू बनाकर सब कैदियोको दो।" बापूजीने टोका "यह ठीक नही है। यह कौन हमारा घर है? अैसे काम जेलमें नही, घर पर ही किये जा सकते हैं।" "लेकिन मुझे कौन अब घर जाना है?" बा ने कहा। सो दूसरे दिन तिल मगवाकर लड्डू बनाये गये। बा को पहियेदार कुर्सीमें बिठाकर बाहर ले गये। अुन्होने अपने हाथो सबको तिलके लड्डू दिये।

दिसम्बरमें हालत और बिगडी। सासके कारण लेटना कठिन हो गया। 'रेस्ट बेड' मगवाया। कुछ दिनोंमें हालत और भी ज्यादा खराब हुअी। अेक छोटीसी मेज बनवाअी, जिस पर सिर रखकर बा सो जाया करती थी। अपने हाथोमें सिर रखकर अुस मेज पर पडी हुअी बा का वह चित्र बहुत ही करुण था। बा की मृत्युके बाद बापूजीने वह मेज अपने पास रखी। तबसे वह सब जगह बापूजीके साथ घूमती है। बापू खानेके वक्त अुसका अिस्तेमाल करते हैं। बा भोजनके समय हमेशा बापूजीके पास आकर बैठा करती थी। अब बा की जगह अुनकी मेज रहती है।

हालत और खराब हुअी। 'ऑक्सीजन' मगाकर रखा। पहले तो बा नलीको जल्दी ही नाकसे हटा लेती थी, मगर बादमें तो खुद मागकर 'ऑक्सीजन' लेने लगी। मैने और डॉ० गिल्डरने सरकारको पत्र लिखा कि डॉ० जीवराज मेहताको और डॉ० विधानचन्द्र रायको सलाहके लिअे भेजा जाय। डॉ० जीवराज तो पूनामें ही थे। अेक दिन शामको चन्द मिनटोंके लिअे वे लाये गये। अुस वक्त बापूजीको बा के पाससे हटा दिया गया था। सिर्फ डॉ० गिल्डरके साथ मैं हाजिर थी। डॉ० विधानचन्द्र रायको नहीं भेजा गया। दुबारा याद दिलाअी, मगर कोअी जवाब नहीं मिला।

जैसे-जैसे बीमारी बढी सेविकाका — तीमारदारीका — काम भी बढा। दूसरी सर्सके लिअे लिखा गया, तो सरकारकी तरफसे अेक आया भेजी गअी। वह अेक हफ्तेके अन्दर ही भाग गअी। अिसके आभार पर बा

की मृत्युके बाद बडी धारासभामें यह कहा गया था कि बा की सेवाके लिअे तालीमयाफ्ता नर्सें रखी गअी थी। फिरसे नर्सोंकी माग की गअी, तब सरकारने बाहरसे किसी रिश्तेदारको बुला लेनेके लिअे कहा। बा ने कनु गाधी और प्रभावतीबहनके नाम दिये। लम्बे पत्र-व्यवहारके फल-स्वरूप, पहली मागके हफ्तो बाद, सरकारने १२ जनवरीके दिन प्रभावती-बहनको भेजा और पहली फरवरीको कनुको आने दिया।

बापूजीने सरकारको लिखा था कि बा को और अुनके साथ रहनेवाले दूसरोको मुलाकातें मिलनी चाहिये। पहले तो अुस पत्रका कोअी असर न हुआ, मगर बा की बीमारी बढने पर सरकारने अुनके दो लडकोको — रामदास गाधी और देवदास गाधीको — तार करके बुलाया। बा अुन्हें मिलकर बहुत खुश हुअी। हमें अैसा लगा कि अगर बा को हर हफ्ते कोअी मिलने आ जाया करे, तो सभव है अुनको फायदा हो। जेल अुनकी बीमारीका अेक बडा कारण था। वे अनेक बार जेल गअी थी। लेकिन अिस बारकी यह अनिश्चित समयकी नजरबन्दी अुनको बहुत खटकती थी। फिर, दूसरे जेलोमें अुनके साथ बहुतसी बहनें रहा करती थी। लोग समय-समय पर मिलने भी आते थे। अिससे वे खुश रहती थी। अिस बार यह सब कुछ न था। तिस पर सबसे बडा बोझ अबकी अुनके मन पर अिस बातका था कि सरकारने अिस बार बापूजीको और अुनके साथ दूसरोको बिना कारण पकडा है। बा के लडकोंके लिअे हर हफ्ते वहा आना मुश्किल था। अिसलिअे दूसरे रिश्तेदारोको भी आनेकी अिजाजत मिली। हुक्म आया कि मुलाकातके वक्त बा के पास बापूजीके सिवा और कोअी नही रह सकेगा। लेकिन बीमारीकी हालतमें नर्सके बिना काम कैसे चले? आखिर अेक नर्सको वहा हाजिर रहनेकी अिजाजत मिली। मगर जैसे-जैसे बीमारी आगे बढी, अेक नर्ससे भी काम चलना कठिन हो गया। बापूजीने फिर जेलके अफसरोसे शिकायत की। फलत हुक्म आया कि जेल सुपरिण्टेण्डेण्टको जितनी नर्सोंकी जरूरत मालूम हो अुतनीको रहने दें।

दिसम्बरमें ही बा ने किसी वैद्यको बुलानेकी माग की थी और नैसर्गिक अुपचारक डॉ० दीनशा मेहताको भी बुलवाया था। मगर

सरकारको अेक दफा कहनेसे काम थोडे ही हो सकता है? बापूजीक फिर लम्बा पत्र-व्यवहार करना पडा और सरकारी अफसरोंसे यहा त कहना पडा कि "अपनी पत्नीके अिलाजके लिअे मैं आवश्यक प्रबन्ध न क सकू, तो कृपा कर आप लोग मुझे किसी दूसरे जेलमें ले जाय, जिस मुझे अपनी पत्नीकी वेदनाका मूक साक्षी न बनना पडे।"

आखिर ५ फरवरी, १९४४ को सरकारने डॉ० दीनशा मेहताक आने दिया। जबानी हुक्म सुनाया गया कि जब वे आवें, तब द डॉक्टरोंके सिवा बा के पास कोअी न रहे। बापूको बहुत दु:ख हुआ जिस समय यह हुक्म सुनाया गया, बापू स्नानको जा रहे थे। आम तौ पर मालिश और स्नानके समय बापू आराम करते थे, सो भी जाते थे मगर अुस दिन अुस हुक्मको सुननेके बाद आराम करना असभव हो गया स्नानके टबमें पडे-पडे अुन्होंने प्यारेलालजीसे सरकारके नाम पत्र लिखवाया लिखवाते समय अुनके हाथ और होठ काप रहे थे "मृत्युशय्या पर पडी हुअी स्त्रीके बारेमें अिस तरहकी शर्तें लगाना शोभास्पद नही है। अुसक पाखाने या पेशाबकी हाजत हो तो क्या महज अिसलिअे कि डॉ० दीनश मेहता वहा हैं, नर्सें अुसके पास नही जा सकेंगी? मुझे डॉक्टरसे पूछन हो कि मेरी पत्नीकी तबीयत कैसी है, तो मैं किसी दूसरेके मारफत पुछ वाअू? यह कैसी बात है? अिस तरह बार-बार मुझे दु:खी करनेके बदल सरकार मुझको अेकबारगी यहासे हटा दे तो अच्छा हो। फिर न मेरं पत्नी मुझसे कोअी आशा रखेगी, और न मुझे ही अुनकी वेदनाका मूव साक्षी बनना पडेगा।" दोपहरको जवाब आया "हुक्मको समझनेमें आपर्क कुछ गलती हुअी है। नर्सें रह सकती है, और आपको भी डॉक्टरने कुछ पूछना हो तो पूछ सकते है।" अिसलिअे बापूजीके अुस पत्रको आर्ग भेजनेकी आवश्यकता नही रही।

डॉ० दीनशाको दिनमें अेक ही बार आनेकी अिजाजत मिली थी। बा चाहती थी कि वे अेकसे अधिक बार आवें। अिसके लिअे बापूजीको फिर पत्र-व्यवहार करना पडा। आखिर अिजाजत मिल गअी।

अिधर जनवरीमे ही बा ने फिर वैद्यका अिलाज करवानेकी मागको जोरोंसे दोहराना शुरू किया था। बापूजी, कर्नल भण्डारी, कर्नल शाह,

हमारे जेलके सुपरिण्टेण्डेण्ट या जो भी कोअी आता, अुससे वे अिसीकी चर्चा करती। फरवरीके पहले हफ्तेमें बा की स्थिति और अधिक चिन्ताजनक हो गअी। बापूजीने भी फिरसे जेलके अफसरोंको आग्रहके साथ कहा कि वे वैद्यको बुला दें। वे लोग कहने लगे "हमारे हाथमें नहीं है। बम्बअी सरकारसे फोन पर पूछते हैं।" बम्बअी सरकारने अुत्तर दिया "बात हमारे हाथकी भी नहीं है। हम दिल्ली सरकारको फोन करते हैं।" अिस तरह दिन बीतने लगे। आखिर ११ फरवरीको बापूजीने जिस बारेमें सरकारको अेक कड़ा पत्र लिखा, लेकिन अुस पत्रके डाकमें जानेसे पहले खबर मिल गअी कि दिल्ली सरकारने डॉक्टर, हकीम, जिस किसीको भी बुलाना हो अुसे बुलानेकी अिजाजत देने न देनेकी बात जेलके अफसरों पर छोड़ दी है। बापूजीने तुरन्त पूनाके किसी वैद्यको बुलानेके लिअे कहा। शाम तक जोशी नामके अेक वैद्य आ गये। वे कुछ दवा दे गये। अुनकी सूचना थी कि अुनकी दवाके साथ दूसरी कोअी दवा न दी जाय।

दूसरे दिन लाहौरके वैद्यराज पंडित शिवशर्माजी आ पहुंचे, और अुनकी दवा शुरू हुअी। रात बा को कुछ बेचैनी-सी होने लगी। वैद्यजीकी दवाके साथ दूसरी कोअी चीज नहीं दी जा सकती थी, अिसलिअे [illegible]

सबने समझाया "बा, वैद्यजीकी दवा शुरू की है, तो दो-चार दिन अुनकी आजमाअिश तो करनी चाहिये न?" वैद्यजीने भी फोन पर बा से दवा लेनेकी प्रार्थना की। आखिर बा मान गअी। अुन्होंने वैद्यजीकी दवा चालू रखी।

दूसरे दिन बा की तबीयत अितनी अच्छी मालूम हुअी कि शामको जब बापूजी घूमने गये, बा अपनी पहियेदार कुर्सीमें बैठकर सारे बरामदेमें घूमी, और फिर 'बालकृष्ण' के पास पहुची। बापूजीने नीचेसे देखा तो अूपर आ गये और दरवाजे पर खडे होकर देखने लगे। बा ध्यानमें लीन होकर प्रार्थना कर रही थीं। थोडी देरमें आख खोली, तो बापूजीको देखकर शरमा गअीं। हसते-हसते बोलीं "आप घूमने जाअिये। यहा क्या काम है?" बापू हस दिये और फिर घूमने चले गये। हम सब बहुत खुश हुअे। आशाकी किरणें दिखाअी देने लगी। हममें से हरअेकने महसूस किया कि अेक दिनकी दवासे अितना फायदा नजर आता है, यह बहुत खुशीकी बात है। आयुर्वेदका यह अेक चमत्कार है। लेकिन रातमें फिर बेचैनी शुरू हो गअी। अेक बजे तक नीद नहीं आअी। अिसलिअे फिर सुपरिण्टेण्डेण्ट साहबको जगाया। अुन्होंने फोन पर वैद्यजीसे बात की। वैद्यजी आये। अेक गोली दे गये और फिर बा को नींद आ गअी।

बा की हालत अितनी नाजुक थी कि जिनका अिलाज चल रहा था, अुन्हें रात अुनके पास ही रहना चाहिये था। मगर सरकार वैद्यजीको रात महलमें रहनेकी अिजाजत नहीं दे रही थी। आखिर वैद्यजीने कहा - "मैं बाहर दरवाजे पर मोटरमें सो रहूगा, ताकि जब जरूरत पडे तुरत आ सकू।" सब पर अुनकी अिस कर्तव्य-परायणताकी गहरी छाप पडी। तीन दिन तक वैद्य शिवशर्माजी आगाखान महलके दरवाजेके बाहर मोटरमें सोये। तो भी जब-जब अुन्हें बुलानेकी जरूरत पडती, पहले अेक सिपाहीको जगाना पडता, सिपाही जमादारको जगाता, जमादार सुपरिण्टेण्डेण्ट साहबसे चाबी लेकर बाहर वैद्यजीको बुलाने जाता और फिर सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब वैद्यजीको लेकर भीतर आते। जब तक वैद्यजी अन्दर बा के पास रहते, तब तक सुपरिण्टेण्डेण्ट अुनके साथ रहते। बादमें अुन्हें बाहर पहुचाकर खुद सोने जाते। यह सब बापूजीको बहुत अखरता

था। १६ फरवरीके दिन मोटरमें वैद्यजीकी तीसरी रात थी। अुस रात करीब १२॥ बजे अुन्हें बुलाना पडा। १॥ बजेके करीब वे वापस मोटरमें सोने गये। बापू अपनी खटियामें पडे-पडे यह सब देख रहे थे। रात दो बजे अुठकर अुन्होंने अधिकारियोंको पत्र लिखा "वैद्यजीको महलमें सोनेकी अिजाजत मिलनी ही चाहिये। अुन्हें यह बिलकुल पसन्द नही कि अिस तरह हर रोज अितने आदमियोंको जागना पडे। अगर कल रात तक, यानी १७ तारीखकी रात तक, अिजाजत नही मिली, तो वे वैद्यजीकी दवा बन्द कर देंगे। डॉक्टरोंकी तो बन्द हो ही चुकी थी, चुनाचे बीमार बिना अिलाजके पडा रहेगा।"

पत्रका असर हुआ। १७ तारीखको वैद्यजीको महलमें सोनेकी अिजाजत मिल गयी। वैद्यजीने रातमें दो-तीन बार बा को देखा। नींदकी दवा दी और रात दूसरे दिनोंसे अच्छी बीती।

१८ फरवरीको फिर बेचैनी शुरू हुअी। वैद्यजी दिनभर शहरसे नअी-नअी दवाअियां ढूंढकर लाते और देते रहे, मगर बा बेचैनीकी वजहसे सारी रात सो नही सकी। वैद्यजीकी दवासे दस्त तो हुआ, मगर पेशाब नही अुतरा। रात थोडा बुखार भी था।

सुबह प्रार्थनाके बाद वैद्यजीने बापूजीसे कहा "मुझसे जो हो सकता था, मैं सब कर चुका हूं। मगर बा की हालत सुधर नहीं रही है, बिगडती ही जाती है। अैसी हालतमें मैं समझता हूं कि डॉक्टरोंको अपना अिलाज आजमानेका मौका मिलना चाहिये।" अगले दिन बापूजीने मुझसे कहा "कल तक वैद्यजीकी दवासे फायदा न हुआ, तो शायद वे चले जायंगे। अुसके बाद केस तुम्हारे हाथमें आये, तो मेरी वृत्ति तो यह है कि दवा बन्द कर दी जाय। मगर यह तभी हो सकता है कि जब तुम लोग मेरी बातको दिलसे समझो और स्वीकार करो।" लेकिन हम लोगोंके लिअे यह स्वीकार करना जरा कठिन था। सुबह डॉ० गिल्डरने और मैंने बा की जांच की और अिलाज तय किया। दोपहरमें पेशाब लानेके लिअे ½ सी० सी० 'सॅलिर्गन' का अिंजेक्शन दिया। अिस आजमाअिशी खुराकसे भी शामको बा के करीब ५ औंस पेशाब अुतरा। हम सब खुश हो गये। तीन-चार दिनके बाद अितना पेशाब हुआ था।

वैद्यजी कहने लगे कि अिंजेक्शनोंसे पेशाब आता रहे, तो अेक दफा फिर मुझे मेरी दवा आजमाने दीजिये।

मगर दूसरे दिन १९ फरवरीको 'सॅलिर्गन' की पूरी मात्राका अिंजेक्शन दे देने पर भी कोअी खास असर नहीं हुआ। फेफडोंमें निमो-नियाके चिह्न थे। अुससे लहूका दबाव और भी गिर गया था। अैसी हालतमें बेचारे गुर्दे क्या काम करते? निमोनियाके लिअे अधिकारियोंसे पेनिसिलिन मगवानेको कहा गया।

१७ फरवरीको दोपहरके वक्त हरिलालभाअी आये थे। बा अुन्हें देखकर बहुत खुश हुअी। बादमें पता चला कि अुनको सिर्फ अेक ही बार आनेकी अिजाजत मिली थी। यह सुनकर बा नाराज हो गअी। बोली "यह क्या बात है? देवदासको तो हर रोज आने देते हैं, और हरिलाल अेक ही बार आ सकता है? भडारी मेरे सामने आयें, तो मैं अुनसे कहू कि दो भाअियोंमें अितना फर्क क्यों करते हो? यह बेचारा गरीब है तो क्या अपनी माँसे भी नहीं मिल सकता?"

बापूजीने अुन्हें शांत किया और कहा "मैं अिसके लिअे अिजाजत मगवा लूगा।" दूसरे दिन सरकारकी ओरसे तो अिजाजत आ गअी, मगर हरिलालभाअीका कहीं पता न चला। बा हर रोज पूछती और जवाब मिलता कि अुनका कहीं पता नहीं है। जब बा की हालत गभीर हो गअी, तो सरकारने अुनके दोनों लडकोंको खबर भेजी। हमें सदेशा मिला कि देवदास और रामदासको खबर दे दी गअी है, और हरिलालको सरकार ढूढ रही है।

४१

रामनाम ही दवा है

१९ को वा रातभर 'ऑक्सीजन' की नली नाकमें डालकर पडी रही। अच्छी तरह सोअी। लेकिन २० फरवरीको सुवह ५ वजेसे वेचैनी शुरू हो गअी। मुहसे वार-वार 'राम, हे राम' पुकारती थी। सॅलिर्गेनका पेशाव पर कोअी असर न होनेसे वातावरणमें बडी निराशा छा गअी थी। तिस पर वा की वेचैनी सवको वेचैन वना रही थी। वापूजी आकर बा की खाट पर वैठे। अनके कन्धे पर सिर रखकर वा कुछ शान्त हुअी। अिसी तरह वैठे-वैठे वापूजीने सुवहकी प्रार्थना की। वारी-वारीसे सब लोग वा के पास वैठ कर रामधुन और भजन गाते थे। जव कोअी गानेवाला न होता, तो ग्रामोफान पर रेकार्ड वजाने लगते थे। 'श्रीराम भजो दु:खमें सुखमें' यह भजन वा को वहुत प्रिय था। अिसे सुनते समय वे क्षणभरके लिअे अपनी वेदना भूल जाती थी। ९। वजे 'क्लोराल' और 'ब्रोमाअिड' की अेक खुराक दी। अुसके वाद वा करीव डेढ घटा सोअी। अुठी तो तवीयत अच्छी थी। वैठकर अच्छी तरह दतौन किया, मसूडोको जोरसे घिसा, नाकमें पानी चढाया। सवको आश्चर्य होने लगा कि बा में अितनी ताकत कहासे आ गअी? फिर वे चाय पीकर आरामसे लेट गअी। दवा लेनेसे अिनकार कर दिया। दिनमें अेक वजे फिर वेचैनी शुरू हुअी। 'राम, हे राम' पुकारने लगी। अुनकी आवाज अितनी करुण थी कि सुनी नही जाती थी। जव वे वोलती थी तब अैसा लगता था, मानो गले पर छुरी चलते समय वकरी मिमिया रही हो! गीतापाठ, रामधुन, भजन वगैराका सिलसिला तो जारी ही था। अिसके कारण वीच-वीचमें कुछ देरके लिअे वा थोडी शान्त हो जाती थी।

वापूजी दिनमें भी काफी देर तक वा की खाट पर वैठने लगे। अुनके बठनेसे वा को थोडी शान्ति मिलती थी। वापूजीने हमसे कहा 'अव वा की दवा सिर्फ रामनाम ही है। दूसरे सव अिलाज छोड दो। मेरी वृत्ति तो यह है कि शहद और पानीके सिवा दूसरी कोअी खुराक भी मत दो। बा खुद मागे तो वात दूसरी है। मै दवामें नही मानता।

अपने लड़कोंकी सख्त बीमारियोंमें भी मैंने अुन्हें दवा नहीं दी। लेकि
बा के लिअे मैंने वह नियम नहीं रखा। आज तो खुद बा को
दवासे अरुचि हो गअी है। रामनामके सिवा अुसे चैन नहीं पड़ता
यह दृश्य करुण है। किन्तु मुझे बहुत प्रिय है। रामके सिवा मैंने आ
अुसके मुंहसे कुछ सुना ही नहीं। अैसे समय तो मैं दवाको छोड़ ही दू
अीश्वरको जिलाना हो, जिलाये, ले जाना हो, ले जाये। अुसे बचा
होगा तो वह यों ही बचा लेगा, नहीं तो मैं बा को जाने दूंगा।"

शामको बा ने अेनिमा मांगा। बापूजीने टालना चाहा. "अ
रामनाम ही तेरी दवा है।" मगर बा नहीं मानी। मैंने बापूजीसे कहा
"मांगती हैं तो ले लेने दीजिये न। अन्त-अन्तमें जितना संतोष दे स
दें।" बापू मान गये। अेनिमा लेनेसे मल खूब निकला। अुसके बाद
दो घंटे आरामसे सोअी। अुनकी हालत अितनी अच्छी लगने लगी कि मैं
बापूजीसे कहा· "बापूजी, दवा देनेकी अिजाजत दीजिये न? जब त
प्राण हैं, प्रयत्न क्यों न किया जाय?" लेकिन बापू मेरी क्यों सुनने लगे

४२

सबकी मां

रातको डॉ० दीनशा मेहताको भी वहीं सोनेकी अिजाजत मिली
जबसे स्थिति गंभीर हुअी थी, मैं आधीसे भी ज्यादा रात तक बा के पा
बैठती थी। कनु, प्रभावती, मनु, भाभी, मनी बारी-बारीमें बैठते थे। हमेश
अेक साथ दो आदमियोंके बैठनेकी जरूरत रहती थी। जब मैं न होती
तब डॉ० गिल्डर अपने बिस्तरसे अुठकर बीच-बीचमें बा को देख जा
थे। अुनकी तबीयत बहुत अच्छी नहीं थी, अिसलिअे अुनको ज्यादा तकलीफ
देना ठीक नहीं मालूम होता था। लेकिन डॉक्टर दीनशाको जगानेमें
संकोच रखनेकी जरूरत न थी। अिसलिअे अुनको बा के पास बैठाकर
मैं रात दो बजे सोने चली गअी। सुबह अुठने पर पता चला कि चार बजेके
करीब बा की नाड़ी बहुत खराब हो गअी थी, और डॉ० गिल्डरको
जगाया गया था। बादमें जब मैं बा के पास पहुंची, तो देखा कि डॉ०

गिल्डर वा के पास कुर्सी लगाये वैठे थे। अुस समय वा की नाडी ठीक थी। वा रेंडीका तेल माग रही थी, जिसका जिक्र पहले आ चुका है।* डॉक्टर साहवने कहा "वा, रेंडीके तेलसे कमजोरी वढेगी। वह नही लेना चाहिये।" वा ने कहा "वढने दीजिये न! मुझे तो अव मसानमें ही जाना है न?"

डॉक्टर साहवने कहा "वा, आप अैसा क्यो कहती है? अभी तो आपके लडके आनेवाले है, आज देवदास आयेंगे, रामदास आयेंगे। अिन सवसे मिलना है न?"

वा मुस्कराने लगी। फिर गभीर होकर कहने लगी "अुन्हें क्यो वुलाते है? आप सव मेरे लडके ही है न? मर जाअू तो जला देना। रामदासको तो आनेसे रोक ही देना। किराया वहुत लगता है और गाडियोमें भीड वेहद रहती है।"

वा हर रोज हरिलालभाअीके वारेमें पूछा करती। सव अुनकी तलाशमें भी रहते थे, मगर वे कही मिलते न थे। तारीख वीसको स्वामी आनन्दने अुन्हें ढूढ निकाला। हरिलालभाअीने फोन पर सुपरिण्टेण्डेण्ट साहवसे कहा कि वे दिनमें आना चाहते थे मगर सो गये थे अिसलिअे आ न सके। हम लोग समझ गये कि अिस तरह सो जानेका मतलव क्या था। वा को गुस्सा आ गया। वापूने अुन्हें समझाकर शान्त किया। २१ फरवरीको दुपहरमें हरिलालभाअी आये। अुनकी हालत देखकर वा वहुत दु खी हुअी, और मारे दु खके अपना सिर पीटने लगी। हरिलालभाअीको अुनके सामनेसे हटा दिया गया।

अितने श्रमसे वा की छातीमें दर्द होने लगा था। सुवह वा ने रेंडीका तेल लेनेका आग्रह किया था। अुस परसे मैंने वापूजीसे पूछा "क्या अैसी हालतमें आप वा को दूसरी दवा देनेकी अिजाजत न देंगे?" वापूजीने कहा "वा ने रेंडीका तेल आग्रहपूर्वक लिया है, अिसलिअे मैं विरोध कर ही नही सकता। जो मुनासिव समझो दो।" अिस पर मैंने वा को हृदयके रोगकी दवा दी और रामधुन शुरू की। वा शान्त होकर सुनने लगी।

---

* देखिये पृष्ठ १७९ पर।

४३
बापूजीकी पत्नीभक्ति

बापू रातमें कअी बार बा के पास आते थे। बा अुन्हें ज्यादा देर तक बैठने नही देती थी। दिनमें भी बापू काफी देर तक बा की खाट पर बैठते थे। बा दूसरा सहारा लेनेके बदले हम लोगोंमें से किसीका सहारा लेकर बैठना ज्यादा पसन्द करती थीं। जब बापूजी अुनके पास बैठते, तो अुनका सहारा लेती। डॉ० गिल्डरने मुझसे कहा "जरा ध्यान रखना चाहिये। निमोनियाके जन्तु काफी जहरीले होते हैं। बापूका मुह बा के मुहके नजदीक रहता है। यह अच्छा नही है। अुन्हें बा के पास जरा कम ही बैठने देना अच्छा होगा।" लेकिन अिस बारेमें बापूजीसे कुछ कहना आसान न था।

कमजोरी बढ जानेके कारण बा जब-जब भी थूकती थी, तब-तब पास बैठी नर्सको अुनका मुह पोछना पडता था। हम लोग कपडेके टुकड़ेसे मुह पोछकर अुसे फेंक देते थे। बा की मृत्युसे तीन-चार दिन पहले बापूजी रातको अुनके पास आये। अुस समय अुन्होंने हमसे कुछ छोटे-छोटे नये रूमाल बना लेनेको कहा। दूसरे दिन मैंने और मनुने चार रूमाल बनाये। बापूजी जब रातमें या दिनमें बा के पाससे गुजरते, तो मैला रूमाल अुठाकर धोनेको ले जाते। पहले दिन मैंने कहा "बापूजी, आप रहने दें। हम धो लेंगे।" बापूने जवाब दिया "मुझे करने दो। मुझे यह सब करना अच्छा लगता है।" अुस दिनके बाद फिर मैंने कभी बापूजीसे बा की सेवाका काम नही मागा।

अिसी तरह अेक दिन दुपहरके खानेके बाद बापूजी बा के पास जाकर बैठ गये। बा सोनेकी तैयारीमें थी। अगर वे बापूजीका सहारा लेकर सो जाती हैं, तो फिर जब तक जागें नही बापू अुठ नहीं सकते थे। बापूजीका अपना भी वही सोनेका समय था। वे काफी थके हुअे भी थे। मैंने कहा "बापूजी, अभी आप मुझे बा के पास बैठने दें। सो लेनेके बाद आप आ जाअिये।" बापूजी चले तो गये। मगर अपनी गद्दी पर जाकर कहने लगे· "मुझे थोडी देर और बैठने दिया होता तो क्या बिगडता?"

मैंने बताया कि क्यों मुझे अुनको अुस समय बा के पाससे अुठनेकी सूचना करनी पड़ी थी। लेकिन बात खुद मुझको ही अखरी। भले कुछ दिनके लिअे बापूका आराम कम हो, लेकिन जिस कामसे अुनके मनको शान्ति मिलती है, अुसमें मैं बाधा क्यों डालू? बा का यह अन्तिम समय था। अैसे समय अुन्हें चाहे निमोनिया हो या और कुछ, किसकी हिम्मत चल सकती थी कि वह बापूसे कहे कि वे बा के नजदीक कम बैठा करें? अिस पर डॉ० गिल्डर बोले "बापू पास चाहे बैठें, मगर अपना मुह बा के मुहके पास न रखें।" लेकिन अुस वक्त तो अुनसे अितना कहनेकी भी किसीकी हिम्मत न थी। बापू तो छूत वगैराको बहुत मानते भी नही। अिसलिअे चुप रहना ही मुनासिब समझा। डॉ० साहब भी समझ गये। बोले "हा, ठीक है। अेक साथ ६२ वर्ष बितानेके बाद आज जुदाअीकी घड़ी सामने देखते हुअे बापू किस तरह बा से दूर रह सकते है, और कैसे हम अिस विषयमें अुनसे कुछ कह सकते हैं?" कहते-कहते अुनकी आखें सजल हो आयी।

अपनी अन्तिम बीमारीके शुरू होनेसे कअी दिन पहले बा को पाखाने और पेशाबमें जलन होती थी। अुन्होंने बापूजीसे कहा "मैं तो पानीका अिलाज करूगी।" बापूने मजूर किया और दूसरे दिनसे अुन्हें ठण्डा और गरम 'टब-बाथ' देने लगे। अिसमें बापूजीका करीब अेक घटा चला जाता था। काफी थक भी जाते थे। अेक दिन बा ने कहा "आप जाअिये। सुशीला मुझे बाथ दे देगी। आपको बहुत काम है।" बापू बोले "तुम अिसकी फिकर न करो।" और वे बाथ देते रहे। अेक दिन मैंने भी कहा "बापूजी, आपको वक्तकी अितनी ज्यादा तगी रहती है, और मैं तो आप जब कहें तभी बा की सेवा करनेके लिअे तैयार ही रहती हू। अिसलिअे आप जब चाहें तभी बाथ वगैरा देनेका अेक घटा बचा सकते हैं।" बापूजीने अिस तरह अेक घटा बचानेसे अिनकार किया। बोले "तू बा की सेवा करनेको तैयार है, सो तो मैं जानता हू। लेकिन अुत्तरावस्थामें अीश्वरने मुझे अिस तरह बा की सेवा करनेका यह जो अवसर दिया है, अुसे मैं अमूल्य मानता हू। जब तक बा मेरी सेवा लेगी, मैं खुशी-खुशी अुसके लिअे अेक घटा निकालता रहूगा।"

बा की मृत्युके दो-तीन दिन पहले ही बापू अिस बातकी चर्चा कर रहे थे कि बा किसकी गोदमें आखिरी सास लेगी। अुन्होंने कहा था "किस भाग्यशालीकी सेवा अितनी अेकनिष्ठ होगी कि बा अुसकी गोदमें देह छोडे? अिसे तो अेक भगवान ही जानता है।" और यह भाग्य अुनके सिवा दूसरे किसका हो सकता था?

४४

अंतिम रात

शामको ६॥ बजेके करीब देवदासभाओी, मनु (हरिलालभाओीकी लडकी) और सतोकबहन आ पहुची। बा अुन्हें देखकर रो पडी। हरिलालभाओी पर अुनका रोष अभी तक बना हुआ था। देवदासभाओीको देखकर बोली "अब तू सबको सभालना। बापूजी तो साधु हैं। अुन्हें सारी दुनियाकी चिन्ता है। हरिलालको तो तू जानता ही है। अिसलिअे अब परिवार तुझीको सभालना है।"

मनुने बा को भजन सुनाये। बा की अिच्छा थी कि सतोकबहन और मनु रात अुनके पास रहें। मगर सरकारने अिजाजत नही दी। देवदासभाओीको रहनेकी अिजाजत थी। वे अिन लोगोको छोडने बाहर गये। बा मेरी गोदमें सो गअी। मगर आजकी नींदसे मुझे खुशी नहीं थी। पेशाब न अुतरनेके कारण अब नशा-सा रहने लगा था। यह नींद ताजगी लानेवाली नीद न थी। रात साडे ग्यारह बजे मैं अुठी। प्रभावतीबहन बा के पास आकर बैठीं। बा ने अुनसे कहा "चलो, हम दोनो सो जाय। अितनेमें अुन्हें जोरकी खासी आओी। मैं दवाकी खुराक लेकर बा के पास पहुची। बा ने दवा तो नहीं ली, लेकिन मुझे खाटके पाससे बदबू आओी। बत्ती जलाकर देखा तो खाटमें दस्त हो गया था। बा को अिसका पता भी न था। मुझे लगा, यह जानेकी तैयारी है। खाटके कपडे बदले और बा को लिटाया। अितनेमें देवदासभाओी आ गये। व खडे पैरों बा की चाकरीमें लग गये। मैं बत्तीके पास जमीन पर बैठकर बा के स्वास्थ्यकी डायरी लिखने लगी। देवदासभाओी धीरे-

धीरे वा का सिर दवा रहे थे। अुन्होंने समझा कि वा सो गअी है, सो दवाना वन्द कर दिया। वा ने मुझे पुकारा "सुशीला, तू भी थक गअी क्या?" मैंने कहा "वा, मैं क्यों थकने लगी?" और मैंने सिर दवाना शुरू कर दिया। वा के सिरमें दर्द हो रहा था। चक्कर आ रहे थे। विचारोंमें कुछ अस्पष्टता आ गअी थी। 'यूरीमिया' के चिह्न प्रकट होने लगे थे। दो वजे वा सो गअी। पौने तीन वजे मैं सोनेके लिअे अुठी। देवदासभाअी पाच वजे तक वा के पास खडे रहे थे। अुनके चेहरेसे करुणा और प्रेम टपक रहा था। अिस आशकासे कि मा जानेकी तैयारीमें है, अुनका दिल वालककी तरह रो रहा था। वहा खडे हुअे वे माके प्रति पुत्रके प्रेमकी मूर्ति-से दिखाअी पडते थे।

४५

२२ फरवरी, १९४४

तारीख २२ को सुवह ७ वजे मैं अुठकर भीतर आअी। मुह-हाथ धो रही थी कि वा ने पुकारा "सुशीला!"

मैंने पास जाकर पूछा "क्या है वा?"

वा वोली "सुशीला, मुझे घरमें ले चल। मेरी सार-सभाल कर।"

मैंने अुनकी खाटके पास ही लटकता हुआ 'हे राम' का चित्र अुन्हें दिखाया और कहा "वा, आप तो घर ही में हैं। यह देखिये, यह रहा आपका प्यारा चित्र!"

कुछ देर वाद वा फिर वोली "मुझे घरमें ले चल। वापूजीके कमरेमें ले चल।"

मैंने कहा "लेकिन वा आप तो वापूजीके कमरेमें ही हैं।" फिर मुझे खयाल आया कि शायद वा वापूजीको वुलाना चाहती हैं। वे पासके कमरेमें नाश्ता कर रहे थे। मैंने अुन्हें कहलवाया कि घूमने जानेसे पहले जरा वा के पास हो जाय।

वा मेरी गोदमें पडी थी। अेकाअेक वोल अुठी "सुशीला, कहा जायगे? क्या मर जायगे?" पहले जव कभी वा अैसी वातें करती, तो

मै अुनसे कहती थी "बा, आप अैसा क्यो कहती हैं? हम सब साथ ही घर जायगे।" लेकिन आज अैसा कुछ कहनेकी हिम्मत न हुअी। मैंने कहा . "बा, अेक दिन तो हम सबको मरना ही है न! आगे पीछे सबको जाना है। अिसमें है क्या?" बा ने सिर हिलाया, मानो 'हा' कहती हो। फिर शान्त होकर आखें बन्द कर ली और मेरे सहारे आधी लेट-सी गअी।

कुछ देर बाद बापूजी आ पहुचे। थोडी देर बा के पास खडे रहे और फिर बोले "अब मै घूमने जाअू?" हमेशा जब बापू बा के पास बैठना चाहते थे तो बा कहती थी, 'नही, आप घूमने जाअिये' या कहती, 'सो जाअिये।' लेकिन आज बापूजीने घूमने जानेका पूछा तो बा ने मना किया। बापू अुनके पास खाट पर बैठ गये। बा अुनकी छाती पर सिर रखे, अुनका सहारा लिये, आख बन्द करके पडी थी। अुस समय दोनोंके चेहरे पर अपूर्व शान्ति और सतोष दिखाअी दे रहा था। वह दृश्य अितना पवित्र और अितना दिव्य था कि हम लोग दूरसे ही देखकर दबे पाव पीछे हट गये। बापूजी दस बजे तक वहीं बैठे रहे। बीच-बीचमें बा को रामनामका सहारा लेनेके लिअे कहते थे। अुन्हें खासी वगैरा आती, तो अुनको सहलाते थे।

भाअी, मैं और देवदासभाअी खानेके कमरेमें बैठे बातें कर रहे थे। देवदासभाअीने कहा कि अेक सरकारी अफसरने अुन्हें साफ-साफ बताया था कि सरकार बा को क्यो नही छोड रही है। अुसने कहा "अगर हम अुन्हें छोडते हैं और बाहर आने पर अुनकी हालत ज्यादा गभीर होती है, तो लोग तुम्हारे पिताजीको छोडनेकी माग करेंगे और अुस वक्त हमने अुन्हें न छोडा तो हमें राक्षस कहेंगे।"

दस बजे बा ने बापूजीको जानेकी अिजाजत दी। अुनकी जगह मैं बैठ गअी। अकेली बैठी थी। मनमें खयाल आया "बा ने अपनी जाने-अनजानेकी सब भूलोंके लिअे क्षमा तो माग ली।" मगर बोलनेकी कोशिश करने पर गला रुध गया और मुहमें शब्द न निकला। सुबह सात बजे बा ने कहा था 'क्या मर जायगे?' अुन्हें फिरसे अिस विचारकी याद दिलाना भी मुझे ठीक नहीं मालूम हुआ। बीच-बीचमें बा कुछ

गायब हो जाती थी। आज पहला ही दिन था कि अुन्होंने दतौन वगैरा नहीं किया था। मैंने 'बोरो ग्लिसरीन' से मुह साफ करनेके लिअे पूछा, तो अुन्होंने मना कर दिया।

पेनिसिलिन कलकत्तेसे हवाअी जहाजमें भेजी गअी थी। कर्नल शाह और कर्नल भण्डारी खबर लाये कि पेनिसिलिन आ गअी है। बापूजीने तो सब दवा ही बन्द करवा रखी थी। बा को भी दवा लेनेकी कोअी अिच्छा नहीं थी। अैसी हालतमें सवाल यह था कि किया क्या जाय? देवदासभाअी चाहते थे कि पेनिसिलिनका अुपयोग किया जाय। डॉ० गिल्डरसे और मुझसे अिस बारेमें बातें करके वे बाहर किसी मिलिटरी डॉक्टरसे चर्चा करने जा रहे थे। डॉक्टर दीनशा मेहता अुनके साथ जानेवाले थे। अितनेमें बा ने पुकारा "मेहता कहा है? मेरी मालिश वगैरा करें!" डॉ० दीनशा अभी सीढी पर ही थे। अुन्हें बुलाया गया। अैसी हालतमें बा की मालिश करनेका कोअी अुत्साह अुनमें न था, मगर बा का आग्रह देखकर १५ मिनिट तक पाअुडरसे थोडी मालिश कर दी और फिर चले गये। बा आधी बेहोशीकी हालतमें मेरी गोदमें पडी थी। कुछ देरके बाद फिर बोली "मेहता कहा है? वे सब करेंगे।" अपने अंतिम समयमें बा का अिस तरह डॉ० मेहताको याद करना, अुनके प्रति बा की श्रद्धाका अेक प्रमाण था। मैंने गीले कपडेसे बा का मुह वगैरा साफ कर दिया। अितनेमें कर्नल भण्डारी आये। देवदासभाअीने बा का फोटो लेनेकी अिजाजत मांगी थी। कर्नल भण्डारी यह जानने आये थे कि अिस बारेमें बापूजीकी क्या अिच्छा थी। बापूजीने कहा "मुझे तो अिन चीजोंकी परवाह नहीं है। मगर लडके और रिश्तेदार वगैरा चाहते हैं, तो सरकारको अिजाजत देनी चाहिये।"

प्रभावतीबहनको बा के पास बैठाकर मैं स्नान करने गअी। मेरी गैरहाजिरीमें डॉक्टर गिल्डर बा के पास थे। बा की नाडी बहुत अनियमित चल रही थी। कभी बिलकुल गायब हो जाती और कभी फिर चलने लगती। कल रातसे बीच-बीचमें नाडीकी यही हालत हो रही थी। सबको लगता था कि अब बात दिनोंकी नहीं, घडीकी ही है। बापूजीने मुझसे कहा था "तुझे ज्यादा नहीं तो कम-से-कम १५ मिनट तो घूम

ही आना चाहिये।" अिसलिअे नहानेके बाद मैं १५ मिनट घूमने निकल गअी। घूमते समय मैं प्रार्थना कर रही थी.

"मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्॥"

आज हृदयसे बार-बार यही श्लोक निकल रहा था। क्या वह माधव अब भी बा को बचा नहीं सकता? लेकिन मनुष्यकी अपेक्षा भगवान ही अधिक अच्छी तरह जानता है कि मनुष्यके लिअे क्या अच्छा है और क्या नही। और वह वैसा ही करता है। फिर बा को किसी-न-किसी रोज तो जाना ही है न? स्वतन्त्रताके अहिंसक युद्धमें जेलके अन्दर मृत्यु पाना और स्वतंत्रताकी वेदी पर बलि होकर शहीद बनना विरलोंके ही नसीबमें होता है। बा की आजीवन तपस्याके बाद अुन्हें यह सौभाग्य प्राप्त न होता तो और किसे होता? भगवानने अुनको जिस महान पदके योग्य पाया था, अुसे वह मेरे समान मोहग्रस्त व्यक्तिकी प्रार्थनाके कारण थोड़े ही बदल देनेवाला था?

अिधर कअी दिनोंसे बापू अपनी खुराकमें सिर्फ प्रवाही पदार्थ (पतली चीजें) ही लेते थे। अुन पर बा की बीमारीका अितना बोझ था कि खाना कम किये बिना वे अपनी तबीयतको ठीक नहीं रख सकते थे। दूसरे, अुन दिनों खानेमें आध-पौन घंटा खर्च करना अुन्हें अखरता था। स्नानके बाद १० मिनटमें खाना पूरा करके वे बा के पास आ बैठते थे। अेक दफा बैठनेके बाद फिर अुठनेकी अिच्छा नहीं होती थी। अिसलिअे आम तौर पर अपने सब कामोंसे निपटकर ही वे बा के पास आते थे। जब मैं पास आयी तो बापूजी बा के पास बैठे थे। अेकाअेक बा खाट पर सीधी लेट गयीं। दमेकी वजहसे अिधर महीनों हुअे, वे चित सो नहीं पाती थीं। पीठकी तरफ मनुष्यका या खटियाका सहारा लेकर बैठती थीं, या सामने टेबल पर सिर रखकर पड़ जाती थीं। आज अुन्हें अचानक अिस तरह लेटते देखकर सब चौंक अुठे। देवदासभाअीको संदेशा भेजा गया। वे लेडी ठाकरसीके घर सोने जानेकी तैयारी कर रहे थे। खबर पाते ही मनुके साथ जा पहुंचे। डॉक्टर दीनशा मेहता भी आ गये। बापूजीने बा से पूछा "रामधुन या भजन सुनोगी?" बा ने अिनकार किया।

वादमें वापूजीने पासके कमरेमें धीमे स्वरसे गीतापाठ शुरू करवाया। कनु, देवदासभाअी, प्यारेलालजी वगैरा सब वारी-वारीसे गीतापाठ करने लगे, ताकि वा के कानोमें गीताजीकी ध्वनि वनी रहे।

रातसे ही वा को कुछ निगलनेमें कष्ट होता था। पानी पीनेकी भी अिच्छा नही होती थी। दुपहरको देवदासभाअी गगाजल लाये। अुसमें तुलसीके टुकडे डाले। बापूजीने कहा "देवदास गगाजल लाया है।" वा ने मुह खोल दिया। वापूजीने चम्मच भरकर डाला। वा झटसे पी गअी। अुन्होने फिर मुह खोला। बापूने अेक चम्मच और डाला। फिर वोले "अब थोडी देर बाद लेना।" वा शान्तिसे आखें बन्द करके लेट गअी। वेचैनीमें वे 'हे गगाजी' भी पुकारती थी। गगाजलका पान करके अुन्हें अपूर्व शान्ति मिली थी। दूसरे रिश्तेदारोको वा के पास वैठनेका मौका देनेके लिअे वापूजी वा के पाससे अुठकर नजदीक ही अपनी गादी पर जा वैठे। थोडी देरमें सतोकवहन, केशुभाअी और रामीवहन (हरिलालभाअीकी वडी लडकी) आ पहुची। न जाने कहासे वा में शक्ति आ गअी। वे अुठकर अिन सबसे वातें करने लगी। सतोकवहनसे कहने लगी "देवदासने मेरे लिअे वहुत चक्कर खाये है, मेरी वहुत सेवा की है।" फिर देवदास-भाअीसे बोली "तूने मेरी वहुत सेवा की है। अब तू सबको सभालना और अपना कर्तव्य पूरा करना।" देवदासभाअीने कहा "वा, मैंने क्या सेवा की है? मै तो कल ही रातको आया हू। सेवा तो तुम्हारे अिन साथियोने की है।" किन्तु अतिम समयमें देवदासभाअीको देखकर वा परम सतुष्ट हुअी थी। अुनकी अेक रातकी सेवा वा के निकट सबसे ज्यादा मूल्यवान थी। देवदासभाअीने कहा "वा, रामदासभाअी आ रहे है।" वा बोली "क्या काम है?" रामदासभाअीको तकलीफ देना अुन्हें वहुत अखरता था।

वा वापूजीकी ओर देखकर कहने लगी "मेरे मरनेका दुःख क्या? मेरी मौत पर तो लड्डू झडने चाहिये।" अिसके बाद आखें वन्द करके और हाथ जोडकर वे अीश्वरसे प्रार्थना करने लगी "हे भगवन्, ढोरकी तरह पेट भर-भरकर खाया है। माफ करना। अब तो तेरी ही भक्ति चाहिये। तेरा ही प्रेम चाहिये।" अुनके चेहरे पर अपूर्व शाति थी।

[illegible] अिकट्ठा करके वे

अुन्होंने अुस समय सब मोह-माया छोड दी थी। अुनकी वृत्ति पूर्णतया सात्त्विक हो गअी थी।

कनुने बा के कुछ फोटो लिये। सब चाहते थे कि बा के साथ बैठे हुअे बापूजीका फोटो लिया जा सके तो अच्छा हो। मुझसे कहा गया कि मैं बापूको बा के पास बैठाअू। मेरे सामने सवाल था कि मैं अुनसे कैसे कहू। बापूजीको फोटोसे चिढ है। अचानक कोअी अुनका फोटो ले ले तो बात अलग है। मगर फोटोके लिअे वे कभी बैठते नही।

बापूजी आग्रह करते थे कि सबको थोडा-थोडा आराम लेना चाहिये। अिसकी बिना पर मैंने चार बजे अुनसे कहा "बापूजी, मैं थोडा आराम करने जाती हू। आप बा का 'चार्ज' लें।" कनुको आशा थी कि जब बापू 'चार्ज' लेकर बा के पास बैठेंगे तब वह फोटो ले लेगा। मगर बापूजीने कहा "चार्ज तो मैं लेता हू, पर यहीं बैठे बैठे। दूसरे सब बा के पास बैठे है, अुन्हें बैठने दो। बा मुझे बुलावेगी तब मैं अुसके पास चला जाअूगा।"

साढे पाच बजे कर्नल शाह और कर्नल भण्डारी पेनिसिलिन लाये। बापूजीसे पूछा। अुन्होंने कहा "डॉ० गिल्डर और सुशीला देना चाहें तो दीजिये।" डॉ० गिल्डर बापूजीके विचारोंको जानते थे। अिसलिअे वे पेनिसिलिन देनेसे झिझकते थे। देवदासभाअीसे बातें हुअी। दो सवाल सामने थे। अेक तो यह कि मृत्युशय्या पर पडी हुअी बा को अब अिंजे-क्शन देनेसे क्या फायदा? अीश्वर भरोसे पडी रहने दो और शान्तिसे जाने दो। यह था बापूजीका मत। अुसमें काफी सचाअी थी। दूसरा यह कि जब तक प्राण हैं, आशा क्यों छोडी जाय? प्रयत्न क्यों छोडा जाय? यह था साधारण, तटस्थ, डॉक्टरी मत। देवदासभाअी दूसरे मतके थे। डॉ० गिल्डरने अुनसे कहा "आप चाहते हैं तो हम बा को पेनिसि-लिन देनेको तैयार हैं।" अुन्होंने मुझे अिशारा किया और मैंने पिचकारी अुबालनेको रखी। अितनेमें बापूजीने मुझे देखा और पूछा "तुम लोगोंने क्या तय किया है?" मैंने कहा "पेनिसिलिन देंगे।" बापूने पूछा "तुम दोनों मानते हो कि देना चाहिये? अिससे फायदा होगा?" अिसका अुत्तर मैं 'हा' में कैसे दे सकती थी? मैंने कहा "आप डॉक्टर गिल्डरसे बात कर लें।"

बा की हालत कुछ अच्छी मालूम होती थी। शायद पेनिसिलिनसे फायदा हो, आशाकी अिस किरणसे मेरे मनका बोझ कुछ हलका हुआ। सुबहसे खाना नही खाया था। अिसलिअे मैं खाने गअी। करीब-करीब सभी खाने बैठे। बापू डॉ० गिल्डरको समझाकर देवदासभाअीको समझाने गये। डॉ० गिल्डरने मुझको कहा "बापूको पता न था कि कअी अिंजेक्शन देने होंगे। अब पता चला है तो पेनिसिलिन देनेसे मना किया है।" मैंने पिचकारी अुठाकर बन्द कर दी। मनमें थोडी निराशा हुअी। साथ ही अिस विचारसे थोडी शान्ति भी मिली कि अैसी हालतमें मुझे बा को सुअी नही टोचनी पडेगी।

बापू देवदासभाअीको समझा रहे थे "तू अीश्वर पर विश्वास क्यों नही रखता? मृत्युशय्या पर पडी माको भी दवा क्यों देना चाहता है?" वगैरा। अिस चर्चाके कारण अुन्हें घूमने जानेमें देर हो गअी। हर रोज वे ६॥ बजे नीचे घूमने चले जाते थे। अुस रोज करीब ७। बज रहे थे। बात पूरी करके वे नीचे जानेके लिअे तैयार होनेके गुसलखानेमें आये। अितनेमें बा बोली "बापूजी!"

अितनेमें बा के भाअी माधवदासजी आये। बा ने अुन्हें पहचाना। आँखें भर आयीं। पर बात नहीं कर सकीं। मैं अन्दर आयी। बा ने अन्त-अन्तमें अुठनेकी कोशिश की, किन्तु बापूजीने कहा "अब तुम पड़ी रहो।" बा ने बापूजीकी गोदमें सिर डाल दिया। अुनकी आँखें पथराने लगीं। अुन्होंने दो-चार हिचकियाँ लीं। गलेसे मौतके समयकी घरघराहट भरी आवाज निकलने लगी। मुंह खुल गया। दो-चार श्वास लिये, और बा की आत्मा अिस दुनियाके बन्धनसे मुक्त हो गयी। बापूने कहा था: 'बा किसकी गोदमें देह छोड़ेगी? वह सौभाग्य किसका होगा?' बापूजीके सिवा यह और किसका हो सकता था? अुस दिन अचानक घूमने जानेमें अुन्हें देर न हो गयी होती, तो वे अंतिम समयमें बा के पास पहुंच ही न पाते। लेकिन अीश्वर अुन्हें बा के प्रति अुनकी वफ़ादारी और सन्निष्ठाका फल देना क्योंकर भूलता?

बापूजीने बा के सिरके नीचेसे तकिये निकाल लिये। खाटको भी सीधा किया। मीराबहनने दोपहरसे ही खाटकी दिशा अुत्तर-दक्षिण कर दी थी। सब लोग रामधुन गाने लगे। मैं जड़की तरह खड़ी देख रही थी। डॉक्टर होते हुओ भी, और कअी मौतें देखनेके बाद भी, अैसी मृत्युको स्वस्थताके साथ देखना मैं अभी सीखी न थी।

बापूजीके हाथके सूतकी जिस साडीको बा ने अपनी अंतिम यात्रामें पहननेके लिअे संभाल कर रखा था अुस साडीमें अुसे लपेटा। लेडी ठाकरसीने गंगाजलमें भिगोअी हुअी अेक दूसरी साडी भेजी थी, वह बापूजीवाली साडीके अूपर डाली गअी। संतोकबहनने बापूजीके सूतकी बनी चूडियां बा को पहनाअी। गलेमें तुलसीकी कंठी डाली और माथे पर चन्दन और कुंकुमका लेप किया।

मनु और कनुने बापूजीवाले कमरेको, जहां बा ने प्राण छोडे थे, साफ किया। मीराबहनने शवके लिअे चूनेका अेक लंब-चौरस चौक पूरा और सिरकी तरफ सुन्दर ॐ और पैरोंके पास सुन्दर स्वस्तिक बनाया। बादमें शवको वहां लाकर रखा गया। मीराबहनने बा के बालोंमें फूल सजाये। बा के चेहरे पर मन्द मुसकानके साथ-साथ अपूर्व शान्ति थी। वे सोअी हुअी मालूम पडती थीं। सबने बैठकर प्रार्थना की। गीताजीका पारायण किया। डेढ घंटेमें यह सारी विधि पूरी हुअी।

शांतिकुमारभाअीने दाहक्रियाके लिअे चन्दनकी लकडी लानेका प्रस्ताव किया। बापूने अिनकार करते हुअे कहा "बा गरीबकी पत्नी थी। गरीब आदमी चन्दन कहांसे लाये?" हमारे सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब बोल अुठे "मेरे पास चन्दनकी लकडी है।" बापूने जवाब दिया "आप (यानी सरकार) तो जिस चीजका भी चाहें, अुपयोग कर सकते हैं। आपसे चन्दनकी लकडी लेनेमें मुझे कोअी अेतराज हो ही नहीं सकता।" फिर तो अेक समूचे चन्दनके झाडकी लकडी वहां आ पहुंची।

मृत्युके बाद तुरन्त ही कर्नल भण्डारी सरकारकी तरफसे बापूजीको यह पूछने आये कि शवके अग्निसंस्कारके बारेमें अुनकी क्या अिच्छा है। बापूजीने तीन रास्ते सुझाये

१ शव अुनके लडकों और रिश्तेदारोंको सौंप दिया जाय। अिसका मतलब यह होगा कि सार्वजनिक रीतिसे, आम जनताके बीच, अग्निसंस्कारकी क्रिया की जायगी और सरकार अुसमें किसी तरहकी दस्तंदाजी नहीं करेगी।

यह न हो सके तो,

२ महादेवभाअीकी तरह महलके सामने ही अग्निसंस्कार किया जाय और रिश्तेदारों व मित्रोंको हाजिर रहनेकी अिजाजत दी जाय।

३. अगर सरकार सिर्फ रिश्तेदारोंको ही आने देना चाहती हो, और मित्रोंको आनेकी अिजाजत न दे, तो वे चाहेंगे कि कोअी भी हाजिर न रहे। जेलके अपने साथियोंकी मददसे वे अकेले ही अग्निसंस्कार कर लेंगे।

बापूने खास तौर पर यह विनती की थी कि सरकार जो भी कुछ करे ठीक ढंगसे करे, ताकि अुसमें संघर्षकी कोअी गुंजािअश न रहे। यदि अन्त्येष्टि-संस्कार आम जनताकी अुपस्थितिमें किया जाय, तो वे अितना कहनेको तैयार थे कि सरकारको अशान्ति या अुपद्रवका डर रखनेकी कोअी जरूरत नहीं। "मेरे लड़के वहां मर जायंगे, मगर कोअी अुपद्रव नहीं होने देंगे।"

अुनसे पूछा गया "यदि बाहर अग्निदाह किया जाय, तो क्या आप खुद वहां जाना चाहेंगे?"

बापूने जवाब दिया "नहीं, मेरे लड़के, मित्र और रिश्तेदार सब कर लेंगे। मैं बाहर नहीं जाअूंगा।"

लेकिन सरकार अेक बड़े जुलूसका जोखिम अुठानेको तैयार न थी। अिस बहाने भी लोगोंमें जागृति आये और जोश पैदा हो, यह सरकारको स्वीकार न था। अिसलिअे अुसने दूसरी शर्त मंजूर की और मित्रों व सगे-सम्बन्धियोंकी हाजिरीमें महलके सामने ही अग्निसंस्कार करनेकी अिजाजत दी।

गीतापाठके समाप्त होने पर यानी रातके कोअी ग्यारह बजे देवदास-भाअी, मनु और सतोकबहनको छोड़कर बाकी सबको बाहर जानेका हुक्म मिला। हम सब बारी-बारीसे शवके पास बैठे। सुबह शवके पास ही सबने प्रार्थना की। बापूजीने शवके सिरहाने ही अपना आसन लगाया था।

२३ फरवरीको सबेरे ७ बजेसे लोग आने शुरू हो गये। करीब डेढ़ सौ मित्र और सगे-सम्बन्धी आ पहुंचे थे। मनुने शवकी आरती अुतारी। और सबोंने शवको प्रणाम किये। फूलोंका अेक बड़ा-सा ढेर लग गया था। हिन्दू, मुसलमान, पारसी, अीसाअी, अंग्रेज, सभी कौमोंके दोस्त हाजिर थे। जिन ब्राह्मणोंने महादेवभाअीकी क्रिया करवाअी थी वे भी आ पहुंचे थे। सारी क्रिया देवदासभाअीके हाथों करवाअी गअी।

शवको चिता पर रख देनेके बाद बापूजीने अेक छोटीसी प्रार्थना करवाअी, जिसमें हिन्दू, अीसाअी, पारसी, अिस्लाम सभी धर्मोंकी प्रार्थना

शामिल थी। देवदासभाओीने आग दी। कुछ ही मिनटोमें ज्वालाओं भडक अुठी। बा ने 'करेंगे या मरेंगे' मत्रका पूरी तरह पालन करके दिखाया था। अब वे स्वतत्र थी। कौनसी सल्तनत अब अुन्हें बन्धनमें रख सकती थी?

चिता महादेवभाओीकी समाधिके बाजूमें ही रची गअी थी। मा ने सोचा होगा कि बेटेको अकेला छोडकर कैसे जाअू, अिसलिअे वे अुसके पास ही रह गअी।

शातिकुमारभाओीने दिनभर पुत्रकी तरह काम करके देवदासभाओीका बोझ हलका किया। शवके नीचेकी लकडिया कुछ कम पडी। जलती चितामें अूपरसे लकडिया डालते समय कनुकी पलकें थोडी झुलस गअी।

बा के शरीरसे पानी बहुत निकला। अिसलिअे दहनक्रिया शामको चार बजे पूरी हुअी। तब तक बापूजी चितास्थान पर ही हाजिर रहे। कअी बार मित्रोंने कहा "आप थक जायगे।" लेकिन बापूने वहासे हटनेसे अिनकार किया। अुन्होंने हसकर जवाब दिया "६२ वर्षके साथीको क्या अब अिस तरह छोड सकता हू? अिसके लिअे तो बा भी मुझे माफ न करेगी।" किन्तु अुनके हृदयमें तीव्र वेदना हो रही थी। वे ज्ञानी हैं, मगर साथ ही मनुष्य भी है। सबके चले जानेके बाद रातको खाट पर पडे-पडे कहने लगे "बा के बिना मैं जीवनकी कल्पना ही नही कर सकता। मैं चाहता था कि बा मेरे रहते चली जाय, ताकि मुझे चिन्ता न रहे कि मेरे बाद अुसका क्या होगा। लेकिन वह मेरे जीवनका अविभाज्य अग थी। अुसके जानेसे जो सूनापन पैदा हो गया है, वह कभी भर नही सकता।" फिर कहने लगे "अीश्वरने भी मेरी कैसी कसौटी की? मैं तुम लोगोको पेनिसिलिन देने देता, तो भी वह तो जाने ही वाली थी। लेकिन वैसा करनेसे अीश्वरके प्रति मेरी श्रद्धामें न्यूनता आ जाती। मैं देवदासको समझाकर आता ही हू, पेनिसिलिन न देनेकी बात पक्की होती है और बा चलनेकी तैयारी कर देती है, यह भी अेक योग ही है। और बा मेरी ही गोदमें गअी, अिससे तो मेरे हर्षका पार न रहा।"

रामदासभाओी शामको पहुच पाये, चिता अभी जल ही रही थी। देवदासभाओी और रामदासभाओीको तीन दिन तक महलमें रहनेकी अिजाजत मिली। चौथे दिन चिताकी राख और फूल अिकट्ठा करके वे

विदा हुअे। नर्सें भी अेक-अेक करके विदा हो गअीं। किसीने कहा: "बा ने अपने प्राण देकर अेक बार तो जेलका दरवाजा खुलवा ही दिया! वे त्यागमूर्ति थीं। अपना जीवन देकर अुन्होंने अितने लोगोंको बापूके दर्शनोंका सुवर्ण अवसर प्रदान किया!"

बा के चितास्थान पर अेक कच्ची समाधि बनाओी गओी। महादेवभाओीकी समाधि पर छोटे-छोटे शंखोंसे ॐ लिखा गया था। बा की समाधि पर शंखोंसे 'हे राम' लिखा गया। रोज सुबह-शाम हम सब समाधिकी यात्रा करते और फूल चढ़ाते थे। सवेरे गीताजीके बारहवें अध्यायका पाठ भी किया जाता था। बापूजीने महादेवभाओीकी समाधि पर फूलोंका क्रॉस (सूली) बनाना शुरू किया था। बा की समाधि पर स्वस्तिक बनानेका निश्चय हुआ। यह मरे हुओोंकी मूर्तिपूजा नहीं थी, बल्कि अुनके गुणोंका स्मरण था, अुन गुणोंके प्रति श्रद्धांजलि थी, अीश्वरसे प्रार्थना थी कि अुन दो महान व्यक्तियोंके — मा-बेटेके — गुणोंका हम भी अनुसरण कर सकें।

बा की बीमारीके दिनोंमें बापूजीको बहुत श्रम पहुंचा था। वे काफी दुर्बल हो गये थे। आखिर वे मलेरियासे बीमार पड़े। सरकार नहीं चाहती थी कि आगाखान महलमें तीसरी मृत्यु हो। ६ मअीको हमारे जेलके फाटक खुल गये और बापूजी और अुनके सब साथी रिहा कर दिये गये।

रिहाअीसे पहले बापूजीने सरकारको पत्र लिखा कि समाधिका स्थान पवित्र स्थान है, अुसका दूसरा कोअी अुपयोग नहीं होना चाहिये, और लोगोंको समाधिके पास आनेकी अिजाजत होनी चाहिये।

१
अन्त्येष्टि

मेरे नाम और नजरबन्दोकी छावनीके पते पर मेरे पिताजीके नाम सीधे भेजे गये भ्रातृभाव और समवेदना व्यक्त करनेवाले असख्य सन्देश सार्वजनिक रीतिसे कृतज्ञता प्रकट करनेके अपरान्त भी कुछ अधिककी अपेक्षा ने है। अनमें से कुछ तो बहुत परिश्रमपूर्वक और विस्तारसे लिखे गये है, फिर भी वे अनके लेखक जो कुछ कहना चाहते हैं सो सब व्यक्त नही करते। जो शोक प्रकट किया गया है, वह अितना तो हृदय-द्रावक है कि वह शोककर्ताओकी और प्रत्यक्ष रीतिसे वियोगके दुखमें डूबे हुओकी सहानुभूतिको पारस्परिक बना देता है। मेरे लिअे यह अुचित न होगा कि मैं अपनी माताके अतिम क्षणोके अमूल्य और पवित्र सस्मरणोको अपने ही पास रख छोडू और मेरे साथ दुखी बने हुअे अेक बडे जन-समूहको सार्वजनिक रीतिसे, जिस हद तक सभव हो अुस हद तक, अनमें अपना भागीदार न बनाअू। मेरे शोकका आवेग अभी शान्त नही हुआ है, और मैं मानो दैव परका अपना विश्वास खो बैठा होअू अैसी अेक विचित्र भावना मुझे व्यथित कर रही है। मुझे विश्वास है कि यह थोडे समयकी ही चीज है। मैं अचानक मातृहीन बन गया हू। लेकिन अपनी अिस मानसिक स्थितिसे झगडकर मैं अिससे अुबरनेकी आशा रखता हू।

वे (बा) अतिम क्षण तक पूरी तरह बेहोश तो कभी हुअी ही नही। शनिवारके दिन सरकारी वक्तव्यमें अुनकी स्थितिके गभीर होनेकी बात कही गअी थी। तब भी, बिलकुल निराशाजनक परिस्थितिमें भी, यह आशा रखी जा रही थी कि अुनकी बीमारीकी अिस अतिम हालतमें से भी सही-सलामत पार हुआ जा सकेगा। हृदयकी क्रियाके मन्द हो जानेके कारण पिछले कुछ दिनोसे अुनके गुर्दोंने काम करना छोड दिया था, और बिना बुखारके त्रिदोष (निमोनिया) के कारण हालत और भी नाजुक हो गअी थी। खूनका दबाव घटकर ठेठ ७५–५२ पर जा टिका था। अब डॉक्टरोने अुनकी बचनेकी आशा छोड दी थी और अिलाज बन्द कर दिया था। सोमवारकी शामको जब मैं वहा पहुचा, वे बहुत ही कष्टमें

थी। अुनके साथी नजरबन्दोंकी प्रेमपूर्ण शुश्रूषा ही अुनके अिस कष्टको अूपर-अूपरसे कुछ हलका बना सकती थी। डॉक्टरोंका खयाल नहीं था कि वे रात निकाल सकेंगी। अुनके पार्थिव जीवनकी वह अंतिम रात थी। सारी रात अुन्हें प्रतिपल अपने साथियोंकी और गांधीजीकी अखंड सेवा-शुश्रूषा मिलती रही।

आधी बेहोशीकी हालतमें वे सवालोंके जवाब 'हां'–'ना' से अथवा धीरेसे अपना सिर हिलाकर देती थीं। अेक बार जब गांधीजी अुनके पास आये, तो अुन्होंने अपना हाथ अुठाकर अुनसे पूछा : "ये कौन हैं?" और जब गांधीजी करीब अेक घंटे तक अुनकी सेवामें बैठे रहे, तो अैसा लगा कि बा को अुनसे बहुत ही राहत मिली। अुनके पास बैठे हुअे गांधीजी अुनके मुकाबले अुमरमें बहुत छोटे दीखते थे, यद्यपि अुनके हाथ कांप रहे थे। अिस दृश्यको देखकर मुझे बत्तीस साल पहलेकी अफ्रीकाकी अेक घटना याद हो आती। अुस समय बा तीन महीनोंकी सजा काटकर बाहर आयी थीं। और वे बहुत ही कमजोर हो गयी थीं। अेक रेलवे स्टेशन पर मेरे माता-पिताको देखकर अेक परिचित यूरोपियन सज्जनने पूछा था : "मि० गांधी, क्या ये आपकी मां हैं?"

सुबह अुनकी हालत ज्यादा खराब मालूम होती थी। लेकिन वे शान्त और स्वस्थ थीं। सोमवारको अुन्हें अपने जीवनकी कुछ आशा थी। मंगलवारको मुझे अैसा लगा कि वे अुस आशाके बन्धनसे मुक्त हो गअी हैं। यूरेमियाका प्रभाव बढ़ता जाता था, फिर भी अुनका मन अधिक शान्त और स्पष्ट था।

सोमवारसे अुन्होंने किसी भी तरहकी दवा और पानी तक लेना बन्द कर दिया था। लेकिन मंगलवारको दोपहरके समय गंगाजलकी अेक बूंद लेनेके लिअे अुन्होंने अपना मुंह खोला था। जिससे अुन्हें कुछ समयके लिअे शान्ति मिली। बादमें तीन बजे अुन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और कहा : "मैं जाती हूं। अेक-न-अेक दिन तो मुझे जाना ही है, तो फिर आज ही क्यों न जाअूं?" मैं अुनका सबसे छोटा लड़का ठहरा। स्पष्ट ही अुनका जी मुझमें लगा हुआ था, लेकिन अुपरोक्त शब्द कहकर और दूसरे मीठे और प्यारभरे शब्दोंका अुच्चारण करके अन्य

सवोकी अुपस्थितिमें अुन्होने वलपूर्वक मेरे प्रति रही अपनी आसक्तिको खीच लिया। अुनकी वाणी अितनी स्पष्ट मैंने पहले कभी नही सुनी थी, और अुनके शब्द मुझे कभी अितने मीठे और चुनकर कहे हुअे नही लगे थे।

अिसके वाद तुरन्त ही अुन्होने अपने हाथ जोडे और विना किसीकी मददके वे अुठ वैठी। फिर अपना सिर झुकाकर जितने अुच्च स्वरसे वे वोल सकती थी, अुतने अुच्च स्वरसे अुन्होने कुछ मिनट तक प्रार्थना की. "हे अीश्वर, हे मेरे आधार, मै तेरी दया चाहती हू।" ये हृदय-वेधक शब्द वार-वार अुनके मुहसे निकलते रहे। मै अपने आसू पोछनेके लिअे कमरेसे वाहर निकला और अुसी समय आखागान महलके ओसारेमें पेनिसिलिन आ पहुचा। डॉक्टर अिस दवाकी आजमाअिश करना नही चाहते थे। त्रिदोप (निमोनिया) तो केवल अेक पूरक वस्तु थी। मूत्रपिण्डकी (गुर्दोकी) काम करनेकी अन्तिम अक्षमता पेनिसिलिनसे दूर नही की जा सकती थी। और अव तो अिसका समय भी वीत चुका था। फिर भी निमोनियाकी अिस चमत्कारिक दवाको देनेकी तैयारी की गअी।

करीव पाच वजे मैंने फिर वा के पास जानेकी हिम्मत की। अिस वार वे तनिक मुसकुराअी। यह वह मुसकान थी, जिसने ४३ वर्षों तक मेरे लाड लडाये थे। लेकिन साथ ही वह मरनेवाली माताका अपने पुत्रको आश्वस्त करनेवाला विषादपूर्ण अतिम हास्य भी था।

मेरी मा मानवताकी प्रतिमूर्ति थी। अुन्होने मेरे प्रति जो विशेप प्रेम दिखाया था, अुसके लिअे मै अुनके निकट परिचयमें आये हुअे सव किसीसे अुनकी ओरसे क्षमा मागता हू। जिस माने अन्य प्रकारसे अीश्वरकी सृष्टिको अुज्ज्वल वनाया है, अुस माकी त्रुटियोको वे अवश्य ही क्षमा कर देंगे।

लेकिन अुस हास्यने पेनिसिलिन-विषयक मेरी दिलचस्पीको फिरसे जगा दिया और अुसके वारेमें आगेकी कार्रवाअी करनेके लिअे डॉक्टरोंके साथ सलाह-मशविरा करना मुझे अपना फर्ज मालूम हुआ। डॉक्टर अुसका प्रयोग करनेके लिअे तैयार थे। लेकिन अुन्होने अुसके सफल होनेकी कोअी आशा नही वधाअी। जव गाधीजीको पता चला कि वा को तकलीफ

पहुंचानेवाले अिंजेक्शन देनेके विचारसे मैं सहमत हुआ हू, तो अुन्होंने शामको बगीचेमें घूमने जानेका विचार छोड दिया और वे मुझसे अिसकी चर्चा करनेके लिअे आये "तू कैसी ही चमत्कारिक औषधि क्यो न लाये, अब तू अपनी माको चगा' नही कर सकेगा। तू आग्रह करेगा तो मैं अपनी बात छोड दूगा, लेकिन तेरा आग्रह बिलकुल गलत है। अिन दो दिनोमें अुसने किसी भी तरहकी दवा या पानी लेनेसे अिनकार किया है। अब तो वह अीश्वरके हाथमें है। तेरी अिच्छा हो तो तू अुसमें दखल दे, लेकिन तू जो रास्ता लेना चाहता है, मेरी सलाह है कि अुस रास्ते तू मत जा। और, याद रखना कि चार-चार या छह-छह घटेसे अिंजेक्शन दिलाकर तू अपनी मरती हुअी माताको शारीरिक पीडा पहुचानेका काम कर रहा है।" अब मेरे लिअे दलीलकी गुजाअिश नही रह गअी थी। डॉक्टरोंने भी छुटकारेकी सास ली। अपने पिताजीके साथ यह मेरी सबसे मीठी चख-चख ज्यो ही खतम हुअी, त्यो ही सदेशा आया कि बा अुन्हें बुला रही है। वे फौरन ही वहा पहुचे। और जो लोग बा को आराम पहुचानेके लिअे अुन्हें अपना सहारा देकर अुनके पास बैठे थे, अुनकी जगह खुद बैठ गये। अुन्होंने बा को अपने कधे पर टिका लिया और जितना आराम वे अुन्हें पहुचा सकते थे पहुचानेकी कोशिश की। दूसरोकी तरह मैं भी बा पर निगाह रखता हुआ सामने खडा था। अितनेमें मैंने देखा कि बा के मुह परकी छाया ज्यादा घनी होती जा रही है। लेकिन अिसी समय वे बोली और ज्यादा आराम पानेके लिअे अुन्होंने अपना हाथ अिधरसे अुधर बदला।

अितनेमें अचानक अुनका अत-समय आ पहुचा। अनेक आखोंसे आसू बहने लगे। गाधीजीने तो अपने आसू रोक रखे। सब अुनके आस-पास गोलाकारमें खडे हो गये और आज तक अुनके साथ जिन भजनोंको गाते आये थे अुन्हें गाने लगे। दो मिनटमें बा निश्चेष्ट हो गअी! जैसा कि हममें से अेक भाअीने मुझसे कहा था, बा मानो हमारे ब्यालू कर चुकनेकी राह ही देख रही थीं। नजरबन्दोंकी छावनीमें छह बजे ब्यालू किया जाता है। सात बजकर पैंतीस मिनट पर बा ने अपनी देह छोडी।

अनके फूलोंके साथ अिलाहाबाद जाते हुअे रास्तेमें मैं यह लिख रहा हू। सोमवारको त्रिवेणीमें वे प्रवाहित किये जायगे। माकी ये अस्थिया अितनी छोटी-छोटी है कि अेक मुट्ठीमें समा जाय। नजरबन्दोकी छावनीमें रहनेवालोने शुक्रवारके दिन चिताकी भस्ममें से अिन अस्थियोको विधि-पूर्वक चुना था। ये केलके पत्ते पर रखी गअी और अिन पर फूल, सिंदूर और दूसरे सुगधित द्रव्य चढाये गये। बादमें पवित्र सस्कारकी विधि की गअी और फिर अिन्हें अन्तिम यात्राके लिअे तैयार किया गया। अिस तरह मैं अपनी माताके साथ यात्रा कर रहा हू। लेकिन मैं जानता हू कि कलके बाद मैं फिर कभी अुनके साथ यात्रा नही कर सकूगा।

गाधीजीका यह स्पष्ट निर्णय था कि अिन फूलोको ठडा करनेकी क्रिया दो महान नदियोंके सगम-स्थान पर की जाय। अुन्होंने मुझसे कहा "करोडो हिन्दू जो धार्मिक विधि करते हैं, वह तेरी माताको भी प्रिय होगी।" अिस निर्णयको तब और भी बल मिला, जब पूज्य मालवी-यजीने भी अपने तार द्वारा अैसा ही करनेकी अपनी अिच्छा व्यक्त की। अधिकाश भस्म तो, जैसी कि अुधर प्रथा है, पूनाके पास अिन्द्रायणी नदीमें प्रवाहित कर दी गअी थी। विज्ञानकी दृष्टिसे अिस दूसरी चीजके औचित्यके बारेमें मुझे शका है। अुसके विनियोगकी दूसरी किसी रीतिका मैं स्वागत करता। लेकिन दूसरा कोअी अुचित मार्ग सोचा नही गया था, अिसलिअे रूढिकी ही विजय हुअी।

मुझे और शुक्रवारको सूर्योदयसे पहले मेरे साथ नदी पर आनेवाले अेक छोटेसे जन-समूहको यह क्रिया अूपर अुठानेवाली थी।

अग्निसस्कारके बाद दूसरे दिन अिकट्ठी की गअी भस्मका थोडा हिस्सा नजरबन्दोकी छावनीमें सभालकर रखा गया है। अुसमें चिताके साथ जलने पर भी अखडित रही हुअी और बादमें मिली हुअी पाच चूडिया भी शामिल हैं।

मेरी माताजीकी बीमारी नजरबन्दोकी छावनीमें सितम्बर १९४२ से शुरू हुअी थी। अुसी समय पहली बार हृदय-रोगके चिह्न प्रकट हुअे थे। यद्यपि पिछले चार-पाच सालसे अुनकी तबीयत खराब रहने लगी थी, तो भी अिससे पहले हृदय-रोगका आक्रमण कभी नही हुआ था। यह

कहनेमें जरा भी अतिशयोक्ति नही हो रही है कि कारावासके कष्ट सहनकी शारीरिक या मानसिक ताकत अुनमें नही रह गअी थी। अिससे पहले वे कअी बार जेल जा चुकी थी। विशेषत राजकोट राज्यके अेक अैसे गांवमें, जो राज्यके अदरके हिस्सेमें है, अुनको अेकांत कैदकी भी सजा दी गअी थी, और तब अेक बार तो वे मरते-मरते बची थी। लेकिन यह अन्तिम कारावास तो शुरूसे आखिर तक अुनके लिअे सबसे कठिन कसौटी बन गया था। और वहा रहते हुअे अुनकी आत्मा और देह दोनो मुरझाने लगे थे। महलका और महलके आसपासका वातावरण अुस वातावरणसे बिलकुल ही अुल्टा था जिसकी वे आदी थी। कटीले तारोंके अहातेने और चौकी-पहरेने अिस चीजको और भी असह्य बना दिया। पिछले साल अुन्होंने मुझसे सेवाग्रामके नीचे छप्परोवाली झोपडीके रूपमें जिन घरोका वर्णन किया था, अुनमें वापस जानेके लिअे वे तरसा करती थी। सर्व-साधारणके सामने आज अिस बातको प्रकट करके मैं अपनी प्रिय माताकी स्मृतिको कोअी हानि पहुचा रहा हू, अैसा मुझे नही लगता। अपनी बेमियाद नजरबन्दीका तो अुन पर अिससे भी ज्यादा असर हुआ और वहा अुनको मिलनेवाले सभी शारीरिक सुख अुनके मन या अुनकी आत्माको शांति नही दे सके। अुनकी तरह दूसरे भी हजारो लोग — जिनमें से कअीके साथ अुनका निकट परिचय था — नजरबन्दीके अैसे ही कष्ट अुठा रहे थे। अिस हकीकतने अुनके दु खको अधिक तीव्र बना दिया, और पिछले डेढ सालसे तो वे हमेशा मन-ही-मन यह प्रार्थना किया करती थी कि अुन्हें और बापूजीको हमेशाके लिअे नजरबन्द रखकर और सबोको छोड दिया जाय।

जिस समय अुनकी बीमारीने गभीर स्वरूप धारण किया, अुस समय यदि अुन्हें कैदसे छोड दिया जाता, तो क्या वह हितकारक होता? छोडनेके साथ ही अुनकी अिच्छा हो तब फिर जेलमें वापस आ सकनेकी आजादी भी अुन्हें दी जाती, तो अुससे अुन्हें जरूर फायदा होता। यदि अैसा किया जाता तो वह अेक सपूर्ण अुदारताका काम होता। लेकिन हकीकत तो यह है कि अपने सरजनहारकी तरफसे किये गये अन्तिम करुणापूर्ण प्रस्तावके सिवा मुक्तिके दूसरे किसी भी प्रस्तावका अुन्हें अितना

भी लाभ नही मिला कि जिससे अुनके मनका समाधान होता। अिस-लिअे जब मैंने भारत-सरकारके अमेरिका-स्थित अेजेण्टका यह वक्तव्य पढा कि भारत-सरकारने तो अुन्हें कअी बार छोडना चाहा था, लेकिन अुन्होंने अिस 'ऑफर' से लाभ अुठाना स्वीकार नही किया, तो मुझे बहुत आश्चर्य हुआ और आघात पहुचा। अिस विषयमें हिन्दुस्तानमें सरकारकी ओरसे जो घोषणाअें अधिकृत रूपसे निकली हैं, अुनसे भी यह भिन्न है। और अमेरिकामें यह चीज अलग ढगसे क्यो पेश की गअी, अिसका कोअी खुलासा अभी तक मेरे देखनेमें नही आया।

जिन्होंने हमें आश्वासनके सन्देश भेजे हैं, और जो मूकभावसे हमारे शोकमें शामिल हुअे हैं, अुन सबका मैं अपने तीनो भाअियो और दूसरे रिश्तेदारोकी ओरसे हार्दिक आभार मानता हू। अिस वियोग-दुःखमें जो करोडो स्वजन हमारे ही समान दुःखी बने हैं, अुनके सिवा हमारे दूसरे भाअी-बहन नही है।

जिन्हें यह लगता हो कि अिस सार्वजनिक वक्तव्य पर मैंने जरूरतसे ज्यादा समय बरबाद किया है, और अखबारोकी भी जरूरतसे ज्यादा जगह रोकी है, अुनसे मैं नम्रतापूर्वक क्षमा चाहता हू। यह अवसर सहिष्णुताका पात्र है। मैं अिस भावनाको रोक नही सकता कि आश्वासन और समवेदनाके सन्देशो द्वारा और दूसरी तरह हमारे प्रति प्रकट की गअी सहानुभूतिको सार्वजनिक रीतिसे साभार स्वीकार करनेमें मैं चूका होता, तो हमारे दुःखमें हिस्सा बटानेवाले अपने करोडो देश-बन्धुओंके अुचित अुलाहनेका मैं पात्र बनता।

गाधीजीने अिस कसौटीको किस तरह पार किया, अिस सम्बन्धमें मुझे दो शब्द कहने चाहिये। अपने जीवनकी यह करुण क्षति अुनको खटकती है, क्योंकि अुनके निर्माणमें बा का बडा हाथ था। किन्तु वे तत्त्वज्ञकी-सी शाति रखे हुअे हैं, और जैसी कि हम अुनसे अपेक्षा रखते हैं, वे अपनी भावनाको सचेत बनाये हुअे हैं। अुनके आसपासका वातावरण खिन्नताहीन अुदासीका था, और जब शुक्रवारको मेरे भाअी और मैं अुनसे विदा हुअे, तब आसुओंके बदले अुन्होंने अपनी हमेशाकी आदतके अनुसार विनोद ही किया। मैं मानता हू कि अुनकी तबीयत अच्छी है।

देवदास गांधी

२

बा

बा के बारेमें कुछ कहना या लिखना बहुत कठिन है। वे मानव-हृदय और मानव-चित्तकी शुचिता और सरलताकी प्रतीक-सी थीं। जिस व्यक्तिको खुद ही पता न हो कि वह किस भूमिका पर विचर रहा है, अुसका वर्णन करनेमें वाणी असमर्थ है। बा तो बा ही थीं। बिल्कुल सीधी-सादी, लेकिन धीर और वीर। दूसरेका दोष तो अुनके मनमें कभी स्थान पाता ही न था। आश्रममें या बाहर किसीने कुछ बुरा किया हो और अुसकी चर्चा चले, तो बा बोल अुठती थीं "लेकिन अुसने अैसा किया क्यों?"

बा के बारेमें बहुतोंका यह खयाल है कि वे नरम स्वभावकी गरीब हिन्दू पत्नी थीं — अपने पतिकी छायामात्र! किन्तु यह बात जरा भी सच नहीं। बा का भी बापूके समान ही स्वतंत्र व्यक्तित्व था। सिर्फ बुद्धिसे ही नहीं बल्कि आन्तरिक प्रेरणासे भी वे सचाअीको पहचान लेतीं, और स्वतंत्र रीतिसे अपने निर्णय करती थीं। अपने बल पर वे अपनी अुच्च कक्षाको पहुंची थीं। बापू स्वयं अितने महान हैं और स्त्रीत्वके भी अितने बड़े पुजारी हैं कि वे किसीको भी जबरदस्ती अपने साथ घसीटेंगे नहीं। सैकड़ो बरसोंकी रूढ़ परम्पराओंको छोड़ते हुअे बा को सहज ही कठिनाअी तो मालूम हुअी होगी। साबरमती आश्रममें अस्पृश्यताके महान कलंकके बारेमें बा को समझानेमें बापूको भी वक्त लग गया था। लेकिन अेक बार बा को यकीन हो गया और वे समझ गअीं, अुसके बाद तो हरिजन अुनके लाड़ले बन गये।

अपनी मृत्युसे दो साल पहले सेवाग्रामकी अपनी झोंपड़ीके पश्चिम-वाले चबूतरे पर बैठी हुअी बा का चित्र मेरी आंखोंके सामने खड़ा हो जाता है। देशके कोने-कोनेसे बापूको मिलने आनेवालोंको बापूकी कुटिया तक जानेके लिअे अिस चबूतरेके सामनेसे गुजरना पड़ता था। अुनमें से

कभी बा को भी प्रणाम करने जाते, और अुनके हसते हुअे चेहरेके दर्शनोका आनन्द लूटते। बा सबसे प्रेम और ममताके दो मीठे शब्द कहे विना न रहती। अुनके अुस शान्त और मधुर दर्शनको कोअी भी नही भूल सकता। मैं तो बा की आवाज कभी भूल ही नही सकती। अुस आवाजमें अेक विलक्षण मार्दव था — पक्षीके मधुर कूजन-सा कुछ था। बा जब किसी पर चिढती या नाराज होती थी, तब भी अुनके स्वरकी मृदुता नष्ट नही होती थी। काग्रेसकी कार्यकारिणी समितिके सदस्य गाधीजीके साथ घटो चर्चा करके कितने ही क्यो न थक गये हो, फिर भी अुस चबूतरे पर बा से मिले विना वे कभी जाते न थे। बा से मिलनेका हरअेकका ढग जुदा होता था। वल्लभभाअी तो नन्हे नटखट 'कहाना' को ही चिढाते और अुसके साथ 'धूमा-मस्ती' करने लगते। कहाना भी वल्लभ-भाअीको चपलता भरे जवाब देकर हसाता। मौलाना साहब गभीर भावसे बा के पास आकर बैठते और अुनकी तबीयतके समाचार पूछकर व सलाम करके चले जाते। जवाहरलाल जब मौजमें होते तो कोअी क्रान्तिकारी बात कहकर बा को चिढानेकी कोशिश करते। वे सोचते कि बा गुस्सा होकर विरोध करेंगी। लेकिन बा तो अपनी मीठी हसी हसकर धीमेसे कहती "नही, तुम्हारी बात ठीक नही है। तुम कुछ भूले हो।" अगर जवाहरलाल थके होते तब बा को दोनो हाथ जोडकर नमस्कार करते और कुशल-समाचार पूछकर चले जाते। लेकिन बा को यह अच्छा न लगता। अुस दिन वे बापू पर सवालोकी झडी लगा देती "आज जवाहर अुदास क्यो दीखता था? आपने अुसे कुछ कहा तो नही?" बापू हसकर जवाब देते "तू भी जवाहरकी तरह मौजी तो नही बन गअी है? आज तो हमारे बीच कोअी मतभेद ही नही हुआ!" राजेन्द्रबाबूके साथ तो कभी कोअी चख-चख होती ही नही थी। शायद अिसलिअे कि दोनोके स्वभाव अेक ही से थे। दोनोंके दिलमें कडवाहट नामकी तो कोअी चीज थी ही नही। और, विलक्षण व्यक्तित्ववाले वे महान पठान खान अब्दुल गफ्फारखा! अुनके दिलमें तो युद्ध और हिंसाके प्रति गाधीजीके समान ही तीव्र अरुचि है। वे बा के पास ही जाकर बैठते और पश्चिमके अस्त होते हुअे प्रकाशको देखा करते। कार्य-

कारिणीके दूसरे सब सदस्य शामको वर्धा जाते, लेकिन खानसाहब तो सेवाग्राममें ही रहते।

बा को और सरोजिनी देवीको देखकर ही हमें अिस बातका अन्दाज हो सकता है कि नारीत्वमें कितना गौरव और कितना वैभव रहा है। कितनी विविधता, कितनी तेजस्विता और कितना सनातन यौवन! अपने माने हुअे आदर्शोंके लिअे, दिलमें लेशमात्र भी कडवाहट न रखते हुअे, कष्ट सहनेकी कितनी तैयारी, कितना धैर्य, कितनी अटल श्रद्धा और कितनी शक्ति! अिन दो स्त्रियोंको देखनेसे क्या हमें अिस बातका दिव्य दर्शन नहीं होता कि हमारी भारतभूमि नारियोंकी भूमि है? ये नारियां ही मानवप्रेम और मानवसेवाके गांधीजीके महान आदर्श पर डटी रहेंगी और बाजारोंकी, फौजोंकी और हुकूमतकी होडमें कभी शामिल नहीं होंगी।

बापूकी भांति दूसरे भी कअी होंगे, जो बा की शान्त हुअी आवाजको सुननेके लिअे तरसते होंगे। लेकिन अिस शोकके पीछे अेक अमर आशा यह रही है कि बा-जैसे व्यक्ति कभी मरते ही नहीं। अमरताके सच्चे अुत्तराधिकारी वे ही हैं।

क्या कभी यह संभव था कि हिन्दुस्तानको छोडकर दूसरे किसी देशमें बा का और बापूका जन्म होता? मुझे तो अिस सवालका जवाब साफ 'ना' में मिलता है। मैं मानती हूं कि अिस देशमें अुनको जितना प्रेम और जितनी पूजा मिली है, अुतनी दूसरे किसी देशमें न मिलती। अिस विचारसे हमें आश्वासन मिलता है। हमारी जो प्राचीन संस्कृति पुराणोंके कालसे चली आ रही है, मानवके रूपमें बा और बापू अुसके अवतार-समान हैं। हो सकता है कि आज हमारी अुस संस्कृति पर विकृतिकी कुछ लकीरें खिंच गअी हों। फिर भी मूलतः हमारी संस्कृति शान्ति और ज्योतिकी संस्कृति है। वह मनुष्यको अीश्वरका ही अंग मानती है। दूसरी कोअी संस्कृति मनुष्यके सामने अितनी शक्ति और अितनी स्वतंत्रताकी आशा अुपस्थित नहीं करती। यद्यपि आजकी दुनियाकी करतूतोंको देखते हुअे तो शक्तिका अर्थ भी बहुत-कुछ बदल जाता है। आज तो जो अपने विरोधियोंको ज्यादा-से-ज्यादा नुकसान पहुंचा सकते हैं, वे अपनेको अधिक-से-अधिक शक्तिशाली समझते हैं। लेकिन शक्तिके संबंधमें गांधीजीकी

और हमारे देशकी व्याख्या अिससे विलकुल भिन्न है। दिलमें किसी तरहका द्वेष न रखकर जो अधिक-से-अधिक कष्ट सहनेके लिअे तैयार होता है, शक्ति अुसके चरणोमें आकर बैठती है। भौतिक सत्ता प्राप्त करनेके लिअे ग्ान युद्ध शुरू करके आज दुनिया अपनी विरासतमें आग और अगारे छोडे जा रही है, यह कितना करुण और कितना मूर्खतापूर्ण है! नेयाके विचारशील लोगोके दिलमें तो तनिक भी शका नही है कि जो ाग आज मदसे चूर है अुनको पीछे हटना ही पडेगा, और आधुनिक ातका पुरुषोत्तम अपनी जिस शान्ति-वीणाको पत्थरकी दीवारोके पीछे ग बजा रहा है अुसे सारी दुनियाको सुनना ही होगा। अिस मदोन्मत्त नेयाके सामने खडे होकर यह कहना कि "तुम सब गलती पर हो, ार अकेला मै ही सचाअी पर हू, सभव है कि तुम्हारा हृदय-परिवर्तन ने तक मै जिन्दा न रहू, तो भी आनेवाला समय और आनेवाली ढिया मेरे अिन वचनोकी साक्षी देंगी" किसी साधारण हिम्मतवाले ादमीका काम नही! हमारी बा अैसे अेक पुरुषकी जीवन-सगिनी थी। जीवनभर अुनके साथ रही है। आज बापूकी विरह-वेदनाका अदाज ौन लगा सकता है? किसीको अुसका पता भी नही चलेगा, क्योकि बापू अपने जीवनकी गहन वेदनाओको मौन रहकर अीश्वरके सान्निध्यमें ही ागते है।

बहुत साल पहले जब बापूने अस्पृश्यताके कलकके विरुद्ध युद्ध छेडा , तब बा के विचारोको बदलनेमें अुनको बडी कठिनाअीका सामना रना पडा था। अथाह धैर्यके साथ बापू बा को समझाते रहते। रोज ो चर्चा करते। अेक दिन तो हरिजनोको रसोअीघरमें दाखिल करके ोअी बनाने देनेके लिअे बा को समझाते-समझाते वे थक गये और ले "बा को यह चीज समझाना बहुत मुश्किल है।" लेकिन अिन ब्दोके अुच्चारणके साथ ही वे बहुत गभीर हो गये और फिर दूरकी ाअी बात सोच रहे हो, अिस तरह कहने लगे "अितने पर भी यदि ो जन्म-जन्मान्तरके लिअे अपना साथी पसन्द करना हो, तो मै बा ो ही पसन्द करूगा।" बापूके अिन शब्दोंसे बढकर और कौनसे शब्द गे, जिनसे बा के सच्चे स्वरूपका वर्णन किया जा सके?

भाषा द्वारा हम बा का विचार कर ही नही सकते। अिसके लिअे तो अुनकी मूर्तिको, अुनके चित्रको, आखोंके सामने खडा करना चाहिये। अुनकी चाल, अुनका घूमना-फिरना, अुनकी कोमल आवाज और अिन सबसे बढकर अुनकी मीठी, निर्मल मुसकान हमें अुस महान विभूतिकी शुचिता और वीरताका सच्चा दर्शन कराती है। यो देखें तो बा बहुत अुग्र नही थी। दक्षिण अफ्रीकामें और यहा आजादीकी लडाअीमें वे कअी बार जेल गअी थी। लेकिन अुन्होने यह कभी नही दिखाया कि जेल जाकर वे कोअी असाधारण काम कर आअी हैं। देशके लिअे अुन्होने जो बडे-बडे बलिदान किये, स्वेच्छापूर्वक गरीबीको अपनाया, अपने सर्वस्वको छोडा, अपने प्रिय पतिके सहवास तकका त्याग किया, सो सब अुन्होने अपने सहज भावसे और निरभिमान-वृत्तिसे ही किया।

पिछली बार जब बा जेल गअी, मैं वही थी। पुलिस अफसरके आने पर वे अुतनी ही मिठाससे अपना सामान बाधनेमें लग गअीं। पहले दिन अैलान किया गया था कि ९ अगस्तको शिवाजी पार्कमें सभा होगी, और बापू अुसमें भाषण करेंगे। बापूकी गिरफ्तारीके बाद बा ने अुस सभामें जाने और बापूका सन्देश सुनानेका निश्चय किया था। अुस दिन बा की गिरफ्तारी अेक बहुत अजीब ढगसे हुअी।' पुलिसका अेक बडा कद्दावर अफसर, जो हिन्दुस्तानी था, बा के सामने हाथ जोडकर खडा रहा और जरा झुककर बा से पूछने लगा "आप घर ही रहेंगी या सभामें जायगी? आपका क्या हुक्म है?" अुसे भी अटपटा तो लगा होगा कि अुसके जैसा अल्पात्मा शरीरसे अितना मोटा-ताजा है और बा के जैसी महान आत्मा अितने नन्हे और नाजुक शरीरवाली है। बा ने तो अपनी अुसी मीठी मुसकानके साथ फौरन जवाब दिया "मैं सभामें तो जाअूगी ही।" अफसर बेचारा सोचमें पड गया। आखिर बोला "तो आप अिस मोटरमें बैठेंगी? मैं आपको बापूके पास ले जाअूगा।" अिस तरह बा की गिरफ्तारी हुअी। आश्रमके अेक छोटे लडकेको अिच्छा हुअी कि वह बा की साडी पर 'करेंगे या मरेंगे' का अेक बिल्ला लगा दे। वह लगाने लगा। बा ने हलकेसे अुसे हटा दिया और कहा "मुझे यह नही फबता।" यह थी बा की अतिम यात्रा। वहासे वे वापस न आअीं। अुन्होने तो

अुक्त सूत्रका पालन बिना किसी आडम्बरके कर दिखाया। मैंने सुना है कि आगाखान महलके अुस मनहूस वातावरणमें अुनको अच्छा नही लगता था। आश्रमकी सादी किन्तु साफ कुटियामें रहनेका अुन्हें अभ्यास हो गया था। महलका वह फर्नीचर, जिसके अन्दर ढेरो धूल भरी रहती थी, अुन्हें बिलकुल रुचता न था। वहाका वातावरण तो प्रतिकूल था ही। अिस पर वहा कुछ ही दिनो बाद महादेवभाअीकी मृत्यु हो गअी।

बापूके पिछले अुपवासके दिनोमें मैंने बा को आखिरी बार देखा था। १९४३ की १८ वी फरवरीका वह दिन था। वह पहला दिन था जब बापूकी तबीयत नाजुक हो गअी थी। रविवार ता० २१ फरवरीके दिन तबीयत बहुत ही नाजुक हो अुठी। अुस दिन बा के चेहरे पर विषादकी हृदय-विदारक घटा छाअी हुअी थी। वे सारे देशके — गरीब-अमीर सबके — हृदयमें व्याप्त दुःखकी प्रतिमूर्ति-सी लगती थी। अैसा प्रतीत होता था, मानो, समूचे देशकी ओरसे बा प्रार्थना कर रही हो कि "नही, नही, भगवन्! अितनी बडी कुरबानी नही हो सकती। अिस अधेरे और भयावने बियाबानमें से हमारे देशको प्रकाश और शान्तिके मार्ग पर ले जानेके लिअे अिस नेताको बचा!" बापू तो शान्त थे और कहते थे "कोअी घबराओ नही। अिस पार या अुस पार सब अेक ही है। मै तैयार हू।" अिस परित्याग और अैसी अीश्वर-श्रद्धाके सामने शोकका कोअी स्थान ही नही हो सकता। किन्तु अपनी वीरतापूर्ण मुसकानके पीछे बा जिस दुःखको छिपाये हुअे थी, वह तो असह्य ही था। आगाखान महलके सामने बैठाअी गअी दो-दो चौकियोको पार करके बाहर निकलते समय मै और मेरे साथी तो रो ही पडे। शायद बापू न रहेंगे अिसके दुःखकी अपेक्षा यह विचार अधिक दुःखदायी था कि बा का क्या होगा? अिस अन्तिम चित्रको भूलनेकी मै बहुत कोशिश करती हू। राष्ट्रीय तूफानके कुछ दिन पहले मै सेवाग्राम गअी थी। अुस समयकी बा के अुस चित्रको अपने मनमें अंकित कर रखना मुझे बहुत अच्छा लगता है। प्रार्थनाके चौकसे लगे अपनी कुटियाके चबूतरे पर बा बैठी है, अुनके आसपास बहनोका दरबार जुडा है और बा अपने विलक्षण व अनपम ढगसे सबके साथ बात कर रही है। अुस समयकी बा की

तुफानसे मिलनेवाला प्रकाश जितना अद्भुत था, अुतना ही अद्भुत था कलियोंके लिअे काम कर-करके थकी हुअी बा का दोनों हाथ जोड़कर सबका स्वागत करना या सबको विदा देना। अब तो वे अमर और विनतिनय भारतीय नारी-मण्डलके बीच सीता और सावित्रीके बराबर जा बैठी हैं। हजारों वर्षों तक वे भारतवासियोंके लिअे आश्वासन और धैर्यका धाम बनी रहेंगी।

गोशीबहन कैप्टन